# लास्की का राजनीतिक चिंतन

डा० कृष्णकात मिश्र

# प्राक्कथन

हेरोल्ड जे० लास्की के चिंतन का हमारे देश के बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों, नवयुवकों और छात्रों के लिए विशेष महत्त्व रहा है। 'लंदन स्कूल आफ इकोनामिक्स' में अनेक भारतीयों ने उनसे राजनीति विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। उनके संपर्क और चिंतन से प्रभावित होने वाले महान व्यक्तियों में जवाहरलाल नेहरू और कृष्णमेनन प्रमुख भारतीय हैं। एशिया और अफ्रीका के नवोदित राष्ट्रों के अनेक राजनीतिज्ञों ने लास्की से ही उपनिवेशवाद से संघर्ष करने के लिए प्रेरणा ग्रहण की और स्वाधीनता के पश्चात अपने देश में समाजवादी विचारधारा के अनुसार आर्थिक विकास की योजना बनाने में भी उनके सुझावों और विचारों का स्वागत किया।

ग्रेनवील आस्टिन का विचार है कि भारत की संविधान निर्मात्री सभा में लगभग प्रत्येक सदस्य किसी न किसी रूप में समाजवाद का समर्थक था। यद्यपि समाजवाद की उनकी परिभाषाएं भिन्न भिन्न थीं, तो भी लगभग प्रत्येक व्यक्ति फेबियन और लास्कीवादी उक्ति, 'समाजवाद सामाजिक पुनरुत्थान की दैनिक राजनीति है' का स्वीकार करता था। प्रत्येक सदस्य लास्की के इस कथन को भी स्वीकार करता था कि 'लोकतंत्रीय संविधान अनिवार्य रूप से आर्थिक समानता की दिशा में अग्रसर होते हैं।' (दि इंडियन कांस्टीट्यूशन—कानरस्टोन आफ ए नेशन, पृ० 41)। संविधान के निदेशक तत्त्वों पर भी लास्कीवादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। कांग्रेस तथा समाजवादी दलों के राजनीतिक और आर्थिक कार्यक्रमों पर भी लास्कीवादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा है। ग्रेनवील आस्टिन के अनुसार जवाहरलाल नेहरू तथा भारतीय समाजवादियों की विचारधारा मार्क्स, टी० एच० ग्रीन, सिडनी तथा बीट्रिस वेब एवं लास्की के सामाजिक और राजनीतिक विचारों के समन्वय पर आधारित थी।

आज जब हमने समाजवादी लोकतंत्र को अपना राष्ट्रीय आदर्श स्वीकार कर लिया है, लास्की के चिंतन का महत्त्व हमारे लिए पहले से भी बढ़ गया

है। लास्की समाजवाद और लोकतंत्र के आदर्शों के पोषक एवं पूंजीवाद तथा अधिनायकतंत्र के कट्टर विरोधी हैं। अधिकांश विश्वविद्यालयों में लास्की के राजनीतिक चिंतन का अध्ययन स्नातक तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओं के लिए अनिवार्य है। प्रस्तुत पुस्तक हिंदी भाषा में लास्की के चिंतन का संभवत प्रथम मूल्यांकन है।

कृष्णकांत मिश्र

# अनुक्रम

## लास्की का व्यक्तित्व

भारत मे आधुनिक युग के एक महत्त्वपूण राजनीतिक चितक के रूप म हेरोल्ड जे० लास्की को बहुत सम्मान मिला है। न केवल भारत बल्कि सारे ससार म, जहा अगरेजी भापा पढी या बोली जाती है बुद्धिजीवी वग लास्की के विशाल राजनीतिक साहित्य और उनके क्रातिकारी राजनीतिक दशन म दिलचस्पी लेता रहा है। राजनीति विनान के शिक्षक के रूप मे भी उ्हे ख्याति मिली है। 'ब्रिटिश लेबर पार्टी' के युवा वग को उनके विचारो ने बहुत प्रेरणा दी है।

प्रोफेसर लास्की की प्रतिभा बहुमुखी थी। वे हमे न केवल राजनीतिक विचारक के रूप मे बल्कि एक मनुष्य के रूप म भी प्रभावित करते है क्योकि उनके आदर्शो और आचरण म पूण सामजस्य है। उनका राजनीतिक चितन सशक्त है क्योकि वह जीवन की अनुभूतियो पर आधारित है। वे अपने सिद्धातो को व्यक्तिगत जीवन म कार्यान्वित करते थे। सामयिक पीढी लास्की को अनेक प्रकार से याद करती है। कुछ लोग लास्की के सहयोगी या शिष्य के रूप म उनके सपक मे आए। उनके शिष्य लगभग प्रत्येक देश म बिखरे हुए है। उ्होने लास्की के विषय म एक कहानी प्रचलित की है जो उ्हे एक ऐसे आचाय-सत के रूप मे प्रस्तुत करती है जो एक धर्मोपदेशक की शली म समाजवाद की शिक्षा देता था। एक वग ऐसे लोगो का भी है जो लास्की की स्तुति करने के बजाय उसकी निंदा करते है। पर उनके कटु आलोचक भी उनके शिक्षकोचित और मानवीय गुणा की सराहना करते हैं। उनकी सामाजिक सहृदयता, निर्दोष आत्मो्मुखता, युवावग म दिलचस्पी, पीडिता के प्रति स्नेह, व्यावहारिक ्याय के लिए आग्रह, स्वास्थ्य की चिता न करते हुए निरतर काय करने की प्रवत्ति आदि ऐसे गुण है जो एक महामानव मे ही मिलते हैं। शिक्षक के रूप मे लास्की का नाम सदा अमर रहेगा। विल बाल्फोर का

कथन है, 'राजनीतिक सिद्धात पर उनके भाषण बहुत लोकप्रिय थे। उनमे किसी प्रकार की नीरसता नही थी क्योकि उनका सबध वास्तविक परिस्थितिया और व्यक्तिया से होता था। जब वे बोलते थे तो सामयिक इतिहास की विभूतिया, जैसे केरेस्की और कीर हार्डी, ल सबरी और लेनिन, शा और स्तालिन साकार और जीवित हो उठती थी।'[1] उनके व्यक्तित्व का प्रभाव एक नवागतुक छात्र अथवा लडाई से लौटे हुए एक सदेहशील सनिक पर समान रूप से पडता था। छात्र सभवत प्रभावित होता था लास्की की उस अदभुत क्षमता स जो सिद्धात और व्यवहार को जोडने मे समथ थी। सैनिक, जो स्वय आज्ञाकारिता और अनुशासन की बेडियो स बधा था, लास्की की अ याय विरोधी गतिशीलता से आकर्षित होता था।

अनेक लोग उ ह एक समाजवादी के रूप म जानते थे और शायद उनके शिक्षक होने के विषय मे अनभिज्ञ थे परतु इसके विपरीत स्थिति सभव नही थी। कक्षा मे पहले ही दिन लास्की अपन शिष्यो को बता दते मैं समाजवादी हू और समाजवाद का प्रचार करना मेरा ध्येय है। तथापि समय समय पर मैं अ य पुस्तको की ओर ध्यान दिलाऊगा जो मेरे जहर का इलाज कर सकें।' फेलिक्स फ्रैंक फटर का विचार है, 'उनका केंद्रीय महत्त्व एक शिक्षक के रूप म ही है। अपना सवस्व उ होंने इसी पेशे के लिए अपण कर दिया—अपनी विद्वत्ता, अपनी वाक्शक्ति अपनी कल्पना, अपनी स्मति के अदभुत चमत्कार, द्वद्वात्मक चिंतन की अपनी शक्तिया और इनस भी अधिक महत्त्वपूण है जिसे सही अर्थो मे लास्की की 'युवजनो म भावनात्मक अभिरुचि' कहा जा सकता है। ससार मे एस देश शायद ही हा जहा कोई ऐसा व्यक्ति न हो जो शिक्षक के रूप म लास्की की स्मृति का जीवन पयत सजोकर रखन मे अपने को ध य मान। लेखन और भाषण के अतिरिक्त लास्की क सामाजिक चिंतन का प्रभाव उनके छात्रा के माध्यम से दूर दूर तक फला है जिससे उनकी वैचारिक प्रणाली म परिवतन हुआ है। वे सुकरात द्वारा प्रस्तुत शिक्षक की परिभाषा को पूरा करते थे जो अपन शिष्या के हृदय और मस्तिष्क म नतिक आदर्शो और स्वतत्र चिंतन को ज म दता है।'[2]

'लदन स्कूल आफ इकोनामिक्स' मे शिक्षण काय के अतिरिक्त लास्की का एक व्यावहारिक राजनीतिक जीवन भी था। वे लेबर पार्टी के जीवनभर सक्रिय सदस्य रहे। उनकी क्षु ध और गतिशील आत्मा समाजवाद पर भाषण या लेखन से ही सतोष प्राप्त नही कर सकी। अपने देश के समाजवादी आदोलन मे सक्रिय योगदान दकर ही उ ह आत्मतोष मिल सकता था। अत वे युवावस्था मे ही लेबर पार्टी के सदस्य बन गए और उसके माध्यम से अपने देश के समाजवादी आन्दोलन म भाग लेने लगे। 1936 मे वे लेबर पार्टी की राष्ट्रीय कायकारिणी समिति के सदस्य चुने गए। 1945 मे वे लेबर पार्टी के

प्रधान चुने गए और उनके नेतृत्व म ही ससद का चुनाव लडा गया। इगलड के सावैधानिक इतिहास म 1945 म ही लेबर पार्टी सवप्रथम ससद के चुनाव मे बहुमत स विजयी हुई। लेबर पार्टी की नीतिया और कायक्रम के निर्धारण मे लास्की न महत्त्वपूण योगदान दिया है। 1941 म लेबर पार्टी ने 'पुराना ससार और नया समाज' शीपक से एक घोपणापत्र जारी किया जो दल के इतिहास मे एक महत्त्वपूण मोड समझा जाता है। मागन फिलिप्स क कथनानुसार यह घोपणापत्र बहुत कुछ लास्की की ही कृति है और तदुपरात दल की नीतिया इसी घोपणापत्र के आधार पर बनाई गई हैं। 1945 म जब लेबर पार्टी ने अपना मत्रिमडल बनाया तो इसी घोपणापत्र के उद्देश्या को कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया गया।

साधारण श्रमिक लास्की क विचारा से किस प्रकार प्रभावित थे, इस सवध मे बिल वाल्फोर ने बताया है, स्कूल के वातावरण से बहुत दूर स्काटलैड के समाजवादी 'फावड म प्रकाशित लास्की के लेखा को पढते थे। इन क्षेत्रो म, जहा प्रोफेसर शब्द स लोगा को स्वाभाविक घणा है, लास्की के प्रति प्यार और आदर की भावना जाग्रत हा गई। खाना और बदरगाहा म काम करने वाले मजदूरो के लिए उन्होने कोई निम्न स्तर की शली नही अपनाई तो भी वे उनकी बातो को दूसरा की तुलना म अच्छी तरह समझ लेते थे। एक मजदूर जिस मैं व्यक्तिगत रूप स जानता हू, जिसका जीवन कठोर परिश्रम म बीता और जिस अध्ययन और चिंतन के लिए बहुत कम अवकाश मिलता था लास्की के लेखा को नियमपूवक पढता था। उसने बताया जो मैं अपने मन मे सोचता रहता हू वही ये अपने लेखो म कहते हैं और बहुत ही सुदर शली मे। लास्की की समाधि पर एक सरल मजदूर के इन उदगारो को अकित कर दिया जाए तो निश्चय ही उनकी आत्मा का इससे पर्याप्त सतोप मिलेगा।'[3]

लेबर पार्टी के लिए लास्की एक परिश्रमी कायकर्त्ता, विद्वान सलाहकार और स्पष्टवादी और निर्भीक आलोचक सिद्ध हुए। मागन फिलिप्स का विचार है कि पार्टी म उन्हे बहुत सम्मान और प्रेम की दृष्टि स देखा जाता था। उनकी तुरत विचार करने की शक्ति और व्यक्तिवादिता क कारण अक्सर मतभेद उत्पन्न हो जाते परतु उनकी उदारता के कारण इन मतभेदा का समाधान भी शीघ्र हो जाता। शोध और लेखन के कठिन एव महत्त्वपूण काय वे कुछ घटो म पूरे कर देत। टेलीफोन की बातचीत द्वारा ही वे ऐसी प्रायनाआ को स्वीकार कर लेते और अपने उत्तरदायित्व को शीघ्र पूरा कर डालते। प्रत्यक अच्छे उद्देश्य के लिए वे योगदान देने को तैयार थे और छोटे से छोटा व्यक्ति उनकी सलाह या सहायता की अपक्षा करता तो वे उस निराश नही कर सकत थे। वे पार्टी के एक महान साथी थे, साथ ही अतर्राष्ट्रीय समाजवादी आदोलन के लिए अपार शक्ति के स्रोत भी।[4]

पत्रकार के रूप म भी लास्की का योगदान कम नही है। अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे उनके सैकडा लेख प्रकाशित हुए जो सामयिक पीढी के लिए महत्त्वपूर्ण राजनीतिक साहित्य था। उन्होने कानून, राजनीति और आर्थिक समस्याओ पर इगलैड और अमरीका की प्राय सभी उदारवादी और प्रगतिशील पत्रिकाओ मे लेख लिखे। कुछ पत्रिकाओ के नाम, जिनमे उनके लेख प्रकाशित होते रहे इस प्रकार हैं सेंचरी मगजीन, येल रिव्यू, क्वाटरली रिव्यू, लदन और हारपस मगजीन। लास्की के अधिकाश लेख तब प्रकाशित हुए जब वे समाज और राजनीति के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार सोचने लगे थे। उनकी भाषा सरल और बोधगम्य है ताकि आम जनता और बुद्धिजीवी उन्ह समय सकें। उनका विषय वतमान सामाजिक व्यवस्था की आलोचना अथवा समाजवाद का व्यावहारिक पक्ष है।

आग्ल-सक्सन लेखको म लास्की के समकक्ष कोई अन्य चिंतक ऐसा नही जिसने पूजीवादी प्रणाली के आधारभूत सिद्धाता पर इतना कठोर और इतनी अधिक दिशाओ से प्रहार किया हो। उन्होने अपने सबसे अधिक प्रेरक और उत्साहवधक लेख 1934 और 1939 के मध्य लिखे। इस समय यूरोप मे फासीवाद के विरोध म समाजवादिया और साम्यवादिया का सयुक्त मोर्चा स्थापित हो गया था। यह 'लेफ्ट बुक क्लब' और जनवादी मोर्चे का जमाना था और लास्की के राजनीतिक जीवन का सबसे अधिक उत्तेजनापूर्ण चरण था। भविष्य म वे तत्कालीन बौद्धिक आशावाद और भावनात्मक उत्साह को फिर प्राप्त न कर सके।

नामन मैक्जी का कथन है कि इसी समय लास्की अपने शैक्षणिक और राजनीतिक जीवन की चरम सीमा पर पहुचे। युद्ध के वप और युद्धोपरात की घटनाए लास्की के लिए राजनीतिक दृष्टि से निराशाजनक सिद्ध हुई। उनका सामाजिक विश्लेषण और राजनीतिक उद्देश्य उन वर्षों के लिए पूण रूप से उपयुक्त थे जब स्पन के गहयुद्ध मे मड्रिड का पतन नही हुआ था और म्यूनिख के आत्मसमपण की तैयारी हो रही थी। अपन जीवन के अतिम दिनो मे वे ततीय विश्वयुद्ध की सभावना से चिंतित थे और उसकी छाया से आतकित विश्व की रक्षा का प्रयत्न कर रहे थे। तीसरे विश्वयुद्ध के चरित्र और लक्षणो की उन्ह अच्छी पहचान थी। वे मानवता को उसकी विभीषिका से बचाना चाहते थे।[5]

यह सभव है कि कालातर म लोग लास्की के शिक्षक, पत्रकार और व्यावहारिक राजनीतिज्ञ के रूपा को भूल जाए परतु बीसवी सदी म आग्ल-सक्सन जगत क एक महत्त्वपूण राजनीतिक चिंतक के रूप म उनकी उपलब्धिया अमर रहेंगी। कुछ आलोचक विशेषकर आदशवादी दाशनिक लास्की को राजनीतिक दाशनिक के रूप मे स्वीकार करन को तयार नही हैं। लास्की पारपरिक

राजनीतिक चिंतन की धाराए

दार्शनिकों की तरह किसी विशेष दार्शनिक प्रणाली के निर्माता नहीं थे। उनकी दृष्टि मे राजनीतिक दर्शन कुछ स्वयसिद्ध बौद्धिक परिकल्पनाओं पर आधारित एक अपरिवर्तनीय वैचारिक प्रणाली नहीं है। राजनीतिक सिद्धात का राजनीतिक व्यवहार के सदर्भ में निरन्तर विकास होता है। लास्की ने राजनीतिक बुद्धिवाद पर आधारित कोई रूढ़िवादी राजनीतिक दर्शन तो प्रस्तुत नहीं किया पर आधुनिक राज्य के सिद्धात की व्याख्या में व्याप्त सकट की ओर हमारा ध्यान अवश्य दिलाया। उन्होंने इतिहास और अनुभव से अनेक प्रमाण दिए जो राज्य की परपरागत व्याख्या को दोषपूर्ण सिद्ध करने मे सहायक हुए। लास्की ने समाज विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति की उपयोगिता पर बल दिया। अत उन्हे राजनीतिक दार्शनिक के बदले 'राजनीतिक वैज्ञानिक' के रूप में देखना अधिक युक्तिसगत होगा।

राजनीति विज्ञान मे व्यवहारवादी आदोलन के समर्थक लास्की के राजनीतिक चिंतन को अवैज्ञानिक मानते है। उनका कथन है कि समाजवादी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता के कारण उनका चिंतन मूल्यनिरपेक्ष नहीं है। वे राजनीतिक सस्थाना के वैधानिक ऐतिहासिक पक्ष की व्याख्या पर अधिक ध्यान देते है और मार्क्सवाद के प्रभाव में आने के पश्चात उनके आर्थिक पक्ष पर बल देते हैं। व मनोविज्ञान और विशेषत मनोविश्लेषण एव समाज विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध शोध सामग्री का अपने राजनीतिक चिंतन में समुचित उपयोग नहीं करते। वस्तुत व्यवहारवादी लेखन स्वय प्रतिबद्धता से रहित नहीं है क्योंकि उसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान व्यवस्था का समर्थन है। वह राजनीतिक अर्थ विज्ञान (Political Economy) के सदर्भ में राजनीति के विश्लेषण पर कोई ध्यान नहीं देती। अत अधिकाश व्यवहारवादी लेखन लास्की के राजनीतिक चिंतन की तुलना में कहीं अधिक अपूर्ण और एकागी है।

## राजनीतिक चिंतन का विकास

लास्की के राजनीतिक चिंतन को प्रोफेसर कटलिन ने तीन चरणों मे विभाजित किया है (1) बहुलवादी, (2) व्यक्तिवादी और (3) मार्क्सवादी। प्रोफेसर हर्बर्ट डीन ने उनके चिंतन का अध्ययन पाच चरणों में बाटकर किया है (1) बहुलवादी, (2) फेबियन समाजवादी (3) मार्क्सवादी, (4) युद्धकालीन तथा (5) युद्धोत्तर। दोनों इस बात से सहमत हैं कि लास्की 1914 से 1924 तक बहुलवादी विचारधारा के समर्थक रहे। द्वितीय चरण 1925 से 1931 तक रहा जिसे कैटलिन व्यक्तिवाद तथा ऐथनेसियन दृष्टिकोण से प्रभावित चरण मानते हैं। कटलिन के अनुसार इस चरण मे लास्की के चिंतन का केंद्रबिंदु समुदाय के स्थान पर व्यक्ति की स्वतत्रता और सामर्थ्य है। इसके विपरीत हर्बर्ट डीन लास्की के द्वितीय चरण के चिंतन को फेबियन समाजवाद की सज्ञा देते हैं क्योंकि

इस चरण मे वे सांविधानिक उपायो से राज्य द्वारा सचालित समाजवादी अर्थ-व्यवस्था की स्थापना का समर्थन करते हैं।

हर्बट डीन तथा कैटलिन 1932 से लास्की के तृतीय अर्थात मार्क्सवादी चरण का प्रारभ मानते हैं। कैटलिन के अनुसार यह चरण लास्की के जीवन पर्यंत चलता है। हर्बट डीन के अनुसार लास्की ने 1940 मे अपने राजनीतिक चिंतन को फिर एक नया मोड दिया जिसे वे युद्धकालीन चरण मानते हैं। इस चरण मे लास्की के चिंतन पर मार्क्सवाद का प्रभाव कम हो गया। अंतिम चरण मे लास्की के चिंतन का केंद्रबिंदु अंतर्राष्ट्रीय राजनीति रहा और वे पुन लोक-तांत्रिक समाजवाद के पूर्ण समर्थक बन गए। हर्बट डीन के कथनानुसार लास्की के विचारो की व्याख्या समय क्रम के अनुसार करना अधिक उपयुक्त है। उनका विषय के अनुसार विवेचन करना अनुचित है क्योकि भिन्न भिन्न चरणो मे उसी विषय के सबध मे उनके विचारो मे बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है जबकि एक ही चरण मे उनके विभिन्न विषयो पर विचार शृंखलाबद्ध हैं। अत हर्बट डीन की मान्यता है कि लास्की ने राष्ट्रीय तथा अतर्राष्ट्रीय परिस्थितियो के अनुसार अपनी विचारधारा मे मौलिक परिवर्तन किए और इन महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो को परिलक्षित करना ही उनकी शोध का मुख्य ध्येय है।[6]

समीक्षा की दृष्टि से लास्की के राजनीतिक चिंतन के विकास को ध्यान मे रखना आवश्यक है। उनके विचारो की व्याख्या के लिए उपर्युक्त लेखको ने उनके चिंतन को विभिन्न चरणो मे बाटना सुविधाजनक माना है। यह सही है कि लास्की प्रारभ मे बहुलवादी थे पर इसके साथ ही उनके चिंतन मे इस समय भी व्यक्तिवाद और समाजवाद के सिद्धांत निहित थे। दूसरे चरण मे भी 'ए ग्रामर आफ पालिटिक्स' मे उन्होने सप्रभुता के सिद्धांत को त्याज्य बताया। तीसरे चरण मे वे मार्क्स के कुछ सिद्धांतो से प्रभावित हुए परंतु उन्हे मार्क्स-वादी मानना अनुचित है। लेबर पार्टी के सदस्य के रूप मे उनकी विचारधारा प्रारभ से अत तक लोकतांत्रिक समाजवाद रही है। कैटलिन और हर्बट डीन लास्की के राजनीतिक चिंतन के इस मौलिक तत्त्व को भुला देते हैं। स्वय समाजवाद के विरोधी होने के कारण ये दोनो लास्की के विचारो को तोड-मरोडकर पेश करते है और फिर उन्हे अपनी पक्षपातपूर्ण आलोचना का लक्ष्य बनाते हैं।

यदि हम इस बात को याद रखें कि लास्की के राजनीतिक चिंतन का मूल सिद्धांत लोकतांत्रिक समाजवाद है तो सुविधा के लिए उनकी विचारधारा के विकास के तीन स्तर माने जा सकते हैं। प्रारभ मे वे बहुलवादी समाजवादी हैं और प्रूधो और सोरल के समाजवादी आदर्शों से प्रेरणा ग्रहण करते है पर उनके द्वारा प्रस्तुत राज्य के नकारात्मक रूप को स्वीकार नही करते और न वर्ग सघर्ष की आवश्यकता पर बल देते हैं। धीरे धीरे वे फेबियन समाजवाद की

आर झुकते हैं और समाजवाद की स्थापना मे राज्य के महत्त्वपूर्ण योगदान को स्वीकार कर लेते हैं। सिडनी वेब, एच० जी वेल्स, ग्राह्म वाल्स और बर्नार्ड शा लोकतांत्रिक समाजवाद की व्याख्या म उनके सहयोगी बन जाते हैं। तदुपरात वे स्ट्रेची, सिडनी वेब, जी० डी० एच० कोल स्टफर्ड क्रिप्स इत्यादि के सहयोग स लेबर पार्टी म वामपक्षी बुद्धिजीवियो की टोली बनाकर लोकतांत्रिक समाजवाद को प्रगतिशील मोड़ देने का प्रयत्न करते हैं। मार्क्सवादी परपरा के प्रति उनका नकारात्मक रुख कम हो जाता है और वे मार्क्सवाद मे सशोधन कर उसे ब्रिटिश परिस्थितियो के अनुकूल ढालना चाहते हैं। 1931 के पश्चात लास्की को नवमार्क्सवादी या सशोधनवादी समाजवादी माना जा सकता है। प्रत्येक स्तर पर लास्की का राजनीतिक चिंतन लोकतांत्रिक समाजवाद की परिधि के अदर है और सिडीकेटवाद, श्रेणी समाजवाद अथवा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की परिधि के बाहर है।

## बहुलवादी समाजवाद (1914–24)

लास्की के चिंतन के विकास की शृखला म बहुलवादी समाजवाद पहली कडी है। बहुलवादी सिद्धात राज्य की सप्रभुता को अस्वीकार करता है। बहुलवाद से प्रभावित होकर लास्की ने अपनी प्रथम तीन प्रकाशित पुस्तको मे सप्रभुता के सिद्धात की तीव्र आलोचना की है। इन पुस्तको के नाम हैं (1) सप्रभुता की समस्या, (2) आधुनिक राज्य म सत्ता का रूप, तथा (3) सप्रभुता के आधार तथा अन्य निबंध। बहुलवाद का थोडा बहुत प्रभाव लास्की के राजनीतिक दर्शन पर जीवन पर्यत रहता है। जिन दिनो उनके चिंतन पर मार्क्सवाद का प्रभाव पडने लगा था, उन दिनो भी बहुलवादी आदर्श के प्रति उनम भावनात्मक आकर्षण बना रहा। जब उन्होने पूजीवादी समाज के मार्क्सवादी विश्लेषण की प्रामाणिकता स्वीकार कर ली, तो भी वे अपने बहुलवादी अतीत के कारण साम्यवादी अधिनायकतत्र की सत्तावादी प्रवृत्तियो का प्रबल विरोध करते रहे।

इसके अतिरिक्त हमे ध्यान रखना चाहिए कि मार्क्स के श्रेणी विहीन समाज म राज्य को समाप्त कर दिया जाएगा। मार्क्स द्वारा प्रस्तावित राज्य विहीन समाज म मनुष्य ऐच्छिक समुदायो द्वारा सास्कृतिक और आर्थिक आवश्यकताओ की पूर्ति करेंगे। बहुलवाद सप्रभुता रहित राज्य और मार्क्स के श्रेणी विहीन समाज म एक समानता यह है कि दोनो स्थितियो मे समाज का सचालन ऐच्छिक समुदायो के आपसी सहयोग पर निर्भर होगा। इस प्रकार लास्की के बहुलवादी समाजवाद और मार्क्स के श्रेणी विहीन साम्यवादी समाज के आदर्श म भावनात्मक साम्य है।

राज्य के बहुलवादी सिद्धांत को कभी कभी राजनीति विज्ञान के क्षेत्र मे

एक विप्लवी विचारधारा के रूप मे प्रस्तुत किया जाता है। क्रियावादी बहुलवाद (Pragmatic Pluralism) के बौद्धिक स्रोत हम डेविड ह्यूम के संशयवाद (Scepticism) और संवेदनवाद (Sensationalism) मे देख सकते हैं।[7] ह्यूम के सिद्धातो से प्रभावित होकर जहा बेंथम और आस्टिन ने राज्य की सप्रभुता के सिद्धात का प्रतिपादन किया, वहा विलियम इलियट के कथनानुसार वे क्रियावादी बहुलवाद के प्रेरक भी है जो सप्रभुता के सिद्धात का खडन करता है। इगलैंड मे राजनीतिक चिंतन के इतिहास मे एकसत्तावादी (Monistic) सिद्धात की पुष्टि आक्सफोर्ड के आदर्शवादी विचारको ने की। इन विचारको के नाम है ग्रीन, ब्रेडले और बोसाके। ये जर्मन दार्शनिक इमेनुयल काट और हीगल के सिद्धातो को इगलैंड की परिस्थितियो मे लागू करने का प्रयत्न कर रहे थे।

इगलैंड मे एकसत्तावादी सिद्धात का विरोध सर्वप्रथम उदारवादी विचारक हाबहाउस ने किया। उन्होने राज्य के आधिभौतिक सिद्धात (Metaphysical Theory of the State) की आलोचना करते हुए एकसत्तावाद का विरोध किया। हाबहाउस के विचारो म बहुसत्तावाद की झलक है परतु उन्हें बहुलवादी समझना उचित नही है। आगे चलकर उनके विचारो से प्रभावित होकर बाकर, फिजिस, लिंडसे तथा लास्की ने राज्य के बहुसत्तावादी सिद्धात का अधिक स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया। बाकर और लिंडसे के चिंतन मे बहुलवादी मनोवृत्ति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। फिजिस और लास्की के लेखन मे बहुलवादी चिंतन पूर्ण रूप से मुखर हो उठा है। यहा तक कि डायसी भी, जो स्वय को आस्टिन का शिष्य घोषित करते थे, राज्य की सप्रभुता पर व्यावहारिक सीमाओ की चर्चा करते थे।

लास्की के अनुसार राज्य की सप्रभुता एक सैद्धातिक आदर्श है जो व्यवहार मे दुर्लभ सिद्ध होता है। वे एकसत्तावाद की आलोचना क्रियात्मक (Pragmatic) दृष्टिकोण के अनुसार करते हैं। उनके लेखन म हम बहुलवादी सिद्धात का अत्यत सक्षम प्रतिपादन पाते हैं। विलियम इलियट का विचार है, 'आधुनिक राजनीतिक चिंतन की सभी विविध धाराओ म, जिन्होने राज्य की संरचना के आधार के रूप मे एकात्मक सप्रभुता की परिकल्पना का विरोध किया है, श्री लास्की की कृतियां सबसे अधिक हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। शायद यह उनकी आकर्षित शैली का प्रभाव है जिसम वे पारपरिक राजनीतिक सिद्धातो को चुनौती देते हैं और सभवत यह उनके सिद्धातो के सकारात्मक तत्व का परिचायक है।'[8]

सप्रभुतासपन्न राज्य की आलोचना करने म लास्की न ग्याक, मेटलैंड और फिजिस के द्वारा प्रस्तुत निगमो के सिद्धात का भी उपयोग किया। व्यक्तिवादियो म निरकुश एकसत्तावादी राज्य का विरोध व्यक्तिगत स्वतत्रता की रक्षा

करने के लिए किया था। बहुलवादियो ने सप्रभुतासपन्न राज्य की निंदा समुदायो की स्वायतता बचाने के लिए की। लास्की ग्याक और मेटलैंड के इस सिद्धात से सहमत हैं कि समुदायो का अपना स्वतत्र नैतिक व्यक्तित्व है। राज्य की सप्रभुता का सिद्धात समुदायो के नैतिक विकास म बाधक सिद्ध होता है। अत समुदायो क हित के लिए राज्य की सप्रभुता का सिद्धात अस्वीकार कर देना चाहिए।

इस सबध म विलियम इलियट ने बाकर के मत का उद्धरण दिया है, 'अब हम व्यक्ति बनाम राज्य की जगह समुदाय बनाम राज्य का उल्लेख करते हैं। आजकल सघवाद की बहुत चर्चा हो रही है। इस चर्चा के पीछे यह भावना है कि एकसत्तात्मक राज्य, जो एकछत्र सप्रभुता पर आधारित हो, एक ऐसी सदद्दूण परिकल्पना है जो जीवन के तथ्यो पर सही नही उतरती। मेरी मान्यता है कि राज्य एक सघात्मक समाज जैसा है जिसकी सीमाओ के अतगत विभिन्न जातिया, विभिन्न धर्मों और विभिन्न आर्थिक समुदायो के सदस्य रहते हैं और ये समुदाय अपने सदस्यो के जीवन पर पर्याप्त नियत्रण रखते हैं।'[9]

फ्रासीसी विधानवेत्ता दूग्वी क विचारो का भी लास्की की राज्य सबधी व्याख्या पर प्रभाव पडा है। दूग्वी ने कानून का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया और विधानशास्त्र म सामाजिक सबद्धता (Social Solidarity) के सिद्धात का प्रतिपादन किया। उनके कथनानुसार समाज कानूनो का निर्माण करता है। कानून समाज को स्थिर और सगठित रखने मे सहायक है। अत कानून, जैसी कि आस्टिन की परिकल्पना है, राजनीतिक सप्रभु की आज्ञा नहीं, राज्य कानून का जन्मदाता नहीं अपितु समाज के प्रतिनिधि के रूप मे कानूनो को कार्यान्वित करता है और समाज के सगठन को सुरक्षित रखता है।

लास्की ने दूग्वी के विचारो का उपयोग राज्य की सप्रभुता के सिद्धात के खडन के लिए करते हुए यह भुला दिया कि दूग्वी जहा राजनीतिक एकसत्तावाद के विरोधी हैं वहा वे सामाजिक एकसत्तावाद के समर्थक भी है। दूग्वी के विचारो के आधार पर दुरखीम और क्रैबे ने वधानिक और सामाजिक क्षेत्रो मे नए निष्कर्ष निकाले और सामाजिक एकसत्तावाद की परिकल्पना का अनुमोदन किया। दूग्वी के सामाजिक सबद्धता के सिद्धात का उपयोग फासीवादियो (Fascists) ने सर्वसत्तावादी (Totalitarian) सरकारों की स्थापना के लिए भी किया। अत दूग्वी क वैधानिक सिद्धात और लास्की के बहुलवाद मे एक निहित अतर्विरोध है।

विलियम जेम्स के अनुयायी के रूप मे लास्की राजनीतिक सप्रभुता के सिद्धात का क्रियावाद (Pragmatism) की कसौटी पर कसते हैं। सत्य की क्रियावादी परख उसकी व्यावहारिकता है। कोई भी सिद्धात सही है यदि वह निश्चित परिस्थितियो मे कार्यान्वित करने पर उपयोगी सिद्ध होता है। लास्की

के मतानुसार राजनीतिक सम्प्रभुता का सिद्धात भूतकाल में यूरोप म धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना मे सहायक सिद्ध हुआ क्योंकि इसकी मदद स राजाओं ने पाप की प्रधानता को अस्वीकार कर दिया। इसने जनता को एक राजनीतिक सम्प्रभु की अधीनता स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया और सघपरत धार्मिक सम्प्रदायो को एक सगठित राष्ट्र के रूप म बदल दिया। आधुनिक परिस्थितियों मे दो कारणो से इस सिद्धात की उपयोगिता लुप्त होती जा रही है। एक कारण है राज्य के अतगत शक्तिशाली समुदाया की स्थापना और दूसरा कारण है अतराष्ट्रीय सगठनो का निरतर बढता हुआ प्रभाव।

अन्य समुदायो क सदभ म राज्य केवल समाना मे प्रथम माना जा सकता है। लास्की का मत है, हम राज्य रूपी समुदाय को कोई विशेष महत्त्व नही देते। हम उसे अन्य समुदाया का रचयिता नही मान सकते। हम चाहते हैं कि यह अपने कार्यों के परिणामा मे अपना औचित्य सिद्ध कर। अन्य समुदाया के काय स प्रेरित होकर इसे स्वय कायशील होना चाहिए। य समुदाय राज्य के सहयोगी अथवा पूरक हैं। यदि राज्य अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखना चाहता है, तो उसे अपनी सर्वोच्चता का दावा नही करना चाहिए। किसी अन्य समुदाय की तरह राज्य क्या है और क्या हो सकेगा, यह उसकी उपलब्धियो पर निभर है। इसी प्रकार यह अपने सचेतन जीवन के प्रकाश को प्रज्वलित रख सकता है।[10]

उपयुक्त कथन से यह स्पष्ट है कि आस्टिन की सम्प्रभुता सबधी परिकल्पना पर लास्की वधानिक स्तर पर प्रहार नही करते अपितु उनकी आलोचना का मुख्य पहलू नतिक है। वे स्वय यह स्वीकार करते हैं कि शुद्ध कानूनी पहलू से देखने पर निरकुश और असीमित राजसत्ता के सिद्धात म कोई दोष नही है। लास्की ने अपने दृष्टिकोण का इन शब्दो म स्पष्टीकरण किया है इसका अभिप्राय है कि न्यायालयो के लिए सर्वोपरि सस्था अर्थात ससद की इच्छा निर्विवाद रूप मे मान्य है। प्रत्यक न्यायाधीश बिना किसी हिचक के उसे स्वीकार कर लेता है जो निर्दिष्ट प्रक्रियाओ के अनुसार कानून का रूप ग्रहण करता है। राजनीतिक दशन के उद्देश्या को ध्यान म रखते हुए हम राजसत्ता की ऐसी अमूत और स्वयसिद्ध परिभाषा स्वीकार नही कर सकते। हम यह नही जानना चाहत कि कानून के अनुसार क्या सर्वोपरि है बल्कि यह जानना चाहते है कि वास्तव मे कौन अधिक शक्तिशाली है और किन कारणो से? यहा राजसत्ता की वधानिक परिकल्पना पूणत निरथक है। वास्तविक जीवन के क्षत्र में हमे राजसत्ता की सीमाओ के निर्धारण पर विशेष ध्यान देना होगा। इसलिए जो बात हमे प्रभावित करती है वह है कानूनी अधिकार और नतिक अधिकार का अतर।'[11]

इस प्रकार राज्य की स्थिति एक श्रमिक सघ या धार्मिक समुदाय जैसी

हो जाती है। यदि आदर्शवादी, जो राज्य को दैवी गुणो से विभूपित कर उसे पूजना चाहते हैं, एक प्रकार की अतिवादी भ्राति के शिकार हैं तो लास्की जैसे बहुलवादी भी, जो राज्य की दैवी प्रतिभा के भजक हैं और उसे ऐच्छिक समुदाय की श्रेणी मे रखना चाहते हैं, दूसरे ढग की अतिवादी गलती करते हैं।

लास्की राज्य की व्याख्या समाज की शक्ति व्यवस्था के सदभ मे करते हैं। उनके कथनानुसार, 'एकसत्तात्मक राज्य एक सोपानात्मक सघटन है जिसमे शक्ति, अतिम उद्देश्यो के लिए, एक केंद्र पर एकत्रित होती है। बहुलवाद के पक्षधरो का विश्वास है कि यह स्थिति प्रशासन के लिए अपूण और नैतिक रूप से अपर्याप्त है।'[1] एक ही केंद्रबिंदु पर सत्ता का होना एकसत्तात्मक राज्य का लक्षण है। बहुलवादी समाज म शक्ति किसी केंद्र पर इकट्ठी न होकर उसके सपूण शरीर म व्याप्त होनी चाहिए और उसे परिधि के प्रत्येक बिंदु को स्पश करना चाहिए। समथ समाज की स्थापना के लिए प्रशासन का विकेंद्रीकरण आवश्यक है।

प्रशासन के विकेंद्रीकरण के द्वारा ही हम एकसत्तात्मक राज्यो मे होने वाले प्रशासन के केंद्रीकरण की बढती हुई निरकुश प्रवत्तिया को रोक सकते हैं। लास्की का कथन है, "शक्तियो का विभाजन, न कि उनका केंद्रीकरण मनुष्यो म उत्तरदायित्व की भावना भरता है। कोई व्यक्ति अथवा विधानसभा, जिस पर कार्यों की विविधता का बोझ हो, न केवल अपने कर्तव्य के प्रति उपेक्षा दिखाएगा, अपितु वह उन स्थापित शक्तिशाली स्वार्थों के समक्ष आत्मसमपण कर देगा जो उसका ध्यान आकर्षित करने का तरीका जानते हैं। वह, जिसे दख न सके, अस्तित्वहीन समझेगा और जो अपनी बात न कह सके उसकी दृष्टि म सतुष्ट माना जाएगा। इसका परिणाम विप्लव हो सकता है पर अनुभव बताता है कि ऐसी स्थिति प्राय स्वेच्छाचारी एकतत्र को जन्म देती है।'[13] शासन का बहुलवादी सिद्धात वस्तुत सघीय है परतु लास्की की सघीयता की परिकल्पना क्षेत्र तक सीमित नही, वह कार्यो को भी प्रभावित करती है।

आर्थिक क्षेत्र म लास्की ने औद्योगिक सघवाद (Industrial Federalism) की परिकल्पना प्रस्तुत की है। औद्योगिक व्यवस्था की आधारशिला श्रमिक सघो मे होनी चाहिए। श्रमिक सघो को लास्की सामाजिक समुदायो के रूप मे देखते हैं, न कि वग सगठनो के रूप मे क्योकि मार्क्स के वग सघष के सिद्धात की छाप अभी लास्की के मस्तिष्क पर नही पडी है। वे श्रमिक सघो के सामुदायिक अधिकारो की रक्षा उसी प्रकार करना चाहते हैं जैसे वे समाज मे कायशील अन्य सभी समुदायो के अधिकारो की सुरक्षा चाहते हैं। इस अवसर पर उनका अथशास्त्रीय सिद्धात उनके सामान्य समाजशास्त्रीय सिद्धात का ही एक पहलू है। लास्की का कथन है 'इस प्रकार के सगठन से अभिप्राय है कि समाज का चरित्र तात्त्विक दृष्टि से सघीय है। इस तरह राज्य की सर्वोपरिता के रूप को

वस्तुत अस्वीकार कर दिया जाता है। यदि एक बार यह स्पष्ट कर दिया जाए कि कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहा राज्य का प्रवेश निषिद्ध है तो इन क्षेत्रो मे राज्य को *अपनी शक्ति का प्रयोग नही करना चाहिए। यह शक्तियों के विभाजन की ओर* सकेत नही करता अपितु कार्यो के सदभ मे सत्ता विभाजन चाहता है। यह ऐसे समाज का चित्रण है जहा सत्ता सोपानात्मक न होकर आपसी सहयोग पर आधारित है। सत्ता की इस नई परिभाषा का आधार काई स्वयसिद्ध प्रमाण भी नही। सामाजिक जरूरत के सदभ म इसम परिवतन किया जाना चाहिए। *इस नवीनता की सभावना के प्रति सदा सतक रहना चाहिए और औद्योगिक क्राति* अथवा युद्ध जैसी घटनाओ को ध्यान मे रखना चाहिए।'[14]

बहुलवादी चरण मे लास्की समाजवाद की परिभाषा औद्योगिक लोकतत्र के रूप म देते हैं। औद्योगिक लोकतत्र का अथ है—उद्योगो के सचालन मे श्रमिको को भागीदार बनाया जाए। औद्योगिक परिषदो के द्वारा कारखानो का प्रबध चलाया जाए। उद्योगो को निजी स्वामित्व से मुक्त कर श्रमिको के सामूहिक स्वामित्व म लाया जाए। वे राष्ट्रीयकरण के विरुद्ध हैं क्योकि उसके द्वारा उद्योगो का नियत्रण राज्य की नौकरशाही के हाथ म चला जाएगा। औद्योगिक लोकतत्र की व्यवस्था विकेंद्रीकरण के सिद्धात पर आधारित होगी। प्रत्यक उद्योग मे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर औद्योगिक परिषदे उसका सचालन करेंगी। राज्य का काय विभिन्न उद्योगो के आपसी विवादो मे फसला दना होगा और उपभोक्ताओ के हितो की रक्षा करना होगा। औद्योगिक लोकतत्र की स्थापना के लिए श्रमिको को आर्थिक क्षेत्र म सक्रिय आदोलन चलाने की जरूरत है। राजनीतिक दलबदी से श्रमिको को दूर रहना चाहिए। औद्योगिक लोकतत्र की स्थापना के पश्चात राज्य के सगठन को बहुलवादी दिशा म मोडा जा सकेगा। लास्की का बहुलवादी समाजवाद राज्य समाजवाद तथा श्रेणी समाजवाद के सिद्धातो के सामजस्य पर आधारित है।

## सक्रमणकालीन विचारधारा (1924–31)

लास्की ने 1925 मे 'राजनीति का एक व्याकरण' शीषक से एक नवीन कृति प्रकाशित की। इस कृति से लास्की के राजनीतिक चिंतन म सक्रमण कालीन चरण का प्रारभ हुआ। इस चरण म उन्होने अपने बहुलवादी सिद्धातो मे आशिक परिवतन किया। उन्होने अनुभव किया कि राजनीतिक पुनगठन मे बहुलवाद के द्वारा कोई मौलिक परिवतन नहीं लाया जा सकता। 'राजनीति का एक व्याकरण म लास्की ने बहुलवाद के सद्धातिक आदश को अस्वीकार नही किया परतु जसा विलियम इलियट ने बताया है, 'इस पुस्तक म वर्णित राज्य का सगठन बहुत कुछ एकसत्तात्मक ही है।[15]

अब लास्की के राजनीतिक चिंतन पर समष्टिवादी विचारो की छाप

स्पष्ट है। वे न केवल श्रेणी समाजवादी और श्रमिक संघवादी सुझावों की आलोचना करते हैं अपितु वेब के 'दो संसदों' का प्रस्ताव भी नामंजूर कर देते हैं। यह शासन में विकेंद्रीकरण के प्रति उनकी बढ़ती हुई उदासीनता को प्रकट करता है और उन्हें एकसत्तात्मक शासन प्रणाली के निकट लाता है। लेकिन लास्की का संक्रमणकालीन समष्टिवाद मार्क्सवादी समष्टिवादी सिद्धांत की तुलना में कहीं अधिक कोमल और लचीला है। उनके समष्टिवादी राज्य की एकसत्तात्मक कठोरता उनकी बहुलवादी विरासत तथा नई व्यक्तिवादी मान्यताओं के संदर्भ में कुछ द्रवित हो जाती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि लास्की ने 'राजनीति का एक व्याकरण' में राजनीति विज्ञान के सिद्धांतों को क्रियात्मक (Pragmatic) रूप देने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। अत यह लास्की की अमर कृतियों में से एक है। विलियम इलियट का विचार है, 'अपने विस्तार के बावजूद और अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और मतों को वास्तविक तथ्य मान लेने की प्रवृत्ति के बावजूद यह सामयिक राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसके समर्थन में विशेष प्रकार की अनेक दलीलों में मुख्य यह है कि इसमें आधुनिक राजनीतिक बहुलवाद के सर्वमान्य नेता ने राजनीतिक पुनर्निर्माण के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत किया है। इसकी महत्ता का दूसरा कारण यह है कि अंगरेजी में राजनीति की गंभीरतम समस्याओं का यह सबसे महत्त्वाकांक्षी सर्वेक्षण है, जबकि लेखक ने स्वीकार किया है कि कृति से संबद्ध समस्याओं का उल्लेख छोड़ दिया गया है। इस पुस्तक में लास्की ने न केवल राजनीतिक नीतिशास्त्र की रचना की है, अपितु उन राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की है जिनके द्वारा नैतिक विश्व व्यवस्था की स्थापना की जाएगी और औद्योगिक समाज में स्वतंत्रता के क्षेत्र को बढ़ाने वाले 'नए राज्य' की नींव पड़ेगी।'[16]

राजनीति के व्याकरण में लास्की ने एक नवीन राजनीतिक व्यवस्था के नैतिक आधारों की चर्चा की है। जैसा लार्ड ऐक्टन का विचार है कि राजनीति विज्ञान में महत्त्वपूर्ण प्रश्न यही है कि सरकार के नैतिक दृष्टि से उचित कार्यों को निश्चित किया जाए, न कि सरकार के वर्तमान कार्यों का विवरण दे दिया जाए। सरकार के ऐसे कार्य, जो मनुष्य जाति की अंतरात्मा के विरुद्ध हों, कदापि उचित नहीं ठहराए जा सकते। लास्की ने लार्ड ऐक्टन के इस नैतिक प्रश्न का उत्तर दिया है। इसी नैतिक दृष्टिकोण के कारण लास्की के राजनीतिक चिंतन में कल्पनाजनित आदर्शवादी तत्त्व का समावेश हो गया है।

जहां यह आदर्शवादी तत्त्व अनुपस्थित है, लास्की का चिंतन बहुत कुछ यथास्थितिवादी हो जाता है और वे समाज के ढांचे में कोई मौलिक परिवर्तन का सुझाव देने के बदले साधारण संरचनात्मक या कार्यात्मक संशोधन के पक्षपाती प्रतीत होते हैं। अपनी अस्पष्ट समाजवादी आकांक्षाओं के कारण लास्की

एक प्रगतिशील विचारक मालूम होते है पर इन आकाक्षाओ को वे कोई निश्चित दिशा दने मे असमथ है। समाजवादी आदर्शो की प्राप्ति के लिए जिस क्रातिकारी सामाजिक प्रयास की जरूरत है, उससे उन्ह डर लगता है।

एक अय पुस्तक 'साम्यवाद' (1927) मे लास्की ने साम्यवादी राजनीतिक दशन की दिलचस्प समीक्षा प्रस्तुत की है। जैसा उन्होन स्वय स्वीकारा है कि वे साम्यवाद की विवेचना एक मित्र के रूप मे नही अपितु एक विरोधी के रूप मे कर रहे हे। उनका कथन है, 'साम्यवाद के विषय मे कोई कृति निष्पक्ष होने की आशा नही कर सकती क्योकि उसकी समस्याए तुरत समाधान चाहती है। अत पक्षपात, कम से कम अचेतन रूप मे, होना स्वाभाविक है। मैं केवल इतना कह सकता हू कि मैंने साम्यवादी 'थीसिस' को, उन सभी विषयो पर जिनकी चचा मैं करना चाहता था, इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि उसके समथक भी यह स्वीकारेंगे कि उनका विरोधी भी उसके साथ समुचित न्याय कर सकता है।'[17]

साम्यवाद के अय समीक्षकों की तरह लास्की का भी विचार है साम्य वाद की प्रगति का मूल कारण उसका आदशवाद है, न कि उसका यथाथवाद, उसका आध्यात्मिक आश्वासन है, न कि भौतिक भविष्य। यह एक ऐसा सप्रदाय है जिसमे मानसिक भ्राति, नैतिक अधविश्वास और सामाजिक विकृति है। इन त्रुटियो के बावजूद धमसप्रदायो का विस्तार होता रहा है। इतिहास मे मनुष्य जाति, एसे प्रत्येक सप्रदाय का, जो अपना मदिर अध्यात्म की ऊचाइयो मे बनाता है, आश्चयजनक रूप से स्वागत करती है। इस नए मजहब का जवाब इसके अनुयायियो का दमन करना नही हो सकता। इसका सही उत्तर इस प्रमाण म है कि जो इस सप्रदाय के बाहर है व भी जनता के सम्मुख एक एसा विकल्प रखें जो उनके हृदय को आकर्षित करने मे और उनके स्वर्णिम भविष्य के निर्माण मे सहायक हो सके।'[18]

लास्की की यह आलोचना एक अधसत्य पर आधारित है। साम्यवाद की सफलता का रहस्य उसका 'विकृत आदशवाद' नही माना जा सकता। मार्क्सवाद का सद्धातिक आधार धार्मिक और दाशनिक आत्मवाद की अस्वीकृति है। उसका दशन द्वद्वात्मक भौतिकवाद है। ऐतिहासिक तथ्यो और प्रक्रियाओ का मार्क्सवादी पहले भौतिक विश्लेषण करते हैं और उसके अनुसार अपनी राजनीतिक नीतिया निर्धारित करत ह। यह कोरे अधविश्वास पर आधारित मजहब नही जैसा उसके विरोधी उसे चित्रित करना चाहते है। साम्यवाद एसे समाज विज्ञान पर आधारित है जिसका क्रमिक विकास जनता के अनुभवो के आधार पर होता है। साम्यवाद की सफलता उसके तथाकथित आदशवाद के कारण नही अपितु उसके भौतिकवादी यथाथ दशन के कारण हुई है। साम्य वाद के आदश भी इसी भौतिकवादी दशन से प्रेरित हैं। वस्तुत लास्की जिस

स्वर्णिम विकल्प की चर्चा करते हैं, उसका आधार तो एक प्रकार से कल्पनाजनित आदर्शवाद ही है। उनका सावैधानिक समाजवाद लोकतंत्र और समाजवाद के एक असभव मिश्रण पर आधारित है।

वर्गों में विभक्त समाज म राजा की क्रियाए शासक वग के हितो की सुरक्षा और प्राप्ति के लिए प्रयुक्त होती है। लास्की जब सामान्य इच्छा की आदर्शवादी परिकल्पना की समीक्षा करते हैं तो वे इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। साथ ही वे राज्य से आशा करते हैं कि वह सामान्य हित के लिए काय करे। यदि राज्य सामान्य इच्छा का प्रतिनिधि नही तो यह तकसम्मत है कि वह सामान्य हित का साधक भी नहीं हो सकता। एक पूजीवादी राज्य श्रमिक जनता को सामान्य इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, फिर वह उनके हितो का सरक्षक कैसे हो सकता है? लास्की के चिंतन म इस समय यही अतर्विरोध है। लास्की के दिमाग म इगलैण्ड की परिस्थितिया हैं, जहा सावैधानिक प्रक्रियाओ म श्रमिक दल भाग लेता है। श्रमिक दल की उपस्थिति और उसका सत्ता ग्रहण इस बात की गारटी है कि ब्रिटिश राज्य वगनिरपेक्ष बनकर सामान्य हित का साधन बन सकता है।

इसके अतिरिक्त उनके राजनीतिक व्याकरण मे कुछ अन्य असगतिया भी हैं। उनकी स्वतत्रता की परिकल्पना बहुत कुछ जान स्टुअट मिल की परिकल्पना जैसी है। स्वतत्रता एक स्वयसिद्ध नैतिक मूल्य है जिसे राज्य को सीमित करने का अधिकार नहीं हो सकता। इस प्रकार की स्वतत्रता एक स्थिर और शात सामाजिक वातावरण मे ही सुलभ हो सकती है। स्वतत्रता की यह वयक्तिक परिकल्पना स्वय लास्की के समाजवादी दशन के अनुकूल नही। वे उद्योगो का राष्ट्रीयकरण चाहते हैं और यह कदम राज्य की शक्ति बढाता है और व्यक्ति की स्वतत्रता को सीमित करता है। इसी प्रकार उनके द्वारा प्रतिपादित सत्ता का सघीय सिद्धात उनकी समाजवादी अभिलाषाओ से मेल नहीं खाता क्योकि वे सत्ता का कार्यात्मक विकेंद्रीकरण भी चाहते हैं और राज्य द्वारा अनेक उद्योगो का राष्ट्रीयकरण भी।

इसी प्रकार उनके सप्रभुता सबधी सिद्धात मे और उनके व्यावहारिक राजनीतिक और आर्थिक प्रस्तावो भी असगति है। वे राजसत्ता के सिद्धात को राजनीति विज्ञान से बहिष्कृत करना चाहते हैं और साथ ही एक ऐसी एकसदनीय ससद की स्थापना करना चाहते हैं जिसकी शक्ति पर कोई अकुश न हो और जो समाज की अथव्यवस्था मे बेरोकटोक परिवतन कर सके। बहुलवादी भावना का एक उदाहरण हम उनकी सलाहकार परिषदो म देखते हैं जिन्हे केवल सलाह देने का अधिकार है। ये परिषदें विभिन्न समुदायो और गुटों को प्रतिनिधित्व देंगी परतु इनकी उपस्थिति से सर्वोपरि ससद की सत्ता पर कोई अकुश नही लगता। विलियम इलियट ने इन असगतियों की ओर

सकेत करते हुए कहा है कि लास्की के 'राजनीतिक व्याकरण' के प्रथम खड के सिद्धातो और दूसरे खड के सस्थानात्मक सुधारो के सुझावो मे कोई सामजस्य नही है।[19]

इन अतर्विरोधो का मूल कारण लास्की द्वारा दो परस्पर विरोधी विचार-धाराओ मे कृत्रिम तरीके से सामजस्य स्थापित करने का प्रयत्न है। पहली विचारधारा अराजकतावादी बहुलवाद है जो उनकी बहुमूल्य मानसिक विरासत है। दूसरी विचारधारा समष्टिवादी समाजवाद है जो उनके आदशवादी भविष्य का स्वर्णिम स्वप्न है।

इसी स्वर्णिम स्वप्न का एक पहलू राष्ट्र सघ के सबध मे उनकी परि-कल्पना है जिसे वे एक महान अतर्राष्ट्रीय सघ राज्य के रूप मे विकसित होते हुए देखना चाहते थे। वे राष्ट्र सघ के द्वारा मानव जाति के लिए शाति और न्याय की स्थापना करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि राष्ट्र सघ शीघ्र ही राष्ट्रीय राज्यो की सप्रभुता समाप्त करने मे सफल हो जाएगा। लास्की राष्ट्रवाद की महान शक्ति से कदाचित अपरिचित थे और औपनिवेशिक तथा अधऔपनिवेशिक देशो म राष्ट्रवाद के ऐतिहासिक योगदान को समझने मे असमथ थे।

इन परतत्र देशो की जनता अपने देशो मे सप्रभुतासपन्न पृथक राज्यो का गठन चाहती थी। उनके स्वाधीनता आदोलन का यही अतिम लक्ष्य था। वे साम्राज्यवादियो से सघष के पश्चात उपलब्ध राष्ट्रीय स्वतत्रता का उपभोग करना चाहते थे और इस स्वतत्रता को तथाकथित अतराष्ट्रीय सघ को समर्पित करने के लिए तैयार नही थे क्योकि वे समझते थे कि अतराष्टीय सगठन भी बडी साम्राज्यवादी ताकतो के हाथ मे कठपुतली की तरह काम करेगा।

इसके अतिरिक्त साम्राज्यवादी शक्तियो की आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण कोइ भी अतराष्ट्रीय सगठन उदार और प्रगतिशील नीतिया अपनाने मे असमर्थ ही रहेगा। राष्ट्र सघ के कार्यो से यह सिद्ध हो गया कि लास्की की आशाए निमूल थी और वे कोरे आदशवाद पर आधारित थी। लास्की ने 'राजनीति का एक व्याकरण' के दूसरे सस्करण मे स्वय अपनी भूल स्वीकार कर ली और कहा कि राष्ट्रसघ को अतराष्ट्रीय महाराज्य (International Super-State) समझना भ्रातिपूण है।[20]

इन त्रुटिया के बावजूद लास्की के सक्रमणकालीन राजनीतिक चिंतन के रचनात्मक तत्त्व के महत्त्व को कम नही समझना चाहिए। सामान्य इच्छा के सिद्धात की आलोचना, राजनीतिक सस्थानो के श्रेणी चरित पर बल, समाज मे सपत्ति सबधो के पुनगठन के पक्ष मे युक्ति सप्रभुता के दुरुपयोग की आलोचना, स्वतत्रता से प्रेम और अत्याचारी शासन से घणा, मानव जाति की तात्त्विक एकता म विश्वास इत्यादि उनकी रचनात्मक राजनीतिक विचारधारा

के कुछ उदाहरण हैं। 1931 में प्रकाशित 'राजनीति की प्रवेशिका' लास्की के संक्रमणकालीन विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत करती है।

लास्की के राजनीतिक चिंतन की सीमाएं उनके राजनीतिक अनुभव की सीमाओं में परिलक्षित होती हैं। उनका अनुभव ब्रिटिश राजनीति की सीमाओं से आबद्ध था। लास्की के समाजवादी सुझाव ब्रिटिश परिस्थितियों के अनुकूल थे जहां ऐतिहासिक कारणों से मजदूर आंदोलन में क्रांतिकारी विचारों का पूर्ण अभाव था। 'राजनीति का एक व्याकरण' वस्तुतः ब्रिटिश मजदूर दल की नैतिक संहिता थी। ब्रिटेन के समाजवादी बुद्धिजीवियों के लिए यह एक प्रेरणादायक ग्रंथ था। परंतु वह लास्की के राजनीतिक दर्शन का केवल संक्रमणकालीन रूप था। 1929 से 1933 तक पूंजीवादी जगत में जो आर्थिक संकट आया, उसके परिणामस्वरूप लास्की के चिंतन में तात्त्विक परिवर्तन हुए। मार्क्स के राजनीतिक चिंतन से लास्की प्रभावित होने लगे और तीसरे चरण में उन्होंने स्वयं को मार्क्सवादी घोषित कर दिया।

## लास्की का नवमार्क्सवाद (1931–50)

रूसी क्रांति के पश्चात पूंजीवादी जगत के लिए सबसे बड़ी चुनौती एक आर्थिक संकट के रूप में आई। इस आर्थिक संकट ने पूंजीवादी प्रणाली को क्षतविक्षत कर दिया। संयुक्त राज्य अमरीका से प्रारंभ होकर विश्व के सभी पूंजीवादी राज्य इसकी चपेट में आ गए। सोवियत संघ ही एकमात्र ऐसा देश था जो अपनी समाजवादी अर्थव्यवस्था के कारण इस आर्थिक संकट से अछूता रहा। यह समाजवादी प्रणाली की श्रेष्ठता का एक प्रमाण था।

बुर्जुआ उदारवाद पर आधारित राजनीतिक संस्थानों के स्थान में फासिस्ट तानाशाहियां स्थापित होने लगीं। जहां ऐसा न हुआ वहां प्रतिक्रियावादी दलों ने मिलकर संयुक्त मंत्रिपरिषदें स्थापित कीं जो आपातकालीन शक्तियों के प्रयोग द्वारा शासन करने लगीं। मजदूर वर्ग के दलों पर पाबंदी लगाई गई और उनका दमन किया गया। गृहयुद्ध का वातावरण छा गया। यूरोप का मजदूर वर्ग आपसी फूट का शिकार था। इसी फूट के कारण सारे यूरोप में प्रतिक्रांति को सफलता मिली।[1]

इंग्लैंड में अल्पसंख्यक मजदूर सरकार को पद से हटा दिया गया और सभी राजनीतिक दलों के प्रतिक्रियावादी तत्त्वों की सांठगांठ से एक तथाकथित राष्ट्रीय सरकार बना दी गई। इन घटनाओं ने लास्की को विश्वास दिलाया कि बुर्जुआ लोकतंत्र के संसदीय संस्थान इतने बड़े संकट को झेलने में पूर्णतया असमर्थ थे। लास्की ने देखा कि यूरोप के शासक वर्ग को यदि लोकतंत्र और पूंजीवाद में से एक को चुनना पड़े तो वह संभवतः लोकतंत्र का त्याग कर पूंजीवाद का ही वरण करेगा।

अपनी पुस्तक 'लोकतंत्र संकट में' में लास्की ने अपना यह मंतव्य प्रकट किया कि सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए संसदीय तरीके अपर्याप्त हैं। उनका विचार है 'संसदीय लोकतंत्र के विघटन का कारण यह है कि शासक वर्ग के नेता जनता की मांगों को पूरा करने में असमर्थ है। एक नया वर्ग, जो अपनी वर्तमान दशा से असंतुष्ट है, राजनीति में आगे बढ़ा है और सत्ता के प्रयोग द्वारा अपनी स्थिति सुधारना चाहता है। नए वर्ग द्वारा राजनीतिक शक्ति पाने का अर्थ, जल्दी या देर से, सामाजिक क्रांति ही है और सामाजिक क्रांति से अभिप्राय है आर्थिक शक्ति का पुनर्वितरण। प्रातिनिधिक प्रजातंत्र के संकट का यही मूल कारण और केंद्रबिंदु है। पुरातन समाज के गर्भ से एक नया समाज जन्म लेने के लिए संघर्ष कर रहा है और पुराने समाज का ढांचा उसमें अड़चन डाल रहा है। मेरे विचार से यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि यदि ये व्यवस्थाएं नए युग के पदार्पण में तीव्र बाधाएं डाले तो उन्हें बलपूर्वक तोड़ने का प्रयास किया जाए।'[3]

इंगलैंड की संसदीय प्रणाली में लास्की को अनेक ऐसी सांविधानिक बाधाएं नजर आईं जिनकी वजह से किसी प्रगतिशील समाजवादी नीति को कार्यान्वित करना लगभग असंभव है। इनमें एक प्रतिरोध राजतंत्र और उससे जुड़ी हुई सामंतवादी परंपराएं हैं। दूसरी बाधा वैधानिक मामलों में लार्ड सभा का प्रतिक्रियावादी प्रभाव है। सैनिक नेताओं के यथास्थितिवादी मनोरथ, नौकरशाही के यथास्थिति के पक्ष में पूर्वाग्रह और न्यायालयों द्वारा संपत्ति के विशेषाधिकारों की सुरक्षा के लिए असाधारण चिंता कुछ अन्य अवरोध हैं। इनके अतिरिक्त समाचारपत्रों के स्वामित्व द्वारा लोकमत का पूंजीवादी नियंत्रण, राजनीतिज्ञों में भ्रष्टाचार बढ़ाने में धन का प्रभाव, निर्वाचन प्रक्रिया के अनिश्चित परिणाम, जनता की गंभीर राजनीतिक समस्याओं के प्रति उदासीनता तथा मजदूर आंदोलन में बुर्जुआ मानसिकता का अक्षेप ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से संसदीय प्रणाली के अंतर्गत समाजवाद के प्रयोग को सफल बनाना असंभव ही है।

संसदीय संस्थानों के प्रति अविश्वास लास्की की विचारधारा का फेबियन समाजवाद से पृथक करता है। लास्की का कथन है, 'असली अंग्रेजी समाजवाद फेबियन था जिस पर मार्क्स की तुलना में जान स्टुअर्ट मिल के विचारों का कहीं अधिक प्रभाव था। फेबियनवाद की मान्यता थी कि सामाजिक परिवर्तन के लिए क्रांति का तरीका पुराना पड़ गया है और इस मान्यता के दो आधार थे। विक्टोरियाई इंगलैंड के गंभीर आत्मविश्वास से उत्पन्न होकर यह स्वभावतः बुद्धिवादी था। अतः फेबियनवाद का मत था कि निर्वाचन में समाजवाद के पक्ष में बहुमत स्थापित होने पर संसद पर सीधा कब्जा कर सांविधानिक लोकतंत्र के जरिए पूंजीवादी राज्य को समाजवादी राज्य में आसानी से बदला जा सकता है। दूसरी बात यह थी कि उदार पूंजीवादी अर्थनीति के सात्त्विक

सिद्धांतो को स्वीकार करने की वजह से वह युद्धोपरांत अर्थव्यवस्था के उस पतन का पूर्वाभास न पा सका जिसके द्वारा न केवल मुनाफे पर आधारित ससार मे कर लगाने की निश्चित सीमाए बना दी गई अपितु जैसे ही मुनाफा कमाने के अधिकार पर सकट आया आर्थिक शक्ति के स्वामियो ने जैसे इटली व जर्मनी म, अपने मुनाफे के अधिकार की रक्षा के लिए समाज की लोकतात्रिक नीवो को ही उखाड फेंका ।'[4]

फेबियन यह समझने म असमर्थ रहे कि बुर्जुआ उदारवाद के राजनीतिक सस्थानो का उपयोग पूजीपति वर्ग अपने आर्थिक उद्देश्यो को प्राप्त करने के लिए करता था, अत वह अपने वर्गशत्रुओ को इनका उपयोग अपने ही सर्वनाश के लिए करने की अनुमति कैसे दे सकता था ? लास्की के कथनानुसार समाजवादी ससदीय सस्थानो का उपयोग पूजीवादी विस्तार के समय मामूली रियायत हासिल करने के लिए कर सकते थे। यदि वे इनका उपयोग पूजीवाद की नीव खोदने के लिए करें, तो पूजीपतियो का जवाब सामान्य सावैधानिक प्रक्रिया को समाप्त कर प्रतिगामी तानाशाही की स्थापना करना होगा ।

लास्की का विचार है, 'न तो फेबियन और न अग्रगामी उदारवादी यह समझ सके कि ससदीय सरकार की सफलता की दो शर्तें थी। पहली शर्त सुरक्षा की वह भावना है जिसके द्वारा निरतर मुनाफा कमाना सभव होता है और इस अतिरिक्त सचित धन का एक अश जनता मे सुख सुविधाओ के वितरण के लिए दे दिया जाता है । दूसरी शर्त राजनीतिक दलो मे समाज की व्यवस्था के सबध म मौलिक एकता की भावना है जिससे कोई भी दल सत्तारूढ क्यो न हो, वह समाज की नीव गिराने का प्रयत्न नही करेगा । यदि ये दो शर्तें पूरी न हो सकें तो ससदीय शासन केवल तर्क द्वारा मतभेदो का समाधान नहीं कर सकता। सक्षेप म, उदारवाद की राजनीतिक प्रणाली समुचित आर्थिक परिस्थितियो के कायम रहने पर निर्भर है। उसके सफल सचालन की एकमात्र गारटी अनुकूल आर्थिक परिस्थितियो का स्थायी रूप से कायम रहना ही है ।'[5]

फेबियन विचारधारा की एक त्रुटि, लास्की के अनुसार, यह थी कि वह यह समझने म असफल रही कि राजनीतिक सस्थानो को बदले बिना आर्थिक व्यवस्था म मौलिक परिवर्तन नही हो सकता। सामतवादी अर्थव्यवस्था के पतन के लिए सामतवादी राज्य का पतन अनिवार्य था। पूजीवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए पूजीवादी राज्य की स्थापना भी जरूरी थी। जब पूजीवादी व्यवस्था को हटाकर समाजवादी अर्थव्यवस्था स्थापित करनी हो तो राजनीतिक प्रणाली मे भी क्रातिकारी परिवर्तन करने पडेंगे।

उदारवादी राज्य के राजनीतिक सस्थानो की आलोचना के कुछ सैद्धातिक पक्ष लास्की ने अपनी पुस्तक 'राज्य सिद्धात और व्यवहार में' प्रस्तुत किए। यह पुस्तक सर्वप्रथम 1935 मे प्रकाशित हुई और सभवत यह उनकी सर्वश्रेष्ठ

कृति है। इसमें उन्होंने अपनी नवमार्क्सवादी विचारधारा का प्रतिपादन किया है। उनकी राज्य संबंधी परिकल्पना में अब मौलिक परिवर्तन हो गया है जिसमें उनके पूर्ववर्ती बहुलवादी विचारों की छाया भी नजर नहीं आती। राज्य की परिभाषा देते हुए लास्की ने कहा है, 'राज्य से मेरा तात्पर्य एक ऐसे समाज से है जो सुसंगठित हो और जिसके पास बल प्रयोग करने का अधिकार हो और जो प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय को, जो उस समाज के भाग हैं, कानून की दृष्टि से अपने अधीन रख सके। किसी भी राष्ट्रीय समाज का अध्ययन करने से पता चलेगा कि उसकी सीमाओं के अंतर्गत न केवल व्यक्ति रहते हैं अपितु ऐसे समुदाय भी हैं जिनमें मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार अपने धार्मिक, आर्थिक सांस्कृतिक व राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एकत्र हो जाते हैं। यही समाज राज्य बन जाता है, जब इन व्यक्तियों और समुदायों की जीवन-चर्या का नियमन करने के लिए एक शक्ति प्रयोग करने वाले अधिकरण की स्थापना कर दी जाती है। फ्रांसीसी राज्य का उदाहरण लीजिए। यह एक क्षेत्रीय समाज है जिसके दो भाग हैं सरकार और जनता। जनता में व्यक्ति और समुदाय शामिल हैं। इनके आपसी संबंध एक सर्वोपरि बल प्रयोग करने वाली सत्ता द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। इसी सत्ता को संप्रभुता कहते हैं, और इसी संप्रभुता की उपलब्धि के आधार पर हम राज्य और दूसरे मानवीय समुदायों के अंतर को स्पष्ट कर सकते हैं।'[6] उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि लास्की अब अपने समाजवादी विचारों के कारण राज्य की संप्रभुता के सिद्धांत को मान्यता प्रदान कर देते हैं।

परंतु जिस संप्रभुता की लास्की अब चर्चा करते हैं वह केवल पारंपरिक आस्टिन द्वारा प्रतिपादित संप्रभुता नहीं है क्योंकि लास्की के कथनानुसार उनकी परिभाषा एक कानूनी औपचारिकता मात्र है। यह तो मार्क्स द्वारा प्रस्तुत राज्य के चरित्र की व्यवस्था की तार्किक भूमिका है जो राज्य को वर्ग शासन की पाशविक शक्ति का माध्यम समझता है। राजनीतिक समाजों का इतिहास यह सिद्ध करता है कि राज्य सदा विजयी आर्थिक वर्गों का अधिनायकतंत्र रहा है। संप्रभुता की परिभाषा में लास्की की मार्क्सवादी मनोवृत्ति इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है, *किसी समाज में कानूनी संबंधों का नियंत्रण उन लोगों के* हाथ में होता है जो सरकार के रूप में संप्रभुता शक्ति के प्रयोग के औपचारिक अधिकारी हैं। इसके प्रयोग का तरीका निश्चित करने का अर्थ उत्पादन प्रक्रिया के फलों के वितरण का तरीका निश्चित करना है। यह निश्चय करना केवल संप्रभुता के प्रयोग के अधिकार द्वारा ही संभव है। अतः जो वितरण प्रक्रिया में तात्त्विक परिवर्तन करना चाहते हैं अथवा उत्पादन संबंधों की प्रणाली बदलना चाहते हैं वे समाज की कानूनी नींव बदलकर ही ऐसा कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए उन्हें हिंसा अथवा अहिंसा द्वारा राजशक्ति पर कब्जा

करना पडेगा क्योकि इसी के माध्यम से वे अनिवाय कानूनी सबधा को बदल सकते हैं।'[7]

लास्की ने राज्य की आदशवादी परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया है क्योकि इसम समाज के भौतिक अतर्विरोधो पर कोई ध्यान नही दिया गया है। आदशवादी लेखक वैचारिक राज्य म समन्वय की स्थापना मे व्यस्त रहते है और ऐतिहासिक राज्यो के वास्तविक चरित्र से बेखबर रहते है। उन्होने राजनीतिक दायित्व के ऐसे सिद्धात का विकास किया है जो राज्य के उद्देश्यो के निर्धारण मे सपत्ति सबध के प्रबल प्रभाव को ध्यान म नही रखता। एतिहासिक तथ्यो पर निभर रहने के बजाय उनके राजनीतिक आदश आधिभौतिक दशन पर आधारित होत हैं। अपने दाशनिक तर्कों के द्वारा व विश्वास कर लेते हैं कि यथाथ ही आदश है और गुलामी ही आजादी है। इतिहास के वगसघष क स्थान पर वे कल्पनाजनित नैतिक विचार के प्रस्फुटन द्वारा सामजस्य खोज लेत हैं। आदशवादियो के लिए कानूनी सबध ईश्वर द्वारा बनाए हुए अविचल नैतिक नियम है, न कि निर्दिष्ट युग के मनुष्य द्वारा बनाए हुए उत्पादन सबध। लास्की के लिए आदशवादी सिद्धात का कोई उपयोग नही क्योकि यह इतिहास के अनुभव पर आधारित नही है।[8]

आदशवादी विचारक राज्य के उद्देश्यो म जिस वैचारिक समन्वय की स्थापना कर लेता है उसका आधार उसी का व्यक्तिगत विश्वास मात्र है। मार्क्स का विचार था कि राज्य के उद्देश्यो मे किसी भी युग की प्रबल आर्थिक श्रेणी के प्रति पक्षपात करने की प्रवृत्ति रही है। लास्की का भी यही विचार है। उनका कथन है, 'जिन्होने भी इस सबध मे एतिहासिक गवाही की जाच की है, वे इस बात से इनकार नही कर सकते कि राज्य की क्रियाओ मे पक्षपात की भावना है। यूनान के नगर राज्य गुलामो के विरुद्ध पक्षपात करते थे। रोम के साम्राज्य मे भी दासो और निधनो के खिलाफ पक्षपात किया जाता था। मध्ययुग के ससार म राज्य भूसपत्ति के स्वामियो के पक्षधर थे। औद्योगिक क्राति के बाद से राज्य उत्पादन के साधनो के मालिको का पक्ष लेता रहा है और उन लोगो के प्रति द्वेप रखता है जिनके पास अपने श्रम के अतिरिक्त बेचने के लिए कुछ और नही है।'[29]

मार्क्स का अनुसरण करते हुए लास्की भी राजनीति के विकास की व्याख्या आर्थिक सदभ मे करत हैं। मार्क्स ने इतिहास की भौतिक व्याख्या देते हुए 'राजनीतिक अथविज्ञान की समीक्षा' मे कहा है 'अपने जीवन के सामाजिक उत्पादन मे मनुष्य कुछ ऐसे निश्चित सबध स्थापित करता है जो अनिवाय भी है और उसकी इच्छा पर निभर नही है। ये उत्पादन के सबध भौतिक उत्पादन शक्तियो के विकास की निश्चित अवस्थाओ के अनुसार निर्धारित होते है। उत्पादन के इन सबधो के योग से समाज का आर्थिक ढाचा तैयार होता है।

इसी वास्तविक आधार पर कानून और राजनीति की इमारत चुनी जाती है जिसके अनुसार सामाजिक चेतना के रूप निधारित होते हैं। भौतिक जीवन के उत्पादन की प्रणाली ही सामान्य रूप से सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक जीवन प्रक्रिया को निश्चित करती है।'[30]

लास्की न मार्क्स के इस कथन से सहमति व्यक्त करते हुए कहा है, 'किसी निर्दिष्ट समाज मे मौलिक कारक उसका जीविका अजन करन का तरीका है आर्थिक उत्पादन के तरीका मे परिवतन ही वह महत्त्वपूण कारक है जिसके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे, जिनकी हमे जानकारी है, परिवतन होत हैं। इन तरीका मे परिवतन के द्वारा सामाजिक सबध निर्धारित होत है और य सूक्ष्म रूप से मनुष्यो की सास्कृतिक चर्चा से जुडे हुए हैं। आर्थिक उत्पादन के तरीकों के विश्लेषण के बिना हम कानून का इतिहास नही लिख सकते क्योकि ये कानून की जडें हैं। हम धार्मिक मतमतातरा के इतिहास की, उस सामाजिक पृष्ठभूमि से जोडे बिना, जिसम उनका जन्म हुआ, विवचना नही कर सकते, इस सामाजिक पृष्ठभूमि की कुजी सदा उन सबधो मे मिलती है जो उत्पादन के तरीका द्वारा निर्धारित होते है। हमारी शिक्षा प्रणालिया बालक को जीवन के लिए तैयार करती हैं, लेकिन उसके जीवन की रूपरखा उस समाज की उत्पादन प्रणाली के भौतिक सबधो द्वारा पहले ही निश्चित कर दी जाती है। हमारी वास्तुकला की शैलिया, हमारे साहित्य की विधाए, हमारे विनान का चरित्र, हमारी सभ्यता क सभी उपकरण अतिम रूप से उत्पादन सबधो के द्वारा निश्चित होते है।'[31] अत लास्की का निष्कष है, 'आर्थिक कारक ही वह आधारशिला है जिस पर समाज का ऊपरी ढाचा बना है राज्य शक्ति को प्राप्त करन के लिए आर्थिक श्रेणियो का सघष ही मुख्य रूप से इसे क्रियाशील बनाता है।'[3]

यह ध्यान मे रखना चाहिए कि लास्की मार्क्सवादी राजनीतिक दशन के कट्टर समथक कभी न बन सके। उनका विचार था कि यद्यपि मार्क्स की विचारधारा म कोई गभीर त्रुटि नही है फिर भी उसम सरलीकरण का दोष है। साम्यवादियो द्वारा दी गई मार्क्सवाद की सामयिक व्याख्या को लास्की ने कभी स्वीकार नही किया। इस सबध मे साम्यवादियो से उनके गहर मतभेद थे। यह सच है कि वे रूसी क्राति के बडे प्रशसक थे पर साथ ही सोवियत शासन प्रणाली और साम्यवादी तरीका की उन्होने कटु आलोचना भी की है।

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हमारे युग की क्राति पर विचार' म लास्की ने रूसी क्राति की विवेचना और समीक्षा की है। वे सोवियत तानाशाही मे राजनीतिक लोकतत्र के अभाव की तीव्र आलोचना करते है परतु उनका निष्कष यही है कि सोवियत प्रणाली की सामाजिक और आर्थिक उपलब्धिया सपूर्ण विश्व के लिए महत्त्व रखती हैं और विश्व इस समय क्रातियो क सक्रमणकाल से गुजर

रहा है। यद्यपि सोवियत नेताओ ने कुछ गभीर गलतिया की है, तथापि वे अपने देश म एक क्रातिकारी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने मे सफल हुए है। यह व्यवस्था प्रगतिशील विश्व समाज की स्थापना की दिशा मे एक महत्त्वपूर्ण कदम है।[33]

फासीवाद के प्रति लास्की का दृष्टिकोण, जैसा कि होना भी चाहिए, ऐसे विरोधी का है जो उसके किसी तत्त्व से समझौता करने को तैयार नही। मुसोलिनी और हिटलर की शासन प्रणालिया की निंदा करते हुए उन्होंने मार्क्सवादी तथा उदारवादी युक्तिया का समान रूप से उपयोग किया है। मार्क्सवादी होने के नाते वे फासीवाद को एकाधिकारी पूजीवाद का रक्षाकवच मानते हैं, इसके द्वारा पतनशील पूजीपति वग सर्वहारा क्राति को रोकने का अतिम प्रयत्न करता है। एक उदारवादी होने के नाते वे फासिस्ट विचारधारा व राजनीतिक प्रणाली पर प्रहार करते हुए कहते है कि इसने उदारवादी व्यक्तिवाद की स्वर्णिम परपराओ का हनन कर दिया है। नाजियो का यहूदी विरोधी अभियान और हत्याकाड लास्की को फासिस्ट विरोधी बनाने के लिए पर्याप्त था क्योकि जन्म से वे स्वय यहूदी थे। फिर भी फासीवाद की आलोचना मे उनकी मुख्य युक्तिया मार्क्सवाद से प्रभावित हैं। उनका विचार था कि युद्ध म फासीवादी शक्तियो की पराजय से फासीवादी विचारधारा को समाप्त नही किया जा सकता। वे जर्मनी और इटली मे युद्ध के बाद मार्क्सवादी आधार पर एक सामाजिक क्राति लाना चाहते थे और यही सामाजिक क्राति उनके दृष्टिकोण के अनुसार फासीवाद का स्थायी विकल्प बन सकती थी।[34]

लास्की के राजनीतिक चिंतन मे वस्तुत मार्क्सवादी तथा उदारवादी विचारधारा का मिश्रण है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इगलैंड मे ससदीय शासन' मे उन्होने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि सभी राजनीतिक प्रणालियो की तुलना म इगलैंड की ससदीय शासन प्रणाली श्रेष्ठतर है। इसका यह अभिप्राय नही कि यह प्रणाली दोषरहित है। लास्की के कथनानुसार इसम कुछ सावैधानिक सुधारो की आवश्यकता है जिसस एक समाजवादी दल को सत्ता प्राप्त करन म सुविधा हो जाए और सत्तारूढ समाजवादी दल को अपनी नीतिया कार्यान्वित करने का अवसर मिल सके।[35]

अमरीका की राजनीतिक प्रणाली का अध्ययन करत हुए लास्की ने 'अमरीकी लोकतत्र' मे जिन त्रुटियो की ओर सकेत किया है उनका आधार अधिकाश स्थलो पर मार्क्सवादी है। फिर भी राजनीतिक प्रणाली के पुनगठन सबधी सुझाव ब्रिटेन की राजनीतिक प्रणाली से ही ग्रहण किए गए हैं। सोवियत प्रणाली के राजनीतिक पहलू से लास्की बिलकुल प्रभावित नहीं हुए।[35] अत यह जा सकता है कि मार्क्सवाद के सिद्धात से प्रभावित होन पर भी लास्की वस्तुत व्यावहारिक उदारवादी बने रहे। राजनीति विज्ञान के लिए

लास्की का सर्वोत्तम उपहार मार्क्सवादी और उदारवादी विचारधाराओ मे साम जस्य करने का प्रयास हैं । क्या वे इस प्रयत्न मे सफल हो सके ? इस सबध म लोगो के भिन्न भिन्न विचार हैं। केवल भविष्य की घटनाए बता सकती है कि वतमान मे सघषरत ये दो विचारधाराए किस प्रकार एक दूसरे की पूरक एव सहयोगी बन सकेंगी । लास्की के राजनीतिक चिंतन की सफलता या विफलता बहुत कुछ इसी प्रश्न के उत्तर पर निभर है ।

सदभ


1 क्लेयर मार्केट रिव्यू जुलाई 1950 प० 31
2 वही पृ०52
3 वही प०31–32
4 वही प० 43
5 वही पृ० 41
6 हूबट डीन पालिटीकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की प० 8
7 विलियम इलियट प्रगमटिक रिवोल्ट इन पालिटिक्स अध्याय V पालिटिक्स आफ एच० जे० लास्की प० 142
8 वही प० 143
9 वही प० 92
10 हेरोल्ड जे० लास्की प्राब्लम आफ सावरेंटी हावड ला रिव्यू खड XXIX
11 हेरोल्ड ज० लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट प 40–41
12 हेरोल्ड जे० लास्की फाउडशस आफ सावरेंटी प 240
13 वही प० 241
14 हेरोल्ड जे० लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट प० 74
15 विलियम इलियट प्रगमटिक रिवोल्ट इन पालिटिक्स प० 167
16 वही, प० 166–67
17 हेरोल्ड जे० लास्की कम्युनिज्म प्रस्तावना प० 4
18 वही प० 250–51
19 विलियम इलियट प्रैगमटिक रिवोल्ट इन पालिटिक्स प० 167–76
20 हेरोल्ड जे० लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स (1930) प्रस्तावना ।
21 हेरोल्ड जे० लास्की डेमोक्रसी इन क्राइसिस प० 30–66
22 वही प० 233–63
23 वही प० 54–55
24 हेरोल्ड ज० लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, प० 241–42
25 वही प० 242
26 हरोल्ड जे० लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, प० 21
27 वही प० 111
28 वही प० 45–103

29 दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रैक्टिस, प० 104
30 काल मार्क्स और फ्रडरिक एजल्स सिलेक्टेड वक्स खड I, प० 328–29 (मास्को, 1950)
31 हेरोल्ड जे० लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, पृ० 108–9
32 वही, प० 122
33 हेरोल्ड जे० लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 41–85
34 वही, प० 86–127
35 हेरोल्ड जे० लास्की पार्लियामेंटरी गवनमेंट इन इगलड, प० 13–70
36 हेरोल्ड जे० लास्की दि अमेरिकन डमोक्रेसी, प० 72–263

# क्रियावादी दर्शन और नैतिकता

## वहुलवादी आदश

आधुनिक राजनीतिक चितन मे बहुलवादी लेखको ने राज्य के एकसत्तात्मक सिद्धात की कटु आलोचना की है। स्वय लास्की ने अपने प्रारभिक काल मे वहुल वादी विचारधारा के प्रतिपादन मे महत्त्वपूण भाग लिया है। लास्की का बहुल वाद हीगल के दशन और आस्टिन के विधिशास्त्र के विरुद्ध एक विद्रोह था। यह पश्चिमी राजनीतिक चितन की परपरा म, जिसका आधार एकसत्तावाद रहा है आमूल परिवतन करन का इच्छुक था।[1]

राज्य की एकसत्तात्मक परिकल्पना आधुनिक राज्य की स्थापना के साथ ही शुरू हुइ। इसके मुख्य प्रतिपादक बोदा, हाब्स, रूसो, हीगल, बथम और आस्टिन हैं। एकसत्तावादी विचारको की मायता है कि राज्य मे अधिकारो का स्रोत केवल एक है। यह स्रोत असीमित शक्ति का स्वामी है और इस शक्ति के प्रयोग पर कोई अकुश नही है। यह सर्वोपरि सत्ता ही सप्रभुता है।[2] एकसत्ता त्मक सिद्धात की कुछ वधानिक समाजशास्त्रीय और दाशनिक मायताए हैं जिनके आधार पर यह राज्य के लिए समाज म नैतिक सर्वोपरिता का पद निधारित करता है। बहुलवादी इन मायताओ का खडन करते हुए राज्य को इस ऊचे नैतिक आसन स गिराना चाहता है। वैधानिक क्षेत्र म बहुलवाद राज्य की सप्रभुता के सिद्धात को चुनौती देता है। सामाजिक क्षेत्र मे यह राज्य और समाज क अवयवी (Organic) सिद्धात को अस्वीकार कर देता है। दाशनिक क्षेत्र म यह राज्य पूजा के दशन का घोर विरोधी है। प्रशासन के क्षेत्र म यह विकेंद्रीकरण चाहता है जिससे नागरिको को वैयक्तिक और सामुदायिक रूप से अधिक से अधिक स्वतत्रता प्राप्त हो सके।

बहुलवाद का क्षेत्र केवल विधिशास्त्र अथवा राजनीतिक दशन तक ही सीमित नही। इसका सबध आर्थिक सगठन से भी है। लास्की तथा जी० डी० एच० कोल बहुलवाद के आर्थिक पक्ष की भी चर्चा करत हैं। पूजीवाद मे बढते

हुए एकाधिकार की आलोचना करते हुए उन्होंने उद्योगों के विकेंद्रीकरण की आवश्यकता बताई। कोल ने गिल्ड समाजवाद के रूप में आर्थिक बहुलवाद को एक निश्चित रूपरेखा प्रदान की। लास्की का आर्थिक बहुलवाद किसी निश्चित आर्थिक प्रणाली की दिशा में अग्रसर न हो सका। इनकी बहुलवादी नीतियों को 'औद्योगिक संघवाद' का नाम दिया जा सकता है। लगभग इसी प्रकार की बहुलवादी परिकल्पना हम पाल बोकोर की पुस्तक 'आर्थिक संघवाद' (Federalisme Economique) में पाते हैं।

आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राज्य में धार्मिक संगठनों की स्थिति के संबंध में लास्की ने चर्चा की है और इसे एक गंभीर समस्या के रूप में लिया है। उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता का भावनात्मक समर्थन किया है। उनके बहुलवादी दृष्टिकोण के अनुसार इस स्वतंत्रता के दो रूप हैं वैयक्तिक और सामुदायिक। वे उसके सामुदायिक रूप की रक्षा के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील हैं। धर्म समुदायों की स्वतंत्रता के संबंध में लास्की को अपने पूर्ववर्ती विचारक फिजिस के विचारों से बहुत प्रेरणा मिली। फिजिस भी धर्मनिरपेक्ष संप्रभुता संपन्न राज्य की एक सत्तात्मक प्रवृत्ति के तीव्र आलोचक थे और उसके हस्तक्षेप से धर्म संप्रदायों को बचाना चाहते थे। जान फिजिस 'आधुनिक राज्य में चर्च' के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध है। इसी ग्रंथ से प्रेरणा लेकर लास्की ने अपनी पुस्तक 'संप्रभुता की समस्या' की रचना की। इस पुस्तक के दूसरे, तीसरे तथा चौथे अध्यायों में लास्की ने अल्पसंख्यकों के धर्म समुदायों की स्वायत्तता का ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर भावनात्मक अनुमोदन किया।

लास्की का बहुलवाद एक सुव्यवस्थित दार्शनिक प्रणाली नहीं है। यह राजनीतिक दर्शन की दिशा में एक क्रियात्मक प्रयास है जो व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी भी है। नामन मैकेंजी का कथन है कि लास्की ने 'केवल सिद्धांतों पर आधारित किसी ठोस विचारधारा का प्रतिपादन नहीं किया। इसके विपरीत उनकी कृतियों में निरंतर आने वाली उन दुविधाओं का उल्लेख है जो उनके इतिहास के घटनाक्रम और मानवीय सम्मान और स्वतंत्रता में मार्क्सवादी संदर्भ में सामंजस्य लाने के प्रयत्न के कारण उत्पन्न हुई।'[3] नामन मैकेंजी के अनुसार जब लास्की अपने संपूर्ण जीवन में सुव्यवस्थित दार्शनिक प्रणाली की रचना नहीं कर सके तो उनसे अपने राजनीतिक चिंतन के प्रारंभिक चरण में इस प्रकार की आशा करना न्यायोचित नहीं है।

## दार्शनिक पृष्ठभूमि

यह प्रारंभ में ही स्पष्ट कर देना चाहिए कि लास्की गंभीर दार्शनिक विचारक नहीं थे। उन्हें आध्यात्मिक और तात्त्विक प्रश्नों में दिलचस्पी नहीं थी और दार्शनिक वादविवाद से वे सदा दूर रहते थे। दर्शन की गंभीर समस्याओं में

उनकी कोई अभिरुचि नही थी, फिर भी अपने युवा काल मे वे तत्कालीन अमरीकी दशन म क्रियात्मक विचारधारा के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित हुए।[4] अमरीका के क्रियावादियो के विचारो ने लास्की के दृष्टिकोण को अपने चिंतन के प्रारंभिक चरण म बहुत प्रभावित किया। लास्की ने स्वीकार किया है कि विलियम जेम्स के क्रियावादी दशन के प्रति वे मानसिक रूप स ऋणी है। जेम्स के विचारो ने *लास्की के दार्शनिक दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित किया।*[5]

जेम्स तथा अन्य क्रियावादी विचारको से प्रेरित होकर लास्की ने स्वीकार किया कि वैज्ञानिक अनुशीलन मे अनुभववादी पद्धति सवश्रेष्ठ है। उनका मत है कि इन लेखको ने दाशनिक अद्वैतवाद का खडन कर मानव जाति का स्थायी उपकार किया। लास्की के विचार के अनुसार यह अद्वतवादी विचार प्रगति के माग मे बहुत बडा रोडा है। अद्वतवाद सदा यथास्थिति के पक्ष मे युक्तिया देता रहा है। *नतिक दृष्टि से यह अच्छाई और बुराई के अतर को छिपाता रहा है* क्योकि अद्वत मे समन्वय पर आधारित पूणता की परिकल्पना है। अध्यात्म वाद बुराई से सघष करने के बजाय उसके प्रति आत्मसमपण करना सिखाता है। अद्वतवादी विचारधाराओ की जडता और एकरूपता स ऊबकर लास्की जेम्स के बहुलवादी विश्व मे विविधता और उल्लास की खोज करते हैं।

क्रियावादी दशन मे अपनी असाधारण अभिरुचि के सबध म लास्की ने *बताया है, 'मुझे क्रियावाद मे अकस्मात रुचि इस कारण हुई क्योकि मैंने वैज्ञानिक* पद्धति व उसके सामाजिक परिणामो के शुद्ध दशन पर होने वाले प्रभाव को महसूस किया। यह दशन विद्यालय जीवन के बद वातावरण मे चिंतन और क्रिया एव सिद्धात और आचरण के बीच म निरथक भेद करता है। क्रियावाद इन दोनो के एकीकरण म विश्वास करता है। इसन यह स्वीकार करने की जरूरत पर जोर दिया कि चिंतन जीवन का साधन है और जीवन म जिसकी प्रक्रिया चिंतन है, हम विचारा की उपयोगिता की परीक्षा कर लेत हैं और अपने अनुभव के आधार पर अपनी मागा की पूर्ति करना चाहत हैं।'[6]

वस्तुत क्रियावाद आधुनिक युग का दशन है। इसका उदय बीसवी सदी मे हुआ है। यह अमूत विचारो का दशन न होकर जीवन का दशन है। यह केवल दशन ही नही है, एक आदोलन, एक गतिशील कायक्रम और जीवन कला भी है। सक्षेप म, क्रियावाद पारपरिक दशन के लिए एक गभीर चुनौती है। अद्वैतवाद, अध्यात्मवाद और आदशवाद के स्थान पर क्रियावादी विचारक बहुलवाद, मानववाद और यथाथवाद को अपनाता है। अमरीका के बुद्धिजीविया मे यह दशन बहुत अधिक लोकप्रिय हुआ।

लास्की का कथन है, 'यह दशन का बद पूजागह म होने वाले परिभाषाओं के वादविवाद की परिधि से निकालकर खुले बाजार की क्रिया बना देता है। यह दावा कर सकता है कि वस्तुत यह दशन को मुट्ठीभर विद्वाना की

स यासियो जसी क्रिया का साधन न वनाकर आम आदमियो के लिए उसके महत्त्व पर जोर देता है और यही उसका प्रमुख गुण भी है। इसका सार है कि यह दार्शनिक से आशा और अपक्षा रखता है कि यह सत्य और सद् की खाज आम आदमी के दनिक जीवन के अनुभवो के सदभ म करेगा।'[7]

क्रियावाद का मूल सदेश है यौवन, साहसिक काय और प्रयोगवाद की भावना। विलियम जेम्स का कथन है, पेशेवर दार्शनिको की अनेक पारपरिक प्रवत्तियो से क्रियावादी विचारक अपना मुख मोड लेता है। वह अमूत्तताओ और अपर्याप्ति से, शाब्दिक समाधाना से, कमजार स्वयसिद्ध प्रमाणा स, निश्चित सिद्धातो से, वद प्रणालिया से और तथाकथित अद्वतो और उदगमो से दूर भागता है। वह मूत्तता और पूणता की ओर, तथ्यो की ओर, काय की ओर, और शक्ति की ओर उ मुख होता है। वह युक्तिवादी दृष्टिकोण त्यागकर अनुभववादी स्वभाव अपनाता है। वह खुले वातावरण और प्राकृतिक उपलब्धियो को चाहता है और खोखले सिद्धात, कृत्रिमता और सत्य की अतिमता के बहाने से दूर रहता है।[8]

जेम्स के विचारो का महत्त्व इसी बात से पता चलता है कि उ होने तुरत ही दार्शनिक जगत मे गभीर वादविवाद उत्पन्न कर दिया। आत्मवादी दार्शनिका ने उनकी तीव्र आलोचना की। लास्की के कथनानुसार पारपरिक धमशास्त्रियो और डार्विनवादियो के शत्रुतापूण विवाद के पश्चात दशन के इतिहास मे यह दूसरा महत्त्वपूण विवाद उठा था जिसने समस्त सभ्य ससार को उद्वेलित किया।[9]

पारपरिक आत्मवादी दशन और नए क्रियावादी दशन की पद्धतियो मे महत्त्वपूण अतर है। आत्मवाद का दष्टिकोण अद्वैतवादी, नियतिवादी और विचारवादी है। इसके विपरीत जेम्स का क्रियावाद स्वभावत बहुलवादी, विकासवादी, इच्छावादी और अनुभववादी है। आत्मवादी विचारक का विश्व के प्रति दष्टिकोण नितात अव्यक्त, अनुदार और यथास्थितिवादी होता है। इसके विपरीत क्रियावादी प्रत्यक्षवाद, प्रयोगवाद और प्रगति का समथक है। सामाजिक क्षेत्र मे आत्मवाद यथास्थिति का समथन करता है जबकि क्रियावाद परिवतन, विकास और उन्नति चाहता है।

क्रियावादियो के अनुसार वास्तविकता प्रवाहमय, परिवतनशील और विकासमान है जो निरतर एक नया अस्तित्व ग्रहण करती रहती है। इसका रूप न मानसिक है, न भौतिक बल्कि जीवन सदृश है। क्रियावादी ज्ञान मीमासा (Epistemology), सत्य के विषय मे सवादिता (Correspondence) और सगति (Coherence) सिद्धाता को स्वीकार नहीं करती। इसके अनुसार सत्य का ज्ञान उपकरणात्मक सिद्धात (Instrumental Theory) द्वारा होना चाहिए। लास्की क्रियावादी मीमासा से आकर्षित होते हैं क्योंकि उसका आधार

अनुभववादी दृष्टिकोण है जो विश्व की एकता के लिए युक्तिवादी प्रयास को निरर्थक मानता है। वह उन्हे विश्व की बहुलवादी परिकल्पना के निर्माण म सहायता पहुचाता है। क्रियावादी विचारक के लिए वास्तविकता के रूप स्थान और समय के अनुसार अनेक हो सकते हैं। मस्तिष्क वास्तविकता पर सत्य को आरोपित करता है। हमारे मस्तिष्क वास्तविकता का चित्र खीचने के लिए नही बने और न वास्तविकता अपने आप मे पूण है। मस्तिष्क उस वास्तविकता को निखारकर, नया रूप देकर उसे पूणता प्रदान करता है। हमारे सोच विचार का अधिकतर उपयोग ससार को बदलना है। स्वय परिवतन एक बहुत बडा सत्य है।

क्रियावाद की आलोचना मे यह कहा जाता है कि अचेतन रूप से यह आत्मवाद का मित्र और समथक है और प्रकट रूप मे उसका यह विरोध करता है। यह सही है कि आत्मवादी दाशनिको ने क्रियावाद की कुछ मान्यताओ की कटु आलोचना की है। परतु यह विवाद कुछ कृत्रिम प्रतीत होने लगता है जब हम इन दोनो सिद्धातो के निष्कर्षों की तुलनात्मक समीक्षा करत हैं। जसा लास्की ने बाद मे स्वीकार किया कि आत्मवादी और क्रियावादी को अलग अलग रास्ता से चलकर एक ही मजिल पर पहुचते हैं। जेम्स के अमरीकी आलोचको मे आत्मवादी दाशनिक जोसाया रोयस का नाम प्रमुख है। परतु एक निष्पक्ष व्यक्ति को इन दोनो की विचारधाराओ मे अतर कम और साम्य बहुत दिखाई पडता है।

जहा रोयस ईश्वर मे तक के आधार पर विश्वास करने के समथक हैं, वहा जेम्स की दृष्टि मे ईश्वर के प्रति आदरभाव सीमित मानवा के लिए एक व्यावहारिक आवश्यकता है। इस प्रकार जेम्स के दशन म भी अद्वतवाद की झलक आ जाती है। अपने जीवन के तीसरे चरण मे जब लास्की न बहुलवादी विचार धारा को त्याग दिया तो 'अमरीकी लोकतत्र' म जेम्स पर कटाक्ष करते हुए उन्होने कहा, 'क्या जेम्स यह स्वीकार करने के लिए बाध्य नही हो जाते कि हम सभी अत म जाकर ईश्वर की शरण खोजते है चाहे वे यह कहते रह कि हम यदि इच्छाशक्ति को बढा लें तो रायस के ईश्वर का ईश्वरत्व न्यूनतर हो जाएगा। यदि यह निष्कष ठीक है तो क्या हम यह सोच लें कि ईश्वर को प्राप्त करने की अपेक्षा ईश्वरप्राप्ति के माग पर चलना अधिक आनददायक है।'[10]

ऐसा प्रतीत होता है कि क्रियावादी की आलोचनाए अपने लक्ष्य को बधने म समथ नही हैं। जो आत्मवाद इसका वैचारिक सहचर होना चाहिए उसी के प्रति क्रियावादियो म असाधारण रोष है। क्रियावाद का तीव्र अनुभववाद हम आत्मनिष्ठ आदशवाद (Subjective Idealism) और अहवाद (Solipsism) को दिशा म ले जाता है। क्रियावाद अपनी स्थिति मे परिवतन करते हुए ईश्वर

को सीमित शक्ति वाले मानवा के लिए एक उपयोगी विचार के रूप मे स्वीकार कर लेता है। हीगल परपरा के आत्मवादी ईश्वर के लिए युक्तिवादी प्रमाण देते हैं। क्रियावादी उन प्रमाणो के स्थान पर मनुष्य की इच्छा को प्राथमिकता देते हैं। दोना का ध्येय एक समान है। आत्मवादी का मस्तिष्क ईश्वर के अस्तित्व की घोषणा करता है तो क्रियावादी का हृदय ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करता है। अत आत्मवाद पर क्रियावाद की विजय सदेहास्पद है।[11]

क्रियावाद के लोकप्रिय दशन हो जाने का एक कारण उसकी उदारवादी प्रवृत्ति थी। आत्मवादी दशन की प्रवृत्ति अनुदार रही है। अत यह उसकी तुलना मे कुछ अधिक प्रगतिशील था। सी० एच० कुग ने इसे 'विश्वव्यापी गणतत्रवाद' की सना दी है।[1] पर यह तो एक आलकारिक भाषा का प्रयोग मात्र है। आदशवाद विकास तथा स्थिरता का दशन हो सकता है परतु क्रियावाद को क्राति अथवा अराजकता की विचारधारा समझना भ्रातिमूलक है। जेम्स और डेवी के विचार ब्रेडले या बोसाके की तुलना मे अधिक उदार हो सकते हैं। परतु रोयस या ग्रीन जैसे आदशवादियो की तुलना म नही।

जैसा कि लास्की न आगे चलकर अनुभव किया, क्रियावाद तथा नव-आदशवाद समान सामाजिक पष्ठभूमि की दाशनिक उपज हैं। वे तात्त्विक दृष्टि से मध्यम वग के दाशनिक दष्टिकोण है। वे एक जैसी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियो मे फलेफूले हैं। ब्रडले वोसाके और ग्रीन का आदशवाद विजयी अगरेज बुर्जुआ वग की विचारधारा है तो जेम्स और डेवी का क्रियावाद सघप-रत अमरीकी बुर्जुआ वग का मानसिक चिंतन है। यह ध्यान मे रखना चाहिए कि लास्की ने क्रियावाद के प्रति जो आकषण अपनी युवावस्था मे महसूस किया वह धीरे धीरे क्षीण होता गया। वे केवल अपने बहुलवादी चरण मे क्रियावादी दाशनिक दष्टिकोण की प्रशसा करते थे। अपनी अन्य कृतिया में उन्हाने जेम्स के विचारा का उल्लेख करना भी छोड दिया। 'अमरीकी लोक-तत्र म उन्होने विलियम जेम्स की विचारधारा को अमरीका के व्यापारी और औद्योगिक वग का मानसिक चिंतन बताया।[13]

जेम्स के क्रियावादी दशन और लास्की के बहुलवादी राजनीतिक चिंतन मे पारस्परिक सपक के तीन स्थल हैं। सप्रभुतासपन्न राज्य का लास्की द्वारा विरोध और सवव्यापक ईश्वर के प्रति जेम्स का अविश्वास लगभग समान भावनाआ से प्रेरित विचार ह। लास्की राजनीति विनान म और जेम्स दशन मे प्रयोग-वादी पद्धति को सवश्रेष्ठ पद्धति मानते हैं। इसके अतिरिक्त लास्की का बहुल-वादी सिद्धात और जेम्स की क्रियावादी विचारधारा यथास्थिति से समझौता कर लेने वाले सिद्धात सिद्ध हुए हैं। उन्हे मूलत परिवतनवादी या क्रातिकारी वचारिक आदोलन के रूप मे देखना गलत है। इन तीन सपक बिंदुओ के आधार पर यह सोचना कि राजनीतिक बहुलवाद और दाशनिक क्रियावाद मे कोई

अनिवाय तार्किक सबध है, उचित नही है। हा, यह कहा जा सकता है कि य दोना सिद्धात लगभग एक जैसे मानसिक वातावरण म जन्म और विकसित हुए हैं।[14]

अत म हम यह भी याद रखना चाहिए कि जेम्स तथा लास्की न क्रमश क्रियावाद और बहुलवाद की विचारधाराओ स असतुष्ट होकर या तो उनम महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए या उन्ह पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दिया। जेम्स ने नतिक अवकाश (Moral Holiday) के नाम पर ईश्वर म सीमित आस्था स्वीकार की और परोक्ष रूप से *अद्वैत आध्यात्मिक शक्ति के सिद्धान्त की व्यावहारिक* उपयोगिता को मान लिया।[15] उधर लास्की न राजनीतिक बहुलवाद को अस्वीकार करत हुए कहा कि यह सिद्धान राजनीतिक विकास पर आर्थिक शक्तियो के प्रभाव को समझने का प्रयास नही करता। अत उन्होने अनुभव किया कि विश्व की अनेक समस्याओ की समुचित विवचना मार्क्सवादी दृष्टिकोण से ही सभव है। लास्की की यह स्वीकारोक्ति हम उनकी पुस्तक 'राजनीति का एक व्याकरण' की प्रस्तावना मे पाते हैं। जेम्स और लास्की के मत परिवतन से क्रियावादी और बहुलवादी आदर्शों की अपूर्णता प्रकट होती है। इनके पश्चात दर्शन और राजनीतिक चिंतन के क्षेत्रों म क्रियावाद और बहुलवाद का प्रभाव क्षीण होता चला गया।

## नैतिक आधार

आदर्शवादी लेखको ने राज्य की जो नतिक परिकल्पना प्रस्तुत की है, लास्की ने उसे अस्वीकार कर दिया है। हीगल राज्य को एक नतिक सस्थान मानकर उसे उच्चासन पर बैठा देता है और व्यक्ति से अपेक्षा करता है कि वह राज्य को ईश्वर मानकर उसकी पूजा करे। लास्की हीगल की राज्यपूजा के विरोधी हैं। *फिर भी वे मक्यावेली अथवा हाब्स की तरह राजनीति विज्ञान मे नतिक प्रश्नो* को पूर्णत निरर्थक नही समझते।

लास्की जहा राज्य की सप्रभुता के घोर विरोधी है वही व्यक्ति की अतरात्मा की सर्वोच्चता की घोषणा करते हैं। राज्य की सप्रभुता को वे पाशविक और अनैतिक शक्ति का परिचायक मानते हैं। अत बहुलवाद का राज्य के प्रति विरोध मूलत व्यक्ति की नैतिक गरिमा पर आधारित है। उनका कथन है 'हम किसी राज्य या चच के प्रति तर्कहीन अधी आज्ञाकारिता का दृष्टिकोण नही अपना सकते। हम अपने स्वतत्र निर्णय की सूझबूझ ही उसे अर्पित कर सकते है। कोई भी राज्य, जो अपने नागरिको की अतरात्माओ पर निर्भर नही, सुरक्षित नही है। कोई भी राज्य, जो त्रुटि से बचना चाहता है उनकी अतरात्माओ की पुकार को ध्यान से सुनेगा। इसकी अवहेलना करना या उस पर आधारित काय का नैतिक अपराध समझना उस पुकार को सुन लेने और

तदनुसार काय करने की तुलना म अधिक हानिकारक है ऐसा करने से व्यक्तित्व का विकास न होकर ह्रास होता है।[16]

लास्की के नैतिक विचार उनकी अतरात्मा की परिकल्पना और निष्ठा के सिद्धात पर आधारित हैं। नीतिशास्त्र के क्षेत्र मे उनका दृष्टिकोण अत प्रज्ञावादियो (Intuitionists) जैसा है यद्यपि हम उन्हे पूणत अत प्रज्ञावादी नही मान सकते। उनका निष्ठा सिद्धात नैतिक बहुलवाद के उसूलो पर आधारित है।

मनुष्य के कार्यों को अच्छा या बुरा मानने के लिए दो प्रकार के मापदड है। नैतिक निर्णय का मापदड या तो आतरिक होता है या बाह्य। अगर यह आतरिक है तो उसका आधार अत प्रज्ञा या अतरात्मा होता है। अगर यह बाह्य है तो उसका आधार रीति रिवाज, कानून अथवा राज्य हो सकता है। लास्की बाह्य मापदड की तुलना मे आतरिक मापदड को श्रेष्ठतर मानते हैं। इस प्रकार वह नैतिक दृष्टिकोण से अत प्रज्ञावादी स्थिति को स्वीकार कर लेते हैं। हीगल जैसे आदशवादी बाह्य मापदड को स्वीकार करत हुए नैतिक नियतिवाद का सिद्धात मान लेते हैं जो व्यक्तित्व के विकास मे बाधक है। नैतिक नियतिवाद अधिकारी के प्रति स्वाभाविक आज्ञापालन के भाव को आवश्यक मानता है। इसके विपरीत लास्की की नैतिक मान्यताए स्वतत्रता को महत्त्व देती हैं। उनका विचार है 'स्वतत्रता का अथ है आत्माभिव्यक्ति, और स्वतत्रता का रहस्य साहस है। जो मनुष्य बुराई के सामने झुक जाता है, वह अपनी स्वतत्रता भी खो देता है। उसे नागरिक के रूप मे अपनी अतरात्मा के विवेकशील निर्णय के अनुसार काय करना चाहिए।'[17]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मानवीय व्यक्तित्व के विषय मे नैतिक क्रिया मे अत करण के विवेक की परिकल्पना लास्की के व्यक्तिवादी दृष्टिकोण पर आधारित है। नैतिकता के क्षेत्र म बहुलवाद व्यक्तिवाद का मित्र तथा सहयोगी है। इस सबध मे लास्की के विचार जान स्टुअट मिल के विचारो से मिलते-जुलते है। मिल ने स्वतत्रता के विषय मे एक निबध लिखा जिसम उन्होने उसे सवश्रेष्ठ नैतिक मूल्य माना। लास्की ने भी लगभग इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं, 'व्यक्तित्व को दबाने का अथ उसे सकुचित करना है और निरतर सकुचित करने का परिणाम मानसिक दासता है। इतिहास मे अनेक राज्य नष्ट हो गए, इसलिए नही कि वे अच्छे उद्देश्यो की परिकल्पना नही कर सके बल्कि इसलिए कि एकरूपता लाने के जोश न उन्हे उन आवश्यक साधनो से वचित कर दिया जो उन उद्देश्यो को पूरा कर सकते थे। किसी समाज मे उच्च आदर्शो को पूरा करने के लिए उच्च विचार वाले नागरिको की आवश्यकता होती है जो उन्हे समझ सकें। और एक ही साचे मे ढले हुए मनुष्य मानसिक ऊचाई प्राप्त करने मे असमथ होते हैं। ऐसे मनुष्य, जिनके दिमाग जजीरो से जकड दिए

गए हो, उस आत्मशक्ति से वंचित हो जाते हैं जो जीवन में महान उपलब्धियों के लिए प्रेरित करती है।'[18]

इस प्रकार आधुनिक ब्रिटिश चिंतन में ब्रैडले, बोसांके और ग्रीन के विपरीत लास्की ने लाक और मिल की व्यक्तिवादी मान्यताओं को अपनाया है। लास्की के राजनीतिक चिंतन म स्वतत्रता के नतिक और मानसिक पक्षो पर विशेष बल दिया गया है। न केवल बहुलवादी चरण म बल्कि मार्क्सवादी चरण म भी विश्व की राजनीतिक समस्याओं के सदभ मे लास्की स्वतत्रता की परिकल्पना को गभीरता से लेते रहे हैं और उसे सर्वोपरि नैतिक मूल्य के रूप म मान्यता दते रहे है।

आदशवादियों के अनुसार नतिक मापदड का आधार व्यक्तिगत विवेक या सकल्प नही हो सकता क्योकि व्यक्तियो के इरादो और विचारो मे अतर और सघर्ष होने की सभावना रहती है। अत नतिक मापदड के लिए हमे ऐसा आदश चाहिए जो किसी बाह्य शक्ति के द्वारा निश्चित किया जाए और जो व्यक्तिगत सघर्षों से ऊपर उठकर सावजनिक हित पर आधारित हो। सामान्य इच्छा पर आधारित राज्य ही ऐसी नैतिक शक्ति है, जो नागरिको के लिए नैतिकता के मापदड निर्धारित कर सकती है। जबकि व्यक्ति का अत करण या उसकी यथार्थ इच्छा अनतिक अथवा युक्तिहीन हो सकती है, सामान्य इच्छा सदा नतिक और युक्तिसगत होती है। अत अपनी स्वार्थसिद्धि के नाम पर नागरिक द्वारा राज्य की आज्ञा की अवहेलना करना सदा अनतिक ही समझा जाना चाहिए।[19]

लास्की आदशवादियो के अद्वतवादी (Monistic) तक से सहमत नही हैं। आदशवादी दाशनिको के कल्पनाजनित राज्य मे ही सामान्य इच्छा का उदभव हो सकता है। अनुभववादी दष्टिकोण के अनुसार ऐतिहासिक अथवा वास्तविक राज्यो म सामान्य इच्छा नाम की कोई वस्तु नही होती। इन राज्यो का आधार शासक वग के सदस्यो की इच्छा है जो वग-स्वार्थ से प्ररित होती है। क्रियावादी दष्टिकोण के अनुसार तत्कालीन सरकार की इच्छा ही वस्तुत राज्य की इच्छा है।

सरकार ऐसे मनुष्यो का समूह है जो गलतिया भी कर सकत हैं, अत कानूनो, आदेशो और आज्ञाओ के द्वारा व्यक्त होने वाली राज्येच्छा हमेशा नैतिक और विचारपूर्ण हो यह आवश्यक नही। इतिहास सिद्ध करता है कि नतिक दष्टिकोण मे शासक और शासित वर्गों म कोई अनिवाय अतर नही है और शासक वग की नतिक श्रेष्ठता का कोई स्वयसिद्ध प्रमाण नही मिलता। कुछ परिस्थितिया ऐसी भी होती हैं जब राज्येच्छा का पालन करना ही अनतिक है। कुछ ऐसी भी परिस्थितियां हो सकती है जिनमे राज्य के प्रति विद्रोह करना नागरिकों का नैतिक कत्तव्य बन जाता है। सयुक्त राज्य अमरीका म नीग्रो नागरिक के लिए रगभेद पर आधारित कानूनो की अवज्ञा करना नतिक दृष्टि

से उचित है। किसी उपनिवेश का निवासी साम्राज्य की सरकार के खिलाफ विद्रोह करे तो यह नैतिक अपराध नही माना जा सकता। इसलिए मनुष्य को अपने अंतर्विवेक के अनुसार ही अपने कर्त्तव्य के विषय मे निर्णय करना चाहिए।

जब हम अंतर्विवेक को नैतिक मापदंड मान लेते हैं तो निष्ठा के विषय मे बहुलवादी स्थिति भी युक्तिसंगत प्रतीत होती है। लास्की का विचार है कि राज्य नागरिक से संपूर्ण निष्ठा प्राप्त करने का अधिकारी नही है। राज्य की यह मांग कि प्रत्येक परिस्थिति मे नागरिक उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करे और यदि राज्य की मांग और दूसरे ऐच्छिक समुदायों की मांगो म पारस्परिक संघर्ष हो तो नागरिक हमेशा राज्य की मांग को प्राथमिकता दे, लास्की के दृष्टिकोण के अनुसार उचित नही है।

मनुष्य की निष्ठा के लिए अनेक समुदाय प्रयत्नशील रहते हैं। नागरिक अपने अंतर्विवेक के अनुसार अपनी निष्ठा को राज्य तथा अन्य समुदायों के मध्य बांट देता है। प्रत्येक स्थिति मे उससे यह आशा नही की जा सकती कि वह राज्य के प्रति निष्ठावान ही रहे चाहे राज्य स्वयं उस निष्ठा का अधिकारी या पात्र हो अथवा न हो। लास्की के अनुसार एक शांतिवादी नागरिक फौज मे अनिवार्य भर्ती के कानून की अवज्ञा कर सकता है और यह नैतिक दृष्टि स गलत नही है। इसी प्रकार मजदूर संघ का सदस्य ऐसे राज्य की अवज्ञा कर सकता है जो उसके उचित अधिकारों का दमन करे। यदि कानून प्रत्येक संघर्ष मे पूंजीपति का साथ दे और मजदूरो को दबाए तो राज्य मजदूरो से निरंतर निष्ठावान बने रहने की आशा नही कर सकता। इसी प्रकार यदि कोई राज्य धर्म के आधार पर पक्षपात करे या अल्पसंख्यकों को धार्मिक स्वतंत्रता न दे तो इस स्थिति मे वह इन अल्पसंख्यकों की निष्ठा का हकदार नही रहता। इस तरह ऐसी अनेक परिस्थितियां गिनाई जा सकती हैं जिनमे नागरिक के लिए राज्य के प्रति निष्ठा रखना नैतिक रूप से अनिवार्य नही समझा जा सकता। कुछ परिस्थितियों म समुदाय द्वारा प्रस्तुत आदर्श राज्य द्वारा प्रस्तुत आदर्श से श्रेष्ठतर हो सकता है। इन परिस्थितियों म यदि नागरिक समुदाय के प्रति अधिक निष्ठावान हो जाए तो इसमे उसका कोई दोष नही है। अतः राज्य को यह प्रयास करना चाहिए कि जिन आदेशों का वह नागरिकों से पालन कराना चाहता है वे नैतिक दृष्टि स सही हों और नागरिक उन्हें अंतर्विवेक के आधार पर स्वीकार सकें।

वस्तुतः निष्ठा का बहुलवादी सिद्धांत लास्की के दृष्टिकोण के अनुसार उस विश्वव्यवस्था का विरोध करता है जिसमे पारंपरिक नैतिकता के समर्थक नए विविध नैतिक मूल्यों पर आधारित कानूनों को बनने ही नही देते। लास्की का विचार है कि विविधता ही सप्राण सामाजिक व्यवस्था का लक्षण है। अद्वैतवादी

आदश, जो विविधता का दमन करता है, नतिक रूप से बौने मनुष्य पैदा करता है। एकमात्र राज्य के प्रति सपूण निष्ठा का सिद्धात जनता की नतिक आका क्षाओ और भावनाओ का दमन करता है। एक मजदूर जो हडताल मे हिस्सा लेने के कारण जेल मे डाल दिया जाता है, एक यहूदी जिसे नाजी सरकार धम तथा जाति के नाम पर दड देती थी, एक लेखक जिसकी पुस्तक पर पाबदी इसलिए लगा दी जाती है कि उसके विचार व्यवस्था की आलोचना करते है, या क्वेकर सप्रदाय का कोई सदस्य जो सेना मे भर्ती होन से इनकार कर दता है क्योकि युद्ध मे भाग न लेना उसके धार्मिक विश्वास का अग है, एस राज्य के प्रति कस निष्ठावान रह सकता है जो उसके साथ उपयुक्त व्यवहार करता है।[9]

लास्की की नैतिक मायताओ मे एक तार्किक असगति है। यदि हम प्रत्यक व्यक्ति की अतरात्मा को निणय करने का नैतिक मापदड मान ल तो यह भी दखना चाहिए कि समाज मे ऐसे व्यक्ति भी हैं जिन्हे अतरात्मा जैसी चीज मे कोई विश्वास नही और जो अपराध करते समय अर्तविवेक की पुकार मुन ही नही सकते। यदि ये लोग भी मनमानी करने के हकदार हो जाए तो समाज मे निश्चय ही अराजकता को बढावा मिलेगा। लास्की के सिद्धात के आधार पर एक ईमानदार आदमी के अत करण की आवाज और एक धूत व्यक्ति की स्वाथ पर आधारित हठधर्मी म भेद करना कठिन है।[1]

यदि नतिक आदश के रूप मे हम निष्ठा के बहुलवादी सिद्धात को स्वीकार भी कर ल, तो भी इस सामाजिक जीवन मे कार्यान्वित करना असभव है। निष्ठा सबधी मतभेदो के परिणामस्वरूप विभिन्न समुदायो के बीच या राज्य और किसी समुदाय क बीच हिंसात्मक सघप शुरू हो सकता है। इस प्रकार अराजकता की अवस्था समाज का स्थायी रूप बन जाएगी।

स्वय लास्की ने इस आलोचना की सभावना पर विचार करते हुए लिखा है यह आपत्ति की जाती है कि यह अराजकता का सिद्धात है। यदि लोगो का अविश्वास के आधार पर अवज्ञा करने की छूट दे दी जाए तो कहा जाता है कि सामाजिक शाति का अत हा जाएगा और हिंसा के वातावरण मे न्याय की कभी विजय नही होती। इसलिए यह तक देना कि मनुष्य अपनी अतरात्मा की आवाज के अनुसार काय कर यह आग्रह करना कि कुछ परिस्थितियो म कानून का उल्लघन करना उचित है, सावजनिक कल्याण के आधारा पर प्रहार करना है। हम राज्य मे डरना और कापना चाहिए। हमे याद रखना चाहिए कि इसके काय इसकी परपराए और इसके उद्देश्य भूतकाल स विरासत मे प्राप्त बुद्धिमत्ता से जन्मे हैं। हम तुच्छ बुद्धि वाले प्राणी कब के शब्दा में इतिहास के इस महान निष्कष के विरुद्ध अपन निणय की दुहाई कस दे सकत हैं?[3]

निष्ठा के बहुलवादी सिद्धात के विरोध मे यह तक पारपरिक रूप स दिया गया है और इसी के आधार पर अनेक दाशनिकों ने अर्तविवक को नतिक माप-

दंड मानने से इनकार कर दिया है। नैतिक और राजनीतिक चिंतन में अनुदार और यथास्थितिवादी विचारकों ने इसी युक्ति के द्वारा अंतःप्रज्ञावाद (Intuitionism) का खंडन किया है।

लास्की ने उपर्युक्त आरोप के संबंध में अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है, 'यह तर्क सतही तौर पर अकाट्य मालूम होता है पर वस्तुतः इसमें कुछ दम नहीं है। वर्तमान परिस्थितियां सिर्फ इसलिए न्यायोचित नहीं क्योंकि वे वर्तमान हैं, वे न्यायोचित उसी सीमा तक हैं जिस सीमा तक उनमें न्याय निहित है। कोई भी अमरीकी 1776 के लिए वाशिंगटन की निंदा नहीं कर सकता, शायद ही कोई फ्रांसीसी 1789 के औचित्य पर संदेह करेगा, शायद ही कोई अंग्रेज 1688 को अनुचित ठहराएगा। परंतु वाशिंगटन तथा अन्य सभी क्रांतिकारियों ने समय आने पर राज्य की अवज्ञा करने का फैसला किया और उनके निश्चय में यह निर्णय निहित है कि उनका भविष्य के विषय में दृष्टिकोण पारंपरिक अधिकारियों के दृष्टिकोण से अवश्य टकराएगा। यह स्पष्ट है कि हमारा विरोध स्थिति के अनुपात के आधार पर होना चाहिए। अगर आयकर अधिकारी ने हमारी आय का गलत अनुमान लगाया है तो हमारा बंदूकें लेकर जुलूस निकालना उसकी गलत कारवाई का सही जवाब नहीं है। परंतु यदि हमारी दशा 1789 के फ्रांसीसी किसान जैसी हो या 1917 के रूसी किसान जैसी हो तो यह समझना मुश्किल है कि फिर क्या हमारे पूर्वजों की बुद्धिमत्ता को बुद्धिमत्ता के नाम से सम्मानित किया जाए।[4]

हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि लास्की के नैतिक आदर्श कुछ आदर्शवादियों की अपेक्षा अधिक उदार और प्रगतिशील हैं। कुछ सीमा तक वे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के साधन बन सकते हैं। फिर भी लास्की के नैतिक बहुलवाद का मुख्य दोष उनकी अतिरंजित आत्मनिष्ठा है। नैतिक निर्णय में अंतर्विवेक रूपी स्रोत की चर्चा करते हुए वे उसके वास्तविक विषय की अवहेलना करते हैं। वे स्वयं इस बात को स्वीकार करेंगे कि एक लोकतंत्रवादी, जो फासिस्ट राज्य का अपने अंतर्विवेक के अनुसार विरोध करता है, और एक फासीवादी जो अपनी अंतरात्मा की पुकार के नाम पर लोकतंत्र का विरोध करता है, अपने उद्देश्य और कार्यों में समान रूप से नैतिक नहीं है। अतः राजनीतिक विचारों के नैतिक मूल्यांकन के लिए हमें स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ मापदंड भी चाहिए।

संदर्भ

1 लास्की : प्लूरलिस्टिक स्टेट : फिलोसफीकल रिव्यू पृ० 562–75
2 सी० एच० कुंग : पालिटीकल प्लूरलिज्म पृ० 1–8

3 क्लेयर मार्केट रिव्यू, जुलाई 1950 पृ० 39
4 विलियम इलियट प्रगमटिक रिवोल्ट इन पालिटिक्स, प० 142–76
5 लास्की दि प्राब्लम आफ सावरेंटी, पृ० 23, फाउंडेशंस आफ सावरेंटी, पृ० 169, ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 261
6 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रेसी पृ० 726
7 वही प० 726
8 विलियम जेम्स प्रगमटिज्म पृ० 51
9 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रेसी पृ० 726
10 वही, पृ० 449
11 मेरियम और बार्नेस हिस्ट्री आफ पालिटिकल थ्योरीज—माडर्न टाइम्स प० 314–48
12 सी० एच० कुग पालिटीकल प्लूरलिज्म प० 193
13 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रेसी पृ० 166
14 सी० एच० कुग पालिटीकल प्लूरलिज्म प० 206–7
15 वही पृ० 203
16 लास्की दि डेंजर्स आफ ओबीडिएंस प० 23–24
17 वही, पृ० 7 (संस्करण 1930)
18 वही प० 24–25
19 सी० एच० कुग पालिटीकल प्लूरलिज्म प० 209–25
20 लास्की दि डेंजर्स आफ ओबीडिएंस पृ० 11–30
21 सी० एच० कुग पालिटीकल प्लूरलिज्म प० 240–41
22 वही प० 241–47
23 लास्की दि डेंजर्स आफ ओबीडिएंस, प० 21
24 वही पृ० 21–22

# सप्रभुता और राजनीतिक बहुलवाद

## बहुलवादी राज्य

राजनीतिक बहुलवाद शक्ति की गतिशीलता के क्रियात्मक विश्लेषण का तार्किक परिणाम है। किसी एक केंद्रीय स्रोत पर शक्ति का सकलन अत्याचारी सामाजिक व्यवस्था को जन्म देता है। राजनीतिक सस्थान के परिधि बिंदुओ तक शक्ति का प्रसार स्वतत्र समाजो की विशेषता है। लास्की का बहुलवादी राज्य सिद्धात वस्तुत राजनीतिक अधिकरण की सघीय परिकल्पना पर आधारित है। किसी भी लोकतात्रिक राजनीतिक प्रणाली के लिए शक्ति की सघीय अवधारणा एक उपयोगी सिद्धात है। बहुलवादियो का मत है कि समाज म सपूर्ण शक्ति का एकाधिकार राज्य मे निहित नही होना चाहिए। राज्य को चाहिए कि वह अन्य सामाजिक समुदायो के साथ शक्ति का भागीदार बने। नागरिको के जीवन के विविध पहलुओ को नियत्रित कर उन्हे एक साचे मे ढालने का प्रयास करना राज्य के लिए उचित नही है। असहमति प्रकट करने वाले समुदायो को शक्ति का भय दिखाकर अपन वश मे रखना और उन्हे अपनी आज्ञा के अनुरूप चलाना राज्य के लिए अनुचित है। वास्तविक रूप से स्वस्थ जाति के निर्माण के लिए समुदायो को उचित स्वायत्तता देना और सामाजिक विविधता का स्वागत करना आवश्यक है। सपूर्ण समाज के हित को ध्यान मे रखते हुए राज्य को अपनी सप्रभुता का दावा छोड देना चाहिए।[1]

इसके अतिरिक्त लास्की राजनीति मे सहमति के सिद्धात की पुनर्व्याख्या करन का प्रयास करते हैं। वे सहमति के पारपरिक सिद्धात को मानसिक विलासिता' मानत हैं जा शासनप्रक्रिया के वास्तविक रूप को स्पष्ट नही करता। लास्की का कथन है, 'हम अपने शासको का चुनाव इस अथ मे नही करते कि कुछ व्यक्ति हमारे सक्रिय प्रभाव और स्पष्ट रूप से निश्चित इच्छा के अनुसार शासन करते हैं। हम उनके बनाए हुए कानूनो को इस अथ मे स्वीकार नही करते कि वे हमारी भावना और आवश्यकताओ के अनुसार बने हैं। हमारे

शासकों और हमारे मध्य एक खाई है जिसे पाटने का प्रयत्न शक्तिप्रयोग के विविध साधनों द्वारा किया जाता है। हमसे कहा जाता है कि लोकमत की यह अभिलाषा है और यह सकल्प है। परतु लोकमत के प्रवाह के लिए न तो सतोषजनक रास्ते है और न वह ज्ञानसामग्री है जिसके आधार पर वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की माग रख सके। व्यवहार म सहमति के वीस अथ हो सकते है जिनमे पूर्ण अज्ञान मूक निष्क्रियता और दबाव द्वारा आज्ञापालन शामिल है।[2] अगर सहमति के विषय मे उदारवादी रूढि शासन के आधार के रूप मे व्यावहारिक नहीं है तो उसका विकल्प क्या है? लास्की के अनुसार इसका विकल्प यही है कि शासन की नीतियो के निर्धारण मे सगठित हितगुटो का अधिकतम सहयोग लिया जाए।

शासन की नीतियो के निर्माण म सगठित हितो के प्रतिनिधि तभी भाग ले सकते हैं जब वतमान प्रातिनिधिक शासनप्रणाली मे इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए जरूरी परिवतन कर लिए जाए। वाल्टर लिपमन ने प्रतिनिधित्व के पारपरिक सिद्धात की आलोचना करत हुए कहा कि वह यह मानकर चलता है कि किसी चुनाव क्षेत्र का सफल उम्मीदवार ही वह व्यक्ति है, जो अपने क्षत्र के विविध हितो की सर्वोत्तम रक्षा कर सकता है और ऐसे सफल उम्मीदवारो का विधानसभा मे सकलन राष्ट्रीय बुद्धिमत्ता और ज्ञान का भी सर्वोत्तम सकलन है।[3] सहमति के इस पारपरिक सिद्धात को अस्वीकार करत हुए लास्की का कथन है, 'वस्तुत एसा कुछ नही होता। किसी केंद्रीय ससद को अधिकाश जनो की बुद्धिमत्ता कभी प्राप्त ही नही हो सकती। जो उनका चुनाव करत हैं वे स्वय उस बुद्धिमत्ता से परिचित नहीं हैं, जो चुने जात हैं वे उस बुद्धिमत्ता को, जो प्रकट हो जाती है अपनी मूखता या स्वाथपरता के कारण व्याख्या करने मे असमथ होते हैं। यह विचार कि मेरा सकल्प और मेरा अनुभव किसी रहस्यात्मक ढग से मेरे प्रतिनिधि के सकल्प और अनुभव म समाविष्ट हो जाता है हमारे सामने उपलब्ध तथ्यो से असत्य सिद्ध हो जाता है।'[4]

रूसो का सुझाव था कि हम प्रतिनिधि प्रजातत्र के स्थान पर प्रत्यक्ष लोकतत्र का विकल्प स्वीकार करना चाहिए। परतु यह विकल्प आधुनिक राज्यो के विस्तार को दखते हुए व्यावहारिक नहीं हैं। लास्की जी० डी० एच० कोल के सुझाव को भी स्वीकार नही करत कि प्रादेशिक चुनाव क्षेत्रो के स्थान पर काय तथा पेशे के आधार पर निर्वाचन कराना चाहिए। अगर यह सत्य है कि नागरिक के रूप म हमारी इच्छा का कोई प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता तो यह भी सच है कि इजीनियर, डाक्टर या व्यापारी के रूप म मेरी इच्छा का भी नही प्रतिनिधित्व करना सभव नहीं है। लास्की का सुझाव है कि विधान सभा को कानून बनाने की प्रक्रिया मे और प्रशासन विभागो की नीतियो का कार्यान्वित करन की प्रक्रिया म हितगुटो की सलाहकार परिषदो का भागीदार बनाने की

प्रणाली शुरु कर देनी चाहिए। उन्होंने उपर्युक्त विचार को व्यक्त करते हुए कहा है, 'शक्ति का आधार भी संघीय होना चाहिए क्योंकि समाज का ढांचा संघीय होता है। इसका अर्थ है कि सरकार को हितगुटों की सहायता से ही अपने निर्णय करने चाहिए और उनके ही सहयोग से उन्हें कार्यान्वित करना चाहिए। इसका अर्थ है कि खनिज उद्योग को उसी प्रकार प्रशासन की इकाई मान लेना चाहिए जैसे लंकाशायर है। इसका तात्पर्य है कि शिक्षा मन्त्रालय के इर्द गिर्द ऐसे संस्थान होने चाहिए जो शिक्षणप्रक्रिया में लगे हुए वर्गों के दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकें इसका निष्कर्ष है कि सप्रभुतासंपन्न राज्य, जो अपने को समाज का पर्याय मानकर समाज के अंतर्गत सभी समुदायों से आज्ञापालन की अपेक्षा रखता है, समाप्त कर दिया जाए।'[5]

अत बहुलवादी राज्य की परिकल्पना का केंद्रबिंदु सप्रभुता के सिद्धांत की अपूर्णता है। बहुलवादी सिद्धांत की सार्थकता बहुत कुछ इसके द्वारा प्रस्तुत सप्रभुता के पारंपरिक एकसत्तात्मक दृष्टिकोण की आलोचना की गंभीरता पर निर्भर है।

## सप्रभुता की समस्या

जबकि अराजकतावादी राज्य को समाप्त करने में विश्वास रखते हैं, लास्की जैसे बहुलवादी राज्य की उपस्थिति केवल इस शर्त पर सहन करने के लिए राजी हैं कि उसकी सप्रभुता को समाप्त कर दिया जाए। लिंडसे का कथन है 'अगर हम तथ्यों पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि सप्रभुतासंपन्न राज्य का सिद्धांत गलत साबित हो गया है।[6] बार्कर ने उपर्युक्त कथन से सहमति प्रकट करते हुए कहा, 'सप्रभुतासंपन्न राज्य के सिद्धांत की तुलना में ऐसा कोई अन्य राजनीतिक विचार नहीं जो उससे अधिक नीरस और निष्फल हो।'[7] इन्हीं का अनुकरण करते हुए लास्की ने भी कहा, 'अगर सप्रभुता की सारी परिकल्पना का त्याग दिया जाए तो यह राजनीति विज्ञान के लिए स्थायी रूप में हितकारी सिद्ध होगा।'[8] राज्य की सप्रभुता के प्रति असाधारण असतोष लगभग सभी बहुलवादियों की विचारधारा का अंग बन गया है।

सप्रभुता के पारंपरिक सिद्धांत का खंडन लास्की ने तीन दृष्टिकोणों से किया है। इनमें पहला दृष्टिकोण ऐतिहासिक है। सप्रभुतासंपन्न राज्य का जन्म एक विशेष युग में विशेष ऐतिहासिक परिस्थितियों के मध्य हुआ। अत उन सभी ऐतिहासिक कारणों की खोज जरूरी है जिनकी वजह से सप्रभुतासंपन्न राज्य की स्थापना की गई। इसी ऐतिहासिक सर्वेक्षण के आधार पर सप्रभुता सिद्धांत की वर्तमान उपयोगिता की परीक्षा हो सकती है। दूसरा दृष्टिकोण नैतिक तथा राजनीतिक है। सप्रभुता एक विधिशास्त्रीय परिकल्पना के रूप में नैतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से एक निरर्थक सिद्धांत है। आस्टिन के अनुसार कानून

सप्रभुता का आदेश है। क्या राजनीति विज्ञान के लिए कानून की यह विधि शास्त्रीय परिभाषा सही है ? सप्रभुता के सिद्धात के अनुसार राजनीतिक सग ठन के अतगत एक निश्चित मानवीय सप्रभु होना चाहिए जिसके आदेश का पालन सभी प्रशासनिक सस्थान और नागरिक स्वाभाविक रूप से करते हैं। अब विचार णीय प्रश्न यह है कि क्या यह वतमान राजनीतिक समाज का यथाथ विश्लेषण है। तीसरा दृष्टिकोण अतर्राष्ट्रीय है। क्या सप्रभुता का सिद्धात राष्ट्रीय राज्य को अतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति दायित्वहीन नही बनाता ? सप्रभुता का सिद्धात प्रत्येक राज्य को युद्ध छेडने और सधि द्वारा शाति स्थापित करने का अधिकार देता है। अत इस सिद्धात के कारण राज्य अपने मतभेदो का शातिपूण उपायो से समाधान करने के बजाय युद्ध द्वारा करने का प्रयास करते हैं। अत सप्रभुता का सिद्धात विश्वशाति की स्थापना के माग मे बहुत बडी बाधा है। उपयुक्त तीनो दृष्टिकोणो से विचार करने पर लास्की इसी निष्कष पर पहुचते हैं कि राजनीति विज्ञान के लिए सप्रभुता के सिद्धात का कोई मूल्य नही है।[9]

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सप्रभुतासपन राज्य का आविर्भाव सोलहवीं शताब्दी मे पश्चिमी जगत के धार्मिक सघर्षों के परिणामस्वरूप हुआ। सप्रभुता के सिद्धात से ही राज्य के एकसत्तावादी सिद्धात का उदय हुआ। लास्की का कथन है 'हमे यह हमेशा याद रखना चाहिए कि एकसत्तावादी राज्य का जन्म सकट के युग मे हुआ था और इस सिद्धात का पुनरुत्थान राजनीतिक सत्ता के वितरण मे परिवतन लाने वाली महत्त्वपूण घटना से सबद्ध है। जैसा कि सवविदित है कि बोदा धार्मिक युद्ध के युग मे उस दल से सबद्ध था जो विजातीय सघष मे राज्य को नष्ट होने से बचाने के लिए उसकी सर्वोच्चता के सिद्धात का प्रति पादन करता था। हाब्स ने उस युग म, जब राज्य और ससद मे शक्ति के सतुलन के लिए युद्ध हो रहा था इसके द्वारा व्यवस्था के साधनो की खोज की थी। बेंथम ने अपनी पुस्तक 'फ्रगमेट (Fragment) का प्रकाशन अमरीका द्वारा स्वतत्रता की घोषणा के कुछ समय पूव किया, और ऐडम स्मिथ ने उसी वष म एक दूसरे क्रातिकारी सिद्धात का प्रतिपादन किया। हीगल का दशन फ्रास की एकता द्वारा विभक्त जमनी की पराजय की प्रतिक्रिया था। आस्टिन की पुस्तक उस समय लिखी गई जब फ्रास और इगलड के *मध्यम वर्गों* ने, अपने विभिन्न तरीको से राज्य को अपने अधिकार मे कर लिया था—उससे पूव राज्य उनकी महत्त्वाकाक्षा के लिए केवल आशिक रूप स ही उपलब्ध था।'[10] उपयुक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि एकसत्तावादी राजनीतिक विचारको न राज्य की सप्रभुता के सिद्धात का प्रतिपादन सकट के समय म राज्य की सत्ता को सुदृढ बनाने के लिए किया था।

वदेशिक क्षेत्र म सप्रभुतासपन राज्य के सिद्धात का उद्देश्य यूरोप के राष्ट्रीय राजतत्रा द्वारा पोप के सर्वोपरिता के दावो को अस्वीकार करना था।

लूथर इन राजतत्रो की सप्रभुता के प्रथम समयक थे क्योकि उनके पोप के विरुद्ध धमसुधार सबधी सघष की सफलता इन राजाओ के राजनीतिक सघष की सफलता पर निभर थी। ग्रोशस पहले विधिशास्त्री थे जिन्होंने इसी युग मे अतर्राष्ट्रीय कानून के क्षत्र मे राज्य की सप्रभुता के सिद्धात को स्पष्ट स्वीकृति दी और उसका जोरदार समथन किया।[11] परतु अतर्राष्टीय क्षेत्र मे राज्य को सर्वोच्चता की स्वीकृति पर्याप्त न थी। राष्ट्रीय राजतत्रा के लिए धार्मिक गृहयुद्धा से जबरदस्त खतरा था क्योकि इनके कारण राष्ट्र दो सप्रदाया मे बट गया था। सत्ताधारी राजाओ ने पहले तो अपनी सप्रभुता की घोषणा द्वारा विरोधी सप्रदाय के दमन का प्रयास कर आतरिक शाति की स्थापना करने की कोशिश की। जब इस नीति के सतोषजनक परिणाम न निकले तो लाक जसे राजनीतिक चितको ने धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धात का प्रतिपादन किया जिसके द्वारा अल्पसख्यक सप्रदाय के सदस्यो को स्वेच्छा से राष्ट्र का अभिन्न अग बनाया जा सके। बोदा पहले विचारक थे जिन्होने धार्मिक सहिष्णुता के आधार पर सप्रभुता के सिद्धात को राज्य के आतरिक क्षेत्र मे कार्यान्वित करने का प्रस्ताव किया।[12]

प्रारभ मे सप्रभु (Sovereign) राज्य की स्थापना राजनीतिक शक्ति की चच की सर्वोपरिता के दावो पर विजय थी। तदुपरात यह सप्रभुता मानवीय क्रियाओ के अन्य क्षेत्रो मे व्याप्त हो गई। सामाजिक वग, आर्थिक श्रेणिया, धार्मिक सप्रदाय और सास्कृतिक सस्थान भी दिग्विजयी राज्य के पैरो तले कुचले गए। हाब्स के हाथो मे सप्रभुता का सिद्धात राजाओ के एकतत्र का साधन बन गया। रूसो ने जनता की सप्रभुता की घोषणा की पर उसके सिद्धात का उपयोग फ्रासीसी बुर्जुआ वग ने अपना अधिनायकतत्र स्थापित करने के लिए किया। सप्रभुता के नाम पर हीगल ने जमनी की जनता से अपनी स्वाधीनता व अधिकारो के बलिदान के लिए कहा और सम्राट के नाम पर एक सामतवादी व सैन्यवादी गुट के अनुत्तरदायी शासन को नैतिक बताया। बेंथम ने ससद की सप्रभुता का समथन इसलिए किया जिससे अगरेज बुर्जुआ वग ससद की सर्वोपरिता की आड मे शासन कर सके। लास्की के कथनानुसार आस्टिन भी ससद की सप्रभुता की रूढि से इसीलिए चिपके रहे क्योकि वे भी यथा स्थिति को कायम रखना चाहते थे। अमरीका के मुख्य न्यायाधीश माशल राज्य सरकारा के विरुद्ध सघीय सप्रभुता का समथन इसीलिए करते रह क्योकि अमरीकी बुजुआ वग केंद्रीय सरकार पर नियत्रण रखकर सभी राज्यो मे औद्योगिक विस्तार की समान सुविधाए चाहता था।[13]

सप्रभुता के सिद्धात के ऐतिहासिक विकास के विश्लेषण से लास्की यही निष्कष निकालते है कि यह सिद्धात कुछ विशेष समाजो तथा कुछ विशेष कालो मे भले ही उपयुक्त हो, सभी समाजा और सभी कालो के लिए उपयुक्त नही

है। प्राचीन यूनानी इस सिद्धात से अपरिचित थे और मध्ययुगीन राज्यो म यह सवथा अनुपयुक्त था। आधुनिक युग म भी इसे धार्मिक और आर्थिक हित गुटो न सफलतापूवक चुनौती दी है। लास्की न ब्रिटिश ससद और ब्रिटन के अल्पसख्यक धार्मिक सम्प्रदायो के सघष का सर्वेक्षण किया और व इस निष्कष पर पहुचे कि राज्य द्वारा सम्प्रभुता के नाम पर इन सम्प्रदायो के आतरिक अनुशासन या सिद्धाता पर नियत्रण करन का प्रयत्न असफल रहा है।[14] इसी प्रकार जमनी म बिस्मार्क का 'कुल्टूरकाम्फ' या सास्कृतिक युद्ध भी कैथोलिक चच का एक शुद्ध राष्ट्रीय सस्थान बनाने मे सफल सिद्ध नही हुआ।[15] लास्की का विचार है कि गहयुद्ध के समय जब दो पक्ष युद्ध म सलग्न हो और दोनो ही राज्य की सप्रभुता क लिए दावा कर रह हो तो जब तक किसी पक्ष की विजय न हो जाए, यह कहना कठिन है कि सप्रभुता का वहा कौन सही दावदार है। अत आतरिक दृष्टि से सप्रभुता के सिद्धात को मान्यता दन म कई कठिनाइया आती हैं।

आधुनिक काल म सप्रभुता का सिद्धात अतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी दोषपूण है। लास्की का कथन है, 'अतर्राष्ट्रीय आधार पर निष्ठा का विस्तार, जो राज्य की सीमाओ का अतिक्रमण करे, परिकल्पना के रूप म मुश्किल नही है। जो युद्ध के परिणामो को जानते हैं उन्हें कुछ मुट्ठीभर लोगो के हाथ मे युद्ध करने की शक्ति सौंप देना समय के अनुकूल नही मालूम पडेगा। जब अतराष्ट्रीय क्षेत्र म राज्य की सप्रभुता मानी गई, तब किसी अतराष्ट्रीय सस्थान की स्थापना नही हुई थी। अब यह दलील दी जा सकती है कि ऐसे अत र्राष्ट्रीय अधिकरण की स्थापना सभव है जो उन मामलो पर नियत्रण रख जो राष्ट्रीय क्षेत्र से ऊपर हैं। यह तभी सभव है जब कम से कम अतराष्ट्रीय दृष्टिकोण स राज्य की सप्रभुता का अत कर दिया जाए।'[16] लास्की का विचार था कि राष्ट्रसघ की स्थापना इस दिशा म एक महत्त्वपूण कदम था।

आस्टिन द्वारा प्रस्तुत राज्य सप्रभुता सिद्धात राजनीतिक समाजो की वास्तविक कानूनी स्थितियो का भी सही परिचय नही देता। लास्की के अनुसार मान्तेस्क्यू, सर हनरी मेन, दुर्खीम, दूग्वी और क्रब द्वारा प्रस्तुत विधिशास्त्र आस्टिन जसे विश्लेषणात्मक विधिशास्त्रियो के विचारो से कही अधिक श्रेष्ठतर है।[17] आस्टिन के अनुसार कानूनी व्यवस्था एक औपचारिक सोपानात्मक ढाचा है जिसम सर्वोपरि सस्थान या व्यक्ति अपन से नीचे सभी अधिकारियो और जनता से आज्ञापालन की अपक्षा रखता है। कोई भी नागरिक या सस्थान सप्रभुता के क्षेत्राधिकार से बाहर नही है। कानून इसी सर्वोपरि शक्ति की आज्ञा है और उसकी आज्ञा ही कानून है।

लास्की उपर्युक्त व्याख्या से असहमति प्रकट करत हुए कहत हैं 'राज नीतिक दशन राज्य के जीवन म कानून के महत्त्व को नि सदेह स्वीकार करता

है। परतु इसे कानून के चरित्र की विवेचना करते समय या तो मान्तेस्क्यू का मत स्वीकार कर लेना चाहिए अथवा इसका निष्कर्ष सही न होगा। राजनीति के छात्र के लिए कानून सामान्य सामाजिक वातावरण से बनी हुई वस्तु है। यह निर्दिष्ट समय में अनिवार्य सामाजिक सबधो को प्रतिबिबित करता है। वह सस्थान जो इन कानूनो को पारित करता है, राजनीति के दृष्टिकोण से, उन शक्तियो की तुलना मे जो उस सस्थान को ऐसा करने के लिए बाध्य करती हैं, बहुत कम महत्त्व रखता है।[18]

इस प्रकार लास्की कानून की ऐतिहासिक विवेचना को उसके विधिशास्त्रीय विश्लेषण से अधिक उपयोगी समझते हैं। सर हनरीमेन की तरह वे कानून को प्रथाओ और नतिक मान्यताओ के सदर्भ मे देखते है। आस्टिन की सप्रभुता को यदि उसका नकाब उतारकर देखें तो वह उन शक्तिशाली सामाजिक गुटो की चेरी मालूम होगी जो किसी समाज मे उस समय अर्थव्यवस्था पर नियत्रण रखते हैं। व्यवहार मे सप्रभुता निरकुश हो ही नही सकती क्योकि सामाजिक वर्गों के सघर्ष के कारण इसके निर्णयों म परिवर्तन होते रहते है। समाज के सगठित हितगुट सप्रभुता के आदेशो के निर्माण म निरतर योगदान देते रहते हैं। ब्रिटिश ससद सप्रभुतासपन्न है परतु मजदूरो के आदोलन के परिणामस्वरूप उसे ऐसे अनेक कानून पारित करने पडे जिन्हे वह स्वेच्छा से कभी न करती। अन्य श्रमिक सघो का भी कानून के निर्माण मे हाथ होता है। ग्याक और मेटलैंड के विचारो से लास्की काफी प्रभावित हुए हैं। वे भी उनकी तरह कानूनो के निर्माण म समुदायो, सस्थानो और सामाजिक वर्गो के योगदान को स्वीकार करते है। फिर भी वे ग्याक तथा मेटलैड की तरह निगमो के व्यक्तित्व सिद्धात को नहीं मानते। वे निगमो और समुदायो को स्वायत्तता देने के पक्ष म हैं और उन्हे कानून निर्माण प्रक्रिया से सबद्ध करना चाहते है।[19] सप्रभुता का पारपरिक सिद्धात कानून के विविध स्रोतो को स्वीकार नही करता। बहुलवादी दृष्टिकोण के अनुसार कानूनी व्यवस्था की यह विविधता स्वीकार करना आवश्यक है। यही लास्की का भी मत है।

सघीय राज्यो की स्थापना आस्टिन की सप्रभुता की परिकल्पना के लिए एक नई कठिनाई उपस्थित करती है। अमरीकी राजनीतिक सस्थानो मे एक सुनिश्चित मानवीय सप्रभु का खोजना असभव है। लास्की का कथन है, 'काग्रेस एक सीमित सस्थान है जिसकी शक्तियां ध्यानपूर्वक निर्धारित की गई हैं, पृथक राज्य भी सविधान के चार कोनो मे अपनी अलग कोठरी बनाए बैठे हैं, सविधान मे सशोधन के अधिकार पर भी एक सीमा है कि राज्य की अनुमति बिना सीनेट मे उसका समान प्रतिनिधित्व समाप्त नही किया जा सकता। सैद्धातिक रूप मे सयुक्त राज्य मे कोई सर्वोपरि सस्थान नही है, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशो के निर्णय भी सावैधानिक सशोधन से निरर्थक हो जाते हैं, इस

लिए यह न्यायालय भी पूर्ण स्वाधीन नहीं है। कुछ विशेष ऐतिहासिक अनुभव के कारण एक ऐसे राज्य की स्थापना हुई है जिसमे सम्प्रभुता की परिकल्पना अनुपस्थित है।'[20] उपयुक्त कठिनाइयां अब केवल सघीय सविधान मे ही पाई जाए यह आवश्यक नही है। बेल्जियम एकात्मक राज्य है। फिर भी लास्की का मत है कि उसके सविधान मे आस्टिन की परिभाषा पर आधारित सम्प्रभुता के लिए कोई स्थान नही है।[21]

कानून की समाजशास्त्रीय विवेचना के अनुसार कानून बनाने की प्रक्रिया इतनी उलझी हुई है कि आस्टिन की सरल और औपचारिक परिभाषा उसके साथ सही न्याय नहीं करती। लास्की का कथन है, 'आस्टिन के मत का सर्वोत्तम उदाहरण 'ससद मे राजा' की स्थिति है। जैसा कि डायसी ने बताया, इसकी इच्छा से उत्पन्न आदेश न्यायालयो द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा और सभी उसका पालन करेंगे। परतु यह सर्वविदित है कि आस्टिन के अर्थ मे 'ससद मे राजा' भी सम्प्रभुतासपन्न नही है। कोई ससद रोमन कथोलिको से मताधिकार नहीं छीन सकती और न श्रमिक सघो पर पाबदी लगा सकती है। यदि ऐसा वह करने का प्रयास करेगी, तो वह ससद के रूप मे जीवित न रह सकेगी।'[22] लास्की का विचार है कि केवल एक काल्पनिक जगत मे ससद आस्टिन की सम्प्रभुता का प्रयोग कर सकती है। यदि वास्तविक जगत मे वह ऐसा करने का प्रयास करेगी तो राष्ट्र अथवा विरोधी सामाजिक समुदायो के सगठित सकल्प द्वारा उसे नष्ट कर दिया जाएगा।[23]

यहा एक बात कही जा सकती है कि जब लास्की ससद की इच्छा के उल्लघन की चर्चा करते हैं तो यह डायसी की राजनीतिक सम्प्रभुता की पुनरावृत्ति है। डायसी के अनुसार यह मतदाताओ मे निहित है। लास्की इसी तथ्य को बहुलवादी रूप देते हैं। उनका कथन है, शायद यह सम्प्रभुतासपन्न ससद अपने मतदाताओ के आदेशो का पालन अधिक मात्रा मे करती है और मतदाता इसके आदेशो का पालन शायद उतनी मात्रा मे नही करते। उपचुनावो की शृखला ससद की इच्छा व भावना मे तेजी से परिवर्तन लाती है। कानूनी दृष्टि से सर्वशक्तिमान अधिकरण के पीछे मतदाताओ की शक्ति का अनुमान लगाना कठिन नही क्योंकि इसके विचारो और आकाक्षाओ के प्रति ससद अधिकाधिक आदर प्रकट करती है। यह अधिकाधिक आदर का विचार महत्त्वपूर्ण है। जैसे जैसे समाज मे नए समुदायो का सगठन बढता है और ये समुदाय सरकार पर दबाव डालने का प्रयास करते है, वैसे वैसे यह तथाकथित सर्वोच्च सस्थान दूसरे स्थानो पर किए गए निर्णयो को लिपिबद्ध करने का माध्यम मात्र बनता जाता है। आस्टिन के नियमो का औपचारिक पालन होता है पर उनके वास्तविक तत्त्व का परित्याग कर दिया जाता है।[24]

रूसो के जनवादी सम्प्रभुता के सिद्धात को भी लास्की ने अस्वीकार कर

दिया है। वे उसे एक असभव कहानी मात्र समझते है। रूसो का कथन है कि सप्रभुता जनता म निहित होनी चाहिए। एक प्रेरक विचार के रूप मे यह सिद्धात जनक्रातियो को जन्म देता है। लास्की उसकी इन सभावनाओ से परिचित हैं परतु सिद्धात के रूप मे वे इसे अवैज्ञानिक समझते हैं। उनका कथन है, 'औपचारिक रूप से प्रशासन के क्षेत्र म पूणतया कार्यान्वित करने के अथ मे रूसो का सिद्धात एक व्यावहारिक प्राक्कल्पना (Hypothesis) हो सकता है—सदेहास्पद है। वह राज्य और सरकार के भेद पर बल देते हुए केवल राज्य को ही असीमित शक्ति प्रदान करन के पक्ष मे था। किंतु यह स्पष्ट है कि सप्रभु की इच्छा का तुरत और बार-बार निर्धारण किसी भी राजनीतिक प्रणाली के लिए साध्य नही है। आधुनिक राज्य के काय इतने जटिल हैं कि निरतर लोकमत सग्रह के द्वारा उन्हे निपटाना सभव नही है।[25] अत जनवादी सप्रभुता एक काल्पनिक आदश है जिसका राजनीतिक विज्ञान मे कोई महत्त्व नही है।

## प्रशासन का विकेंद्रीकरण

जब राज्य से सद्धातिक रूप मे सप्रभुता का निराकरण कर दिया जाए तो व्यावहारिक प्रश्न यह उठता है कि बहुलवादी राज्य का वास्तविक आकार कैसा हो और उसकी काय पद्धति किस प्रकार निर्धारित की जाए ? लास्की की राज्य और सरकार सबधी परिकल्पना क्रियावाद पर आधारित है। राज्य का अस्तित्व उसकी क्रियाओ मे निहित है और ये क्रियाए सरकार के माध्यम से सपन्न होती हैं। क्रियावादी के लिए राज्य और सरकार मे कोई व्यावहारिक भेद नही है। व्यवहार मे तथाकथित सप्रभुता सरकार द्वारा बल प्रयोग करने की शक्ति है जिसके द्वारा वह जनता स आदेशो का पालन कराती है। वस्तुत राज्य की सप्रभुता किसी तात्कालिक सरकार की ताकत है।[6] राजनीतिक बहुलवाद के लिए मुख्य समस्या यह है कि किस प्रकार सरकार की इस ताकत पर प्रतिबध लगाए जाए कि यह निरकुश न बन सके। राजनीतिक समाज मे शक्ति का बटवारा इस प्रकार होना चाहिए कि उसका किसी केंद्रीय स्रोत पर सकलन न हो सके। अगर शक्ति किसी एक सस्थान मे एकत्र हो जाए तो नागरिकों की स्वतत्रता सुरक्षित नही रहती और प्रशासन मे शिथिलता एव अकुशलता उत्पन्न हो जाती है।[7]

अत प्रशासनिक विकेंद्रीकरण बहुलवादी राज्य की एक अनिवाय शत है। लास्की के अनुसार विकेंद्रीकरण ही वह तरीका है जिससे प्रशासन प्रक्रिया को लोकतात्रिक बनाया जा सकता है और नागरिको को वैयक्तिक तथा सामुदायिक रूप मे प्रशासनप्रक्रिया स जोडा जा सकता है। एकसत्तावादी राज्य मे सरकार जनता से अलग और ऊपर रहती है। प्रातिनिधिक सस्थाना के आगमन से शासको और शासको क इस मौलिक अतर मे कोई कमी नही हुई है। जैसा

रूसो ने बताया था कि प्रातिनिधिक लोकतंत्र के नागरिक केवल चुनाव के दिन स्वतंत्र होते हैं और यह स्वतंत्रता भी चार पाच वर्ष के लिए अपने भावी स्वामियों के चुनाव तक सीमित है। चुनाव के बाद फिर ये नागरिक दासता की स्थिति मे पहुच जाते हैं। लास्की का विचार है कि इस स्थिति मे तभी परिवर्तन हो सकता है जब प्रशासन के ढाचे म आमूल परिवर्तन द्वारा जनता को सामुदायिक रूप से प्रशासन की नीतियों के निर्धारण और कार्यान्वयन म सम्मिलित किया जाए। सरकार किसी भी हितगुट के सबध म बिना उसकी सलाह लिए कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय न करे।

• वर्तमान प्रशासन व्यवस्था केंद्रीकरण पर विशेष बल देती है। राज्य के केंद्रीय सस्थान समाज के जीवन पर अधिकतम नियत्रण करने के इच्छुक और प्रयत्नशील रहते हैं। वे समानता के आधार पर प्रादेशिक एव स्थानीय प्रशासनिक सस्थानो से शक्ति का बटवारा नही चाहते। वे समाज के सगठित हित गुटो के जनमत से मत्रणा करना नही चाहते। केंद्रीकरण पर आधारित शासन बाह्य रूप मे लोकतांत्रिक भले ही हो, वस्तुत अपने आचरण मे वह वर्गतांत्रिक होता है। निर्वाचन पर आधारित लोकतंत्र की विफलता का मुख्य कारण आधुनिक राज्य की बढती हुई केंद्रीकरण सबधी प्रवृत्तिया ही हैं। लास्की का सुझाव है कि प्रशासनिक सस्थानो को विकेंद्रीकरण की दिशा मे मोड दिया जाए।[8]

सावैधानिक पुनर्गठन के इतिहास मे सघीय सिद्धात ने एकात्मक सप्रभुता की पारपरिक विचारधारा मे एक मौलिक परिवर्तन किया। सघीय शासन की स्थापना ने सिद्ध कर दिया कि एकात्मक शासन प्रणाली का ही राजनीति विज्ञान म अतिम शब्द नही माना जा सकता। उन सभी राजनीतिक समाजो मे, जहा लोग जाति धर्म, भाषा और स्थानीय निष्ठा के आधार पर बटे हुए थे सघीयता एक न्यायवादी आवश्यकता हो गई। सघीयता म लोकतांत्रिक भावना की पूर्ति अधिक होती है क्योकि इसके द्वारा शक्ति विभाजन किया जाता है और नागरिक अधिक सख्या मे शासनकार्यों मे भाग ले सकते है। अत सघीयता बहुलवाद की स्वाभाविक सखी है। जेम्स भी इस सबध से परिचित थे। लास्की ने उनके मत का उद्धरण देते हुए बताया है कि बहुलवादी ससार एक साम्राज्य अथवा राजतंत्र न होकर एक सघीय गणतंत्र जैसा है।[23]

लास्की तथा अन्य बहुलवादियो का विचार है कि वास्तविक बहुलवादी राज्य की स्थापना की दिशा म सघात्मक राज्य एक महत्त्वपूर्ण प्रगति है। परतु यह विचार सघात्मक राज्यो के आचरण को देखते हुए सत्य नही मालूम होता। जिन राज्यो म सघीय सविधान हैं, वहा केंद्रीकरण की प्रवृत्तिया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। कोई यथार्थवादी आज यह युक्ति नही दे सकता कि सयुक्त राज्य या कोई अन्य सघीय राज्य निकट भविष्य म लास्की की परिकल्पना के

अनुसार बहुलवादी राज्य मे परिवर्तित होने वाला है। अत अपने चिंतन के प्रारंभिक चरण मे लास्की सघीय शासन प्रणालियो के विकास की दिशा, जो केंद्रीकरण के प्रति उन्मुख थी, पहचान नही सके। जैसा विलियम इलियट का अनुमान है, सभवत लास्की इस समय सघीयता के सिद्धात से इतने अधिक आकर्षित थे कि वे सघीयता के व्यावहारिक पक्ष की ओर विशेष ध्यान नही दे सके। उनका कथन है, सघीयता, जो वैधानिक सप्रभुता का सविधान की धाराओ के द्वारा विभाजन करती है और जिसे उस राजनीतिक समाज के सभी सदस्य स्वीकार करते हैं, व्यवहार मे अधिकाधिक एकता प्राप्त कर लेती है, जैसा कि सयुक्त राज्य म हुआ, या जसा कि ब्रिटिश साम्राज्य मे हुआ जहा भूतपूर्व एकात्मक राज्य के अग धीरे धीरे स्वतत्र राजनीतिक इकाइयो मे बिखर गए।[30] अत सघीय शासन प्रणाली का शक्ति विभाजन तथाकथित सप्रभुता के विभाजन की दिशा मे कही भी प्रगति नही करता।

विकेंद्रीकरण का विचार सघात्मक प्रणाली के समथको के अतिरिक्त अन्य लेखक भी प्रस्तुत करते है। इनमे इगलैंड के वितरणवादी (Distributionists) और फ्रास के क्षेत्रीयतावादी (Regionalists) मुख्य हैं। बेलोक इगलैंड के वितरणवादियो के प्रतिनिधि हैं। देश्चनेल, हेनेसी और रिबोत प्रमुख क्षेत्रीयतावादी हैं। इनके सुझाव है कि यदि हम केंद्रीय सरकार को कार्यभार से थकाकर रक्तमूर्च्छा (Apoplexy) का शिकार नही बनाना चाहते और स्थानीय सरकारो को पक्षाघात (Paralysis) से पीडित नही देखना चाहते तो हमे तुरत व्यापक विकेंद्रीकरण की नीति अपनानी चाहिए। इसके अतिरिक्त विलोबी तथा पाल बोकोर जैसे लेखक क्षेत्रीय विकेंद्रीकरण के स्थान पर क्रियाओ का विभाजन चाहते है। ये चाहते हैं कि केंद्रीय सरकार को चाहिए कि वह अपनी शक्तिया क्रियाओ के अनुसार स्वतत्र आयोगो, समितियो, स्वायत्त विभागो, अधिकरणो मे बाट दे। लास्की की अभिरुचि क्षेत्रीय विकेंद्रीकरण की तुलना मे क्रियाओ के वितरण मे अधिक है। वे विलोबी तथा पाल बाकोर के प्रस्तावो का अधिक स्वागत करते हैं।[31]

यह स्पष्ट है कि बहुलवाद और क्षेत्रीय विकेंद्रीकरण मे कोई विशेष सबध नहीं है। शक्तियो का क्षेत्रीय हस्तातरण (Devolution) एकसत्तात्मक कानूनी व्यवस्था के अतगत सभव है। इगलैंड एकसत्तात्मक कानूनी व्यवस्था का पारपरिक उदाहरण है। ससदीय सप्रभुता के बावजूद वहा स्थानीय परिषदें व्यवहार मे सबसे अधिक स्वतत्रता का उपभोग करती है। इसके विपरीत अमरीका मे द्वैध शासन व्यवस्था के बावजूद केंद्रीकरण की मात्रा बढती रही है। सघीय सरकार का राज्यो पर और राज्य सरकारो का क्षेत्रीय परिषदो पर शिकजा और मजबूत होता गया है।[3]

लास्की तथा अन्य बहुलवादी प्रशासन के विकेंद्रीकरण को अपना चरम

उद्देश्य नही मानते। वे तो उसे बहुलवादी राज्य के निर्माण मे एक साधन के रूप मे उपयोग करना चाहते हैं। बहुलवादी सामाजिक व्यवस्था वतमान राज नीतिक समाज को लघु क्रियात्मक गणतत्रा (Small Functional Republics) मे बाटना चाहती है। प्रत्यक क्रियात्मक गणतत्र प्रशासन की दृष्टि से एक स्वायत्त सामाजिक इकाई होना चाहिए। राज्य केवल यूनतम शेष क्रियाओ से सबद्ध प्रशासन का प्रबध करेगा। य यूनतम शेष क्रियाए ऐसी होगी जा सपूण राष्ट्र के दायित्व मे सम्मिलित होने योग्य हैं और जिह कोई अय समुदाय या सस्थान अपने हाथ मे लेने मे असमथ है। बहुलवादी राज्य केवल नाम के लिए राज्य कहलाएगा। उसकी सभी वतमान क्रियाए स्वायत्तशासी सामुदायिक सस्थाना को हस्तातरित कर दी जाएगी। ये सस्थान विविध प्रकार के होंगे जैसे धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक इत्यादि।[33]

बहुलवादी समाज की स्थापना अभी किसी देश म सभव नही हो सकी है। अत बहुलवादी विचार अभी काल्पनिक और अव्यावहारिक प्रतीत होते हैं। पिछली दशाब्दियो म समग्रवादी (Totalitarian) अधिनायकतत्रो की स्थापना और पारपरिक उदारवादी राज्यो मे केंद्रीकरण की बढती हुई प्रवत्तिया यही सिद्ध करती हैं कि ससार के राजनीतिक धरातल पर अभी व परिस्थितिया विद्यमान नही हैं जो बहुलवादी प्रयोगो को सफल बना सकें। यह दूसरी बात है कि राबट डाहल जैसे कुछ व्यवहारवादी लेखक बहुलवादी लोकतत्र (Pluralist Democracy) की चर्चा छेडकर बहुलवाद को एक नया अथ प्रदान कर रहे है। यह बहुलवाद सप्रभुता का विलोम न होकर समग्रवाद का विलोम है। लास्की की भाति उनका मतभेद आस्टिन और हीगेल के सप्रभुता सबधी सिद्धाता से नही। राबट डाहल का मुख्य उद्देश्य पूजीवादी लाकतत्र के वगवादी विश्लेषण को अस्वीकार करते हुए उसे विभिन्न हितगुटा के सतुलन और सामजस्य का प्रतीक घोषित करना है। इसके विपरीत लास्की अपने चितन के प्रारभिक चरण म भी पूजीवादी लोकतत्र के वग चरित्र को स्वीकार करते थे।

## औद्योगिक स्वशासन

लास्की ने स्वीकार किया है कि वे अपनी किशोरावस्था से ही समाजवाद म विश्वास करने लगे थ। सिडनी और बीट्रिस वेब की कृतिया कीर हार्डी के भाषण, फेबियन समाज का प्रचार, स्त्री मताधिकार का आदोलन, खनिज मजदूरा की हडताल इत्यादि स्रोता से लास्की ने समाजवाद और समानता के विचार ग्रहण किए थे। युवावस्था मे अमरीका प्रवास के समय लास्की ने जब बोस्टन के पुलिस कमचारियो की हडताल के प्रति सहानुभूति प्रकट की तो उन्हें हावड यूनिवर्सिटी के प्रधान ने चेतावनी दी और छात्रा ने उह 'बोल्शेविक एजेंट' कहकर बदनाम किया। अपने लेख मे उन्होंने कहा, 'मैंने यहा यूरोप की

अपेक्षा पूजी और श्रम के सघष की विशेषता को और भी अधिक नग्न रूप मे देखा। मैं अमरीका से वापस आने पर यह समझ चुका था कि स्वतत्रता का समानता के अभाव मे कोई अथ नही और समानता का उत्पादन के साधनो के सामाजिक स्वामित्व के अभाव मे काई अथ नही। परतु अपने सिद्धातवाद के कारण मैं यही समझता था कि इसे तक द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है और तदुपरान उसे सामाजिक सगठन का आधार बनाने के लिए जरूरी समथन प्राप्त हो सकता है।'[34]

अपन चिंतन के प्रारभिक चरण म लास्की काल्पनिक समाजवाद से अधिक प्रभावित हैं और विशेष रूप से फ्रासीसी काल्पनिक समाजवादी प्रूधो (Proudhon) की विचारधारा के प्रशसक है। प्रूधो की भाति वे मनुष्य के दैनिक जीवन म स्वतत्रता का विस्तार चाहते थे। वे माक्स के क्रातिकारी कायक्रम और मजदूर वग के अधिनायकतत्र के विचार का सशय की दृष्टि से देखते थे। इसके विपरीत फ्रासीसी श्रमिक सघो की अराजनीतिक प्रवत्तियो को सहानुभूति की दृष्टि से देखते थे। उनका कथन है, 'फ्रासीसी श्रमिको के निर्देशक के रूप मे प्रूधो ने माक्स को पदच्युत कर दिया है, और सर्वोत्तम बात यह है कि नई प्रेरणा का स्रोत उसका सघवाद है।'[35] एक अय स्थान पर लास्की की स्वीकारोक्ति है, 'प्रूधो समाज के सघीय सगठन द्वारा स्वतत्रता की उपलब्धि चाहते थे। वे समझते थे, जबकि माक्स यह समझने मे सदा असमथ रहे, कि औद्योगिक समस्या का मूल हल शोषण के प्रति आक्रोश द्वारा नही अपितु श्रम की परिस्थितियो के निधारण मे भागीदार बनने की उत्सुकता द्वारा सभव है।'[36]

लास्की के अनुसार मजदूरो को अपने आदोलन का क्षेत्र राजनीति को छोड कर कारखाना और फैक्टरी बनाना चाहिए। सच्चाई यह है कि राजनीतिक हथियारो के द्वारा औद्योगिक शक्ति का पुर्नवितरण सभव नही है। यदि औद्योगिक सघष के द्वारा श्रमिक वग कारखाने के प्रबध मे भागीदार बन सके तो परिणामस्वरूप राज्य के चरित्र म परिवतन हो सकता है। इस दृष्टि से औद्योगिक स्वशासन आर्थिक लोकतत्र का मूल आधार है। औद्योगिक लोकतत्र से लास्की का अभिप्राय है कि औद्योगिक सस्थाना का प्रबध श्रमिका और उनके प्रतिनिधियो के हाथ मे ही हाना चाहिए। कारखाना के सोपानात्मक प्रबध के स्थान पर श्रमिको के सहयोग पर आधारित व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए। लास्की का विचार है कि श्रमिक सघ आदोलन के परिणामस्वरूप वतमान पूजीवादी व्यवस्था को बदलकर श्रमिक सघो की शक्ति पर आधारित एक नई उत्पादन प्रणाली का आविर्भाव होगा। ये श्रमिक सघ पहले औद्योगिक क्षेत्र मे लोकतत्र की स्थापना करेंगे और फिर राज्य की एकाधिकारी सत्ता को नष्ट कर बहुलवादी राजनीतिक समाज की नीव डालेंगे।[37]

सामाजिक उदारवादी और फेबियन समाजवादी राज्य का सरक्षक या पिता के रूप मे देखते है और श्रमिका के लाभ के लिए ससदीय कानूना, कार्यपालिका के आदेशो और नौकरशाही के कार्यों को साधन के रूप म प्रयाग करना चाहते हैं। लास्की ब्रिटिश मजदूर दल की नीतियो स इसीलिए असहमत हैं। यह दल श्रमिका की समस्या का समाधान राजनीतिक शक्ति का आश्रय लेकर करना चाहता है। लास्की ओवन थाम्पसन और हाजस्किन की उक्तिया का उद्धरण देकर श्रमिक आदोलन को औद्योगिक सघर्षों तक सीमित रखना चाहत ह और पूजीपतिया के नियत्रण को समाप्त कर वे उन्ह श्रमिक सघो के प्रबध मे लाना चाहत है। वे इस समय राष्ट्रीयकरण के विरोधी है। उनका कथन है कि *राष्ट्रीयकरण के दोष 'वतमान व्यवस्था से किसी प्रकार कम नही* ह। सरकारी कमचारियो के हाथ मे न केवल राजनीतिक अपितु औद्योगिक प्रशासन सौंप देने का अथ एक ऐसी शक्तिशाली नौकरशाही का सृजन करना है जैसी आज तक ससार म कभी देखी नहीं गई है।'[38]

प्रारभ मे सिडनी वेब के प्रभाव के कारण लास्की का विचार था कि औद्योगिक क्षेत्र के प्रशासन के लिए श्रमिक सघा की एक ससद होनी चाहिए। यह ससद राजनीतिक ससद के समानातर एक पृथक आर्थिक ससद के रूप म काय करेगी। यह आर्थिक समद उत्पादन की समस्याओ को हल करेगी और श्रमिक सघो के विवादो को दूर करेगी। वतमान राजनीतिक ससद उपभोग की समस्याआ का समाधान करेगी। यदि दोनो मसदा म मतभेद हो तो उसके *निणय के लिए एक विशेष न्यायालय होगा।*[39] *कुछ समय पश्चात लास्की ने* उपयुक्त प्रस्ताव म स्वय सशोधन कर लिया। 1920 मे एक लेख म उन्हाने आर्थिक ससद की पृथक स्थिति को अस्वीकार करत हुए राजनीतिक समद को औद्योगिक क्षेत्र के अतिम नियत्रण का अधिकार दे दिया। 1922 म वे श्रेणी समाजवाद स और अधिक दूर निकल गए और स्वीकार किया कि वतमान ससद नागरिका का उत्पादक तथा उपभाक्ता के रूप म पूणत प्रतिनिधित्व कर सकती है।[40]

अत लास्की की स्थिति राज्य समाजवाद और श्रेणी समाजवाद के मध्य-बिंदु पर है। श्रेणी समाजवाद और श्रमिक सघवाद की तुलना मे लास्की की विचारधारा मे बहुलवादी तत्त्व की मात्रा बहुत सीमित है। लास्की उद्योगा के प्रबध के लिए श्रमिक परिषदा की स्थापना करना चाहते हैं। कारखाना पर पूजीपतियो के स्वामित्व के स्थान पर पहले पूजीपति और श्रमिको का सयुक्त स्वामित्व स्थापित होना चाहिए और कालातर मे उन्ह श्रमिक सघो के स्वामित्व म द देना चाहिए। लास्की का विचार है कि श्रमिक परिषदा के कार्यों पर सरकार का अकुश होना चाहिए। उत्पादका की परिषदें स्वाथ स प्रेरित होकर उपभोक्ताआ और समाज के हितो का बलिदान कर सकती हैं।

अंत में हम यह देखना चाहिए कि लास्की द्वारा प्रस्तावित आर्थिक संघवाद और औद्योगिक लोकतंत्र के सुझाव किस सीमा तक व्यावहारिक हैं। आधुनिक उद्योगों में सोपानात्मक संचालन की व्यवस्था है और संपत्ति पर वैयक्तिक स्वामित्व है। क्या श्रमिक संघ हड़ताल या अन्य शांतिपूर्ण तरीकों से इन्हें बदल सकते हैं? तथ्यों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि यह संभव नहीं है। श्रमिक संघ मजदूरों के सामूहिक हितों के लिए जैसे वेतन-वृद्धि या अन्य भौतिक सुविधाओं के लिए मालिकों से संघर्ष करने वाली संस्थाएं हैं। किसी उद्योग के संचालन के लिए उनमें कुशलता, अनुभव और ज्ञान की कमी है। अतः औद्योगिक परिषदों के श्रमिक सदस्य या बाद में श्रमिक परिषद के सदस्य किस प्रकार कारखानों के प्रबंध और संचालन में सक्षम हो सकेंगे यह स्पष्ट नहीं है। इन्हीं कठिनाइयों के कारण श्रेणी समाजवाद (Guild Socialism) और श्रमिक संघवाद (Syndicalism) के कार्यक्रम अव्यावहारिक सिद्ध हुए। संभवतः इसीलिए लास्की ने इन आदर्शों के प्रति सहानुभूति रखते हुए भी उन्हें पूर्णतः स्वीकार नहीं किया। क्या लास्की के आर्थिक संघवाद और औद्योगिक लोकतंत्र की परिकल्पना श्रमिक संघवाद और श्रेणी समाजवाद के अंतर्विरोधों से मुक्त हैं? तथ्य यह है कि इन अंतर्विरोधों से मुक्ति के प्रयास में लास्की की बहुलवादी विचारधारा धीरे-धीरे राज्य समाजवाद की दिशा में नए मोड़ ले लेती है।

## लास्की के बहुलवाद का मूल्यांकन

हर्बर्ट डीन के अनुसार लास्की के राजनीतिक चिंतन में बहुलवादी चरण ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है और यही राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में उनका एकमात्र मौलिक योगदान है। उनका यह निष्कर्ष उनके कुछ पूर्वाग्रहों पर आधारित है। डीन ने लास्की पर अपनी कृति उस समय प्रकाशित की जब अमरीका में मैकार्थीवाद अपनी चरम सीमा पर था। बुद्धिजीवियों के विरुद्ध सीनेटर मैकार्थी यह आरोप लगा रहे थे कि उनमें अनेक प्रच्छन्न रूप से साम्यवाद से सहानुभूति रखते हैं। अनेक उदारवादी बुद्धिजीवियों को बिना किसी ठोस प्रमाण के साम्यवादी घोषित कर दिया गया। शीतयुद्ध के इस वातावरण में कोई अमरीकी विद्वान लास्की के विचारों की समीक्षा निष्पक्ष रूप से नहीं कर सकता था। अतः डीन भी लास्की के उसी चरण के विचारों की प्रशंसा करते हैं, जब वे मार्क्सवाद और साम्यवाद के निंदक थे और प्रूधों के प्रशंसक।[42]

वस्तुतः बहुलवाद लास्की के चिंतन के प्रथम प्रयास का परिणाम है। उनके बहुलवादी चिंतन की मौलिकता भी संदेहास्पद है। ग्राक, मेटलैंड, फिजिस, दुग्वी, क्रैब, प्रूधों, सोरेल, सिडनी वेब और जी० डी० एच० कोल के विचारों की उनकी कृतियों पर स्पष्ट छाप है। जेम्स और डेवी का क्रियावादी दर्शन

उनके चिंतन का आधार है। उनके चिंतन म युवावस्था का आक्रोश और अपरिपक्वता है। उनके विचारा म अस्पष्टता, अतर्विरोध और दिशाभ्रम हैं। इसके बावजूद उनका बहुलवादी समाज का सिद्धात किसी एक पूववर्ती विचारक की पुनरावत्ति मात्र नही है। वह विभिन्न विचारको के एस विचारा का सम्मिश्रण है जि ह लास्की स्वय अपन अनुभव और चिंतन के आधार पर स्वीकार करत है। व जेम्स और डेवी क क्रियावादी चिंतन से प्रभावित हैं परतु उनके दाश निक पक्ष म उनकी विशेष अभिरुचि नही है। न्यायाधीश होम्स और लास्की के पत्रव्यवहार म एक स्थान पर लास्की को होम्स न राय दी कि उह 'क्रियावाद' शब्द का अपने लेखन म व्यवहार नही करना चाहिए क्योकि स्वय लास्की की स्वीकारोक्ति है कि नियावादी दशन की मायताआ को वे पूणत सत्य मानने के लिए तयार नही है।[1]

फिजिस का अनुकरण करते हुए लास्की ने राज्य और चच के सघर्षों का विस्तारपूवक अध्ययन किया है। परतु लास्की, जो स्वय अनीश्वरवादी हैं धार्मिक सस्थाना की स्वायत्तता म फिजिस की तरह व्यक्तिगत रूप से कोई रुचि नही लेत। जसा हवट डीन का कथन है वे केवल समुदायो की स्वायत्तता का सिद्धात निश्चित करना चाहते हैं। वस्तुत उनकी अभिरुचि का कद्रबिंदु है श्रमिक सघा की स्वायत्तता। जहा फिजिस के मन म चच' की स्वाधीनता की तडप है, वहीं लास्की के हृदय म मजदूर यूनियन की आजादी की ललक। फिजिस लौकिक राज्य की सप्रभुता से आध्यात्मिक समुदायो को सुरक्षित रखना चाहत हैं। लास्की श्रमिक सघा को स्वतन्त्र रूप से सगठित कर पूजीवादी राज्य की सत्ता को चुनौती देना चाहते हैं।[43]

सद्धातिक रूप से वे हीगल तथा आस्टिन द्वारा प्रस्तुत सप्रभुता की रूढि के आलोचक हैं। वस्तुत उनकी शिकायत यह है कि इस सप्रभुता का उपयोग पूजीपति वग मजदूरा के शोषण और दमन क लिए करता है। वे बराबर इस बात को दोहराते ह कि व्यवहार मे राज्य सभी नागरिका का कल्याण करन के बजाय एक छोटे से वग का कल्याण करता है। सरकार प्राय उन व्यक्तिया के हाथ म होती है जिनके पास आर्थिक सत्ता है। अत राजनीतिक सत्ता आर्थिक सत्ता की दासी है। लास्की का कथन है, यह अब सवविदित है कि राज्य म सत्ता का वास्तविक स्रोत आर्थिक शक्ति क स्वामिया के पास है। उन्ही की इच्छा सर्वोपरि इच्छा है, उनकी आज्ञाए ही वे आज्ञाए हैं जिनका सभी पालन करते है। जिनके पास सत्ता है, उन्हें अनिवाय रूप से यही महसूस होता है कि लोक कल्याण की परिभाषा का अथ किसी न किसी प्रकार से यथास्थिति को सुरक्षित रखना है। सरकार के काय अधिकतर मध्यम वग तक सीमित रह हैं, अत उनके उद्देश्या और भावनाओ के अनुसार ही उनके परिणाम निकले हैं।'[44]

लास्की का विश्वास है सप्रभुता के सिद्धात की मान्यता है कि सरकार समाज के सभी वर्गों के हितो का प्रतिनिधित्व करती है और इस बात को ध्यान मे नही रखा जाता कि आर्थिक प्रणाली की विशेषताए सरकारी उद्देश्यो को किस प्रकार सकीर्ण बना देती हैं। उनका कथन है कि राज्य वास्तव म समाज के प्रभावशाली वग या गुट के राजनीतिक हित का प्रतिबिंब है। अब यह लग भग स्पष्ट और तकसगत है कि राजनीतिक हित की अधिकतर परिभाषा आर्थिक शब्दो म की जाती है। यह कहा जा सकता है कि यह समाज के आर्थिक ढाचे का दपण है। हम किसी भी रूप म राज्य के सस्थानो का पुनगठन करें, वस्तुत वे प्रचलित आर्थिक व्यवस्था को प्रतिबिंबित करेंगे और उसकी रक्षा करेंगे।'[45] अत आधुनिक राज्य अपनी सप्रभुता के प्रयोग द्वारा पूजीवादी प्रणाली को सुरक्षित रखने म सहायक होता है। मजदूरो के हित इस व्यवस्था म सुरक्षित नही हैं।

उनका कथन है 'आधुनिक राज्य की सामाजिक व्यवस्था श्रमिक व्यवस्था न होकर एक पूजीवादी व्यवस्था है तथा हैरिंगटन की प्राक्कल्पना की सचाई के आधार पर यही निष्कष निकलता है कि मुख्य रूप से सत्ता भी पूजीवादी है। इसका तात्पय है कि श्रमिक, जब तक उसके उद्देश्यो से सतुष्ट न हो उसकी सत्ता का अन्तिम या सर्वोपरि नही मान सकता।'[46] लास्की वस्तुत पूजीवादी राज्य से असतुष्ट हैं न कि सप्रभुतासपन्न राज्य से। वे इसे इन शब्दो मे स्पष्ट कर देते हैं, अगर इस बात की गारटी दे दी जाए कि राज्य अपने सैद्धातिक उद्देश्यो को पूरा करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करेगा, तो किसी को शक्तिशाली राज्य की स्थापना से विरोध न होगा।[47] वतमान स्थिति मे राज्य इस प्रकार की गारटी देने म असमथ है। यदि समाज मे एक वग शक्तिशाली और दूसरा दुबल है तो नि सदेह सप्रभुता का उपयोग शक्तिशाली वग दुबल वग के शोषण के लिए करेगा। अत लास्की का सुझाव है, 'इस गतिरोध का एकमात्र समाधान राज्य को तटस्थ बना देना है, इसे तटस्थ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इसमे निहित शक्तियो का विभाजन कर दिया जाए।'[48] यदि हम लास्की के विचारो की उपर्युक्त व्याख्या को स्वीकार कर लें तो उनके बहुलवादी चिंतन और नवमार्क्सवादी चिंतन मे एक शृखला जुड जाती है। यदि आज का शोषित श्रमिक वग, जो पूजीवादी राज्य द्वारा शोषण और दमन का शिकार है, क्राति द्वारा राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर ले और पूजीवादी व्यवस्था को समाजवादी व्यवस्था मे बदल दे अथवा निर्वाचन म बहुमत प्राप्त कर श्रमिक सरकार की स्थापना कर ले और सावैधानिक पद्धति से समाजवादी सुधारों को लागू करे तो राज्य की सप्रभुता को सीमित करने की कोई आव श्यकता नही रहेगी। इस प्रकार लास्की के बहुलवादी चिंतन की पृष्ठभूमि म समाजवाद की भावना व्याप्त है।

सदर्भ

1 लास्की दि प्राब्लम आफ सावरेंटी पृ० 5–21
2 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 241–42
3 वाल्टर लिपमन पब्लिक ओपिनियन, पृ० 288
4 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 264
5 वही पृ० 271
6 ए० डी० लिंडसे पालिटीकल क्वार्टरली (फरवरी 1914) पृ० 128–45
7 अर्नेस्ट बाकर लंदन टाइम्स लिटरेरी सप्लीमेंट (जुलाई 1918), पृ० 329
8 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 44–45
9 वही पृ० 44–74
10 लास्की दि फाउंडेशंस आफ सावरेंटी, पृ० 233–34
11 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, पृ० 47
12 वही पृ० 45–48
13 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट पृ० 23–32 फाउंडेशंस आफ सावरेंटी पृ० 233–40
14 लास्की दि प्राब्लम आफ सावरेंटी अध्याय II III व IV
15 वही अध्याय V पृ० 212–55
16 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 48
17 विलियम इलियट प्रगमटिक रिवोल्ट इन पालिटिक्स, पृ० 146-47
18 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 55
19 लास्की फाउंडेशंस आफ सावरेंटी पृ० 139–208
20 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 49
21 वही पृ० 53
22 वही पृ० 82
23 लास्की स्टडीज इन ला एंड पालिटिक्स पृ० 237–50
24 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 52–53
25 लास्की फाउंडेशंस आफ सावरेंटी पृ० 213
26 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट पृ० 26–30
27 वही पृ० 89–109
28 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 68–85
29 लास्की दि प्राब्लम आफ सावरेंटी पृ० 10
30 विलियम इलियट प्रगमटिक रिवाल्ट इन पालिटिक्स पृ० 163
31 सी० एच० कग पालिटीकल प्लूरलिज्म पृ० 91–96
32 वही पृ० 97
33 वही पृ० 95–98
34 क्लिफ्टन फडीमन द्वारा सपादित आई बिलीव—हेराल्ड जे० लास्की, पृ० 142–43
35 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट पृ० 114
36 फिडा तथा हेरोल्ड लास्की लियो डूग्वी के ला इन दि माडन स्टेट की प्रस्तावना पृ० XIII-XIV

37 लास्की डमोक्रेसी ऐंट दि भासरोडस, येल रिव्य, (जुलाई 1920), प० 792
38 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट प० 95
39 वही, 88-89
40 हवट डीन पालिटीकल आइडियाज आफ हरोल्ड जे० लास्की प० 64-65
41 वही प० 333
42 हाम्स लास्की लेटस होम्स—69-70 (1917)
43 हवट डीन पालिटीकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की पृ० 29
44 लास्की फाउडशस आफ सावरेंटी प० 62-63
45 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट पृ० 81
46 वही प० 88
47 लास्की फाउडशस आफ सावरंटी पृ० 374
48 वही प० 385

# उदारवादी विचारधारा

उदारवाद की परिभाषा देना सरल नही क्योकि विचारधारा के रूप मे इसके सवमान्य सुनिश्चित सिद्धात नही गिनाए जा सकते। यह तो एक ऐतिहासिक प्रवत्ति है जिसमे अनेक और यदाकदा परस्पर विरोधी विचार सम्मिलित हैं। ये विचार भिन्न भिन्न देशो मे और भिन्न भिन्न अवसरा पर देश काल की परिस्थितियो के अनुसार प्रस्तुत किए गए हैं। उदारवाद को इस व्यापक अथ म किसी विशेष राजनीतिक दल के कायक्रम या मान्यताओ से सबद्ध नही करना चाहिए। कई राजनीतिक दल नाम से 'लिबरल' हो सकते हैं पर यह आवश्यक नही कि वे उदारवादी विचारधारा को स्वीकार करते हो। लास्की का मत है, 'उदारवाद का सबध किसी सम्प्रदाय से कम और मानव स्वभाव से अधिक है। यह स्वतत्रता के लिए उत्कट अभिलाषा का द्योतक है, इस प्रकार की प्रबल भावना के लिए दूसरे व्यक्तिया के विचारो के प्रति चाहे वे तुम्ह कितने ही खतरनाक मालूम हो, सहनशीलता और जिज्ञासा के भाव की आवश्यकता है और यह एक दुलभ मानवीय गुण है।[1] उदारवादी विचारधारा के मूल सिद्धाता का वणन इसलिए भी कठिन है क्योकि जिन्ह इस विचारधारा का प्रतिनिधि समझा जाता है उनके विचारो मे ही परस्पर बडा मतभेद है। दूसरी कठिनाई यह है कि जिन परिस्थितिया म यह विचारधारा विभिन्न देशो मे उत्पन्न और विकसित हुई, उनके अनुसार उसमे आवश्यक परिवतन कर लिए गए। अत म यह भी ध्यान म रखना चाहिए कि उदारवादी राज्य के रूप मे, आर्थिक व्यवस्था म होने वाले परिवतना के कारण, परिवतन हो जाता है और यह उदारवादी विचारधारा मे भी परिलक्षित होता है।

आधुनिक राजनीतिक चितको म लास्की ने उदारवाद की विचारधारा का गभीर अध्ययन किया है। उन्हाने यूरोपीय उदारवादी आदोलन का सामाजिक परिप्रेक्ष्य म अध्ययन करते हुए उसके विकास पर विशेष ध्यान दिया है। उदारवाद की व्याख्या म लास्की ने सामाजिक शोध की माक्सवादी पद्धति का उपयोग किया है और उदारवाद के आर्थिक आधारो की विशेष रूप से चर्चा की है।

उन्होंने 'यूरोपीय उदारवाद का उदय' में उदारवादी चिंतकों के विचारों की समीक्षा प्रस्तुत की है। यद्यपि वे स्वयं को उदारवाद का विरोधी मानते हैं, तो भी उन्होंने इस विचारधारा के प्रति पर्याप्त सहानुभूति दर्शाई है और उदारवाद के कुछ विचारों के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण है। नवमार्क्सवादी चरण में भी लास्की का चिंतन उदारवादी विचारों से बहुत प्रभावित था। हां, लास्की स्वयं इस बात को स्वीकार करने में हिचकिचाते थे। उदारवाद लास्की के चरित्र और मनोदशा का अनिवार्य अंग रहा है। उनकी राजनीति सदा उदारवादी राजनीति रही है अतः उदारवाद की परंपरा से अपने को पूर्णतः मुक्त करने में वे कभी सफल नहीं हुए। उदारवाद एक राजनीतिक सिद्धांत ही नहीं मानसिक प्रवृत्ति भी है। लास्की उदारवाद के सैद्धांतिक पक्ष के आलोचक अवश्य हैं, परंतु वह उनके मानसिक दृष्टिकोण का स्थायी अंग है। उनकी समाजवादी मान्यताएं भी उदारवादी परिधि के अंदर रहती हैं।

उदारवाद मुख्य रूप से यूरोप के उदीयमान मध्यमवर्ग की विचारधारा है, जिसका जन्म सामंतवादी वर्गों के पतन के पश्चात हुआ। सैबाइन का कथन है कि 'लिबरल' विचारधारा में लॉक से मिल तक, अनेक तार्किक असंगतियां हैं। वस्तुतः यह विचारधारा तर्क पर आधारित न होकर उस श्रेणी के वर्गहितों पर आधारित थी जिसने इसे जन्म दिया था। यह एक मनोरंजक सत्य है कि लिबरल विचारधारा के समर्थकों में ईसाई और नास्तिक, राजतंत्रवादी और गणतंत्रवादी, कुलीनतावादी और जनवादी, आदर्शवादी और उपयोगितावादी, तर्कवादी और अनुभववादी अथवा व्यक्तिवादी और समाजवादी भी समान रूप से पाए जाते हैं। इन विरोधी तत्त्वों की उपस्थिति के बावजूद उदारवाद में एक आंतरिक एकता है। यह आंतरिक एकता इस तथ्य पर आधारित है कि यह सामाजिक विकास में एक विशेष वर्ग का वैचारिक उपकरण है। यह वर्ग पूंजीपतियों का है। प्रारंभ में पूंजीपतियों ने उसका उपयोग जमींदारों के विरुद्ध संघर्ष में किया। कुछ समय के उपरांत जमींदारों और पूंजीपतियों के वर्ग युद्ध में विराम की स्थिति आ गई। अब पूंजीपतियों और श्रमजीवियों में एक नए वर्गयुद्ध की शुरुआत हुई। अतः लिबरल विचारधारा में संशोधन किए गए जिससे श्रमजीवियों के प्रहारों से बचने के लिए वैचारिक रक्षाकवच के रूप में पूंजीपति वर्ग उसका उपयोग कर सके। उदारवाद अब प्रगति और सामाजिक परिवर्तन की विचारधारा नहीं रही। अब तो यह रूढ़िवादी पतन और प्रतिक्रियावाद की विचारधारा बन गई। अतः उदारवादी सिद्धांतों की संगति हमें उन सामाजिक उद्देश्यों में, जिन्हें वे पूरा करना चाहते हैं, देखनी चाहिए न कि उन दार्शनिक मान्यताओं में, जिन्हें उदारवादी चिंतन का अंग समझा जाता है।[3]

## उदारवादी परंपरा

यदि हम उन सभी ऐतिहासिक आंदोलनों और मानसिक धाराओं की, जिन्होंने उदारवादी सिद्धांतों के विकास में योगदान किया है, विवेचना करें तो हम देखेंगे कि धर्मसुधार आंदोलन (Reformation) से रूसी क्रांति तक इस प्रकार के आंदोलनों और विचारों की संख्या और रूप विविध और आश्चर्यजनक हैं। जैसा कि लास्की का कथन है, 'वस्तुतः यह विकास अप्रत्यक्ष और अचेतन रूप में हुआ। विचारों का उद्गम सदा स्पष्ट नहीं है। उदारवाद के विकास में भिन्न भिन्न दिशाओं में सैद्धांतिक हवा के इतने झोंके आए हैं कि उसके चरित्र का स्पष्ट रूप से समझना कठिन है और उसके आकार को निश्चित रूप से स्थिर करना लगभग असंभव है। उदारवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान उन लोगों का है जो उसके उद्देश्यों से अपरिचित और प्रायः उनके विरोधी थे, इनमें मैक्यावेली और कैल्विन, लूथर और कोपरनिकस, हेनरी VIII और थामस मोर एक शताब्दी में हुए तो रिचलू और लुई XIV, हाब्स और ड्यूक, पस्कल और बकन दूसरी शताब्दी में हुए। इसके लिए उपयुक्त मानसिक वातावरण के निर्माण में घटनाओं के अचेतन प्रभाव का उतना ही दायित्व है जितना इन विचारकों के चेतन प्रयास का।'[4] जब एक नया सामाजिक वर्ग इतिहास में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करता है तो परिणामस्वरूप उस युग के सामाजिक दर्शन में भी कुछ क्रांतिकारी परिवर्तन करने पड़ते हैं। जब मध्यम वर्ग को राजनीतिक सत्ता मिली तो इसी नियम को चरितार्थ किया गया। सामंतवादी युग की मानसिक परिकल्पनाएं तोड़ दी गईं। धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र, विधिशास्त्र और राजनीति, कलाओं और विज्ञान के क्षेत्रों में नए आधार खोजे गए। नए युग के दृष्टिकोण में परिवर्तन के फलस्वरूप सामाजिक व्यवहार के नए मान और सामाजिक संगठन के नए प्रकार स्वीकृत हुए।

मध्ययुगीन समाज का विघटन शांतिपूर्ण साधनों के द्वारा संभव न हो सका। उदार पूंजीवादी राज्य का जन्म हिंसात्मक संघर्षों और वर्गयुद्धों के मध्य हुआ जिनके परिणामस्वरूप यूरोप के अधिकांश क्षेत्रों में सामंतवादी राजनीतिक प्रणाली नष्टभ्रष्ट हो गई। लास्की का कथन है 'युद्ध और क्रांति के संरक्षण में ही उसने गर्भ से निकलकर संसार में प्रवेश किया, और यह कहना असत्य न होगा कि 1848 तक उसके विकास को हिंसात्मक प्रतिक्रिया की चुनौती ने अवरुद्ध किया। मनुष्य ऐसी परिस्थितियों की रक्षा के लिए जिनमें उनके विशेषाधिकार निहित हों बड़े जोश के साथ लड़ते हैं, और उदारवाद की विचार धारा उन सभी निहित स्वार्थों के लिए जिन्हें पांच सौ वर्षों की परंपराओं ने पुनीत बनाया था, एक चुनौती ही तो थी।'[5] उदारवाद का यह प्रारंभिक

विध्वसात्मक रूप उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना इसका रचनात्मक योगदान जो सामतवादी युग के ध्वस्त होने पर शुरू होता है।

सोलहवी सदी मे उदारवादी राज्य धीरे धीरे विकसित हो रहा था। व्यापारी और औद्योगिक वर्गों ने पहले एकतन्त्रवादी राजाओ से गठबधन किया। बाह्य क्षेत्र मे उनका उद्देश्य पोप के नियत्रण से स्वतत्रता प्राप्त करना था और आतरिक क्षेत्र मे वे राजाओ की सहायता से क्षेत्रीयता पर आधारित सामत वादी राज्यव्यवस्था का समाप्त करना चाहते थे। राष्ट्रीय राजतत्र के द्वारा उनके वाणिज्य के प्रसार के लिए नई सुविधाए प्राप्त हो सकती थी। लास्की के मतानुसार मक्यावेली पहले प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक हुए, जिनकी कृतिया मे उदीयमान मध्यम वग की आशाओ और अभिलाषाओ को वैचारिक समथन प्राप्त हुआ। मैक्यावेली का लौकिक (Secular) दृष्टिकोण कालातर म उदारवादी विचारधारा का अग बन गया। उनकी राजनीति की लौकिक धारणा अपने युग के विचारो से भी अग्रगामी थी। जैसा यूरोप के आगामी इतिहास से पता चला, मैक्यावेली के अनुमान के विपरीत यूरोपीय राजनीति मे धम का काफी प्रभाव बना रहा। मैक्यावेली की मानव स्वभाव के विषय म परिकल्पना आश्चय जनक रूप से आधुनिक थी।[6] उनकी सर्वोच्च विधि निमाता की धारणा मे ही सप्रभुता के उदारवादी सिद्धात का उदय हुआ। शासन की स्थिरता म रुचि रखने के कारण उन्होने निरकुश राजतत्र का समथन किया परतु व सिद्धातत राजतत्रवादी नही थे। उनके मतानुसार जसे ही तत्कालीन अराजकतावादी तत्वो की समाप्ति कर दी जाएगी, शासन की लोकप्रिय गणतत्रात्मक प्रणाली को पुन लागू किया जा सकता है। लोकप्रिय शासन की इस प्रशसा को यदि हम उनके द्वारा की गई अभिजात वग तथा कुलीनतत्र की निंदा के सदभ मे देखें, तो मक्यावेली को निश्चय ही उदारवादी दशन के सस्थापको म गणना की जा सकती है। इटली के राष्ट्रवाद के प्रवतक के रूप मे, वे उदारवादी कायक्रम के एक अन्य अश के जन्मदाता थे। अत उदारवादी परपरा के निर्माण मे मैक्या वेली का योगदान कम महत्त्वपूर्ण नही है।[7]

धमसुधार आदोलन से भी उदारवाद को अप्रत्यक्ष समथन मिला। मैक्स वेबर का विचार है कि प्रोटेस्टेंट सिद्धातो ने उदारवादी आदर्शों की सफलता मे बडी सहायता की। लास्की का मत है कि प्रोटेस्टेंट और लिबरल विचारधाराओ का गठबधन आकस्मिक था, न कि चेतनाजनित। यह सच है कि लूथर का सामाजिक दशन यथास्थितिवादी था और यही बात अन्य प्रोटेस्टेंट नेताओ के विषय मे चरितार्थ होती है। परतु धम के विषय मे उनकी प्रोटेस्टेंट भावना का असर मानसिक अन्वेषण के अन्य क्षेत्रो मे पडना स्वाभाविक ही था। पोप की सत्ता के प्रति कैथोलिक परपरा के अनुसार प्रदर्शित आदरभाव की आलोचना से जनता के मनोवैज्ञानिक धरातल म एक भूकप उठ खडा हुआ। प्रोटेस्टेंट

आदोलन के द्वारा धम के क्षेत्र मे व्यापक परिवतन तो हुए ही, इसके परिणामस्वरूप ईसाई मठो की अतुल सपत्ति नए जमीदारो को सौंप दी गई। इसने लौकिक राज्य के विकास मे भी राष्ट्रीय मामलो म पोप के हस्तक्षेप का विरोध कर बडी मदद की। प्रोटेस्टेंट विचारधारा के परिणामस्वरूप बुद्धिवादी भावना का उदय हुआ जो इसका सार तो नही परतु उपजात (Byproduct) अवश्य थी। इसकी एक धारा कल्विनवाद तो उदारवादी बुद्धिवाद के पूणत प्रतिकूल थी।[8]

लिबरल विचारधारा के विकास म फ्रासीसी विचारक बोदा ने महत्त्वपूण योगदान दिया। उनकी सप्रभुता के सिद्धात का ध्येय सामाजिक मामलों में उदारवादी लौकिक राज्य को सर्वोपरि बनाना था। उन्हाने सप्रभुता के सबध मे चच की आपत्ति को अस्वीकार कर दिया। परतु उनकी विचारधारा पर प्राकृतिक विधान (Natural Law) के मध्ययुगीन सिद्धात का प्रभाव अभी शेष था। अत उनका कथन था कि सप्रभु भी अपनी प्रजा की नैतिक परपराओ का उल्लघन नही कर सकता था। बोदा के चिंतन का एक महत्त्वपूण पक्ष यह भी था कि वे बुर्जुआ सपत्ति को प्राकृतिक अधिकार के रूप मे सप्रभुता के नियत्रण से मुक्त रखना चाहते थे। लास्की का मत है 'बोदा वस्तुत सबसे पहले अपन युग की राजनीतिक रुग्णता का व्यावहारिक निदान करना चाहता था। उसके द्वारा प्रस्तुत सप्रभुता की परिभाषा अपने विषय के तत्त्वज्ञान के सदभ मे कम और उस रोग की चिकित्सा के लिए औषधि के रूप म अधिक समझी जानी चाहिए।[9] बोदा के जीवनकाल मे ही सत्ता के लिए राज्य और चच का सघष राज्य के पक्ष मे समाप्त हो गया। सद्धातिक क्षेत्र मे यह लौकिक आदश की धमतत्र (Theocracy) पर विजय थी। परतु सोलहवी सदी म जिस लौकिक राज्य का अभ्युदय हुआ उसका दष्टिकोण जनता के प्रति पितसत्तामक अधिक था क्योकि राजा प्रजा से अपेक्षा रखता था कि वह उसे पिता समान माने। इस राज्य को सही अथ मे उदारवादी बनने के लिए अभी लबा सफर तय करना था।

सत्रहवी सदी म उदारवादी राज्य प्रणाली और अधिक सुदढ हुई। इगलड म उदारवाद के लिए एक सघष छिडा जिसके परिणामस्वरूप हिंसात्मक गहयुद्ध लडा गया। हाब्स ने, जिन्हे प्राय राजतत्रवाद क रूढिवादी समथक के रूप मे जाना गया है, अपने युग की सबसे अधिक क्रातिकारी विचारधारा का प्रतिपादन किया। यह विचारधारा अराजकता के युग म निरकुश शासन प्रणाली का समथन करती थी। अत हाब्स किसी गणतत्र के तानाशाह का स्वागत उसी प्रकार करने को तैयार था जस किसी निरकुश राजा का जो उत्तराधिकार के आधार पर सत्ताधारी बना हो। सप्रभु वही है जो सामाजिक शांति की स्थापना और रक्षा मे समर्थ हो। वह राजतत्र शासन के दैवी आधार अथवा राजवशीय

वैधता के सिद्धात को स्वीकार नही करता था। हाब्स के चिंतन मे एक व्यापकता थी और इसी वजह से वह किसी दल के प्रचार का साधन नही बन सकता था। उसके गभीर तर्कों ने भविष्य के नैतिक और राजनीतिक चिंतन पर गहरा प्रभाव डाला। उनके सिद्धात के महत्वपूर्ण अश उन्नीसवी सदी म उपयोगितावादियो के 'उग्र दशन' और आस्टिन के सप्रभुता के सिद्धात म शामिल कर लिए गए। इस प्रकार हाब्स के चिंतन ने मध्यमवर्गीय उदारवाद के ध्येयो को सहायता पहुचाई।[10] लास्की के अनुसार हाब्स के जिन विचारो ने उदारवादी परपरा के विकास में योगदान दिया वे इस प्रकार हैं उपयोगितावादी सस्थान के रूप मे उनकी राज्य की परिकल्पना, व्यक्तिगत सुरक्षा को राज्य की स्थापना का सबसे महत्वपूर्ण कारण समझना, मानव स्वभाव मे स्वार्थपरता का महत्व, समाज की आणविक (atomic) परिकल्पना, मनोविज्ञान और समाज विज्ञान का व्यक्तिवादी आधार और अत में राज्य को समाज का सर्वोपरि सस्थान स्वीकार करना।

जबकि हाब्स ने मध्यमवर्गीय उदारवाद की राजनीतिक विचारधारा का समर्थन अचेतन रूप से किया लाक को अगरेजी उदारवाद के पिता के रूप मे मान्यता मिली। लाक एक गभीर दाशनिक नही थे परतु उनके व्यक्तित्व मे उदारवादी भावना पूण रूप से व्याप्त थी।[11] व सावधानिक शासन के पहले स्पष्ट समथक थे। उनके द्वारा प्रस्तुत प्राकृतिक अधिकारो का सिद्धात और व्यक्तिगत सपत्ति के अधिकार का भावनात्मक समथन यूरोपीय उदारवादियो के चिंतन के अनिवाय अग के रूप मे स्वीकृत हो गए। इसी प्रकार उनका विश्वास कि व्यक्ति के निजी अधिकारो की रक्षा और सावजनिक कल्याण की साधना एक ही बात है आगामी पीढ़िया के उदारवादियो द्वारा भी स्वीकृत हुआ। उनका सुझाव कि शासन की सत्ता का आधार नागरिको की सहमति होना चाहिए, उदारवादी चिंतन के लिए एक अन्य योगदान है। जनता ऐसी सरकार के विरोध में, जो प्राकृतिक अधिकारो की रक्षा न कर सके, न्यायोचित रूप से विद्रोह कर सकती है। ये प्राकृतिक अधिकार लाक के शब्दो मे 'जीवन, स्वतत्रता और सपदा' हैं। परतु अगरेजी क्राति का यह समथक जनतत्रवादी या उग्रतावादी राजनीतिक विचारक नही था। अगरेजी क्राति के द्वारा ब्रिटिश शासन प्रणाली मे कोई मौलिक परिवतन नही हुआ और इस क्राति का दाशनिक प्रतिनिधि लाक सभी क्रातिकारियो मे सबसे अधिक रूढ़िवादी विचारक था। अपने चिंतन मे रूढ़िवादी तत्त्वो और अनेक अस्पष्टताओ के बावजूद फ्रास और अमरीका मे अठारहवी सदी मे लाक क्रातिकारी विचारो का अग्रदूत मान लिया गया।

अठारहवीं सदी मे फ्रास उदारवादी राजनीतिक चिंतन का केंद्र बन गया। जबकि वाल्तेयर और मान्तेस्क्यू ने लाक की व्यक्तिवादी परपरा को निभाया, रूसो ने उदारवाद मे समष्टिवादी विचारों का सवप्रथम समावेश किया।[12]

मांतेस्क्यू ने सांविधानिक शासन में शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत द्वारा वैयक्तिक स्वतन्त्रता की सुरक्षा का सुझाव दिया। वाल्तेयर पहले बुर्जुआ लेखक थे, जिन्होंने मध्यमवर्गीय राज्य के लिए नागरिक स्वतन्त्रताओं की विस्तृत परिकल्पना प्रस्तुत की। परंतु इस युग का सबसे प्रभावशाली *विचारक रूसो ही* सिद्ध हुआ। रूसो फ्रांसीसी मध्यम वर्ग के उस अंश का प्रतिनिधि था, जिसने फ्रांस की राज्यक्रांति में सबसे अधिक उग्र और विनाशकारी भूमिका निभाई। उनके चिंतन के समष्टिवादी तत्त्व अत्याचारी राजतन्त्र के विरुद्ध जनता का रोष युक्त प्रतिरोध प्रारंभ करने में सहायक सिद्ध हुए। उनके विचारों का एक रोमांटिक पक्ष भी है क्योंकि जिस वातावरण में उन्हें प्रस्तुत किया गया, वह तार्किक वादविवाद के उपयुक्त नहीं था।[13] यूरोपीय उदारवाद के इतिहास में रूसो का महत्त्व दर्शाते हुए लास्की का कथन है, 'उनके विचार उग्रवादी और सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति का भाव लिए हुए हैं, फिर भी वे अपने समय को देखते हुए कोई नए क्रियात्मक विचार प्रस्तुत नहीं कर सके। उन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रयोग इसलिए कम किया कि वे सामाजिक व्यवस्था की रूपरेखा निश्चित करें बल्कि इसलिए अधिक किया कि वे उनके विचार करने की पद्धति के लिए नए *आधारों की तलाश करें और इस प्रकार उनके विचारों में क्रांति लाएं।* उन्होंने लोगों को अपने प्रति होने वाले अन्यायों के प्रति लड़ने की शिक्षा दी। फिर भी यह निष्कर्ष निकालना सरल नहीं कि कुल मिलाकर उनका प्रभाव परिवर्तनवादी रहा अथवा यथास्थितिवादी। यदि एक पीढ़ी में उनके शिष्य मारात और रोबसपियर थे तो दूसरी पीढ़ी में हॉलर और सेविग्नी उन्हें अपना गुरु मानते थे। वस्तुतः उनमें और रोमांटिक प्रतिक्रियावाद में सीधा और गहरा संबंध है।'[14]

उन्नीसवीं सदी उदारवाद की विजय का युग है। इंगलैंड में उपयोगितावादी चिंतकों ने जिनमें बेंथम और जान स्टुअर्ट मिल प्रमुख हैं, व्यक्तिवादी उदारवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ह्यूम का अनुसरण करते हुए बेंथम तथा अन्य उपयोगितावादियों ने लाक के प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने इन अधिकारों के समर्थन में उपयोगिता के नए मान प्रस्तुत किए और उन्हें वैधानिक अधिकारों के रूप में पुनर्जीवित किया। इनकी रक्षा का दायित्व वैधानिक संप्रभु को सौंपा गया।[15] विचार, भाषण और कार्य की स्वतन्त्रताएं आधारभूत उदारवादी मूल्यों के रूप में स्वीकृत हो गई। उन्हें अब प्राकृतिक अधिकारों की संज्ञा नहीं दी जाती थी। एडम स्मिथ ने उदारवादी विचारधारा के आर्थिक पक्ष का प्रतिपादन किया। संसार के प्रमुख व्यापारिक और औद्योगिक राष्ट्र इंगलैंड ने ऐडम स्मिथ के आर्थिक सिद्धांतों के आधार पर उदारवादी राजनीतिक अर्थतंत्र का सफलतापूर्वक संचालन किया।[16] *संयुक्त राज्य अमरीका ने भी* स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में आर्थिक तथा राजनीतिक

क्षेत्रो मे उदारवादी विचारधारा को अपनाया। उन्नीसवी सदी के अत तक उदारवाद विश्व के सभी प्रगतिशील राष्ट्रो की एकछत्र विचारधारा मान ली गई। परतु पारपरिक उदारवाद के व्यक्तिवादी तत्त्वो मे रूसो और हीगल के समष्टिवादी विचारो के प्रभाव के कारण परिवतन होने लगा। ग्रीन, ब्रैडले और बोसाके ने इस समष्टिवादी सशोधन का नेतृत्व किया और उदारवाद के सिद्धातो की नैतिक आदशवाद के आधार पर पुनर्व्याख्या की। उनके नैतिक आदशवाद के दो वैचारिक स्रोत थे प्लेटो और अरस्तू की शिक्षाए एव काण्ट और हीगल की दाशनिक मान्यताए।[17] ताकवील तथा हावहाउस ने आदशवाद को बिना स्वीकार किए ही उदारवाद की विचारधारा मे समष्टिवादी सशोधन किए। हावहाउस ने राज्य के आदशवादी सिद्धात की तीव्र आलोचना की।[18]

बीसवी सदी के उदारवादी चिंतक समष्टिवाद की दिशा मे और भी अग्रसर हुए, क्योकि उन्हें श्रमिक वग की विचारधारा समाजवाद की चुनौतियो का सामना करना पडा। समाजवादी आदोलन मध्यमवर्गीय राज्य के राजनीतिक और आर्थिक सस्थानो का विध्वस कर एक नई प्रकार की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना करना चाहता है। अत उदारवाद ने अपनी परिवतनवादी भावना त्यागकर यथास्थिति के विनम्र समथनकारी का रूप ग्रहण कर लिया है। अतीत का उदारवाद वतमान का अनुदारवाद है। एक अमरीकी समाजशास्त्री सी० राइट मिल्स का कथन है कि उदारवादी शब्दजाल मे बहुधा प्रतिक्रियावादी उद्देश्य छिपे रहते हैं। वियतनाम मे अमरीकी साम्राज्यवादी नीति इसका ज्वलत उदाहरण है। लास्की का निष्कष है कि उदारवादी विचारधारा का अतीत, वतमान और भविष्य पूजीवादी अथव्यवस्था स जुडा हुआ है।

## उदारवादी आर्थिक सिद्धात

लास्की ने उदारवाद के आर्थिक आधार की चर्चा करते हुए बताया है 'मध्ययुग की समाप्ति हान पर नए आर्थिक समाज के आगमन ने उदारवाद को जन्म दिया। नए समाज की आवश्यकताओ के अनुसार ही इसके सिद्धाता की रूपरेखा निर्धारित हुई, और अन्य सभी सामाजिक दशना की तरह यह भी अपने माध्यम से, जिसने इसे जन्म दिया, ऊपर न उठ सका। अत अन्य सभी सामाजिक दशना की तरह इसके जन्म की परिस्थितियो मे ही इसका विनाश निहित था।'[19] उदारवादी राज्य का आधार हमे उस आर्थिक प्रणाली मे खोजना चाहिए जिसने इसे उत्पन्न किया। उदारवादी राजनीतिक दशन के मौलिक सिद्धात उसके आर्थिक उसूलो मे निहित हैं। परतु उदारवादी युग मे विभिन्न प्रकार के आर्थिक सिद्धातो का प्रतिपादन किया गया, जिनमे तार्किक असगति भी दृष्टिगोचर हाती है। उनके पीछे केवल वर्गहित का तक है। अत वैचारिक अतर्विरोधा के बावजूद यह नए बुजुआ वग के हितो की पूर्ति का साधन था।

अथशास्त्र के क्षेत्र मे उदारवादी विचारधारा का पहला रूप वाणिज्यवाद था। यह सुदृढ निरकुश शासन प्रणाली के औचित्य का समथन करता था। यह प्रणाली व्यापारिक और औद्योगिक वर्गो के हिता की पूर्ति के लिए लाभदायक थी। वाणिज्यवादी सिद्धात की एक विशेषता यह थी कि इसके दृष्टिकोण के अनुसार निधन और बेकार मनुष्य समाज के प्रति अपराधी है क्योकि व जान बूझकर काम और मेहनत से जी चुरात हैं। लास्की का यह विचार बिल्कुल सही है कि इस विचारधारा का मूल उद्देश्य सोलहवी सदी मे उद्योगपतियो और व्यापारियो के हिता के अनुकूल एक राज्य प्रणाली का निर्माण करना था।[0]

राज्य द्वारा हस्तक्षेप के औचित्य का वाणिज्यवादी सिद्धात प्रकृतिवादियो (Physiocrates) ने स्वीकार नही किया। उनकी माग थी कि राज्य व्यापार उद्योग के क्षेत्र मे कोई दखल न दे। प्रकृतिवादियो न हेल्वेतियस के उपयोगिता वादी सिद्धाता को आर्थिक क्षेत्र म लागू किया और परिष्कृत स्वाथ को सुनियमित समाज का आधार माना। उनका आग्रह था कि विधायक को आर्थिक नियमो के स्वाभाविक परिचालन मे कोई हस्तक्षेप नही करना चाहिए। सामाजिक सुख और समद्धि को प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक मनुष्य को अपन परिष्कृत स्वाथ की सिद्ध के लिए अनुमति दी जाए। विधिनिर्माण का एकमात्र ध्येय व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर होने वाले प्रहारो की रोकथाम है। इसका यह अथ नही कि वे निरकुश शासन के विरोधी थे। वे निरकुश राजतत्र स पूणत सतुष्ट थे, अगर उसके द्वारा नागरिको की आर्थिक स्वतन्त्रता की गारटी मिल सके। सरकार की क्रियाओ पर वे उन्ही सीमाओ को स्वीकार करत थे जो प्रकृति ने लगाई है। उनका विश्वास था कि जिन आर्थिक नियमो का समथन वे करते हैं, उन्हें प्रकृति ने उत्पन्न किया है और इसीलिए वे राज्य द्वारा इन नियमो मे हस्तक्षेप को प्रकृति विरुद्ध समझत थे।

प्रकृतिवादी सिद्धात के द्वारा फ्रास के भूमिधरो और भूस्वामियो के वग हिता की साधना का भी प्रयत्न किया गया। उनके आर्थिक सिद्धात म कृषि का विशेष महत्त्व दिया गया था। व यह अनुभव न कर सके कि सामतवाद शीघ्रता से पूजीवाद मे बदल रहा था। प्रकृतिवादी सिद्धात का एक दोष और था। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र म यह शुद्ध तकवादी पद्धति पर आश्रित था और अनुभवजनित तथ्यो के विश्लेषण पर कोई ध्यान नही देता था। वे राज्य द्वारा हस्तक्षेप का विरोध इसीलिए करते थ कि यह प्राकृतिक कानून की आज्ञाओ के विपरीत था।[1] यह आश्चय की बात है कि बाद मे ऐडम स्मिथ न भी प्राकृतिक कानून के आधार पर राज्य की क्रियाओ का अनौचित्य सिद्ध करने का प्रयास किया।

आर्थिक उदारवाद की विचारधारा का सबसे महत्त्वपूण प्रतिनिधि ऐडम स्मिथ ही है। ऐडम स्मिथ के सिद्धात प्रकृतिवादी सिद्धाता की तुलना मे अधिक

वज्ञानिक हैं और उनके द्वारा सामतवाद से पूजीवादी दिशा मे परिवतन की विवेचना अधिक तकसगत रूप म की जा सकती है। पारपरिक अथशास्त्र के निर्माण मे रिकार्डो और माल्यस ने भी महत्त्वपूण योगदान दिया। जनसख्या और लगान के विषय म उन्होंने नए सिद्धात प्रस्तुत किए। इन आर्थिक सिद्धातो का तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा पर भी व्यापक प्रभाव पडा। पारपरिक अथशास्त्रियो ने राजनीति और अथनीति के पृथक्करण पर जोर दिया। यह पृथक्करण वास्तविक जीवन म सभव न था। पारपरिक अथ-शास्त्र एक बुर्जुआ विचारधारा थी, जिसका आधार अगरेज मध्यम वग द्वारा राज्य का अविश्वास था क्योकि राज्य पर अब भी अभिजात वग का नियत्रण था। यह आर्थिक क्षेत्र म अगरेज बुर्जुआ वग के आत्मविश्वास का द्योतक भी था। उन्ह अपने आर्थिक उद्देश्यो के गौरव मे आस्था थी।

अथशास्त्र की क्लासिकल विचारधारा दो प्रमुख विचारो पर आधारित थी जिनमे पूण तार्किक सगति नही थी। पहले तो यह समाज की एक बाजार के रूप म परिकल्पना करता है जहा वस्तुओ का स्वतत्र विनिमय हितो का प्राकृतिक सामजस्य उत्पन्न करता है क्योकि व्यक्ति अपन लाभ को देखते हुए वस्तुओ का क्रय विक्रय करते हैं। दूसरे, यह सामाजिक धन के वितरण का सिद्धात भी है जिसके अनुसार लगान, मुनाफे और मजदूरी का बटवारा किया जाता है। फलस्वरूप समाज मे वगसघष की स्थितिया पदा होती है। रिकार्डो द्वारा प्रस्तुत मूल्य के श्रम सिद्धात से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाता है। उनका मत था कि स्वतत्र और प्रतियोगिताशील बाजार मे वस्तुओ का मूल्य उनके उत्पादन मे निहित श्रम के द्वारा निधारित होता है। विनिमय मे उस वस्तु की कीमत माग और पूर्ति के अस्थायी उतार-चढाव के अनुसार कुछ कम-ज्यादा हो सकती है। स्वतत्र बाजार के परिचालन से उत्पादको को अपनी वस्तुओ की उचित कीमतें मिलेंगी और उपभोक्ताओ को सतोष रहेगा कि उन्ह अपनी मुद्रा का उचित प्रतिफल मिला है। माल्यस और रिकार्डो का कथन है कि इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं। रिकार्डो के अनुसार जमीदार और शेष समाज के हितो मे विरोध है। जमीदार का लगान उसके श्रम का प्रतिफल नही है। कभी-कभी जमीन का मूल्य उन कारणो से बढ जाता है, जिनमे जमीदार का कोई योगदान नही होता परतु वह इस मूल्यवद्धि का लाभ लगान की दर बढाकर उठाता है। जबकि व्यापारी, उद्योगपति, मजदूर और किसान अपने श्रम द्वारा समाज के धन की वृद्धि करते है, जमीदार एक सामाजिक बोझ के रूप मे दूसरो के श्रम पर जीवित रहते हैं। माल्थस के अनुसार भी जमीदार का लगान पूजापति के मुनाफे से कटौती करने पर प्राप्त होता है, क्योकि उनके सिद्धात के अनुसार मजदूर की मजदूरी तो स्थिर रहती है।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि अथशास्त्र के क्लासिकल सिद्धात का

उद्देश्य औद्योगिक वग के हितो की रक्षा करना और जमीदार वग के हितो पर आघात करना था। इसके साथ साथ इस सिद्धात का दूसरा उद्देश्य पूजीपतियो के हितो की श्रमजीवियो के प्रहार से रक्षा करना भी था। इस विचारधारा म एक अतविरोध यह भी था कि यह अथशास्त्र म प्राकृतिक अधिकारो के सिद्धात को स्वीकार करता था, परतु नतिक और राजनीतिक क्षेत्रो म उन्ह अस्वीकार करता था। उनका सामान्य मानसिक दृष्टिकोण उपयोगितावादी व अनुभववादी था पर उनकी अथनीति सिद्धातवादी और तकवादी विचारो स प्रभावित थी। वे अपनी मान्यताओ के दैनिक अनुभव और निरीक्षण के आधार पर तार्किक निष्कष निकालने मे भी असफल रहे।[3] सेबाइन का विचार है, 'मूल्य के श्रम सिद्धात को प्रतियोगिता पर आधारित श्रम बाजार के स्वाभाविक न्याय के समथन मे उपयोग करना सवथा अनुचित था। कहा गया कि वस्तुओ का विनिमय उनमे निहित श्रम के परिमाण के आधार पर होता है। परतु पूजी वादी उत्पादन व्यवस्था मे श्रम मे मशीनो इत्यादि मे लगी पूजी को शामिल कर लिया गया। इसे 'सचित श्रम की सज्ञा दी गई, पर यह स्पष्ट है कि इसमे पूजीपति का अपना श्रम सचित नही था। अत जबकि श्रमिक को केवल अपन श्रम का पुरस्कार मिलता था, पूजीपति को दूसरे मनुष्यो क सचित श्रम का प्रतिफल प्राप्त होता था। मजदूरी और सपत्ति-अधिकार दोनो को प्राकृतिक मानकर उनका समथन किया गया और इस बात पर कोई ध्यान नही दिया कि कम से कम सपत्ति का अधिकार ऐतिहासिक और सास्थानिक घटना का परिणाम था। इसी पक्षपात और ऐतिहासिक भावना के अभाव के कारण क्लासिकल अथशास्त्र माक्स की आलोचना का शिकार बना।[4] लास्की ने इसकी आलोचना करत हुए कहा है, 'तथ्य यह है कि इसकी मान्यताओ का देखत हुए आर्थिक उदारवाद ऐसा सिद्धात था जा समाज के एक सकीण अश की सेवा करना चाहता था। उसके परिचालन की कीमत कारखान के श्रमिक और खेतिहर मजदूर को भुगतनी पडी जिसे यूनियन बनान की आज्ञा न थी, जिसे अधिकतर वोट का अधिकार नही मिला था, जो ऐसी अदालतो के अधीन था जो बुर्जुआ सपत्ति की रक्षा अपने जीवन का मुख्य ध्येय मानती हैं। अत वह इस नई व्यवस्था के सामन पूणत नि सहाय था।'[5]

## उदारवादी राजनीतिक सिद्धात

उदारवादी राजनीतिक सिद्धात का लास्की द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण उदारवाद के आर्थिक पक्ष की व्याख्या पर ही अवलबित है। माक्स के अनुसार उत्पादन के तरीके राजनीतिक सस्थानो की कुजी हैं। लास्की उनके इस विचार से सहमत है। उनका विचार है कि उदारवादी राज्य के सस्थानो की कुजी उत्पादन के पूजीवादी तरीका मे खोजनी चाहिए। परतु लास्की पूणत माक्सवादी नही।

अत मार्क्स की तुलना मे उनके दृष्टिकोण के अनुसार आर्थिक कारणों का अपक्षाकृत कम महत्त्व है क्याकि सामाजिक प्रक्रियाए उनसे प्रभावित तो होती ह पर पूणत उनसे निर्धारित नही हाती।[6]

लास्की के अनुसार उदारवादी विचारधारा आशिक रूप से ब्रिटिश, फ्रासीसी और अमरीकी राजनीतिक दाशनिको की लिखित कृतिया से प्राप्त होती है और आशिक रूप से इन देशा के राजनीतिक सस्थानो के अनुभवो और कार्यों का निष्कष है। इगलड से उदारवादी विचारधारा का प्रारभ होता है। अठारहवी सदी के अत तक फ्रास तया अमरीका इसे स्वीकार कर लेते हैं। इगलड मे उदारवादी चितन का रूप सुधारवादी है किंतु अमरीका तथा फ्रास का चितन अपक्षाकृत अधिक उग्रवादी ह। कारण यह है कि इगलैंड मे सावैधानिक शासन की स्थापना हो चुकी थी किंतु अमरीका और फ्रास मे अभी इसकी स्थापना के लिए क्रातिकारी सघष चल रहा था। यूरोप के राजनीतिक चितको की शली द्वद्वात्मक सघर्षो और अतिवादी तर्कों से प्रभावित थी। इसके विपरीत अगरेज लाग विवेकसगत समझौते और व्यावहारिक सामजस्य के दशन और तरीको का स्वीकार करत थे।

इगलैंड म बेंथम जेम्स मिल और जान स्टुअट मिल जस उदारवादी लेखको का उद्देश्य ससद का सुधार करना था जिसमे जमीदारी हितो का व्यापक प्रभाव था। इनका कथन था कि दोना राजनीतिक दल अभिजात परिवारो की एक सकीण मण्डली तक सीमित थे। इस दोष के निराकरण के लिए मध्यम वग को मताधिकार देना आवश्यक था। प्रातिनिधिक शासन के नए सिद्धातो का प्रतिपादन करत हुए उन्होने वयस्क मताधिकार को अपना अतिम ध्येय स्वीकार किया। पूववर्ती उपयोगितावादी बेंथम और जेम्स मिल उत्तम शासन को अधिक महत्त्व दते थे किंतु जान स्टुअट मिल ने व्यक्तिगत स्वतत्रता और उत्तम शासन को लगभग समान महत्त्व दिया।[7] इसके विपरीत हबट स्पेंसर ने उत्तम शासन के उद्देश्य को अस्वीकार करते हुए केवल व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। टी० एच० ग्रीन ने व्यक्तिगत स्वतत्रता पर सामाजिक कल्याण के सदभ म व्यापक प्रतिबध लगाने की सलाह दी। इस प्रकार उदारवादी राजनीतिक सिद्धात का रूप स्थिर न रहकर गतिशील हो गया जिसम निरतर बदलती हुई परिस्थितिया का दखते हुए परिवतन कर लिए गए।

फ्रास और अमरीका म उदारवादी राजनीतिक चितन न मुख्यत गणतत्रीय रूप ग्रहण किया। जबकि इगलैंड के उदारवादिया न राजतत्र पर सीधा प्रहार नही किया, फ्रासीसी और अमरीकी उदारवादियो ने राजतत्र को उदारवादी सिद्धाता के प्रतिकूल माना। इस अतर का कारण स्पष्ट था। ब्रिटिश राजतत्र इगलैंड म प्रातिनिधिक शासन की स्थापना मे बाधक न था। मत्रिमडल और ससद के कार्यों म राजतत्र मध्यम वग के लिए कोई अडचनें नही डालता था।

फ्रास मे राजतन्त्र ने मध्यम वग को लोकतान्त्रिक स्वशासन के अधिकार नही दिए थे। अत फ्रासीसी जनता ने मध्यम वग के नेतत्व म क्राति करके ही स्वशासन का अधिकार प्राप्त किया। फलस्वरूप वहा राजतन्त्र के स्थान पर गणतन्त्र की स्थापना हुई। अमरीकी मध्यम वग का लोकतान्त्रिक स्वशासन की स्थापना के लिए ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के विरुद्ध सशस्त्र सघष करना पडा, फलस्वरूप वहा भी गणतन्त्र की स्थापना हुई।

राजनीतिक क्षेत्र मे उदारवादी विचारधारा के दो प्रमुख पक्ष है पहला तो उदारवाद राजनीतिक सगठन की एक विधा है और दूसरा व्यक्ति के अधिकारो का एक सिद्धात है। इन दोनो पक्षो म एक अतर्निहित सबध है। दोनो सिद्धात मध्यम वग की आर्थिक आवश्यकताओ के सदभ म विकसित हुए हैं। आर्थिक क्षेत्र मे शक्तिशाली होने पर मध्यम वग ने राजनीतिक प्रभुता प्राप्त करने के लिए इन सिद्धातो का निमाण किया।

अभिजात वग के क्षेत्रीय प्रभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से मध्यम वग ने राज्य की सप्रभुता के सिद्धात का समयन किया। बेंथम और आस्टिन ने निरकुश, अविभाज्य और अहस्तातरणीय सप्रभुता की परिकल्पना प्रस्तुत की पर इस सत्ता का प्रयोग करने का अधिकार ऐसी ससद को देना चाहा जिसमे मध्यम वग की प्रधानता रहे। इगलैंड मे उदारवादी सिद्धात उत्तरदायी ससदीय शासन का समथक रहा। अमरीका म राजनीतिक सस्थान इगलड से भिन्न थे पर वहा प्रातिनिधिक सिद्धात की सावैधानिक विजय और भी अधिक निणयात्मक थी। लास्की का विचार है कि उदारवाद की विजय अनिवाय रूप म लोकतन्त्र की विजय नही है, वह वस्तुत बुजुआ वगतन्त्र की विजय है। मध्यम वग के विश्वसनीय प्रतिनिधि ससद अथवा काग्रेस के माध्यम स वास्तविक वैधानिक शक्तियो का प्रयोग करते हैं। कायपालक शक्तिया ऐसे राष्ट्रपति और मन्त्रिमडल मे निहित होती हैं जिनम मध्यम वग को पूण विश्वास हो। इसी प्रकार न्यायालय अभिजात वग के नियन्त्रण से मुक्त होकर मध्यम वग के सदस्यो के हाथ म आ जाते हैं। वकील तथा न्यायाधीश न्यायप्रणाली को न्याय की मध्यमवर्गीय परिकल्पना का माध्यम बनाकर उपयोग करत हैं।

उदारवादी विचारधारा का दूसरा पक्ष अधिकारो की परिकल्पना है। इन अधिकारो का केंद्रबिंदु सपत्ति और स्वतत्रता के वैयक्तिक अधिकार हैं। लास्की का मत है कि अधिकारो की उदारवादी धारणा भी एक विशेष श्रेणी के वगस्वार्थों को प्रतिध्वनित करती है।[28] लास्की अधिकारो के प्राकृतिक सिद्धात को अस्वीकार करते हुए कहते हैं, 'अधिकार मानवजाति के बाल्यकाल म उपलब्ध किंतु तदुपरात विलीन हो जाने वाली एतिहासिक स्थितिया नही हैं। न अधिकारो से हमारा तात्पय उस प्राकृतिक व्यवस्था के रूप से है जो आधुनिक समाज के बदलते हुए प्रतिबिंबों के पीछे निहित है।'[*] ह्यूम, बेंथम और

आस्टिन द्वारा प्रस्तुत अधिकारो का कानूनी सिद्धात भी लास्की को माय नही है। लास्की का कथन है, 'अधिकारो का कानूनी सिद्धात हमें राज्य के वास्तविक चरित्र का ज्ञान करा सकता है परन्तु यह हम यह नही बता सकता, सिवाय किसी खास राज्य की समीक्षा के सदभ मे, कि जिन अधिकारा को मायता दी गई है क्या सचमुच उन्ही अधिकारा को मायता दी जानी चाहिए।'[30] अत लास्की का विचार है कि अधिकारा की परिकल्पना स्थिरता पर आधारित नही की जा सकती और न उसे बिना बदले प्रत्येक राजनीतिक समाज म लागू किया जा सकता है। उनका सुझाव है, जैसे जैसे कानून द्वारा स्वीकृत अधिकार अपयाप्त और जजर हो जात है हम उन्ह नवीन रूप मे पुन घोपित करना पडता है। उनका चरित्र समय और स्थान क अनुसार बदलता रहता है।'[31]

इस प्रकार उदारवादी सिद्धात उन्ही अधिकारो पर विशेष बल देता है, जिनकी मध्यमवग का अपन हिता की पूर्ति के लिए आवश्यकता थी। सवप्रथम यह निजी सपत्ति के अधिकार की घोषणा करता है परतु इस अधिकार की विवेचना मध्यमवर्गीय मानदडो के अनुसार होती है। उदारवादी लेखक, जो बुजुआ सपत्ति के यशोगान म वाक्चातुय दिखाता है, भूमि म सामती सपत्ति के प्रति वही सम्मान नही दिखाता। फ्रास म 1789 की क्राति के पश्चात फ्रासीसी जमीदारा की जमीन छीन ली गई और बिना मुआवजा दिए किसानो मे बाट दी गई। फ्रासीसी उदारवादियो ने भूमि के इस अपहरण को सामाय और यायोचित स्वीकार किया। जैसा माक्स ने साम्यवादी घोपणापत्र मे स्वीकार किया है 'वतमान सपत्ति सबधा की समाप्ति केवल साम्यवाद की विशेषता नही है। ऐतिहासिक परिस्थितियो के बदलने पर भूतकाल म भी सपत्ति के सबधा म निरतर ऐतिहासिक परिवतन होत रहे है। उदाहरण के लिए फ्रासीसी क्राति न सामती सपत्ति को नष्ट कर बुजुआ सपत्ति की स्थापना की।'[3]

स्वतत्रता की उदारवादी परिकल्पना भी मध्यमवग के दृष्टिकोण से प्रभावित है। उनके दष्टिकोण की सकीणता इसी से प्रकट है कि वे पूजीपतिया के सामूहिक सघा को उचित और श्रमजीविया के सामूहिक सघो को अनुचित मानत थे। लास्की का कथन है, 'भूतकाल म प्रत्येक क्षेत्र मे स्वतत्रता का रूप, जिस आर्थिक व्यवस्था के अतगत हम रहते है उसके परिणामो से प्रभावित रहा है। हमारी स्वतत्रता का अनिवाय रूप से सपत्ति के दावा के अधीन रखकर सकीण और सीमित किया गया है। वह उसी सीमा तक उपलब्ध हुई जहा तक वह आर्थिक सत्ता के स्वामियो के लिए खतरनाक सिद्ध न हो।'[33] इगलैड मे सामाय कानून के द्वारा अधिकारो और स्वतत्रता की जो व्याख्या की गई है उसम समाज के धनी वग के साथ पक्षपात किया गया है और निधन वग के हिता के प्रति लापरवाही दिखाई गई है। अमरीका मे सर्वोच्च यायालय ने यही

काय उसी उत्साह और दक्षता के साथ अपने निणया के द्वारा कर दिखाया है। अत लास्की का निष्कप है कि अधिकारो और स्वतत्रता की नई परिभापा सामान्य रूप से सामाजिक कल्याण के सदभ मे और विशेप रूप से श्रमिक वग के दष्टिकोण के अनुसार की जानी चाहिए। उनके विचार के अनुसार पूजीवादी समाज के दायरे मे केवल पूजीपतिया के विशेषाधिकारा की रक्षा की जा सकती है। जनता की वास्तविक स्वतत्रता समाजवाद के द्वारा ही उपलब्ध हा सकती है।

## उदारवाद की समीक्षा

*लास्की के अनुसार बीसवी सदी एक सकटग्रस्त सक्रमणकाल है जब पूजीवाद के* स्थान पर एक नई सामाजिक व्यवस्था जन्म लेने के लिए सघप कर रही है। यह नई व्यवस्था हमारी वैधानिक प्रणाली और राजनीतिक सरचना को बदलना चाहती है। पूजीवाद के *आर्थिक उद्देश्यो और निर्वाचन पर आधारित लोकतत्र* के राजनीतिक ध्येया मे मौलिक असगति उत्पन्न हो गई है।[34] सामाजिक विकास के तक के अनुसार अब पूजीवाद पर आधारित उत्पादन के तरीका का बदलकर समाजवादी तरीको को स्वीकार करना चाहिए। लास्की ऐसे सूत्र की खोज म हैं *जिसके आधार पर उदारवादी राज्य के चरित्र म कुछ ऐसे परिवतन* कर दिए जाए कि शातिपूण ढग से सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था बदली जा सके। वे इस सूत्र की खोज मे कहा तक सफल हुए, यह विवादास्पद है। उन्होने एक स्थल पर स्वय स्वीकार किया है, 'यहा जो दृष्टिकोण मैंने अपनाया है वह अनेक उदार मस्तिष्को को उद्विग्न करता है। यह सामाजिक परिवतन की धाय के रूप म क्राति को अनिवाय मानता है।[35] अत लास्की स्वय सशय म हैं कि सामाजिक परिवतन के लिए शातिपूण विधा को निर्धारित करना सभव भी है या नही।

उन्नीसवी सदी मे उदार लोकतात्रिक राज्य की श्रेष्ठता के तीन कारण *बताए गए थे पहला यह समाज मे व्यवस्था रखता है और बहुमत की सह* मति के आधार पर अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। दूसरा, इसम जनता प्रत्येक सामान्य निर्वाचन के अवसर पर इच्छानुसार नए शासक चुनती थी और इस प्रकार इसने शातिपूण परिवतन की विधा खोज निकाली थी। तीसरा, यह राष्ट्र के विशालतम सभव बहुमत के लाभ के लिए कायरत रहता था।[36] लास्की का विचार है कि वतमान परिस्थितिया मे जब पूजीवादी व्यवस्था समाजवादी व्यवस्था मे बदल रही है, उदारवादी लोकतत्र शातिपूण परिवतन की विधा प्रस्तुत करने म असमथ है। यह समझना कि उदारवादी राज्य जनता के बहुसख्यक वग के हितो के लिए काय करता है एक भ्राति है।[37]

यह सच है कि लोकतात्रिक राज्य प्रकट रूप मे निर्वाचको के बहुमत की

राय के आधार पर व्यवस्था रखता है। वस्तुत यह सहमति भी धोखे मे प्राप्त कर ली जाती है। राज्य अपने बल का प्रयोग सदा उनके पक्ष मे करता है जो उत्पादन के साधनो के मालिक हैं। लास्की का कथन है, 'राज्य वर्गसबधो की निर्दिष्ट प्रणाली की रक्षा के लिए कृतसकल्प होता है। यह इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपनी सर्वोच्च दबाव डालने वाली शक्ति का उपयोग करता है। विश्लेषण मे यही सिद्ध होता है कि यह शक्ति राज्य की रक्षा सेनाओ मे निहित है। अतिम चुनौती के रूप मे इनका प्रयोग उत्पादन के साधनो के मालिको की इच्छा को सर्वहारा वर्ग पर लादने के लिए किया जाता है।[39] इस प्रकार लास्की उदार लोकतत्र के वर्गचरित्र पर प्रकाश डालता है। इसका अभिप्राय है कि वर्गसबधो म मौलिक परिवर्तन शातिपूर्ण साधनो से सभव नही है क्योकि उत्पादन के साधनो के मालिक इसका विरोध बल प्रयोग द्वारा करेंगे जिसम अतिम रूप से सैन्यबल भी शामिल है। अत वर्गसबधो मे मौलिक परिवर्तन लाने के लिए बल प्रयोग पर आधारित सामाजिक क्रांति आवश्यक है।

उदार लोकतत्र का दावा है कि यह जनता के बहुसख्यक भाग के लाभ के लिए कार्यरत है इतिहास के अनुभव के आधार पर उचित नही ठहरता। पूजीवादी समाज मे पूजीपतियो के लिए उत्पादन की प्रेरणा अधिकतम मुनाफा कमाने की मनोवृत्ति पर आधारित है जो श्रमजीवियो के अधिकतम शोषण द्वारा प्राप्त होता है। जबकि पूजीपति अधिकतम मुनाफा स्वय हडप लेता है मजदूर को उसके श्रम का उचित प्रतिफल नही दिया जाता। अत धनिको का अपार ऐश्वर्य और जनता की दरिद्रता पूजीवादी समाज के अनिवार्य लक्षण हैं। उदारवादी लोकतत्र धन के इस अन्यायपूर्ण वितरण की निरतर रक्षा करता है।[39] उदारवादी राज्य की कानूनी मान्यताए उत्पादन के साधनों के व्यक्तिगत स्वामित्व और श्रम तथा पूजी के लिए अन्यायपूर्ण और असमान पुरस्कारो की व्यवस्था का समर्थन करती है। इन कानूनी मान्यताओ की सहायता से मुट्ठी-भर पूजीपति शेष समाज के शोषण का अधिकार प्राप्त कर लेते हैं। अत उदारवाद के दोनो तथाकथित गुण कि उदारवादी राज्य शातिपूर्ण परिवर्तन की विधा प्रस्तुत करता है और अधिकतम जनता के कल्याण का माध्यम है, व्यवहार म झूठे दावे सिद्ध होते हैं।[40] उदारवादी सिद्धात की उपर्युक्त आलोचना पर मार्क्स का प्रभाव स्पष्ट है। लास्की की स्वीकारोक्ति 'मुख्य रूप से राज्य के मार्क्सवादी सिद्धात ने उसके चरित्र और कार्यों की परिभाषा इस प्रकार की है कि उसकी सहायता से हम विश्वासपूर्वक उसकी गतिविधियो की दिशा निर्धारित कर सकते हैं। मेरी दृष्टि मे यह हमारे युग की समस्याओ के सूचक के रूप मे निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ सिद्धात है।[41]

इसके विपरीत आदर्शवादी राज्य का सिद्धात एव ऐसे अमूर्त राज्य की

परिकल्पना है जिसका अस्तित्व इस अपूण और दोपयुक्त ससार मे सभव ही नही है। हावहाउस के आदशवाद विरोधी उदारवादी दृष्टिकोण के विषय म लास्की का मत है कि यह एक प्रमाणहीन आस्था पर आधारित है कि अतिम रूप से सामाजिक सघर्षों म भी तक की विजय होती है।[4] कानून की उग्र-वादी व्याख्या, जो आस्टिन के विधिशास्त्रीय विचारो पर आधारित है लास्की के मतानुसार मूल्यहीन है क्योंकि वह कानून के तत्त्व को ध्यान म न रखकर केवल उसके औपचारिक स्रोत की चर्चा करती है। उनका कथन है 'पिछले चालीस वर्षों म एक *आदोलन विकसित हुआ है जो विधिशास्त्र को औपचा-रिकता पर कम और वास्तविकता पर अधिक* आश्रित करना चाहता है। समाज विज्ञान और विधिशास्त्र निकटतर आए हैं, और औपचारिक धारणाओ का विधिशास्त्र अब पुराने युग के धुरधरो को छोडकर किसी को सतोप प्रदान नहीं करता।[43] यह कहना कि कानून सप्रभु की आज्ञा है, उसके निर्माण का तरीका बतलाता है। उस कानून के तत्त्व का ज्ञान तत्कालीन समाज के आर्थिक सबधो के सदभ म ही प्राप्त हो सकता है। नेपोलियन सहिता इसलिए महत्त्व-पूण नहीं क्योंकि नेपोलियन ने सप्रभु के रूप म उसे लागू किया। उसके कानूनो का महत्त्व इसलिए है क्योंकि वे फ्रास के बुजुआ समाज के सचालन के लिए बनाए गए थे। वह एक बुजुआ सहिता के रूप मे फ्रास की पूजीवादी अथ व्यवस्था को परिलक्षित करती थी। अत हम उस सहिता के विषय पर ध्यान देना चाहिए।[44]

लास्की का विचार है, सामतवादी राज्य मे कानून जमीदारो के हित के लिए बनाया जाता है, उसम निहित तक उनके वग का तक है, समाज के जिस सामान्य उद्देश्य की वे पूर्ति चाहते है वह उनकी परिकल्पना का सामान्य उद्देश्य है, *आचरण के जिन नियमो को वे लागू करना चाहते हैं वे वही होंगे* जो उनकी धारणा के अनुसार माग की अधिकतम पूर्ति कर सकें। ब्रिटेन जसे पूजीवादी समाज म, उदाहरणाथ, कानून का तत्त्व पूजीपतियो के द्वारा निश्चित किया जाएगा। सोवियत रूस जसे समाजवादी समाज मे कानून का तत्त्व इस तथ्य द्वारा निर्धारित होगा कि वहा उत्पादन का सामूहिक स्वामित्व किसी श्रेणी के हित को सपूण समाज के हित की तुलना म गौण बना देता है।'[45] पूजीवादी समाज मे कानून नियमित रूप से पूजीवाद के मनोरथो की सेवा करता है। ब्रिटेन और अमरीका की कानून प्रणाली और प्रक्रिया से अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि उदार लोकतात्रिक राज्य के कानून पूजीपति वग के हितो की साधना के लिए ही विशेप रूप से निर्मित हुए हैं। लास्की ने य उदाहरण विस्तार से इगलड और अमरीका की न्यायिक प्रणालियो की व्याख्या करते हुए प्रस्तुत किए हैं।[46] वे इस विचार से सहमत नहीं कि उदारवादी राज्य मे कानून का मौलिक उद्देश्य सामान्य हित

की सिद्धि करना है। वे डीन पाउंड की कानून सबधी परिवर्तनों को हीगल से प्रभावित मानते हैं, जो उदारवादी राज्य की कानूनी मान्यताओं के वर्गचरित्र को पहचानने मे असमर्थ हैं।[48] सामाजिक क्रांति तभी सफल हो सकती है जब वर्तमान समाज का सपूर्ण कानूनी ढांचा बदल दिया जाए। समाजवादी प्रणाली को सफलतापूर्वक चलाने के लिए नए कानूनों की संहिता की आवश्यकता होगी।

उदारवादी विचारधारा की मौलिक कमजोरी यही है कि उसकी कानूनी मान्यताएं और राजनीतिक सस्थान ऐसी आर्थिक प्रणाली से जुड़े हुए हैं जिसका चरित्र वर्गतत्रात्मक है। व्यवहार मे उदारवाद राजनीतिक लोकतत्र तथा आर्थिक वर्गतत्र का अस्थिर गठबधन है। लास्की का कथन है कि उदारवादी लोकतत्रात्मक राज्य आतरिक क्षेत्र मे कार्यानुसार पूजीवादी कार्यरत थे और बाह्य क्षेत्र मे अपने उपनिवेशो के लिए साम्राज्यवादी एजेंट थे।[49] जब पूजीवादी अर्थव्यवस्था विस्तार के प्रारंभिक चरण से गुजर रही थी तो पूजीवादी वर्गतत्र और प्रतिनिधि लोकतत्र का गठबधन सुचारु रूप से चलता रहा। जनता ने राज्य के पूजीवादी नेतृत्व को इसलिए स्वीकार कर लिया क्योंकि शासक वर्ग औपनिवेशिक शोषण का एक अश उन्हें देकर जीवन स्तर मे सुधार करता रहा। जब पूजीवाद के इतिहास मे सकुचन और सकट का समय आया, जब नए उपनिवेश दुर्लभ हो गए, तो यह पुराना गठबधन कायम रखना भी कठिन हो गया। जनता ने अब माग की कि आर्थिक सबधो की परिभाषा बदली जाए। इस प्रकार समाजवादी आदोलन का सूत्रपात हुआ।[49] कुछ देशो, जैसे इटली, जर्मनी और स्पेन, मे पूजीवादी अर्थसकट का समाधान उदार लोकतत्र के सकट को हटाकर फासीवादी तानाशाही की स्थापना के द्वारा किया गया। पूंजीपतियो को लोकतत्र से अधिक अपने निहित स्वार्थ प्रिय थे।[50]

लास्की का विचार है कि उदारवादी लोकतत्र के स्थान पर समाजवादी लोकतत्र स्थापित किया जाना चाहिए। परतु शांतिपूर्ण उपायो द्वारा ऐसा होना सभव है या नही, इस सबध मे वे कुछ निराशावादी हो गए थे। सोवियत रूस का उदाहरण हिंसात्मक साधनो को समाजवाद की स्थापना के लिए अनिवार्य मानता था। परतु रूसी समाज समाजवादी क्रांति से पूर्व सामंतवादात्मक था और वहा पूजीवाद भी पश्चिमी यूरोप की तुलना मे अविकसित था। क्या रूसी क्रांति के अनुभव को दूसरे देशो मे दोहराना आवश्यक है? क्या पश्चिमी यूरोप मे लोकतत्र सावैधानिक तरीको से समाजवाद ला सकते हैं? इटली, जर्मनी और स्पेन के अनुभव निराशाजनक हैं क्योकि इन देशो मे शासक वर्ग ने फासीवाद की सहायता से अपने निहित स्वार्थों की रक्षा की।[51]

फिर भी लास्की के दृष्टिकोण के अनुसार उदारवादी लोकतत्र मे साम्यवादियो द्वारा प्रस्तावित सशस्त्र विद्रोह और गृहयुद्ध के तरीके अवांछित

क्योंकि उनका परिणाम अनिवाय रूप से एकसत्तात्मक शासन या अधिनायकतन्त्र होता है। लास्की लोकतात्रिक समाजवादी ह जो समाजवाद ससदीय सस्थाना के माध्यम से लाने के इच्छुक है। वे *साम्यवादियो के अधिनायकतन्त्र की* परिकल्पना को पसद नही करते।[5] परतु यथाथवादी होने के कारण लास्की यह समझते हैं कि किसी समाजवादी दल की ससदीय सफलता का अथ सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र म समाजवाद की विजय नहीं है। निर्वाचन मे विजय समाजवाद के सुदूर लक्ष्य की ओर चलने के लिए पहला कदम है। चुनाव म जीतने वाले समाजवादी दल को समझ लेना चाहिए कि सरकार के महत्त्वपूण अग जैसे सेना, पुलिस, न्यायपालिका और नौकरशाही अब भी उन लोगो के हाथ मे हैं जो उत्साहपूवक यथास्थिति का समथन करत हैं और आर्थिक व्यवस्था तथा सामाजिक आचरण मे किसी प्रकार के उग्रवादी परिवतन का विरोध करते हैं।[53]

इगलड मे 1931 की साविधानिक परिस्थिति की चर्चा करते हुए लास्की ने कहा, 'सक्षेप मे, समाजवादी सुधार साविधानिक तरीका स कार्यान्वित नही किए जा सकते। जब कभी भी सत्तारूढ दल विधानसभा की सहायता से धन के वितरण म गभीर परिवतन करने का प्रयत्न करेगा, तो एकाधिकारी पूजी ससदीय सरकार के शासन को स्वीकार नही करेगी। मैं नही जानता कि श्री मैकडानल्ड और उनके साथिया ने इस सभावना के परिणामा पर विचार किया है या नही। मुझे यह एक आग्रह प्रतीत होता है जिसके परिणामस्वरूप यदि समाजवादी अपने सिद्धातो और विश्वासो के अनुसार राज्य की स्थापना करना चाहत है तो वे ऐसा क्रातिकारी साधनो के द्वारा ही कर सकते है।'[54] लास्की यह बताने मे असमथ है कि समाजवादी दल का मत्रिमडल सेना, नौकरशाही तथा न्यायालयों के प्रतिरोध का सामना किस प्रकार करे। जब तक पूजीपति वग स्वय फासीवाद का माग न पकडे, समाजवादी दल के लिए अनक बाधाआ के बावजूद साविधानिक पद्धति ही श्रेष्ठतर है। उन्ह भय है कि सशस्त्र विद्रोह के तरीके यदि मजदूर वग अपनाएगा तो उसका अनिवाय परिणाम शासक वग द्वारा फासीवाद की स्थापना होगा।[55] अत वे सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और समष्टिवादी आदश व बधुता के लिए सविधानवाद ससदीय शासन और वैयक्तिक स्वतत्रता के उदारवादी मूल्यो का परित्याग करन के लिए तैयार नहीं हैं। अपनी अतिम पुस्तक 'हमारे युग की दुविधा' म, जो उनकी मृत्यु के उपरात प्रकाशित हुई उन्होने विचार की स्वतत्रता का समथन बिल्कुल व्यक्तिवादी और उदारवादी युक्तिया के आधार पर किया। अमरीका मे मकार्थीवाद (McCarthyism) द्वारा बुद्धिजीविया के दमन को उन्होने उदारवाद के सर्वोत्तम मूल्या के प्रति विश्वासघात की सना दी।

लास्की द्वारा प्रस्तुत उदारवाद के विश्लेषण की समीक्षा करत हुए हवट

डीन का कथन है, 'लास्की के विश्लेषण मे अर्तविरोध और भ्रम इसलिए हैं क्याकि वे पूजीवादी लोकतन्त्र' और 'उदारवाद' शब्दो का बहुत व्यापक अथ लेत हैं और उसमे तीन पृथक कालो और तीन विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक दशना को सम्मिलित कर लेते हैं—अहस्तक्षेपी उदारवाद और नकारात्मक राज्य का काल, इगलैंड म 1870 के पश्चात विकसित होने वाला नवीन उदारवाद और सकारात्मक राज्य, और अत मे वह काल जिसे वे 'पूजीवाद का पतन' और 1929 के पश्चात फासीवादी आदोलन की सज्ञा देते हैं। क्याकि वे 'पूजीवादी लोकतन्त्र' के इन तीन चरणो के भेद को स्वीकार नहीं करते, ये दो विकल्पा के बीच मे घमते हैं। एक ओर वे यह कहते हैं कि स्वतन्त्रताए केवल उन्ही लोगो तक सीमित हैं जो सपत्ति के स्वामी हैं और दूसरी ओर वे कहते है कि वतमान पूजीवादी सकट महत्त्वपूर्ण राजनीतिक स्वतत्रताओ और सकारात्मक राज्य के आर्थिक और सामाजिक लाभा का अत कर देगा।'[56]

यह सही है कि लास्की ने उदारवाद की व्यापक परिभाषा स्वीकार की है। कुछ समीक्षक उसे उन्नीसवी सदी के व्यक्तिवादी, उपयोगितावादी और कुछ आदशवादी लेखन का पर्याय ही मानेंगे। परतु यह कहना कि लास्की को उदारवाद और पूजीवादी व्यवस्था के तीन चरणो के अतर का ज्ञान नहीं है, असत्य है। लास्की ने 'यूरोपीय उदारवाद के उदय म इन तीनो चरणा की विस्तार से विवेचना की है। तीनो मे क्या अतर है और अतर के बावजूद उनमे क्या समानता है, इसकी चचा स्पष्ट रूप मे की है। सच तो यह है कि हबर्ट डीन स्वय गल्ती यह करते हैं कि इन तीना चरणा की व्यवस्था मे जो अन्तर्निहित समानता है उसे स्वीकार नहीं करना चाहते है, क्याकि वे वैचारिक रूप मे पूजीवादी लोकतन्त्र के समथक हैं। इसके विपरीत लास्की समाजवादी लोकतन्त्र के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूजीवादी अर्थव्यवस्था का अत करना चाहते हैं। हबर्ट डीन के लिए पूजीवादी अर्थव्यवस्था पर आधारित राजनीतिक लोकतन्त्र राजनीतिक उत्कर्ष की चरम सीमा है। लास्की के लिए वह प्रगति के माग म एक पडाव मात्र है।

सदभ

1 लास्की दि सोशल एड पालिटिकल आइडियाज आफ सम रिप्रजटन्वि थिक्स आफ दि विक्टोरियन एज, अध्याय V, पृ० 100
2 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, पृ० 17-28
3 वही पृ० 239-58
4 वही पृ० 12

5 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 13
6 लास्की दि डेंजस आफ ओबीडिएस प० 238–53
7 वही पृ० 254–63
8 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 41–56
9 लास्की फाउडशस आफ सावरेंटी पृ० 16–17
10 जी० एच० सबाइन हिस्टा आफ पालिटिकल थ्योरी प० 456
11 लास्की पालिटिकल थाट इन इगलड फ्राम लाक टु बेंथम पृ० 26–61
12 लास्की दि डेंजस आफ ओबीडिएस, प० 178–85
13 वहा प० 185–206
14 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, प० 210–11
15 ह्यू म पर लास्की का समाक्षा के लिए उनका पालिटिकल थाट इन इगलड फ्राम लाक टु बेंथम प० 112–23 और बेंथमवाद की समीक्षा के लिए वही पृ० 150–52 देखिए।
16 वही प० 214–45
17 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 63–67
18 हाबहाउस मेटाफिजिकल थ्योरी आफ दि स्टट अध्याय II
19 लास्का दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 17
20 वही पृ० 59–64 और प० 143–47
21 वही प० 183–92
22 लास्की पालिटिकल थाट इन इगलड फ्राम लाक टु बेंथम प० 214–42
23 लास्का दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 237–46
24 सबाइन हिस्ट्री आफ पालिटिकल थ्योरी प० 661–62.
25 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 195
26 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 108–21
27 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 191–96
28 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 89–97
29 वही पृ० 89–90
30 वही प० 91
31 वही प० 91–92
32 ओकशाट द्वारा सोशल एड पालिटिकल डाक्ट्रिन्स, म प० 93 पर उद्धत।
33 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टेट प० 36–37
34 लास्की डेमोक्रसी इन क्राइसिस प० 13–66
35 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रैक्टिस प० 139
36 लास्की पार्लियामेंटरी गवनमट इन इगलैंड प० 13–71
37 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 51
38 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० III
39 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रसी पृ० 165–99
40 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस पृ० 67–146
41 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० V
42 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 15–81
43 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० VI

44 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म पृ० 226-31
45 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० VII-VIII
46 लास्की पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट इन इंगलैंड पृ० 360-88 दि अमरिकन डमाक्रसी पृ० 207-14
47 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 173-83
48 वही पृ० 258-64
49 लास्की डमोक्रेसी इन क्राइसिस पृ० 201-32
50 लास्की रिफ्लेक्शन्स आन दि रिवाल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 128-61
51 लास्की दि डिलेमा आफ अवर टाइम्स पृ० 63-69
52 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 301-7
53 लास्की पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट इन इंगलंड पृ० 71-110
54 लास्की पालिटिकल क्वाटर्ली (अक्टूबर-दिसंबर 1931), पृ० 468
55 लास्की रिफ्लेक्शन्स आन दि रिवाल्यूशन आफ अवर टाइम पृ० 86-127
56 हर्बर्ट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड ज० लास्की, पृ० 180

श्री जे घगरहट्टा, श्री रामचन्द्र शर्मा
श्री हरिशंकर शर्मा एवम्
श्री याज्ञवल्क्य शर्मा की स्मृति में भेंट
द्वारा - हर प्रसाद बगरहट्टा
प्यारेमोहन बगरहट्टा
चन्द्रमोहन बगरहट्टा

# मार्क्सवाद का मूल्यांकन

प्रारंभ में लास्की के समाजवादी विचार प्रूधों और ब्रिटिश समाजवादी लेखक ग्रे तथा थाम्पसन के विचारों से प्रभावित थे। मार्क्स के विषय में सर्वप्रथम उन्होंने अपने विचार 1922 में प्रकाशित 'कार्ल मार्क्स : एक निबंध' में प्रस्तुत किए। इस निबंध को फेबियन सोसायटी ने प्रकाशित किया था। लास्की का विचार है कि मार्क्स के लेखन में मौलिकता बहुत कम है। वे कहते है, 'मैं आज कल कार्ल मार्क्स का अध्ययन कर रहा हूं और जैसे जैसे आगे बढ़ता हूं मेरा उनके लिए आदर कम होता जा रहा है। उनमें जो कुछ अच्छा है वह दो पूर्ववर्ती ब्रिटिश समाजवादी होजस्किन और थाम्पसन से लिया हुआ है। इसके अतिरिक्त उनकी पुस्तक का व्यापक प्रभाव इसलिए भी है कि उन्होंने अठारहवीं सदी की चौथी और पांचवीं दशाब्दियों के बच्चों के श्रम के शोषण के विषय में सरकारी रिपोर्टों का पहली बार प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया था। अन्यथा उसमें अर्धसत्य से भरी शब्दावली है और अंकगणित के सूत्र हैं जो बिल्कुल निरर्थक हैं। मुझे एंगेल्स के इस आग्रह पर हंसी आती है कि मार्क्स मूल्य के श्रम सिद्धांत के अनुसंधानकर्ता हैं। मैं कम से कम पच्चीस पूर्ववर्ती लेखकों के नाम गिना सकता हूं और उद्धरण देकर सिद्ध कर सकता हूं कि उनमें से आधे लेखकों को मार्क्स ने भी पढ़ा था। कुछ भी हो, मैं अपनी 'फेबियन' पुस्तिका में मार्क्स पर प्रहार करने का निश्चय कर चुका हूं और इस बात का प्रमाण देना चाहता हूं कि सुधारवाद सबसे सुरक्षित मार्ग है।'[1] उनका निष्कर्ष है, 'मैं उनके लेखन में मौलिकता का एक भी उदाहरण नहीं ढूंढ सका हूं। उसमें कोई ऐतिहासिकता नहीं (केवल दोषपूर्ण इतिहास का ढांचा) उसमें कोई मनोविज्ञान नहीं, उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं कि नैतिकताविहीन अर्थविज्ञान लाभ के बजाय हानि पहुंचा सकता है।'[2] मार्क्स के विषय में एक अन्य पत्र में लास्की ने न्यायाधीश होम्स को लिखा, 'वस्तुतः मैं इस व्यक्ति से घृणा करता हूं तब भी जब मैं उसकी शक्तियों को स्वीकार करता हूं। मुझे संदेह नहीं कि वह ऐसी सफल क्रांति चाहता है, जिसमें जितना अधिक रक्त प्रवाहित हो उतना ही अच्छा है।'[3]

अपने मार्क्स विरोधी पूर्वाग्रहो के बावजूद लास्की मार्क्स की प्रशसा करते हुए कहते हैं कि उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि पूजीवाद के दोषो की सफल और निर्णायक नैतिक आलोचना है जो स्वय मार्क्स के कथनानुसार उनके वैज्ञानिक समाजवाद का केंद्रीय विषय नही है। मार्क्स का उद्देश्य 'जनता के कधो से शोषण का भार उतारना था। उन्होंने श्रमिको के त्रासों को आशाओ मे बदल दिया, उन्होंने उनके प्रयत्न को राजनीतिक सुधारो मे रुचि से सामाजिक आधारो म दिलचस्पी की दिशा मे मोड दिया। वे प्राय गलती पर थे, वे अपवाद रूप मे ही उदार थ, वे सदा कटुभाषी थे, फिर भी जब उन लोगो की गणना की जाएगी जिन्होंने जनता की स्वाधीनता के लिए काम किया है तो उन्हें ही सर्वोच्च आसन मिलेगा और बहुत थोडे व्यक्ति उनके समकक्ष सम्मान के पात्र समझे जाएगे।'[4] धीरे धीरे लास्की के मार्क्स विरोधी पूर्वाग्रहो मे परिवतन हुआ। अपने दूसरे निबध 'समाजवाद और स्वतत्रता' मे उन्होने मार्क्सवाद के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सहानुभूतिपूण रुख अपनाया। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की विस्तृत व्याख्या उन्होने अपनी पुस्तक 'साम्यवाद' मे की। मार्क्सवादी विचारधारा की समीक्षा के साथ-साथ उन्होने साम्यवादी नीतियो का मूल्याकन भी किया। 'राज्य सिद्धात और आचरण' मे लास्की ने मार्क्स के प्रति जो आस्था व्यक्त की वह उनके प्रारभिक चरण के मार्क्स विरोधी दृष्टिकोण का विलोम है। इस पुस्तक मे भी उन्होंने मार्क्स के साम्यवादी दशन को पूणत नहीं अपनाया और साम्यवादी आदोलन से तो वे सदा पृथक रहे और साम्यवादी दलो की नीतियो की तो जीवनपर्यंत आलोचना करत रह।

आधुनिक युग म उदारवादी विचारधारा और लोकतन्त्र को दो भिन्न भिन्न दिशाओ स चुनौतिया दी गई हैं। एक ओर से चुनौती देन वाले फासीवादी हैं तो दूसरे पाश्व से साम्यवादी इसका उन्मूलन करने के लिए कटिबद्ध हैं। लास्की इन दोना विकल्पा का विरोध करते हुए समाजवादी लोकतत्र को वतमान पूजीवादी व्यवस्था के दोषो का एकमात्र इलाज मानते हैं। परतु साम्यवादियो की भाति लास्की जैसे लोकतात्रिक समाजवादी भी मार्क्स के लेखन से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। साम्यवादी अपने को मार्क्स का सच्चा अनुयायी होने का दावा करते हुए अन्य समाजवादियो और दल से बहिष्कृत साम्यवादियो को सच्चा मार्क्सवादी नही मानते। इसके विपरीत लोकतात्रिक समाजवादी मार्क्स के सिद्धाता मे आवश्यकतानुसार सशोधन कर लेते हैं। लोकतात्रिक समाजवादी के रूप में लास्की मार्क्स के कुछ मूलभूत सिद्धाता को स्वीकार करते हैं पर उनकी विस्तृत व्याख्या करते हुए या उनको व्यवहार मे लाते समय उनमे परिवतन करना जरूरी समझते हैं। मार्क्स की कृतियो का मूल्याकन वे इन शब्दो मे करते हैं, 'हम किसी भी दृष्टिकोण से क्या न देखें, मार्क्स की कृतिया सामाजिक दशन के इतिहास मे एक युग का निर्माण करती हैं। यह सिद्ध किया जा सकता है कि

वे उतने मौलिक नही थे जितना वे समझत थे और अपन पूर्ववर्ती लेखका के प्रति वे जितने ऋणी थ, उन्हान यह स्वीकार नहीं किया। उनके विषय म महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि उन्हान साम्यवाद को अव्यवस्था की स्थिति म पाया और उसे आदोलन क रूप म छोड़ा। उनके द्वारा इस दशन और दिशा की प्राप्ति हुई। उनके माध्यम से यह एक अतर्राष्ट्रीय सगठन बना जिसने सभी देशा के श्रमिक वर्गों के समान हिता क अनुसार निरतर काय करन पर बल दिया।'[5] इसम सदेह नही कि विश्व श्रमजीवी आदोलन को रूप देने म और उसे सुसगत विचारधारा देन मे मार्क्स का योगदान एक अकेले व्यक्ति के रूप मे सबसे महान है।

मार्क्स, जसा लास्की भी स्वीकार करते हैं पहले समाजवादी विचारक थे जिन्होंने समाजवादी समाज के काल्पनिक चित्रण को निरथक समझा। उन्होंने उस माग के निर्माण पर ध्यान दिया जो मानवता को उस दिशा म ले जाता है। अत उन्होंने पूजीवादी व्यवस्था की क्रियाआ और विकास के विश्लेषण का प्रयत्न किया। लास्की का कथन है, 'मार्क्स ने पूजीवाद की समाधि पर प्रशस्ति लिखी और उसके अतिम विनाश की भविष्यवाणी की। उनकी कृति के पहल ही अश ने, अपनी विषयवस्तुआ के चुनाव से और अपने प्रमाणित निष्कर्षों स, आर्थिक व्यक्तिवाद के समथका को आत्मरक्षा की स्थिति म डाल दिया। दूसरे अश ने उनके अनुयायियो को प्रेरणा दी जिसका महत्त्व समय के प्रवाह के साथ निरतर बढता रहा है।'[6] परतु लास्की मार्क्स के समाजशास्त्रीय और अथशास्त्रीय सिद्धाता से पूणत सहमत नही हैं। वे कहते हैं, 'यह सच हो सकता है कि मार्क्स का अथशास्त्र अनेक स्थला पर अतर्विरोधा से भरा है और मार्क्स के समाज शास्त्र का अधिकाश भाग अपने समय की विशेषताआ स स्पष्ट रूप म प्रभावित है।'[7] अत लास्की मार्क्स की विचारधारा के किसी सिद्धात को बिना आलोचना की कसौटी पर कसे स्वीकार करने के लिए तैयार नही हैं। वे अपन निरीक्षण और अनुभवा के आधार पर मार्क्सवादी विचारधारा के प्रत्यक सिद्धान्त की परीक्षा करना चाहत हैं।

साम्यवाद के प्रति लास्की के दृष्टिकोण को समझने के लिए हम रूसी क्राति के सबध मे उनके विचारा को ध्यान म रखना चाहिए। रूसी क्राति के निमाता के रूप म लेनिन ने मार्क्स के सिद्धाता को व्यावहारिक रूप दिया था और रूसी समाज के पूजीवादी आधार को बदलकर समाजवादी सामाजिक व्यवस्था स्थापित की थी। लास्की का विचार है कि मार्क्सवाद का लेनिनवादी रूपातर रूस की विशेष परिस्थितिया के लिए उपयुक्त और लाभदायक सिद्ध हुआ परतु अन्य देशा म भिन्न परिस्थितिया के सदभ म उसकी उपयोगिता सदिग्ध है।[8] स्वय लेनिन का कथन था कि सशस्त्र विद्रोह एक कला है जिसका प्रयोग बडी सावधानी से करना चाहिए। अत लास्की न पश्चिमी यूरोप के समाजवादियो

को यही परामर्श दिया कि वे सशस्त्र विद्रोह के द्वारा समाजवाद की स्थापना के लिए प्रयास न करें। यद्यपि उन्होने स्वीकार किया कि पश्चिमी यूरोप के समाजवादियो ने गलतिया की हैं, परतु व इन देशो के मजदूर आदोलन मे साम्यवादी दलो के प्रवेश को पसद नही करते थे। उन्होने रूसी साम्यवादियो की आतकवादी और अधिनायकतत्रात्मक तरीको का भी घोर विरोध किया।[9] अपने नवमार्क्सवादी चरण मे भी लास्की मार्क्सवाद के सैद्धातिक और व्यावहारिक पक्षो को पूणत स्वीकार न कर सके।

## मार्क्सवादी सिद्धात

मार्क्स के सिद्धातो मे एक महत्त्वपूण सिद्धात इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या है। लास्की ने मार्क्स के भौतिकवादी दशन के प्रति अपने दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करने का प्रयत्न नही किया है। क्रियावादी होने के कारण उन्हें अतिम सत्य के सबध मे आत्मवादी और भौतिकवादी दाशनिको के पारपरिक वाद-विवाद मे कोई अभिरुचि नही है। इसी प्रकार उन्होने मार्क्स की द्वद्वात्मक पद्धति पर कोई सीधी टिप्पणी नही की है। सभवत अपन विकासवादी सामाजिक दशन के सदभ मे वे द्वद्वात्मक पद्धति को निरथक मानते हैं। उनकी अभिरुचि केवल इतिहास की भौतिक व्याख्या म है जिसे वे प्रारभिक चरण मे आर्थिक नियतिवाद का पर्यायवाची मानते थे। आर्थिक नियतिवाद के रूप मे वे उसे एक असत्य और भ्रातिपूण सिद्धात समझते थे।[10] मार्क्स ने इतिहास की भौतिक व्याख्या को द्वद्वात्मक भौतिकवाद का तार्किक निष्कर्ष माना था। लास्की की दृष्टि म इस दाशनिक उद्गम का कोई महत्त्व नही है। उनकी दृष्टि मे यह सामाजिक परिवतनो की विवेचना का सैद्धातिक सूत्र है। इस सैद्धातिक सूत्र की उपयोगिता के विषय म लास्की के विचार बदलते रहे हैं। प्रारभिक चरण मे वे उसे असत्य ठहराते हैं किंतु 1927 मे वे उसे एक सामान्य सिद्धात के रूप मे उपयोगी मान लेते हैं।[11] 1931 मे वे कहते हैं, 'इतिहास की भौतिक व्याख्या का सिद्धात मुख्य रूपरेखा के रूप म कुछ विशेष स्थितियो को छोड़कर मुझे विश्वसनीय प्रतीत होता है।'[12]

लास्की का विचार है कि इतिहास की भौतिक व्याख्या सामाजिक विकास की दिशाओ पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। उनका कथन है, 'मार्क्स का ऐतिहासिक दशन आग्रह करता है कि सामाजिक परिवतनो को गति प्रदान करने वाली प्राथमिक शक्ति किसी निर्दिष्ट समय की आर्थिक उत्पादन प्रणाली है। उसकी आवश्यकताओ के अनुसार सामाजिक प्रयास के भिन्न भिन्न क्षेत्रो मे चेतन या अचेतन रूप से परिवतन कर लिए जाएगे। कानून, धम, राजनीति और दशन प्रकृति से जीवन के लिए आवश्यक साधन जुटाने के तरीको की मानव मस्तिष्क पर प्रतिक्रिया के रूप म उत्पन्न होते हैं।'[13] सक्षेप मे, यही

मार्क्स द्वारा प्रस्तुत इतिहास की परिकल्पना है। लास्की की इस विषय में टिप्पणी है, 'इस सरल रूप मे इस सिद्धात को मुख्यत सत्य न मानना असभव है। मानव जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नही जिसमे उसके प्रभावशाली विचार और सस्थान, जाच करने पर, निर्दिष्ट आर्थिक परिस्थितियो के प्रतिबिंब न सिद्ध हो।'[14] परतु बर्ट्रेंड रसेल की भाति ही लास्की इसे केवल सीमित रूप से ही सत्य समझते है। वे चेतावनी देते हैं, हमे वस्तुत सावधान रहना चाहिए कि इस सिद्धात को उसकी सीमा के बाहर न ले जाए। कुछ विशेष तथ्य ऐसे हैं, जहा यह व्याख्या सहायक सिद्ध नही होती और कुछ ऐसी परिस्थितिया हैं जहा अनार्थिक (Non economic) कारको की उपस्थिति आर्थिक वातावरण को अनावश्यक बना देती है।'[15] स्वय मार्क्स इस सिद्धात को आर्थिक नियति वाद के रूप मे ग्रहण नही करते थे। वे स्वीकार करते थे कि जहा उत्पादन प्रणालिया मनुष्यो को प्रभावित करती हैं, वहा मनुष्य भी उत्पादन प्रणालियो को प्रभावित करते हैं।

वर्गसघर्ष का सिद्धात भी मार्क्स की विचारधारा का एक महत्त्वपूर्ण अग है। लास्की सामाजिक सबधो के सामान्य विश्लेषण के रूप मे इसे स्वीकार करते है। परतु वर्तमान युग मे प्रत्येक राजनीतिक प्रणाली मे वे वर्गसघर्ष को हिंसात्मक विप्लव की सीमा तक नही ले जाना चाहते। वे सशस्त्र विद्रोह या हिंसात्मक क्रांति को राजसत्ता छीनने का अनिवार्य तरीका मानने के लिए तयार नही है। साम्यवादी वर्गसघर्ष को निश्चित रूप से गृहयुद्ध, सशस्त्र विद्रोह हिंसात्मक क्राति और व्यापक विप्लव के रूप मे देखते हैं। लास्की उसे केवल वर्गीय हितो के विरोध या असगति के रूप मे देखते है जिनका अनिवार्य परिणाम क्राति, विप्लव अथवा युद्ध नही है।[16] वर्तमान युग की पूजीवादी प्रणाली मे श्रम जीवियो और पूजीपतियो के बीच वर्गसघर्ष चल रहा है। मार्क्स व लेनिनवादी अनुयायियो के अनुसार सगठित श्रमजीवियो के सशस्त्र विद्रोह द्वारा ही श्रमिको को पूजीपतियो के शोषण से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। सर्वहारा वर्ग के लिए पूजीपतियो के राजनीतिक और आर्थिक दमन से मुक्ति पाने का कोई अन्य उपाय नही है। लास्की इस विचार से सहमत नही है। प्रारभ मे वे हिंसात्मक क्राति के पूर्ण विरोधी थे। अपनी पुस्तक साम्यवाद मे वे अन्य फेबियनवादियो की भाति सशस्त्र विद्रोह का घोर विरोध करते हैं। अपने नवमार्क्सवादी चरण मे फासीवाद की सफलता का कारण उनका विश्वास शातिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की सभावना मे टूटने लगता है।

यह ध्यान मे रखना चाहिए कि लास्की मार्क्स के अर्थशास्त्रीय सिद्धातो से कभी प्रभावित नही हुए। मार्क्स ने क्लासिकल अर्थशास्त्रियो द्वारा प्रस्तावित मूल्य के श्रम सिद्धात की पुनर्व्याख्या कर पूजीपतियो द्वारा श्रमिको के शोषण पर प्रकाश डाला था। इसी प्रकार अतिरिक्त मूल्य के सिद्धात द्वारा उन्होंने

पूँजीवादी समाज की वितरण प्रक्रिया की विवेचना की थी। पूंजीपति मजदूर को उसके श्रम का पूरा मूल्य मजदूरी के रूप मे न देकर अपने लिए मुनाफा कमाता है, और यही अतिरिक्त मूल्य है जिसके सचय मे पूजी का विस्तार होता रहता है। लास्की का कथन है कि मूल्य के श्रम सिद्धात के आधार पर बाजार मे कीमतो के निर्धारण का विश्लेषण नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ, विभिन्न पूंजीपतियो की आपसी प्रतिस्पर्धा और बाजार म माग और पूर्ति की स्थिति भी वस्तुओं की कीमत और मुनाफे की दर निर्धारित करती है। लास्की का निष्कर्ष है, 'इसका अभिप्राय यह नही कि कीमत म श्रम एक आवश्यक तत्त्व नही, परतु इसका अर्थ यह अवश्य है कि दूसरे तत्त्वो का भी हमे पूरा ध्यान रखना चाहिए।'[17] यद्यपि अतिरिक्त मूल्य का सिद्धात आर्थिक रूप से अपूर्ण है, तो भी उसके नैतिक उद्देश्य से लास्की की पूर्ण सहमति है। मार्क्स इस सिद्धात के द्वारा पूजीपति वर्ग को एक परोपजीवी गुट के रूप म सिद्ध करना चाहते थे और यह दिखाना चाहते थे कि साधारण जनता का पूंजीवादी समाज मे किस प्रकार निरतर शोषण किया जाता है। लास्की का कथन है कि मार्क्स अपने इस प्रयास म अभूतपूर्व रूप से सफल हुए। अगर यह सिद्धात आशिक रूप से ही सत्य हो तो भी इसके द्वारा वर्गसघर्ष की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जा सकता था।

लास्की का विचार है कि मार्क्स के मूल्य के सिद्धात की भ्रातियो के बावजूद उनका पूजीवादी समाज का विश्लेषण साधारणत सही है।[18] जब तक उत्पादन के साधनो के नियत्रण और स्वामित्व से श्रमजीवियों को पृथक रखा जाएगा, समाज म धन के वितरण की न्यायोचित व्यवस्था नही हो सकती। इसी प्रकार मार्क्स का यह विचार कि पूजीवादी प्रणाली म समय-समय पर आर्थिक सकटो का आना भी अनिवार्य है, सही है।[19] ये आर्थिक सकट निरतर उत्पादन की वृद्धि और जनता की क्रय शक्ति म अपेक्षाकृत कमी के कारण उत्पन्न होते हैं। इन सकटो के परिणामस्वरूप बैंक दीवालिये हो जाते हैं, व्यापार बद हो जाता है, कारखाना मे तालाबदी कर दी जाती है लाखो की सख्या म श्रमिक बेकार हो जाते हैं और पूंजीपतियो के विरुद्ध मजदूरो का वर्गसघर्ष तीव्र हो जाता है। मार्क्स का यह विचार भी सही है कि पूंजीवाद ही विदेशी बाजारो के नियत्रण के लिए, कच्चे माल की प्राप्ति के लिए और आयात निर्यात नीति पर नियत्रण के लिए साम्राज्यवादी युद्धो को जन्म देता है। पूंजीवाद म इन अतर्विरोधो के आधार पर ही मार्क्स ने निष्कर्ष निकाला था कि आधुनिक युग म पूजीवादी व्यवस्था का विघटन हो रहा है। अपने नवमार्क्सवादी चरण मे लास्की ने भी स्वीकार किया कि मार्क्स के उपयुक्त निष्कर्ष अनुभव की कसौटी पर खरे उतरे हैं।[20]

नवमार्क्सवादी चरण मे लास्की ने मार्क्स द्वारा प्रस्तुत राज्य की व्याख्या को

मुख्यत स्वीकार कर लिया है। लास्की भी राज्य को शासक वग के हाथ म शासित वर्गो के शापण और दमन का साधन मानते है। यूनान के नगर-राज्य स्वामियो द्वारा दासा के शोपण के लिए राजशक्ति का प्रयोग करते थे, मध्य-युगीन यूरोप म राजशक्ति का प्रयोग सामत वग अधदास कृपको के शोपण के लिए करता था। औद्योगिक क्राति के पश्चात राज्य पूजीपति वग द्वारा श्रमजीविया के शोपण का माध्यम बन गया है।[1] माक्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार पूजीवादी राज्य वस्तुत पूजीपति वग की कायपालक समिति है, चाह उसका रूप निरकुश राजतत्र का हो या वैधानिक राजतत्र का और चाह उसकी राजनीतिक प्रणाली लोकतत्रात्मक गणराज्य पर आधारित हा अथवा फासीवादा अधिनायकतत्र पर। सावियत क्राति से पूव जारशाही रूस, ब्रिटन का वधानिक राजतत्र, फास व अमरीका के गणतत्र, इटली व जमनी के फासिस्ट राज्य इत्यादि राजनीतिक प्रणाली म भिन्न होने पर वगचरित्र के दृष्टिकोण से एक समान थे। पूजीपतिया के हितो की रक्षा करना और श्रमिका के शोपण को कायम रखना उनका समान उद्देश्य था।

इसी प्रकार उदार लोकतत्र के विषय मे लास्की ने माक्सवादी विश्लेपण को मुख्यत स्वीकार कर लिया है। केवल सावैधानिक उपाया से उदार लोक तत्र के अतगत पूजीवादी प्रणाली का वास्तविक उन्मूलन सभव नही है। माक्स के इस विचार से लास्की लगभग सहमत है कि समाजवाद की स्थापना शातिपूर्ण उपाया से असभव है। फिर भी उन्हे सशस्त्र विद्रोह की अनिवायता म विश्वास नही है। माक्स से उनके विचारो मे एक अतर है कि वे पहले सावैधानिक तरीका को प्रयोग करना चाहगे और उनकी असफलता सिद्ध होन पर ही हिंसात्मक सघप के विषय मे सोचेंगे।[3] वे उदारवादी राज्य की साम्यवादी समीक्षा को मुख्यत स्वीकार कर लेत हैं। फिर भी वे उदारवादी लोकतत्र के सस्थाना के साम्यवादी विकल्प सवहारा वग के अधिनायकतत्र को स्वीकार करा के लिए तैयार नही हैं।[1] राज्य के विषय म माक्सवादी सिद्धात का मूल्याकन प्रस्तुत करत हुए लास्की का निष्कप है, साम्यवाद के राज्य सिद्धात के विषय म मरी पहली टिप्पणी यह है कि अनक दार्शनिक सिद्धाता की तरह यह अपनी स्वीकृतिया म सुदृढ है और अस्वीकृतियो म दुबल है। यह स्पष्ट है कि राज्य के पारपरिक सिद्धान की मान्यताओ की आलोचना, आंशिक रूप स ही सही, तथ्या पर आधारित है आदश और वास्तविकता म गहरी खाई है। फिर यह भी सच है कि इतिहास म किसी शासक वग न स्वच्छा से अपन विशेपाधिकारा का त्याग नही किया और न अपनी सत्ता का प्रयोग जनकल्याण क लिए किया। मनुष्य सत्ता म चिपके रहते ह, चाह उसका औचित्य समाप्त हो गया हो, और इस विश्वास का वास्तविक आधार है कि पूजीवादी राज्य के सत्ताधारी इस नियम के अपवाद नही हैं। और निश्चय ही औपचारिक लोकतत्र का माम्य

वादी समीक्षा मे सार है, सार्वभौम मताधिकार की स्थापना और प्रातिनिधिक सस्थानो का निर्माण ही ऐसे राज्य का अस्तित्व, जो मनुष्यो के जनकल्याण की माग की पूर्ति कर सके, सुरक्षित नहा रख सकते। लकिन वतमान सामाजिक व्यवस्था के दोषों को ढूढ निकालना एक बात ह और कोई नई बात भी नही। पर यह कहना बहुत कठिन और सदहास्पद है कि इन दोषो को दूर करने के लिए हिंसात्मक विप्लव ही एकमात्र साधन है और अत मे इसके फलस्वरूप आदश समाज का जन्म होगा। क्रातिया शायद ही कभी अपन मूल उद्देश्य को पूरा कर पाती है, वे किसी पूवनिर्धारित परिस्थितिया की प्रणाली के अनुसार अपन माग पर नही चलती।'

अत लास्की साम्यवादिया की रणनीति को पसद नही करत। वे इस बात को भी स्वीकार नही करते कि श्रेणीविहीन साम्यवादी समाज मे राज्य का लोप हो जाएगा। उनका विचार था कि साम्यवादी दल का तथाकथित सक्रमणकालीन अधिनायकतत्र साम्यवादी समाज का स्थायी अग बन जाएगा और इतिहास के अन्य शासक वर्गों की भाति साम्यवादी अधिनायक भी स्वेच्छा से अपनी सत्ता का त्याग नही करगे। साम्यवादी इस आलोचना के उत्तर म यही कहते हैं कि साम्यवादी दल कोई आर्थिक वग नही और आर्थिक वग के रूप म इसके कोई निहित स्वाथ नहीं, जो समाज के सामान्य हिता स टकराए। राज्यविहीन समाज की मार्क्सवादी परिकल्पना को लास्की ने अपने सक्रमणकालीन चरण म एक असभव आदर्शवादी कल्पना ही समझा। हा, नवमार्क्सवादी चरण म उन्होने राज्यविहीन समाज के वैचारिक औचित्य को स्वीकार करते हुए श्रेणीविहीन समाज मे राज्य के दमनकारी तत्त्वा के लाप की सभावना पर आशिक सहमति व्यक्त की।[6]

## साम्यवादी राजनीति

नवमार्क्सवादी चरण म लास्की मार्क्सवाद के वैज्ञानिक पक्ष की चर्चा करते हुए कहत ह सामाजिक दाशनिक के लिए मार्क्सवाद से बढकर कोई पद्धति नही जा विचारो के विकास की व्याख्या कर सके या उनके व्यावहारिक परिणामो क विषय म भविष्यवाणी कर सके। राज्य के चरित्र और कार्यों के विषय म, कानूनी सस्थाना क विषय म पूजीपतिया की आदता के बारे म, इतिहासशास्त्र क सबध मे और दाशनिक प्रणालियो के विकास के विषय मे मार्क्सवाद अपने सभी प्रतिद्वद्विया से श्रेष्ठतर है। पूजीवादी लोकतत्र के विघटन बुर्जुआ सस्कृति क पतन, फासीवाद के उत्थान, अक्रान्तिकारी समाजवाद के चरित्र के विषय मे जो अतर्ज्ञान इसके द्वारा प्राप्त होता है वह किसी अन्य पद्धति के द्वारा विश्लेषण से नही मिल सकता।'[7] उपयुक्त उद्धरण लास्की के दृष्टिकोण मे असाधारण परिवतन का प्रमाण है। प्रारभिक और सक्रमणकालीन चरण मे वे मार्क्सवादी पद्धति के कटु आलोचक रहे थे और अब इसी पद्धति को समाज विज्ञान के

अध्ययन के लिए सवश्रेष्ठ पद्धति मानने लगे थे। फिर भी साम्यवादी आंदोलन के प्रति उनके नकारात्मक दृष्टिकोण में कोई मौलिक परिवतन नही हुआ। वे साम्यवादियों द्वारा राजसत्ता पर अधिकार करने की रणनीति का और राज सत्ता के अधिनायकतंत्रात्मक प्रयोग का सदा विरोध करते रहे।

लेनिनवादियों के अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था को गिराने के लिए हिंसात्मक क्रांति की आवश्यकता है। अत साम्यवादियों को क्रांति के लिए तैयारी करनी चाहिए। लोकतंत्रात्मक प्रणाली के अतगत भी साम्यवादियों का विचार है कि वे निर्वाचन म विजय प्राप्त कर भी राजसत्ता पर कब्जा नही कर सकते। पूंजी पति बिना सघष किए अपने विशेषाधिकार नही छोड सकते। अत चुनावों म जीतने पर भी वे साम्यवादी दल को राज्य की शक्ति का प्रयोग नही करने देंगे। साम्यवादी केवल यह मानते हैं कि विभिन्न बुर्जुआ शासन प्रणालियों म लोकतंत्र मजदूर वग को आंदोलन और सघष के लिए सगठन बनाने का अवसर अवश्य देता है। श्रमजीवी अपने मजदूर सघ और राजनीतिक दल बनाने के लिए स्वतंत्र हैं। फिर भी सवहारा वग के राजनीतिक दल का निर्माण इस बात की गारटी नही कि मजदूर सांविधानिक उपायों से राजशक्ति पर कब्जा कर सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि किसी समाज की वग-व्यवस्था मे कोई मौलिक परिवतन बिना बल प्रयोग के नही हुआ। पूंजीवादी राज्य का जन्म भी भयकर वगयुद्धों मे सामंत वग पर पूंजीपति वग की विजय के परिणाम स्वरूप हुआ। पेरिस कम्यून की विफलता और रूसी क्रांति की सफलता *यही सिद्ध करती है कि राजसत्ता पर अधिकार के लिए सवहारा वग को अपनी* विजय के लिए शत्रु से अधिक बलवान होना चाहिए।

पूंजीपति वग के उन्मूलन के लिए हिंसात्मक क्रांति की युक्ति लास्की को पसद नही है। आधुनिक पूंजीवादी राज्य मे सशस्त्र विद्रोह शुरू करना लगभग असभव है। सशस्त्र विद्रोह की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि सेना मजदूर वग के साथ रहे और यह अंतर्राष्ट्रीय शांति की स्थिति मे सभव नही है।[8] रूस के मजदूर वग को सेना का समथन प्राप्त हो गया क्योंकि जमन सेना ने रूसी सेना को युद्धक्षेत्र म हराकर तितर बितर कर दिया था। यह ऐतिहासिक स्थिति दूसरे देशों मे सवहारा वग की क्रांति लाने के लिए कृत्रिम रूप से दोहराई नही जा सकती। इसके अतिरिक्त लास्की यह चेतावनी भी देते हैं कि सशस्त्र विद्रोह के असफल होने पर फासीवादी तानाशाही की स्थापना की सभावना हो जाती है।[9] यह पूंजीपति वग का अधिनायकतंत्र है जो लोकतंत्रात्मक स्वतंत्रताओं का विनाश कर श्रमिक सगठनों का निदयता से दमन करता है। मजदूर सघों और श्रमिकों के राजनीतिक दलों पर पाबंदी लगा दी जाती है और उनके नेताओं और सक्रिय कायकर्ताओं को यातना-शिविरों म भेज दिया जाता है। लास्की के अनुसार सशस्त्र विद्रोह का एक

अन्य दुखद परिणाम अराजकता हो सकता है। मार्क्स के शब्दों में 'विप्लव का परिणाम 'संघर्षरत श्रेणियों का संयुक्त विनाश' भी हो सकता है। आधुनिक शस्त्रास्त्रों की सहायता से लड़े जाने वाले निरंतर वर्गयुद्धों से मानवीय सभ्यता का पूर्ण विध्वंस हो सकता है। फिर हम समाजवादी स्वर्ग के प्रवेशद्वारों पर पहुंचने के बजाय मध्ययुगीन बर्बरता के नरक में गिर सकते हैं।[30]

अतः लास्की उदारवादी लोकतंत्र के अंतर्गत सशस्त्र विद्रोह के उपायों का विरोध करते हैं। मजदूर वर्ग यदि सांविधानिक तरीकों को अपनाएगा तो प्रगति की रफ्तार धीमी हो सकती है और क्रमिक सुधारों द्वारा समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने में असाधारण विलंब हो सकता है। फिर भी हिंसात्मक क्रांति के प्रयास द्वारा उत्पन्न अनेक खतरों से हम मजदूर आंदोलन को सुरक्षित रख सकेंगे। यूरोप में फासीवादी अधिनायकतंत्रों की स्थापना के बाद कुछ समय के लिए लास्की का सांविधानिक उपायों की उपयोगिता में विश्वास डगमगाने लगा। मजदूर मंत्रिमंडल के 1931 में पतन होने पर उन्होंने न्यायाधीश फ्रैंकफर्टर को एक पत्र में लिखा, 'हमारे लिए समस्या स्पष्ट है। नीति का निर्धारण निर्वाचित सरकार करेगी या बाहर से पूंजीपति वर्ग? अगर पूंजीपति करेंगे तो यह स्पष्ट है कि समाजवाद सांविधानिक उपायों से उपलब्ध नहीं हो सकता और फिर बाल्शेविक लोग ही सचाई पर हैं। मुझे इस प्रश्न पर अपने दृष्टिकोण के बारे में कोई संदेह नहीं। मैं मजदूर दल के वामपक्ष के साथ हूं और जरूरत होगी तो मैं उग्रतम वाम का समर्थन करूंगा।'[31]

लास्की के नवमार्क्सवादी चरण की कृतियों से अनेक उद्धरण दिए जा सकते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि वे हिंसात्मक क्रांति के समर्थक हो गए थे। साथ ही इन्हीं कृतियों से ऐसे उद्धरण भी दिए जा सकते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि अब भी वे सांविधानिक परिवर्तन को श्रेष्ठतर मानते थे। 1945 में ब्रिटिश चुनाव के अवसर पर लास्की के भाषणों के आधार पर एक अनुदार दल के पत्र के संपादक ने उन्हें हिंसात्मक क्रांति का समर्थक घोषित किया तो उन्होंने इस पत्र के संपादक के विरुद्ध मानहानि का मुकदमा दायर किया। न्यायाधीश ने लास्की की कृतियों और भाषणों के आधार पर यही निर्णय दिया कि अनुदार दल के पत्र के संपादक के द्वारा उनकी कोई मानहानि नहीं की गई क्योंकि समय-समय पर वे स्वयं हिंसात्मक क्रांति के समर्थन में लिखते रहे हैं।[32] अपने विरुद्ध न्यायालय के इस निर्णय के बावजूद लास्की ने स्वयं कभी स्पष्ट रूप से यह स्वीकार नहीं किया कि वे सैद्धांतिक रूप से हिंसात्मक क्रांति की साम्यवादी रणनीति के पक्षधर बन गए थे। हर्बर्ट डीन का कथन है कि यद्यपि इस चरण में लास्की ने हिंसात्मक क्रांति को अनिवार्य मान लिया था, फिर भी वे इस लेनिनवादी निष्कर्ष को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि समाजवादियों को इस क्रांति की तैयारी में जुट जाना चाहिए और क्रांति के पश्चात

प्रतिनियावादी शक्तियों से समाजवाद की रक्षा करने के लिए सवहारा वग का अधिनायकतत्र स्थापित करना चाहिए। यह विरोध वे मुख्यत व्यावहारिक तर्कों के आधार पर करते है। इगलैंड और अमरीका के मजदूर आदोलन बुजुआ उदारवाद की विचारधारा से इस कदर प्रभावित ह कि क्रांति की तयारी करना उनके वश की बात नही। सवहारा वग के अधिनायकतत्र का नारा निहित स्वार्थो को भयभीत कर देगा और वे जवाब मे मजदूर वग पर फासिस्ट ताना शाही को लाद देंगे।[33]

साम्यवादिया का मत है कि सवहारा वग के राज्य मे श्रमिक वग अय शापित वर्गो से मिलकर पूजीपति और अय शोषक वर्गो के ऊपर अपनी ताना शाही स्थापित करेगा। ये शोपित वग साम्यवादी दल के नतत्व मे सगठित होकर राजशक्ति का प्रयोग करेंगे। राजनीतिक पुनगठन की साम्यवादी याजना मे उदारवादी राज्य के ससदीय सस्थानो का कोई स्थान नही है। शासन के विभिन स्तरा पर श्रमिका का सहयोग लिया जा सकता है पर सावभौम मता धिकार की औपचारिकता मे साम्यवादिया की कोई रुचि नही। वे अप्रत्यक्ष निर्वाचन और जनमत सग्रह कराते हैं परतु जनता के सम्मुख उम्मीदवारों का विकल्प नही होता। तानाशाही का प्राथमिक उद्देश्य पूजीवादी तथा पूव पूजी वादी व्यवस्थाआ का अत कर समाज और अथतत्र को समाजवादी आधार पर पुनगठित करना है। तानाशाही का दूसरा उद्देश्य पूववर्ती शोषक वर्गों के प्रति क्रातिकारी प्रयासो को विफल करना है। इसके लिए फौज, पुलिस, प्रशासन और अदालतो का जनवादी और क्रातिकारी आधार पर पुर्ननिमाण करना आवश्यक है, तभी समाजवादी क्रातिया की उपलब्धिया की रक्षा हो सकती है।[34] सत्तारुढ साम्यवादी दल किसी विरोधी राजनीतिक दल की उपस्थिति सहन नही कर सकता क्योकि एसे दल का एकमात्र ध्यय पूजीवाद का पुनरुत्थान करना हागा। अत सोवियत रूस म साम्यवादी दल ही एकमात्र कानूनी दल है। पूर्वी यूरोप और चीन मे साम्यवादी दल न अपन नतृत्व म कुछ अय दलो को मिलाकर सयुक्त मोर्चा बनाया है। यहा भी निणयकारी शक्ति साम्यवादी दल क हाथ म है।

सद्धातिक दष्टि म साम्यवादियो के लिए अधिनायकतत्र की परिकल्पना सामाजिक विकास के माग म एक अस्थायी विश्रामस्थल है। श्रेणीविहीन समाजवादी अथव्यवस्था की स्थापना होने पर राज्य के अस्तित्व की आवश्यकता ही न रहगी। लेनिन न इस समस्या पर प्रकाश डालत हुए बताया कि जब तक समाजवाद किसी एक देश तक ही सीमित है आत्मरक्षा के लिए भी राज्य की आवश्यकता है। पूजीवादी राज्या से घिरा हुआ सोवियत राज्य अपनी सेना का विघटन किस प्रकार कर सकता है? अत जब तक ससार के अधिकाश भाग म समाजवादी क्राति सफल न हो जाए और वहा श्रेणीविहीन साम्यवादी

समाज न स्थापित हो जाए, तब तक राज्य के अस्तित्व की आवश्यकता है।[35] लास्की लेनिन द्वारा प्रस्तुत अधिनायकतंत्र के सिद्धात और व्यवहार से पूर्णतया असहमत हैं। उनका कथन है, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकतंत्र वास्तव मे अनिवार्य रूप से साम्यवादी दल की तानाशाही है, प्रत्येक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के लिए दल और राज्य के ढाचे मे पूर्ण समानता है।'[36] साम्यवादी दल राज्य की प्रणाली को नियंत्रण मे रखता है। निर्वाचन प्रक्रिया पर, जनमत के साधनो पर, शिक्षा, कला और विज्ञान, राष्ट्र अर्थव्यवस्था के सचालन पर साम्यवादी दल का ही एकाधिकार है। दल के कठोर अनुशासन के कारण राजशक्ति दल के नेताओ के एक छोटे से गुट मे केंद्रित है। दल के अनुशासन का साधारण सा उल्लघन, प्रशासन या उद्योग के क्षेत्र म किसी अधिकारी की साधारण सी लापरवाही और साम्यवादी सिद्धातो की मामूली सी आलोचना राजद्रोह का अपराध माना जा सकता है।[37] इसी वजह से साम्यवादी देशो मे समय समय पर लाखो की सख्या म, जिनम दल के महत्त्वपूर्ण नेता भी शामिल है, राजनीतिक अपराधी घोषित किए गए। उन्हे मृत्युदंड मिला या यातना शिविरो म भेजकर उनसे कठोर परिश्रम कराया गया।

लास्की का कथन है कि साम्यवादी अधिनायकतंत्र के ये हिंसात्मक तरीके साम्यवाद के घोषित उद्देश्यो के सर्वथा प्रतिकूल हैं, जिनके अनुसार वे सामाजिक न्याय और बधुता पर आधारित नए समाज का निर्माण करना चाहते हैं। 1946 मे मजदूर दल के सम्मेलन म बोलते हुए उन्होने कहा, 'यद्यपि मैं जानता हू कि सावैधानिक शासन कितनी कठिन कला है, तो भी मैं जैसे-जसे एकदलीय राज्य की प्रक्रियाओ को कार्यान्वित होते देखता हू, मेरा यह विश्वास होता जाता है कि यह स्थायी रूप से, नौकरशाही के वर्ग को छोडकर, जो उसके भाग्य के निर्णायक है, अन्य जनो के मस्तिष्क और हृदय से निष्ठा प्राप्त करने मे असमर्थ हैं। मैं जानता हू क्रांति गुलाबजल के द्वारा नही की जाती, परतु यह भी स्पष्ट है कि दीर्घकालीन बल प्रयोग सभवत स्वतंत्र नागरिक को जन्म नही दे सकता।'[38] लास्की का विचार था कि कोई भी सत्तारूढ गुट स्वेच्छा स अपनी सत्ता का परित्याग नही करना चाहता। साम्यवादी अधिनायकतंत्र पर भी वे यही नियम लागू करते हुए कहते हैं 'इतिहास का यह एक सामान्य नियम है कि शक्तिरूपी विष सत्ताधारी का विषाक्त कर देता है, यह मान लेने का कोई विशेष कारण नही कि इस सबध मे साम्यवादी तानाशाह अन्य व्यक्तियो से भिन्न सिद्ध होगा। वस्तुत मनुष्य के जिस गुट को एकतंत्रात्मक शक्ति के प्रयोग का अवसर मिलता है, उसे लोकतंत्रात्मक उत्तरदायित्व निभाने की आदत नही रहती।[39] यह शासन प्रणाली के रूप मे अधिनायकतंत्र की अवांछनीयता प्रकट करता है।

अत साम्यवादियो का यह कथन कि अधिनायकतंत्र एक अस्थायी आवश्य

कता है, लास्की को मान्य नही है। यह केवल सक्रमणकालीन घटना नही है जो साम्यवाद की स्थापना होते ही स्वत विलीन हो जाएगी। साम्यवादी दल के अधिनायक स्वय अपनी सत्ता का लोप होते हुए नही देख सकते। उनका कथन है, 'सत्ता के शासन पर निरतर आसीन रहने का अनिवाय परिणाम शासित लोगो के मन और मागो से अलग हो जाना है। कोई भी शासक वग ऐसा नही जिसके अपने स्वाथ न हो, जा स्थायी सत्ता का इच्छुक न हो, जो अपने कार्यो को महान और महत्त्वपूण न समझता हा, और अपनी सत्ता को निरतर कायम रखने का प्रयास न करे। इस कथन का केवल यह अभिप्राय है कि सभी सत्ताधारियो की आदत एक जैसी होती हैं। सभी अन्य प्रणालिया की तरह यह अधिनायकतत्र भी स्वेच्छा से सत्ता छोडने म असमथ है।'[40] अत लास्की का विचार है कि साम्यवादी अधिनायकतत्र को सत्ता से अलग करने के लिए बल प्रयोग की आवश्यकता पडेगी, अन्यथा यह इतिहास मे एक लबे युग तक अपना अस्तित्व कायम रखने का प्रयास करेगा। अधिनायकतत्र की यह आलोचना लास्की ने अपनी उदारवादी आस्थाओ के आधार पर की है। वे आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक न्याय की कीमत पर वैयक्तिक स्वतत्रता और कानून के शासन को बेचना नही चाहते।

साम्यवादी आदोलन के अतराष्ट्रीय उद्देश्यो और नीतियो के विषय म भी लास्की का मत है कि इनके सद्धातिक आधारो और वास्तविक आचरण म सामजस्य नही है। साम्यवादियो का अतिम लक्ष्य प्रत्येक देश म सवहारा वग की क्रातियो के द्वारा विश्वव्यापी समाजवादी राष्ट्रमडल की स्थापना करना है। माक्स का विचार था कि यह क्रातिया औद्योगिक रूप से विकसित देशा म शुरू होकर विश्वभर मे फल जाएगी। लेनिन न इस मत म सशोधन करते हुए कहा कि समाजवाद के साम्राज्यवादी चरण मे क्राति किसी भी देश म सभव है जहा ऐतिहासिक कारणा स निर्दिष्ट समय पर विश्व पूजीवाद की शृखला दुबल हो जाएगी। अत साम्यवादियो की अतर्राष्ट्रीय रणनीति के दो पहलू हैं। एक ओर प्रत्येक देश का श्रमिक वग अपने देश के पूजीपति वग के विरुद्ध सघप कर रहा है। दूसरी ओर औपनिवेशिक तथा अद्धऔपनिवेशिक देशा की जनता साम्राज्यवादी शासक वग के विरुद्ध सघष कर रही है। रूस म समाजवादी क्राति की सफलता के बाद साम्यवादी रणनीति का तीसर पहलू शुरू हुआ। पूजीवादी देशो के आक्रमण या हस्तक्षेप से सोवियत रूस की रक्षा रूस की जनता का राष्ट्रीय कत्तव्य और साम्यवादी आदोलन का अतर्राष्ट्रीय दायित्व बन गया। साम्यवादी दला का एक अतर्राष्ट्रीय सगठन बनाया गया जिसका नेतृत्व स्वाभाविक रूप से सोवियत साम्यवादी दल को मिल गया। पूजीवादी देशा ने इस अतराष्ट्रीय सगठन को अपन विरुद्ध सोवियत षडयत्र माना।[41]

ब्रिटिश मजदूर दल के सदस्य के रूप म लास्की न विश्व साम्यवाद की

रणनीति का और अपने देश मे साम्यवादी आंदोलन के प्रसार का निरतर विरोध किया। उनके विरोध का पहला कारण यह था कि वे समझते थे कि रूसी दबाव की वजह से तथाकथित राष्ट्रीय साम्यवादी दल वस्तुत सोवियत विदेश नीति के सचालका क हाथ म कठपुतली की तरह नाचते थे।[12] विरोध का दूसरा कारण यह था कि स्वतत्र साम्यवादी दला के निर्माण से मजदूर वग की एकता छिन्न भिन्न हो गई और उनमे आपसी सघप शुरू हो गया। लास्की के अनुसार साम्यवादियो की वदेशिक निष्ठा के कारण उनमे और समाजवादी दलो म ईमानदारी के आधार पर सहयोग स्थापित न हो सका। साम्यवादियो का सयुक्त मोर्चा उनकी अवसरवादिता का ही नमूना था। साम्यवादियो की फूट डालने की नीति और सशस्त्र विद्रोह की अव्यावहारिक घोषणाए यूरोप म फासीवादी तत्वो के उत्थान का कारण बनी।

जब साम्यवादियो न अपनी अतराष्ट्रीय रणनीति के दुष्परिणामो को देखा और जमनी म साम्यवादी क्राति का स्वप्न नाजीवाद के सत्तारोहण द्वारा चकनाचूर हो गया तो उन्होन बाध्य होकर अपन प्रतिद्वद्वी लोकतात्रिक समाजवादियो के साथ मिलकर जनवादी फासीवाद विरोधी सयुक्त मोर्चे बनाए। लास्की न साम्यवादियो की नीतियो मे इस क्रातिकारी परिवतन का स्वागत किया। फास म 1936 मे वामपक्षी सयुक्त मोर्चे की ससदीय निर्वाचन मे विजय और स्पेन म वामपक्षी सयुक्त मोर्चे द्वारा फासीवाद के विरुद्ध सघष साम्यवादी समाजवादी सहयोग के स्वर्णिम उदाहरण थ। पश्चिमी लोकतत्रो द्वारा फासीवादी शक्तियो के प्रति तुष्टीकरण की नीति के कारण स्पेन, आस्ट्रिया, चकोस्लोवाकिया म लोकतत्र का बलिदान कर दिया गया। म्यूनिख समझौता तुष्टीकरण नीति की चरम सीमा थी। लास्की न तुष्टीकरण नीति की निरतर आलोचना करते हुए सोवियत रूस की सामूहिक सुरक्षा की माग का समथन किया। 1939 मे नाजी सोवियत अनाक्रमण सधि के कारण यूरोप म साम्यवादी दलो की नीति मे फिर आकस्मिक परिवतन हुआ। लास्की को इस घटना स घोर निराशा हुई। वे इस सोवियत वदशिक नीति को भयकर भूल मानते हैं। युद्ध के पश्चात उन्होन स्वीकार किया कि नाजी सोवियत समझौते के लिए पश्चिमी शक्तियो की तुष्टीकरण नीति ही उत्तरदायी थी।[13]

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय साम्यवादी और समाजवादी दलो ने हिटलर द्वारा अधिकृत यूरोप म फासीवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय मुक्तिसग्राम मे मिलकर भाग लिया और सघष के क्षेत्र म सबसे आगे रहे। युद्ध के समाप्त हो जाने पर इन दोनो दलो की एकता कायम नही रही। युद्धोत्तर काल म शीतयुद्ध शुरू होने पर दक्षिणपथी समाजवादियो ने अमरीका के साथ गठबधन करना पसद किया और साम्यवादी दल सोवियत रूस के साथ रहे। लास्की ने ब्रिटेन के मजदूर दल और यूरोप के समाजवादी दलो द्वारा अमरीका के साथ गठबधन

करने की नीति को पसद नही किया।[31] वे चाहते थे कि इगलड की श्रमिक सरकार और यूरोप के सभी समाजवादी दल शीतयुद्ध में किसी के पक्षधर न बनें और पूजीवादी अमरीका और साम्यवादी रूस के प्रति तटस्थता की नीति अपनाए।

सदभ


1 होम्स लास्की लेटस लास्की—7 अगस्त 1921, प० 358
2 वही 14 अगस्त 1921, पृ० 361
3 वही 26 सितबर 1921, प० 370
4 लास्की काल मावस—ऐन एसे, प० 46
5 लास्की कम्युनिज्म, प० 22.
6 वही प० 22-23
7 वही प० 23
8 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 286-94
9 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 52-70
10 लास्की काल मावस—एन एसे प० 33
11 लास्की कम्युनिज्म प० 78
12 लास्की इटरनेशनल अफयस (जनवरी 1931), पृ० 23
13 लास्की कम्युनिज्म प० 26
14 वही प० 77-78
15 वही प० 79
16 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 122-28
17 लास्की कम्युनिज्म प० 97
18 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म पृ० 243-64
19 लास्की दि अमेरिकन डमोक्रेसी प० 35-37
20 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 235-44
21 वही प० 104
22 लास्की रिफ्लेक्शस आफ दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प० 252-84
23 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस प० 233-63
24 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 13-16
25 लास्की कम्युनिज्म प० 166-67
26 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 206-7
27 लास्की न्यू स्टेटसमन एड नेशन 20 जुलाई 1935 पृ० 102
28 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, प० 282-94
29 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प० 90-91
30 लास्की कम्युनिज्म पृ० 204-38
31 हेरोल्ड लास्की ए बायाग्रफिकल ममोयर म किंग्सले मार्टिन द्वारा उद्धत, प० 83

32 हर्बर्ट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की पृ० 202
33 वही, पृ० 205–11
34 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ आवर टाइम, पृ० 46–52
35 ओकशाट द्वारा संकलित सोशल एंड पालिटिकल डाक्ट्रिन्स में लेनिन का 'निबंध स्टेट एंड रिवोल्यूशन', पृ० 130–51
36 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 57
37 लास्की डिलेमा आफ आवर टाइम्स पृ० 161–63
38 रिपोर्ट आफ दि ऐनुअल कान्फ्रेंस आफ दि ब्रिटिश लेबर पार्टी, 1946
39 लास्की कम्युनिज्म, पृ० 174
40 वही पृ० 175
41 वही, पृ० 184–207
42 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 55–66
43 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स, पृ० 166
44 वही, पृ० 44–51

# फासीवाद की आलोचना

फासीवाद लास्की की विचारधारा का विलोम है। राजनीतिक अधिनायकतत्र की फासीवादी परिकल्पना लास्की की लोकतत्रात्मक उदारवादी आस्थाओ के सवथा प्रतिकूल है। आर्थिक क्षेत्र मे फासीवाद द्वारा यथास्थिति का समथन लास्की द्वारा समाजवादी परिवतन की माग के विपरीत है।[1] इसी प्रकार फासीवादियो का आक्रामक सैन्यवाद और साम्राज्यवाद लास्की के अतर्राष्ट्रीय सहयाग और विश्वशाति के आदर्शों के प्रतिकूल है। अत म, यहूदियो के प्रति भेदभाव और दमन की नीति ने लास्की के ममस्थल को आहत किया क्योकि वे स्वय जन्म से यहूदी थे। अत इसम कोई आश्चय नही कि लास्की ने फासीवादी विचारधारा और प्रणाली की बहुत ही तीव्र आलोचना की है।[2]

लास्की के मतानुसार फासीवाद की कोई निश्चित और सुसगत विचारधारा नही है और न इसका अपना स्वतत्र दशन है। अत इसकी सद्धातिक मान्यताओ का स्पष्ट रूप से दिग्दशन करना सभव नही है। फासीवादी सिद्धात फासीवादियो के आचरण के निष्कष है। वस्तुत फासीवादी आदोलन पहले शुरू हुआ और फासीवाद के सिद्धात उसके बाद बने। फासीवाद के सिद्धात अशत फासीवादियो की नीतियो का औचित्य सिद्ध करने के लिए और अशत अपने राजनीतिक प्रतिद्वद्वियो की नीतियो और सिद्धातो का खडन करने के लिए बनाए गए।[3] इटली और जमनी मे फासिस्ट आदोलनो का जन्म राष्ट्रीय अपमान और निराशा के वातावरण से हुआ। फासिस्टो का आक्रामक राष्ट्रवाद राष्ट्रीय मनोविज्ञान के इसी पहलू का प्रत्युत्तर था। इन दोनो देशो मे आर्थिक सकट मध्यम वग के लिए घातक सिद्ध हो रहा था। फासिस्ट आदोलन ने एक ऐसे समग्रवादी राज्य की माग की जिसका आधार वग सहयोग हो, जिसम उच्च तथा मध्यम वर्गों के विशेषाधिकार सुरक्षित रहे, नागरिको को रोजगार मिले, और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाया जाए। जमनी म नाजीवाद न नस्ल के आधार पर श्रेष्ठता का प्रचार किया और अपने आदोलन को इन अवज्ञानिक किंतु भावात्मक युक्तियो के आधार पर सुदृढ बनाया।[4] इसके अतिरिक्त फासिस्ट विचारधारा

मे ऐसे सिद्धात भी शामिल कर लिए गए जिनका एकमात्र उद्देश्य अपने राजनीतिक विरोधिया के सिद्धातो को काटना था। फासिस्टा के दो प्रमुख प्रतिद्वद्वी मार्क्सवादी और उदारवादी थे। अत फासीवाद ने मार्क्सवाद और उदारवाद के मुख्य सिद्धातो का खडन करने का प्रयास किया है।

जबकि मार्क्सवादी स्वय अपनी घोषणा के अनुसार भौतिकवादी थे, तो उसकी प्रतिक्रिया के रूप में फासीवादियों ने नतिक और राजनीतिक आदशवाद को अपना दशन मान लिया। क्याकि साम्यवादी और समाजवादी वगयुद्ध के सिद्धात को मानते थे, उन्होने इस सिद्धात को राष्ट्र के लिए हानिकारक घोषित किया और समग्रवादी राज्य मे वग-सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। मार्क्सवादी उत्पादन के साधनो म क्रातिकारी परिवतन चाहते थे तो फासीवादी आर्थिक क्षेत्र म यथा-स्थिति के अनुदार समथक बन गए। मार्क्सवादी श्रमिको को अतर्राष्ट्रीय बधुत्व का नारा दते थे तो फासीवादी अपने देश के मजदूरो को आक्रामक राष्ट्रवाद का पाठ पढा रहे थे। इसी प्रकार फासिस्ट विचारधारा उदारवाद की प्रमुख मान्यताओ का भी विरोध करती थी। फासीवादी व्यक्ति से राज्य को ऊचा मानते थे। वे व्यक्तिगत स्वतत्रता को कोई महत्त्व नही देते थे। फासिस्ट राज्य म विचार और भाषण की स्वतत्रता का कोई स्थान नही है। समाचारपत्र, चित्रपट, कला, विज्ञान, साहित्य, दशन और शिक्षा सस्थान राज्य द्वारा नियत्रित किए जात है। फासिस्ट दल के अतिरिक्त सभी राजनीतिक दलो पर पाबदी लगा दी जाती है। राजनीतिक विरोधियो का क्रूरता स दमन किया जाता है। फासिस्ट सरकार के विपक्षियो को फासी दे दी जाती है या यातना शिविरो म बद कर तडपाकर मारा जाता है। नाजियो ने यहूदी जाति क पूण उन्मूलन को अपनी राजनीतिक प्रणाली की सुरक्षा के लिए आवश्यक समझा। ऐस समग्रवादी समाज म निर्वाचन और मताधिकार निरथक हो जाते ह। उदारवादी राज्य के प्रातिनिधिक सस्थानो को तोड मरोडकर नष्ट कर दिया जाता है। सारी सत्ता फासिस्ट तानाशाह और उसके इदगिद रहने वाले थोडे स व्यक्तियो के गुट मे सीमित हो जाती है। इस तानाशाह का देश मे देवतुल्य आदर होता है।[5]

प्रारभिक चरण म लास्की साम्यवादी और फासिस्ट तानाशाही के समान रूप से आलोचक थे। उनका कथन था, लेनिन और मुसोलिनी न कानून के शासन को हटाकर मनुष्यो का शासन स्थापित किया है। उन्होने सावजनिक नैतिकता को दूषित किया है जिसके आधार पर ही सभ्य समाज के सबध स्थिर हैं। विपक्षियो क साथ अपराधियो जसा आचरण कर उन्होने विचार को ही खतरनाक साहसिक काय बना दिया है। उन्होने राजनीति म ईमानदारी को दडनीय बनाया है। उन्होने आवगो की लगाम ढीली छोडकर जनजीवन की सुरक्षा नष्ट कर दी है।[6] परतु नवमार्क्सवादी चरण म लास्की साम्यवादी और फासीवादी अधिनायकतत्रा के उद्देश्यो के मौलिक भेदो पर बल दने लग थे।

## फासीवाद की व्याख्या

लास्की के मतानुसार फासीवाद पूंजीपति वर्ग का एक क्रांतिविरोधी आन्दोलन है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक लोकतंत्र और आर्थिक वर्गतंत्र के अंतर्विरोधों का समाधान लोकतंत्रीय शासन की समाप्ति द्वारा करना है। अपने विस्तार के प्रारंभिक चरण में, पूंजीवाद लोकतान्त्रिक समझौते को कार्यान्वित कर सकता था और श्रमिक वर्ग को कुछ ऐसी सुविधाएं दे सकता था जिन्हें वह अब देने में असमर्थ है। उनका कथन है, 'अब स्थिति बिल्कुल भिन्न है क्योंकि पूंजीवाद के पतन का चरण प्रारंभ हो चुका है। लोकतंत्र जिन सुविधाओं की आशा करता है, उनकी कीमत उसे ज्यादा महसूस होती है। पूंजीवाद की मान्यताएं लोकतंत्र की संभावनाओं के प्रतिकूल बैठती हैं। पूंजीवाद के पतन के चरण में यह आवश्यक हो जाता है कि या तो लोकतंत्रीय प्रक्रिया को ही समाप्त कर *दिया जाए अथवा समाज की आधारभूत आर्थिक मान्यताओं को बदला जाए।*'[7]

फासिस्ट आंदोलन लोकतंत्रीय प्रक्रिया का अंत कर और उसकी जगह समग्रवादी अधिनायकतंत्र स्थापित कर पूंजीवाद को बचाने की कोशिश करता है। अपने संकुचन के चरण में पूंजीवादी प्रणाली का नतीजा वेतनों में कटौती, जनता की बेकारी और जीवनस्तर में निरंतर गिरावट है। पूंजीपति अपने मुनाफे पर करों की छूट और सरकार के जनहितकारी कार्यों का स्थगन चाहते हैं। ऐसा करना सार्वभौम मताधिकार पर आधारित राजनीतिक लोकतंत्र की परिधि के अंदर रहकर असंभव है। अतएव पूंजीपति वर्ग किसी फासिस्ट दल का राज्य की सत्ता पर कब्जा करने के लिए उकसाता है जो उनकी ओर से उनके मनोवांछित कार्यक्रम को अधिनायकतंत्र के माध्यम से कार्यान्वित करे।[8]

फासीवाद, चाहे वह विपक्षी आंदोलन के रूप में हो या सरकार के रूप में, सदा समाज की पूंजीवादी शक्तियों से गठबंधन के आधार पर अपनी कार्यप्रणाली निर्धारित करता है। लास्की का कथन है किसी न किसी रूप में लोकतंत्र का उन्मूलन कर यह उत्पादन के साधनों के स्वामियों और नियंत्रकों के हाथ में असीमित राजनीतिक सत्ता सौंप देता है। इसकी कार्यप्रणाली सभी देशों में लगभग एक समान रही है। उन सभी राजनीतिक दलों का, जो उसके उद्देश्यों को अस्वीकार करते हैं, दमन कर दिया जाता है। स्वतंत्र श्रमिक संघों को और उसके साथ हड़ताल के अधिकार को दबा दिया गया है। वेतनों को या तो मालिकों ने स्वयं ही घटा दिया है या राज्य की अनुमति से ऐसा कर दिया गया है। स्वतंत्र आलोचना के अधिकार का हनन किया गया है तथा सरकार बदलने की निर्वाचकों की शक्ति समाप्त कर दी गई है।[9] इसके अतिरिक्त फासिस्ट आंदोलन और सत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए यथास्थिति के समर्थक सैनिक अधिकारी भी पर्याप्त सहायता करते हैं। फासिस्ट दल भी अपने प्रतिद्वंद्वियों

को धमकाने और दबाने के लिए अपने अनुयायियों की एक प्राइवेट सेना तैयार करता है जिसका अंतिम उपयोग बल प्रयोग द्वारा सत्ता हथियाना है। तदुपरात सेना के सहयोग से ही फासिस्ट सरकार एक समग्रवादी समाज की स्थापना करती है। नौकरशाही का तथाकथित तटस्थ रूप नष्ट कर उसे पूर्णत फासिस्ट दल के अधीन कर दिया जाता है। धार्मिक सप्रदायो को फासिस्ट आदर्शों की प्रशसा करने के लिए और फासिस्ट विचारधारा के अनुसार अपने सिद्धातो मे सशोधन करने के लिए विवश किया जाता है।[10] समाचारपत्र, रेडियो, सिनेमा साहित्य, कला और विज्ञान फासिस्ट दल और सरकार के उद्देश्यो के अनुरूप कार्य करने के लिए बाध्य किए जाते हैं।

फिर भी फासिस्ट सरकार की स्थिरता और पूजीवादी व्यवस्था की रक्षा की क्षमता फौजी जनरलो की निष्ठा पर ही निर्भर है। जब तक ये सेनापति फासिस्ट नेताओ के प्रति निष्ठावान रहते हैं, वे आतरिक विरोध और असतोष को दबा सकते हैं। जनता और राष्ट्र की भलाई के लिए फासिस्ट नारे, लास्की के अनुसार, केवल प्रचार की वस्तु हैं जिनमे कोई सार नही है। उनका कथन है, 'यह पूजीपति के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न करता है, जिसमे राज्य की नीति का पहला सिद्धात मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति की सतुष्टि है। पूजीवादी लोकतत्र की समस्याओ को हल करने का सरल ढग यह है कि उपयुक्त सयोग मे से लोकतात्रिक अश को निकाल दिया जाए। महत्त्वपूर्ण यह नही कि फासीवाद लोककल्याण के लिए पूजीवादी लोकतत्र की भाति ही चितित है। हमे हर हिटलर ने बताया है कि फासिस्ट उद्देश्यो की पूर्ति के लिए प्रचार का, चाहे वह झूठ पर आधारित हो सहारा लेना जरूरी है। मुसोलिनी ने भी हमे यही समझाया है कि राज्य के उद्देश्य की पूर्ति मे ही व्यक्ति का कल्याण निहित है। जब हम फासिस्ट समाजो मे इस उद्देश्य के वास्तविक रूप की जाच करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका अर्थ सामान्य श्रमिक के हित का पूजीपति के मुनाफे की जरूरत के लिए बलिदान करना है।'[11]

फासिस्ट अर्थव्यवस्था मे उत्पादन का आधार मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति है। इसलिए वस्तुत फासिस्ट सरकार और राज्य का वर्गचरित्र पूजीवादी है। न तो इटली मे और न जर्मनी मे सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था मे कोई मौलिक परिवर्तन करने का प्रयत्न किया गया। वहा पूजीवादी समाज के श्रेणी सबधो को समग्रवादी राज्य द्वारा पूर्णत सुरक्षित रखा गया।[12] श्रमिक सघो के दमन के कारण और श्रमिको के राजनीतिक दलो पर प्रतिबंध के कारण मजदूरो मे पूजीवादी शोषण के विरुद्ध सघर्ष करने की क्षमता नही रहती। लास्की के अनुसार रूसी क्राति तथा इटली और जर्मनी की प्रतिक्रातियो के मौलिक सामाजिक उद्देश्यो मे यही अतर है। रूस मे तानाशाही का उपयोग श्रेणी सबधो मे मौलिक परिवर्तन और पूजीवाद का विनाश करने के लिए किया गया। उत्पादन के

साधनो का स्वामित्व व्यक्तियो से छीनकर समाज को सौंपा गया। फासिस्ट राज्या मे उत्पादन के साधन वैयक्तिक स्वामित्व मे रहते हैं और नागरिक स्वतत्ताओ के हनन के कारण श्रमजीवियो को यह भी अधिकार नही कि वे सामाजिक स्वामित्व का प्रस्ताव भी रख सकें। पूजीवाद लोकतत्र मे श्रमिको का वितरण के सिद्धातो और उत्पादन के सबधो की आलोचना करन का अधिकार तो हाता है *और वे स्वतत्रतापूवक श्रमिक सघो और राजनीतिक दला म सगठित भी हो* सकते है। फासिस्ट तानाशाही की एडी तले दवा हुआ मजदूर वग समग्रवादी राज्य की सोपानात्मक व्यवस्था और समाज म धन के अ यायपूण विभाजन की आलोचना करने का साहस नही कर सकता।[13]

लास्की इस फासिस्ट युक्ति को स्वीकार नही करते कि फासिस्ट सरकार पूजीपतियो और मजदूरा के बीच निष्पक्ष पच का काय करती है। अपनी आर्थिक मा यताओ के कारण फासिस्ट सरकार के लिए एक पक्षपातहीन मध्यस्थ के रूप मे काय करना व्यावहारिक रूप से असभव है।[14] उनका कथन है, 'फासिस्ट राज्य के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी आधारभूत धारणाआ क अनुसार काय करे, और उत्पादन के साधना के वैयक्तिक स्वामित्व के सदभ मे इनका अथ है कि वह अपनी आदतो का मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति के अधीन रखे। अपने शासनकाल के पहले वप मे ही हिटलर निजी सपत्ति के लिए खतरा उत्प न होने पर दक्षिणपथी नीति अपनाने के लिए और अपनी नीतिया के समाजवादी ग्रश को छोडन के लिए विवश हुआ। निजी मुनाफा की सुरक्षा के लिए ही इटली मे फासिस्ट राज्य ने निरतर मजदूरी की दर कम करन की नीति अपनाई। एक बार इन पूजीवादी आधारतत्त्वा को स्वीकार कर लिया जाए तो यह मानना पडेगा कि राज्य के काय पूजी के स्वामिया का पक्ष लेत है। *इन सिद्धाता के विपरीत आचरण करना फासीवाद के अतरग चरित्र के प्रतिकूल है।*[15] अत लास्की का मत है कि पूजीवादी समाज की अ य सरकारो की तरह फासिस्ट सरकार भी उत्पादन प्रणाली पर नियत्रण रखने वाले वग की कायपालक समिति है।

प्रोफेसर ग्रगरी के मत का उद्धरण देत हुए लास्की का कथन है कि उनकी भाति कई उदारवादिया को आपत्ति है कि फासीवाद को पूजीवाद की पतनोन्मुख दशा का प्रतिफल माना जाए क्याकि पूजीवाद का आधारतत्त्व निजी व्यवसाय और वैयक्तिक स्वतत्रता है जबकि फासीवाद का आधार सत्तावादिता है। प्रोफेसर ग्रगरी का यह आरोप भी है कि पच्चीस सूत्री नाजी कायक्रम पूजी *वादी लोकतत्र के आदर्शों की अपक्षा साम्यवादी विचारधारा के अधिक निकट* है।[16] इसके अतिरिक्त फासीवाद का उत्थान पूजीवाद के विघटन का प्रतीक नहीं क्याकि इसे सफलता उन पूजीवादी देशा म मिली जहा लोकतत्र की नीव पहले से कमजोर थी। हवट डीन का भी यही विचार है कि फासीवाद के

उत्थान के लिए प्रथम विश्वयुद्ध के उपरात की राजनीतिक परिस्थितिया और दूसरे अनार्थिक कारण (Non economic Factors) अधिक उत्तरदायी ह। हवट डीन लास्की द्वारा प्रस्तुत फासीवाद के माक्सवादी विश्लेषण से पूणत असहमत है। नवमाक्सवादी चरण मे लास्की फासीवाद की उपर्युक्त उदारवादी व्याख्या को भ्रातिपूण और एकागी समझत हैं। उनके अनुसार नाजी और साम्य-वादी कायक्रमा की तथाकथित समानता अवास्तविक है क्योकि नाजी कायक्रम का समाजवादी अश कार्यान्वित करने के लिए नही शामिल किया गया था। यह सच है कि फासिस्ट राज्य सत्तावादी है और सत्ता का उपयोग अथव्यवस्था म हस्तक्षेप करने के लिए उदारता से किया जाता है। यहा लास्की ध्यान दिलाते है, 'परतु इटली और जमनी, इन दोनो दशो मे ही यह हस्तक्षेप पूजीपतिया के द्वारा पूजीवादी व्यवस्था के पुनरुद्धार के लिए किया गया।'[17] इसके अतिरिक्त 1929–33 के आर्थिक सक्ट की व्यापकता ने पूजीवादी प्रणाली का खोखलापन सारे विश्व मे प्रकट कर दिया। फासीवाद पूजीपति वग द्वारा पूजीवाद के सवनाश को रोकने का एक तत्कालीन निराशाजनित प्रयास था। लास्की फासीवाद के उत्थान मे अनार्थिक कारणो के अस्तित्व को स्वीकार करत ह परतु उनकी मान्यता है कि पूजीवाद के विश्वव्यापी सक्ट के अभाव मे व स्वयमेव फासीवाद को जन्म नही दे सकत थे।[18]

जबकि फासीवाद का आर्थिक आधार पूजीवादी है, उसकी राजनीतिक विचारधारा आतरिक क्षेत्र म समग्रवादी अधिनायकतत्र और बाह्य क्षेत्र म आक्रामक साम्राज्यवाद का सयोग है। आतरिक रूप से फासिस्ट दल राज्य के साथ पूण एकरूपता स्थापित कर लेता है और राज्य की ओर से राष्ट्रीय जीवन के प्रत्यक पक्ष का पूण नियत्रण करता है। यह व्यापक सशस्त्रीकरण और सनिकी-करण की नीति अपनाता है। युद्ध प्रयास के द्वारा फासिस्ट सरकार बेकारो को काम देकर पूजीवादी सक्ट की एक गहरी समस्या का समाधान कर लेती है।[19] उद्योगो और श्रम के समग्रवादी नियत्रण द्वारा फासिस्ट सरकार औद्योगिक प्रणाली की पूरी क्षमता का उपयोग करती है और विशेषत सनिकीकरण से प्रभावित अपन औद्योगिक लक्ष्यो को पूरा कर लेती है। लास्की फासिस्ट ताना-शाह की तुलना मैक्यावेली द्वारा वर्णित शासक के चरित्र से करते हैं। उनका कथन है, 'सत्ता मे रहने के लिए उसे ऐसी सांविधानिक प्रक्रिया जो उसे पद से हटा सके, नष्ट करनी पडती है, अत उसे असीमित सत्ता और असीमित अवधि पर आधारित निरकुश शासक के रूप मे काय करना पडता है। इस प्रकार का असीमित निरकुश शासन केवल भय पर आश्रित रह सकता है, अत कानून के शासन के स्थान पर आतक का सहारा लेना आवश्यक है। अपन उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके काय करने के दो आधारभूत सिद्धात हैं। पहला राष्ट्रीय भावना का उपयोग करना है, वह उनकी कुछ वास्तविक शिकायता

को दूर करता है, और कुछ काल्पनिक शिकायतो का आविष्कार कर उन्हें दूर करने का ढोंग करता है। परतु ऐसा करने के लिए उसे फिर सशस्त्रीकरण की जरूरत पडती है। सशस्त्रीकरण का अर्थ है राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर हावी होना और शिकायतें दूर करने के लिए दूसरे राज्यो को दी गई धमकी से उत्पन्न खतरे को कम करना।'[20]

अत यह स्पष्ट है कि फासिस्ट राज्य की आक्रामक विदेश नीति आतक पर आधारित आतरिक शासन प्रणाली का अनिवार्य परिणाम है। अत यह आश्चर्य का विषय नही कि फासिस्ट नीतियो का अवश्यभावी परिणाम अतर्राष्ट्रीय युद्ध की विभीषिका है। अतराष्ट्रीय सबधो मे फासीवाद कानून के शासन को अस्वीकार करता है और 'शक्ति ही अधिकारो का स्रोत है' सिद्धात का समर्थन करता है। यह इटली और जर्मनी के फासिस्ट शासको की विदेश नीतियो म परिलक्षित होता है।

अत मे लास्की का विचार है कि फासीवाद के दार्शनिक आधार की खोज निरर्थक है क्योकि यह कुछ अवसरवादी वक्तव्यो का असगत ढेर है।[21] उनका कथन है, 'फासीवाद के दर्शन की शोध मे बहुत परिश्रम किया गया है। यह प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुआ है। फासीवाद आतक पर आश्रित शक्ति है जिसे आतक से डराकर सगठित और सुरक्षित रखा जाता है और विजय की आशाओ पर जीवित रखा जाता है। यह ऐसी युद्ध स्थिति के लिए, जिसमे फौजी कानून स्थायी रूप से लागू है, समाज को अनुशासनबद्ध रखना है क्योकि शाति के सक्षिप्त काल में भी राष्ट्र को युद्ध की तैयारी मे व्यस्त रहना है। शातिकाल म यह *आतक की व्यापकता से जीवित रहता है और युद्धकाल म यह तभी तक कायम* रह सकता है जब तक इसे युद्धस्थल मे कामयाबी मिलती रहे।'[22] इसका अभिप्राय है कि फासीवाद समाज मे तर्क और बुद्धि के शासन के स्थान पर शक्ति और हिंसा का राज्य स्थापित करता है। लास्की का कथन है, 'फासीवाद के विषय म इसके समर्थको ने, जो भी सिद्धातो का शब्दजाल बुना है, वह परीक्षा के पश्चात कुछ ऐसे प्रचार के नारे मालूम होते है जिनका किसी विशेष सरकार की स्थिति मजबूत करने के सिवाय कोई अर्थ नही है। जर्मनी म नार्डिक श्रेष्ठता का सिद्धात उपयोगी सिद्ध हुआ, इटली मे लेटिन प्रतिभा का गीत गाया गया। यहूदी द्वेष प्रत्येक ऐसी सरकार का उपकरण रहा है जिसे इतिहास मे काल्पनिक शत्रु के शोषण और सपत्ति के वितरण की जरूरत पडी है और आर्थिक कठि*नाई के समय निरक्षर जनता मे यह नारा बहुत लोकप्रिय होता है।* जर्मनी अथवा इटली मे राष्ट्र के 'उज्ज्वल भविष्य' का नारा शोषण के लिए नए स्रोतो की खोज मात्र है जिससे जनता सरकार के प्रति निष्ठावान रहे। विजय का अर्थ है नौकरिया, पूजी निवेश की सुविधाए और राजनीतिक रूप मे नियत्रित बाजार। एकतत्रीय सिद्धात पर प्रहार का आशय है तानाशाह द्वारा अपनी निरकुश सत्ता का औचित्य सिद्ध करने की आवश्यकता। यदि फासीवाद का कोई आधारतत्त्व है तो वह

केवल यही कि शक्ति ही एकमात्र सदगुण है और उसे सुरक्षित रखने के लिए या उसकी वृद्धि करने के लिए जिन बाता की आवश्यकता हो उन्हे ही नतिक मूल्य माना जा सकता है।'[23]

इस प्रकार फासीवाद उदारवादी विश्वासा का पूण विलोम है। वह मनुष्य की तकवादिता और वाद विवाद द्वारा शासन की सभावना का घोर विरोधी है। फासीवाद का तार्किक खडन अनावश्यक है, क्योकि वह स्वय अपने अबुद्धिवादी आधारो की सगव घोषणा करता है। लास्की फासीवाद के सबध मे तीन बातो पर विचार करते है। फासीवाद किन कारणा से उत्पन्न हुआ और उसे रोकने के लिए क्या साधन अपनाए जा सकते हैं ? फासीवाद के उन्मूलन के लिए बल प्रयोग अनिवाय है अथवा नही ? फासीवाद के उन्मूलन के पश्चात किस प्रकार की शासन प्रणाली एव अथव्यवस्था स्थापित की जाए, जिससे फासीवाद के पुनरुत्थान की सभावना न रहे ? सक्षेप म, फासीवाद का सही राजनीतिक और आर्थिक विकल्प क्या है ?

## फासीवाद का विकल्प

यह ध्यान मे रखना चाहिए कि उदारवाद समाजवाद या साम्यवाद की तरह फासीवाद एक सुसगत विचारधारा नही है। लास्की का कथन है, 'फासीवाद मूलत एक सिद्धातहीन शून्यवाद है, इसे दाशनिक आधार देने का प्रयास कुछ ऐसे विद्वानो ने किया है जो साधारणत प्रत्येक घटना का स्रोत ढूढते है जिसका उसके भाग्य से कितना ही दूर का सबध क्यो न हो।'[4] बहुत से लेखको ने फासीवाद के दाशनिक आधार को विभिन्न मतो के प्रतिपादक दाशनिको के सिद्धाता मे खोजने का प्रयत्न किया है। इन दाशनिका मे कुछ के नाम हैं हीगल, नीत्शे, शापेनहावर, बगसा और पेरेतो। लास्की का कथन है, 'विद्वानो ने फासीवाद के आधारतत्वो को प्रसिद्ध दाशनिका के चितन म खोजने के प्रयास किए हैं। किसी का कथन है कि इनका जन्मदाता काण्ट है, दूसरा इसकी कट्टर राष्ट्रीयता के लिए फिस्ट को दोषी ठहराता है, तीसरा कहता है कि हीगल ने ही दास मनोवत्ति पर आधारित राज्यशक्ति की पूजा को प्रस्तावित किया, किसी अन्य का आग्रह है कि नीत्शे के महामानव का विष उत्तराधिकार मे प्रत्यक जमन को अपनी धमनियो म प्राप्त हुआ है। अथवा हम बताया जाता है कि यह मुसोलिनी के मस्तिष्क पर सोरेल द्वारा प्रस्तुत प्यूरिटनवाद और माक्सवाद के भ्रातिपूण मिश्रण का प्रभाव है, यह भी कहा जाता है कि इटली के फासीवाद का वास्तविक स्रात पेरेतो की मोटी पोथियो मे बिखरे चितन म पाया जाता है। अन्य व्यक्ति जमन इतिहास लेखको के दशन को टटोलते है, ये हैं त्रीश्के या वान सिवल, सीजर के पुजारी मोमसेन या ड्रायसेन जिन्हाने इस भयानक मनोवृत्ति को जन्म दिया।'[5] अत लास्की का निष्कष

है कि फासीवाद की न तो कोई दार्शनिक पृष्ठभूमि है और न इसमे सैद्धातिक सगति है। वस्तुत यह परस्पर विरोधी विचारो का अवसरवादी और भ्राति मूलक मिश्रण है। फासिस्ट दल का एक विपक्षी दल के रूप मे जो आर्थिक कार्यक्रम है, उसे यह दल सत्ता मिलने पर कभी कार्यान्वित नही करता। लास्की का विचार है, 'फासीवाद, निकट से जाचने पर, कबाडी के सामान का थैला सिद्ध होता है, जिसमे विभिन्न प्रकार के दर्शनो के अवशेष बिना किसी तरतीब के ठूस दिए गए हैं।'[6]

प्रत्येक पूजीवादी समाज मे सकुचन की स्थिति मे फासीवाद का खतरा उत्पन्न हो जाता है। इस खतरे को टालने का सही उपाय पूजीवादी लोकतत्र को समाजवादी लोकतत्र मे परिवर्तित करना है। पूजीवादी दल फासीवाद के प्रति आशिक सहानुभूति रखते हैं और इसीलिए उसका डटकर विरोध करने मे असमर्थ हैं। समाजवाद से भयभीत होने के कारण वे छिपकर या खुले रूप मे फासीवाद आदोलन की सहायता भी करते हैं।[7] फासीवाद के वास्तविक विरोधी समाजवादी दल हैं जो पूजीवादी लोकतत्र के श्रेणी सबधो का पुनर्निर्माण चाहते हैं। अत विजय प्राप्त करने के लिए फासीवादियो के लिए यह जरूरी है कि वे अपने देश के समाजवादी आदोलन को दुर्बल और नष्ट कर दें। इसका एक तरीका फासिस्ट कार्यक्रम मे अर्द्धसमाजवादी प्रस्तावो को शामिल करना और प्रत्येक वर्ग के कल्याण के लिए उदारतापूर्वक वायदे करना है। वे इस बात की चिंता नही करते कि विभिन्न वर्गों के हितो मे परस्पर विरोध है और उनके वायदो मे तार्किक असगति है। इटली मे फासिस्ट दल ने विपक्ष के रूप मे माग की कि राजतत्र को समाप्त किया जाए, चर्च की सपत्ति और युद्धकालीन मुनाफा का राष्ट्रीयकरण हो, बैंक और महत्त्वपूर्ण उद्योगो का भी राष्ट्रीयकरण किया जाए, जमीदारी प्रथा का अत किया जाए और भूमि का किसानो मे पुनर्वितरण किया जाए। इसी प्रकार हिटलर ने पच्चीस सूत्री कार्यक्रम मे माग की गई थी—मेहनत से न कमाई हुई सपत्ति का अत, ब्याज की गुलामी से स्वतत्रता, बडी पूजी का राष्ट्रीयकरण, युद्धकालीन मुनाफो को राज्य सरकार द्वारा जब्त किया जाए, सामूहिक उद्देश्य के लिए बिना मुआवजा भूमि की जब्ती एव पूजी और श्रम के मुनाफे मे भागीदारी के आधार पर उद्योगो का पुनर्गठन। नाजी और फासिस्ट दलो ने ये अर्द्धसमाजवादी नारे श्रमिक वर्ग की फासीवाद विरोधी एकता को तोडकर उनके एक भाग को अपने पक्ष मे करने के उद्देश्य से दिए।[28]

समाजवादी दल दो कारणो से फासिस्टो का सफलतापूर्वक प्रतिरोध न कर सके। पहला कारण मजदूर वर्ग का दो गुटो मे विभाजन था जो समाजवादी आदोलन मे पृथक साम्यवादी दलो की स्थापना के कारण उत्पन्न हुआ था। साम्यवादी दल को चाहिए था कि वह एक व्यापक समाजवादी सयुक्त मोर्चे के अग के रूप मे काम करे। लास्की का विचार है कि साम्यवादियो का यह विचार

कि लोकतात्रिक समाजवाद 'फासीवाद का ही नरमदलीय रूप है', मात्र तथ्य पर आधारित नही था बल्कि श्रमिक वग की एक्ता के लिए भी घातक था।[29] साम्यवादी चाहते थे कि श्रमिक वग समाजवादी नेताओ के प्रभाव से मुक्त हो जाए और क्राति की तैयारी करे। परतु श्रमजीविया का अधिकाश भाग इन नेताओ का अनुयायी बना रहा और क्रातिकारी कायक्रम मे साम्यवादिया से सहयोग करने के लिए तैयार न हुआ। अत साम्यवादियो ने केवल श्रमिक एकता को तोडा बल्कि अपने सशस्त्र विद्रोह के आह्वान से शासक वग को आतकित कर दिया। हिंसात्मक क्राति की सभावना से भयभीत होकर शासक वग न क्राति विरोधी फासिस्ट दल की स्थापना म सहायता की। लास्की का अनुमान है कि यदि साम्यवादी दल न समान समाजवादी लक्ष्यो की उपलब्धि के लिए समाजवादी दल मे सहयोग किया होता और हिंसात्मक क्राति के लिए असामयिक आह्वान न किया होता तो सभवत फासीवाद की समस्या ही न उत्पन्न होती।[30]

एक तटस्थ सर्वेक्षक के रूप मे लास्की यह भी स्वीकार करते हैं कि लोकतात्रिक समाजवादियो की कुछ गलत नीतिया भी फासीवाद की सफलता के लिए जिम्मेदार थी। जमनी मे जब लोकतात्रिक समाजवादियो के हाथ मे सत्ता आई, तो उन्होंने सामाजिक और आर्थिक ढाचे मे समाजवादी सिद्धाता के अनुसार कोई परिवतन नही किया, सेना और नौकरशाही के अविश्वसनीय तत्त्वो को निकालने का प्रयत्न नही किया और न तो महत्त्वपूण उद्योगो का राष्ट्रीयकरण किया न ही भूमि के स्वामित्व मे सामती विशेषाधिकारा को समाप्त किया। उन्होने कानून की आड मे नाजी पार्टी को खतरनाक सीमा तक विकसित होने का मौका दिया। नाजीवाद के विरुद्ध सघष मे भी उन्होने साम्यवादियो का साथ न दिया और जब हिटलर ने जमन सघ के सबसे बडे राज्य प्रूसिया की समाजवादी सरकार को असावैधानिक ढग से पदच्युत किया तो उन्होन कोई विरोध प्रकट नही किया और साम्यवादिया द्वारा किए गए आम हडताल के आह्वान को अस्वीकार कर दिया।[31] लास्की का कथन है, 'रूसी क्राति एक ऐसा उदाहरण है जिसमे मनुष्या ने पूरी तयारी और परिश्रम के साथ अवसर मिलने पर सुविधाजनक परिस्थितियो का पूरा लाभ उठाया, जमन क्राति खोए हुए अवसर का इतिहास है, जबकि लोकतात्रिक समाजवादिया ने समाजवादी राज्य की स्थापना की इच्छा की, किंतु जब राज्यसत्ता उनके हाथो म आई तो वे उसका उपयोग समाजवादी उद्देश्या की प्राप्ति के लिए करने के लिए तैयार न हुए। उन्होन राजनीतिक शक्ति के प्रमुख उपकरण अपने विरोधिया के हाथ म छोड दिए परिणामस्वरूप जिस दिन पुरानी सरकार को उखाडा गया, प्रतिक्राति का जन्म भी हो गया।'[32]

लास्की का निष्कष यह है कि नाजी प्रतिक्राति की सफलता का दूसरा

मुख्य कारण लोकतांत्रिक समाजवादियों की सकोचशील और दुर्बल नीतियां थीं जिनकी वजह से जर्मन समाज और अर्थव्यवस्था में समाजवादी परिवर्तन नहीं किए जा सके। फासीवाद का उदय रोकने का एकमात्र सुदृढ़ उपाय उस वर्ग को समाप्त करना है जो इसे जन्म देता है। यह तभी संभव है जब सभी श्रमजीवी दल एक होकर फासीवाद से लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाएं। यदि राज्यसत्ता श्रमिकों के प्रतिनिधियों को प्राप्त हो जाए तो इस अवसर का उपयोग तुरंत समाजवादी परिवर्तन लाने के लिए करना चाहिए। पूंजीवादी व्यवस्था का अंत करना ही उसका मुख्य ध्येय होना चाहिए। समाजवादी सरकार को किसी हालत में फासिस्ट संगठनों को कानूनी सुरक्षा नहीं प्रदान करनी चाहिए बल्कि इससे पहले कि वे शक्ति इकट्ठी कर सकें, उन पर प्रतिबंध लगाकर उन्हें पूरी तरह दबा देना चाहिए।[33] परंतु जर्मनी और इटली का तत्कालीन इतिहास यह सिद्ध करता है कि जो कदम फासीवाद के उदय को रोकने के लिए आवश्यक थे, वे नहीं उठाए गए। फासीवाद की जीत का कारण उसके विरोधियों की दुर्बलता और ढुलमुल नीतियां थीं। यह न केवल उन देशों के लिए विपदाजनक था जहां फासीवाद को सफलता मिली बल्कि यह तो संपूर्ण मानवता के लिए भयानक संकट सिद्ध हुआ। अतः फासीवाद का विनाश मानव सभ्यता को जीवित रखने के लिए अत्यंत आवश्यक था। लास्की का कथन है, 'किसी भी सभ्य राष्ट्रमंडल की सुरक्षा के लिए इसका विनाश करना एक स्वयंसिद्ध आवश्यकता है। एक ऐसी प्रणाली, जो शक्ति को छोड़कर सभी नैतिक मूल्यों का हनन करती हो और बिना किसी पश्चात्ताप के युद्ध को राष्ट्रीय नीति का स्वाभाविक उपकरण मानती हो, या तो मनुष्य जाति को गुलाम बनाकर दम लेगी अन्यथा उसका नाश करना पड़ेगा। इन दो विकल्पों में कोई मध्यवर्ती मार्ग नहीं है।'[34]

अतः लास्की फासीवाद से कोई समझौता करने के लिए तैयार नहीं हैं। क्योंकि यह शक्ति के अलावा दूसरी कोई युक्ति मानने को तैयार नहीं। इसे नष्ट करने के लिए या तो आंतरिक क्रांति आवश्यक है या बाहर से सशस्त्र हस्तक्षेप होना चाहिए। फासिस्ट सरकार लास्की के कथनानुसार, वस्तुतः गुंडों और डाकुओं की सरकार है जो अपने अस्तित्व के लिए निरंतर गृहयुद्ध और अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष को बढ़ावा देती है। इस युद्धलोलुप विचारधारा का एकमात्र प्रत्युत्तर इसको इसी के हथियार से मारना है। इसे तो युद्ध में पराजित करके ही नष्ट किया जा सकता है। लास्की का कथन है, सभ्यता दो बातों पर निर्भर है। यह तर्क की शक्ति पर निर्भर है जिसके द्वारा मनुष्यों के मन और स्वभाव को नियंत्रित किया जा सकता है, और उस शक्ति की क्रिया के रूप में यह मनुष्यों या उनके समूह में स्वेच्छाचारी निर्णयों के स्थान में अपने आचरण के नियंत्रण के लिए निर्धारित कानूनी सिद्धांतों को स्वीकार करने की योग्यता पर

निभर है। जमन और इटालियन रूपो मे फासीवाद के विरुद्ध मूल दोषारोपण यही है कि वास्तव मे वह इन दोना बाता की सचाई को अस्वीकार करता है। और इन्हें अस्वीकार कर यह अपने लिए सभ्यता के शत्रु की परिभाषा स्वीकार कर लेता है।'[35] अत लास्की का कथन है 'फासीवादी विचार की जीत वस्तुत मनुष्य मे निहित पाशविक प्रवत्तियो की जीत है। यह उसकी बुद्धि को उसके विकृत आवेगा का दास बना देता है।'[36]

पूजीवादी लोकतान्त्रिक देशा मे अनुदार पक्ष के लोगा ने फासीवादी खतरे की भयकरता का सही अनुमान नही लगाया। कुछ अवसरो पर इन देशा के अनुदार नेताओ ने फासीवाद के तरीका की आलोचना करते हुए उसके उद्देश्यो के प्रति गहरी सहानुभूति दर्शाई। यह सहानुभूति उनकी तुष्टीकरण की नीतियो मे, जो उन्होने फासीवादी तानाशाहो के प्रति अपनाई, परिलक्षित होती है।[37] लास्की का कथन है, 'इगलैंड मे, यह ध्यान मे रखना चाहिए कि 1931 से 1939 के वसत मे म्यूनिख समझौते तक मैकडानल्ड, बाल्डविन और चेम्बरलेन की तुष्टीकरण नीति का अथ इसके अतिरिक्त कुछ नही था कि हिटलर के प्रति आत्मसमपण करते हुए नाजी जमनी की शुभकामनाए प्राप्त की जाए।'[38] सोवियत रूस ही एकमात्र ऐसा देश था, जिसने फासिस्ट शासन प्रणाली का वास्तविक रूप पहचाना और तुष्टीकरण की नीतिया का निरतर विरोध किया। सोवियत सरकार ने सामूहिक सुरक्षा की नीति का सुझाव दिया और फासीवाद के विरुद्ध पूजीवादी लोकतत्रो से मित्रता और गठबधन का प्रस्ताव किया। पूजीवादी लोकतत्रो के नेताओ ने सोवियत प्रस्तावो को अस्वीकार कर दिया और फासीवाद के प्रति तुष्टीकरण जारी रखा। लास्की का विश्वास है कि विश्वशाति के लिए फासिस्ट चुनौती का एकमात्र प्रत्युत्तर सामूहिक सुरक्षा की सोवियत नीति ही हो सकती थी। पूजीवादी देशो के अनुदार नेता सोवियत साम्यवाद के प्रति स्वाभाविक रूप से घृणा करते थे और फासिस्ट नेताओ ने अपने साम्यवाद विरोधी वक्तव्यो से उन्हें धोखे मे डाल दिया। अत मे तुष्टीकरण नीति का अवश्यभावी परिणाम 1939 का नाजी सोवियत अनाक्रमण समझौता था। इसने द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए माग प्रशस्त किया। 1945 मे फासिस्ट शक्तियो की पराजय हुई जिसमे सोवियत रूस न महत्त्वपूण योगदान दिया।

युद्ध म फासीवाद की पराजय के पश्चात सबसे महत्त्वपूण प्रश्न यह था कि ऐसे कौन से कदम उठाए जाए जिससे आधुनिक ससार म फासीवाद के पुनरुत्थान को सदा के लिए रोका जा सके। इस युद्धलोलुप विचारधारा के उन्मूलन के लिए मनुष्य जाति को अभूतपूव बलिदान देना पडा। अत हम ऐसी राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली अपनानी चाहिए जिससे फासीवादी तत्त्वो को सिर उठाने का फिर से मौका न मिले। लास्की का दढ मत है कि पूजीवादी लोकतत्र के पुनरुत्थान से फासीवाद का स्थायी उन्मूलन सभव नही है।[39] पूजीवादी समाज

म उत्पादन के सबध उत्पादन की शक्तियों के अनुकूल नही है। यदि युद्धोत्तर पुर्नर्निर्माण की योजनाए पूजीवादी आधार पर बनाई जाएगी, तो फासीवादी तत्त्वो के पुनरुत्थान को रोकना असभव होगा। लास्की का विचार था कि पूजीवादी यूरोपीय सघ या पूजीवादी आग्ल-अमरीकी गठबधन विश्वशाति की स्थायी गारटी नही है। जब तक उत्पादन की पूजीवादी प्रणाली के स्थान पर समाजवादी प्रणाली को नही अपनाया जाता, सयुक्त राष्ट्र सघ जसी कोई अतराष्ट्रीय सस्था भी मनुष्य जाति के लिए सुरक्षा नही प्रदान कर सकती।[40]

यदि हम युद्धोत्तर काल की घटनाओ की ध्यान से समीक्षा करें तो लास्की के निष्कष की सचाई स्पष्ट हो जाएगी। इटली, जमनी और जापान मे फासिस्ट शासनप्रणाली के स्थान पर पूजीवादी लाकतत्र के पुनरुत्थान स उन तत्त्वा का विनाश नही हुआ जि होन फासीवादी आदोलन को सफल बनाया था। लास्की के अनुमान के अनुसार ही सयुक्त राज्य अमरीका न विश्व की प्रतिक्रातिवादी शक्तिया का नेतत्व सभाल लिया और सभी पूजीवादी देशा के प्रतिक्रातिवादी तत्त्वा से मिलकर विश्व स्तर पर नवसाम्राज्यवादी नीतिया का सचालन किया। उनका कथन है 'जिस प्रकार रूसी जीवनप्रणाली स्पष्ट रूप से बाह्य आर्थिक शोषण के विरुद्ध है उसी प्रकार अमरीकी जीवनप्रणाली अपने पूजी पतिया को स्वाभाविक रूप स ऐस शोषण के लिए प्रेरित करती है और इसके आलोचका का अमरीका के 'उज्ज्वल भविष्य' कीउप लब्धि के माग म राडा समझती है। सक्षेप म, सयुक्त राष्ट्र सघ के उद्देश्य मे और अमरीका की आर्थिक शक्तिया की अचेतन प्रवत्ति मे गहरा अतर्विरोध है।'[41] अमरीका के नवसाम्राज्यवाद और नाजी जमनी के आक्रामक साम्राज्यवाद म गुणात्मक अतर नही, केवल समय और परिणाम का भेद है।

पूर्वी यूरोप म उत्पादन के पूजीवादी सबधा का अत तो अवश्य हो गया पर ऐसा सोवियत रूस के सनिक हस्तक्षेप और उपस्थिति के कारण हुआ। चीन म गहयुद्ध मे चीनी प्रतिक्रियावादियो की पराजय हुई और साम्यवादी शासनप्रणाली की स्थापना हुई। लास्की के लिए साम्यवादी शासनप्रणाली की स्थापना एव प्रगतिशील परिवतन तो अवश्य था परतु वे इसे अमिश्रित अच्छाई नही समझते थे।[42] 1945 मे लास्की को आशा थी कि सोवियत प्रणाली युद्धोत्तर काल म अधिक लोकतात्रिक बन सकगी। उह यह भी आशा थी कि पश्चिमी यूरोप म समाजवादी और साम्यवादी दला के स्थायी सहयोग स पूजी वादी प्रणाली को शातिपूण ढग स समाजवादी प्रणाली म बदला जा सके और परिणामस्वरूप पूर्वी यूराप और सोवियत सघ मे साम्यवादी दल अधिक लोक तात्रिक बन जाए। वस्तुत लास्की के दोनो अनुमान गलत सिद्ध हुए।[43] सोवियत रूस म स्तालिन क जीवनकाल म लोकतत्रीकरण की दिशा म कोई परिवतन नही हुए। पश्चिमी यूरोप म समाजवादिया और साम्यवादिया का

सहयोग अस्थायी सिद्ध हुआ। साम्यवादियो से सबध तोडकर पश्चिमी यूरोप के समाजवादी दलो ने अमरीकी वदेशिक नीति का खुले हृदय से समथन किया और विश्वव्यापी शीतयुद्ध मे वे सोवियत रूस के विरुद्ध अमरीका के साथी बने।

युद्धपूव जमनी के दक्षिणपथी समाजवादियो की तरह 'युद्धोत्तर काल के दक्षिणपथी यूरोपीय समाजवादी भी अपने देशो म प्रचलित श्रेणी सबधो का वह पुनगठन नही कर सके जो लास्की चाहते थे और प्रतिक्राति की निणयात्मक पराजय की अनिवाय शत समझते थे।[44] उनकी विफलता ने यूरोपीय क्राति और प्रतिक्राति के सघष का पूण परिप्रेक्ष्य बदल दिया। साम्यवादी और समाजवादी सामूहिक प्रयास मे सहयोग करने के बजाय आपसी लडाई मे अपनी ऊजा नष्ट कर रहे थे और इस प्रकार अपने देशो मे प्रतिक्राति की शक्तिया को मजबूत कर रहे थे। अत शीघ्र ही युद्धोत्तरकालीन प्रगतिशील सरकारो के स्थान पर प्रतिक्रियावादी सयुक्त मत्रिमडलो ने पश्चिमी यूरोप के प्रमुख देशो मे, जैसे फ्रास और इटली मे, सत्ता सभाल ली। पूजीवादी अमरीका के साथ मिलकर प्रतिक्रियावादी पश्चिमी यूरोप मे फिर से एक नए सैन्यवाद, साम्राज्य वाद और नवफासीवाद की विचारधारा को आश्रय दिया। मध्यपूव, यूनान, स्पेन, इटली, जमनी और जापान मे ब्रिटिश और अमरीकी सरकारो ने प्रति-क्रातिवादी तत्त्वो का समथन किया।[45] लडाई के मदान मे फासीवाद की पराजय का अथ फासीवादी विचारधारा का अत नही है। जब तक मुख्य पूजीवादी देशो म पूजीवादी व्यवस्था जीवित है तब तक इसके पुनरुत्थान को स्थायी रूप से रोकना भी सभव नही। समाजवादी लोकतत्र ही फासीवाद का स्थायी विकल्प है।

हबट डीन लास्की द्वारा प्रस्तुत फासीवाद के विश्लेषण की तीव्र आलोचना करते हैं। उनका कथन है कि फासीवाद मुख्यत एक अबुद्धिवादी जनआन्दोलन है जो पश्चिमी सभ्यता के मूल्यो की अस्वीकृति पर आधारित है। इसे मार्क्स वादी दृष्टिकोण के आधार पर पूजीपति वग की पतनोन्मुख दशा की शासन-प्रणाली समझना भारी भूल है। फासिस्ट तानाशाही न केवल श्रमिक वग को बल्कि पूजीपति वग को भी अपनी सत्ता का गुलाम बनाती है। फासीवादी आदोलन इटली और जर्मनी की विशेष एतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक परिस्थितियो का जटिल परिणाम है जिनम राष्ट्रीय एकता की स्थापना म विलब, राजनीतिक लोकतत्र की दुबलता और सरकारो की अस्थिरता, आर्थिक अव्यवस्था और सकट, समाज म जमीदार वग के विशेषा-धिकार कथोलिक तथा लूथरवादी चच के धार्मिक और नैतिक सिद्धात, वैयक्तिक स्वतत्रता और लोकतात्रिक परपरा का अभाव, वार्साई सधि का अनौचित्य और राष्ट्रीय अपमान की भावनाए इत्यादि शामिल हैं।[46] हबट डीन का कथन है कि 1939 के पश्चात लास्की ने फासीवाद के मार्क्सवादी

विश्लेपण के दोपो को समझा और फासीवाद की अपेक्षाकृत अधिक यथार्थवादी व्याख्या प्रस्तुत की परतु 1942 के उपरात वे फिर फासीवाद के तथाकथित वग चिंतण की चर्चा करने लगे।[47] विश्व की राजनीति का विश्लपण वे समाजवादी क्राति और फासीवाद की प्रतिक्राति के अतर्विरोधा के सदभ मे करने लगे। हमारे सामने दो विकल्प है युद्धकाल म सभी राजनीतिक दलो की सहमति से समाजवादी प्रणाली की स्थापना अथवा युद्ध के उपरात श्रमिक वग द्वारा समाजवाद की उपलब्धि के लिए हिंसात्मक क्राति और अधिनायकतत्र।[48] वस्तुत स्वय हवट डीन द्वारा प्रस्तुत फासीवाद का विश्लेपण दोपपूण है क्याकि वे उसके आर्थिक आधारतत्त्वो की ओर घ्यान नही देते।

सदभ


1 लास्की दि स्टेट इन थ्यारी एड प्रक्टिस, प॰ 130–34
2 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प॰ 101–5
3 ओकशाट सोशल एड पालिटिकल डाक्ट्रिस प॰ 164–79
4 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प॰ 98–115
5 आकशाट साशल एड पालिटिकल डाक्ट्रिस, प॰ 203–5
6 लास्की लेनिन एड मुसोलिनी फारेन अफयस (सितबर 1923) पृ॰ 54
7 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, प॰ 130
8 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ॰ 125–27
9 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प॰ 131–32
10 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टट प॰ 13–47
11 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस पृ॰ 133
12 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प॰ 89–92
13 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प॰ 132–35
14 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ॰ VI
15 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, प॰ 134
16 ओकशाट सोशल एड पालिटिकल डाक्ट्रिस, पृ॰ 190–93
17 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस पृ॰ 153
18 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प॰ 113
19 वहा प॰ 92–94
20 वही पृ॰ 95–96
21 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प॰ 193–95
22 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ॰ 96–97
23 वही प॰ 97
24 वही पृ॰ 107
25 वही प॰ 107–8
26 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, प॰ 193–94

27 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, पृ० 246–48
28 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 194–96
29 राल्फ फाक्स कम्युनिज्म एंड चेंजिंग सिविलाइजशन पृ० 111–24
30 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 290–96
31 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम पृ० 90–91
32 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रैक्टिस प० 294
33 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 108–17
34 वही पृ० 97
35 वही प० 105
36 वही पृ० 107
37 लास्की दि अमरिकन डेमोक्रसी प० 521
38 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 88
39 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 219–23
40 वही पृ० 208–13
41 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रेसी पृ० 516
42 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 154–68
43 वही पृ० 227–33
44 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम पृ० 278–99
45 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स, अध्याय II X और XIV
46 हर्बर्ट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की, प० 161–65
47 वही प० 229–39
48 वही, पृ० 272–75

# राज्य का वर्गचरित्र

पाचीन काल से राजनीतिक चिंतक राज्य के चरित्र और शासन की प्रक्रियाओं के विषय में विचार प्रस्तुत करते रहे हैं। सुकरात और कन्फ्यूशियस, मनु और कौटिल्य, प्लेटो और अरस्तू—सभी ने राजनीतिक विषयों पर चिंतन ईसापूर्व काल में ही प्रारंभ किया। आधुनिक युग के चिंतकों में कुछ प्रसिद्ध नाम हैं मैकियावेली तथा हाब्स, लाक तथा रूसो, हीगल तथा मार्क्स। लास्की का कथन है कि प्रत्येक विचारक ने अपने चिंतन का विकास सामयिक सामाजिक अनुभव के संदर्भ में किया है।[1] कन्फ्यूशियस के विचार चीन के प्राचीन साम्राज्यों के सामाजिक संबंधों के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। मनु और कौटिल्य का चिंतन प्राचीन भारत की सामाजिक परिस्थितियों और जातीय पूर्वाग्रहों पर आधारित है। प्लेटो और अरस्तू के लिए प्राचीन यूनान के नगर-राज्य राजनीतिक विकास की चरम सीमा थे और अरस्तू के अनुसार दासता की प्रथा सामाजिक और नैतिक रूप से उपयोगी थी। उसी प्रकार मक्यावली, हाब्स, लाक, रूसो तथा हीगल का चिंतन भी अपने सामाजिक परिवेश में ही [illegible]सायक माना जा सकता है। मार्क्स पहले महा[illegible] थे जिन्होंने [illegible] अपने युग की विश्वव्यापी परिस्थितियों के [illegible] रत कि[illegible] भिन्न दशा में, विभिन्न वर्गों के लाखों [illegible] जन [illegible] का प्रयत्न किया। जिसके मार्टिन का [illegible] राज नीतिक [illegible] से कार्ल मार्क्स [illegible] राज नीतिक [illegible] व्यापक

[illegible] दृग [illegible] और

युग में

व्यक्तिवाद

पर अपने ज

[illegible]

[illegible]

युग के उत्तरार्ध मे आदशवादी प्रतिक्रिया शुरू हुई जिसके मुख्य प्रतिनिधि टी० एच० ग्रीन थे। आदशवादी प्रतिक्रिया की चरम सीमा ब्रडले व बोसाके के दशन मे उपलब्ध हुई। इन्हान प्लेटो और हीगल के सिद्धातो की अगरेजो की सामयिक पीढी के लिए पुनर्व्याख्या की। लास्की न अनुभव किया कि न तो मिल का उदारवाद और न बोसाके का आदशवाद बीसवी सदी म इगलैंड की समस्याओं का सही समाधान था।[3] प्रारभ म लास्की ने बहुलवादी और फेबियन समाजवादी विचारा का स्वागत किया परतु कालातर मे उन्ह ये विचारधाराए भी दोषपूण प्रतीत हुई और वे क्रमश मार्क्सवादी दशन से अधिक प्रभावित होते चले गए। लास्की का राजनीतिक चितन अय पूववर्ती अथवा सामयिक अगरेज चितको की तुलना म अधिक उग्रवादी है। लास्की का राज्य-सिद्धात वस्तुत एक सजग मार्क्सवादी का चितन है जो अपने देश के अनुभवो के आधार पर मार्क्सवादी सिद्धात मे सशोधन करने के लिए तयार है।[4]

लास्की के राज्य सिद्धात म मिल, मेटलैंड और मार्क्स के सिद्धाता का असुविधाजनक मिश्रण है। मिल के व्यक्तिवाद, मेटलैंड के बहुलवाद और मार्क्स के समाजवाद ने लास्की के चितन के विभिन्न स्तरो को प्रभावित किया है। मिल तथा मेटलैंड का लास्की के विचारो पर प्रभाव क्रमश घटता गया और उसके स्थान पर मार्क्स के विचारो का उनके चितन पर प्रभाव बढता गया। यह ध्यान म रखना चाहिए कि लास्की न तो सोरेल के श्रमिक सघवाद को और न जी० डी० एच० कोल के श्रेणी समाजवाद को स्वीकार कर सके यद्यपि ये दोनो विचारधाराए उनके प्रारभिक बहुलवाद के निकटतर थी। उनका मिल की स्वतत्रता परपरा से विच्छेद का प्रतीक फेबियनवाद की विकासशीलता के सिद्धात की अस्वीकृति है। जस ही उन्हे बहुलवादी और फेबियनवादी दशनो की अपूणताओ का ज्ञान हुआ, उन्हाने समष्टिवादी राज्य के माध्यम से सामाजिक सबधो के पुनगठन पर विशेष बल देना प्रारभ कर दिया।[5] किग्सले मार्टिन का मत है '1925 के फेबियनवादी लास्की और 1938 के मार्क्सवादी लास्की म मौलिक भेद यह है कि इन दो तारीखो के मध्य उन्होन 1929 के महान आर्थिक सकट को, 1931 की राष्ट्रीय सरकार की सावधानिक विडबना को, स्पेन म फासीवाद के उदय को और जमनी मे हिटलर की विजय को देख लिया था। वे विश्वास करने लगे थे कि लोकतत्र, जब तक वह समानता पर आधारित नही, एक धोखा है, यह समानता फेबियनवादी उपायो से प्राप्त नही हो सकती थी, और कि जिन वैयक्तिक और सामुदायिक स्वतत्रताओ मे 1925 म उनकी इतनी गहरी आस्था थी, वे समाजवादी समाज के अभाव मे अवास्तविक सुरक्षाए थी।'[6]

फिर भी लास्की द्वारा मार्क्सवाद के अनुसरण का अथ सभी पूववर्ती मान्यताओ का पूण परित्याग नही था। लास्की के राज्य सिद्धात के एक मार्क्सवादी आलोचक जेम्स सैण्ड का कथन है, उन्हाने पहले 'सत्ता के हस्तक्षेपो से व्यक्ति

# राज्य का वर्गचरित्र

प्राचीन काल से राजनीतिक चितक राज्य के चरित्र और शासन की प्रक्रियाओ के विषय मे विचार प्रस्तुत करते रहे हैं। सुकरात और कन्फ्यूशियस, मनु और कौटिल्य, प्लेटो और अरस्तू—सभी ने राजनीतिक विषयो पर चितन ईसापूर्व काल मे ही प्रारभ किया। आधुनिक युग के चितको मे कुछ प्रसिद्ध नाम हैं मैक्यावेली तथा हाब्स, लाक तथा रूसो, हीगल तथा मार्क्स। लास्की का कथन है कि प्रत्येक विचारक ने अपने चिंतन का विकास सामयिक सामाजिक अनुभव के सदर्भ मे किया है।[1] कन्फ्यूशियस के विचार चीन के प्राचीन साम्राज्यो के सामाजिक सबधो के सदर्भ मे ही समझे जा सकते हैं। मनु और कौटिल्य का चिंतन प्राचीन भारत की सामाजिक परिस्थितियो और जातीय पूर्वाग्रहों पर आश्रित है। प्लेटो और अरस्तू के लिए प्राचीन यूनान के नगर राज्य राजनीतिक विकास की चरम सीमा थे और अरस्तू के अनुसार दासता की प्रथा सामाजिक और नैतिक रूप से उपयोगी थी। उसी प्रकार मक्यावली, हाब्स, लाक, रूसो तथा हीगल के चिंतन भी अपने सामाजिक परिवेश म ही सार्थक माना जा सकता है। मार्क्स पहले महान विचारक थे जिन्होंने अपने सिद्धात अपने युग की विश्वव्यापी परिस्थितियो के सदर्भ म निर्धारित किए और विभिन्न देशो के, विभिन्न वर्गों के लाखो मनुष्यो के सामाजिक अनुभवो को समझने का प्रयत्न किया। किंगसले मार्टिन का मत है कि इतिहास के अनेक महान राजनीतिक चितको मे से काल मार्क्स ही व विचारक है जिन्होंने लास्की के राजनीतिक चिंतन पर सबसे व्यापक प्रभाव डाला।

इगलैंड मे आधुनिक राजनीतिक चिंतन के तीन रूप रहे हैं। विक्टोरिया युग के पूर्वार्ध का चिंतन मुख्यत व्यक्तिवादी है। बेंथम और एडम स्मिथ इस व्यक्तिवादी चिंतन के प्रतीक हैं। जान स्टुअर्ट मिल भी मुख्यत व्यक्तिवादी हैं पर अपने जीवन के उत्तरार्ध म वे आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता का अनुभव करने लगे थे। हर्बर्ट स्पेंसर ने ब्रिटिश राजनीतिक चिंतन को पुन व्यक्तिवादी दिशा मे मोड दिया था। विक्टोरिया

युग के उत्तरार्ध में आदर्शवादी प्रतिक्रिया शुरू हुई जिसके मुख्य प्रतिनिधि टी० एच० ग्रीन थे। आदर्शवादी प्रतिक्रिया की चरम सीमा ब्रडले व बोसाके के दर्शन में उपलब्ध हुई। इन्होंने प्लेटो और हीगल के सिद्धांतों की अंगरेजों की सामयिक पीढ़ी के लिए पुनर्व्याख्या की। लास्की ने अनुभव किया कि न तो मिल का उदारवाद और न बोसाके का आदर्शवाद बीसवीं सदी के इंगलैंड की समस्याओं का सही समाधान था।[3] प्रारंभ में लास्की ने बहुलवादी और फेबियन समाजवादी विचारों का स्वागत किया परंतु कालांतर में उन्हें ये विचारधाराएं भी दोषपूर्ण प्रतीत हुईं और वे क्रमशः मार्क्सवादी दर्शन से अधिक प्रभावित होते चले गए। लास्की का राजनीतिक चिंतन अन्य पूर्ववर्ती अथवा सामयिक अंगरेज चिंतकों की तुलना में अधिक उग्रवादी है। लास्की का राज्य-सिद्धांत वस्तुतः एक सजग मार्क्सवादी का चिंतन है जो अपने देश के अनुभवों के आधार पर मार्क्सवादी सिद्धांत में संशोधन करने के लिए तैयार है।[4]

लास्की के राज्य सिद्धांत में मिल, मेटलैंड और मार्क्स के सिद्धांतों का असुविधाजनक मिश्रण है। मिल के व्यक्तिवाद, मेटलैंड के बहुलवाद और मार्क्स के समाजवाद ने लास्की के चिंतन के विभिन्न स्तरों को प्रभावित किया है। मिल तथा मेटलैंड का लास्की के विचारों पर प्रभाव क्रमशः घटता गया और उसके स्थान पर मार्क्स के विचारों का उनके चिंतन पर प्रभाव बढ़ता गया। यह ध्यान में रखना चाहिए कि लास्की ने तो सोरेल के श्रमिक संघवाद को और न जी० डी० एच० कोल के श्रेणी समाजवाद को स्वीकार कर सके, यद्यपि ये दोनों विचारधाराएं उनके प्रारंभिक बहुलवाद के निकटतर थीं। उनके मिल की स्वतंत्रता परंपरा से विच्छेद का प्रतीक फेबियनवाद की विकासशीलता के सिद्धांत की अस्वीकृति है। जैसे ही उन्हें बहुलवादी और फेबियनवादी दर्शनों की अपूर्णताओं का ज्ञान हुआ, उन्होंने समष्टिवादी राज्य के माध्यम से सामाजिक संबंधों के पुनर्गठन पर विशेष बल देना प्रारंभ कर दिया।[5] किंग्सले मार्टिन का मत है, '1925 के फेबियनवादी लास्की और 1938 के मार्क्सवादी लास्की में मौलिक भेद यह है कि इन दो तारीखों के मध्य उन्होंने 1929 के महान आर्थिक संकट को, 1931 की राष्ट्रीय सरकार की सांविधानिक विडंबना को, स्पेन में फासीवाद के उदय को और जर्मनी में हिटलर की विजय को देख लिया था। वे विश्वास करने लगे थे कि लोकतंत्र, जब तक वह समानता पर आधारित नहीं, एक धोखा है, यह समानता फेबियनवादी उपायों से प्राप्त नहीं हो सकती थी, और कि जिन वैयक्तिक और सामुदायिक स्वतंत्रताओं में 1925 में उनकी इतनी गहरी आस्था थी, वे समाजवादी समाज के अभाव में अवास्तविक सुरक्षाएं थीं।'[6]

फिर भी लास्की द्वारा मार्क्सवाद के अनुसरण का अर्थ सभी पूर्ववर्ती मान्यताओं का पूर्ण परित्याग नहीं था। लास्की के राज्य सिद्धांत के एक मार्क्सवादी आलोचक जेम्स सण्ड का कथन है, उन्होंने पहले 'सत्ता के हस्तक्षेपों से व्यक्ति

की रक्षा करने का प्रयास किया। अब उन्हें अनुभव हुआ कि समस्या राज्य को सिंहासन से उतारना नहीं अपितु राज्य को नई श्रेणी के हाथों में सौंपना है। एक व्यक्ति के लिए, जो 1920 में यह जान गया कि फ्रांसीसी समाजवाद का आधार मार्क्स न होकर प्रूधों थे, निश्चय ही यह क्रांतिकारी परिवर्तन है। एक व्यक्ति के लिए, जो स्वतन्त्रता और मुक्ति के समर्थन में सदा व्यस्त रहा, यह खोज कि स्वतन्त्रता और मुक्ति श्रेणीजनित परिकल्पनाएं हैं, उसके सिद्धांतों में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता प्रकट करती है। उनका यह विचार भ्रम पर आधारित है कि बल प्रयोग करने की शक्ति का औचित्य अधिकतम मांग की संतुष्टि के परिमाण पर निर्भर है। यह तो शुद्ध पंडिताऊपन का नमूना है। बल प्रयोग करने की सत्ता का औचित्य सदा सत्ता में ही निहित रहा है। जिनके पास सत्ता है नहीं, और जो सत्ता मिलने पर उसका प्रयोग कर नहीं सकेंगे वे उसका औचित्य कहीं अन्य स्थान पर देखने का यत्न करते हैं। लास्की थ्रासीमकस की न्याय की परिभाषा कि 'यह सबल का संकल्प है' स्वीकार करने से हिचकिचाते हैं क्योंकि वे पुनः वैयक्तिक रूप से यह प्रश्न पूछने में असमर्थ हैं 'कौन अधिक शक्तिशाली है?'[7] अतः जेम्स सण्ड के अनुसार लास्की का राज्य सिद्धांत उनके नवमार्क्सवादी चरण में भी बुजुआ मनःस्थिति का परिचायक है। वस्तुतः लास्की मिल की वैचारिक परंपरा और मेटलैंड के विधानशास्त्र से पूर्णतः संबंध विच्छेद करने में कभी सफल नहीं हुए। लास्की के दृष्टिकोण में असंगतियों का मुख्य कारण यही है कि वे उदारवादी पद्धति में आस्था का त्याग किए बिना मार्क्सवादी विचारधारा को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं।[8] यही उनकी विचारधारा में निराशावाद और संदेहवाद की प्रवृत्तियां उत्पन्न करता है। वे सामाजिक विकास के मार्क्सवादी लक्ष्य को स्वीकार कर लेते हैं परंतु न तो उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे मार्क्सवादी साधनों का प्रयोग उचित समझते हैं और न उन्हें विश्वास है कि उदारवादी पद्धति से वांछनीय सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। नवमार्क्सवादी चरण में लास्की के राजनीतिक चिंतन में निराशावादी दृष्टिकोण की प्रधानता का यही मूल कारण है। पूंजीवादी लोकतंत्र पतनोन्मुख और संकटग्रस्त है, परंतु समाजवादी लोकतंत्र का लक्ष्य भी लगभग अलभ्य है।[9]

## राज्य का स्वरूप

राजनीतिक चिंतन में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न राज्य के स्वरूप को निर्धारित करना है। राज्य मानव समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण संस्थान है। लास्की का कथन है, 'राज्य आधुनिक सामाजिक संगठन का सर्वोच्च बिंदु है और अन्य सामाजिक समुदायों की अपेक्षा इसकी सर्वोच्चता ही इसका विशेष गुण है। प्रत्येक राज्य सरकार और प्रजा में विभक्त क्षेत्रीय समाज है, सरकार राज्य के अंतर्गत

मनुष्यों का एक समूह है जो उन कानूनी आदेशा को लागू करती है जिन पर राज्य आधारित है और अय समुदायो से भिन्न इसे उस प्रादेशिक समाज मे उन आदेशो का पालन कराने के लिए बल प्रयोग करने का अधिकार है।'[10] राज्य की यह परिभाषा प्रकट करती है कि लास्की ने अपने बहुलवादी विचारा को अब तिलाजलि दे दी है। उनका मत है, 'प्रत्येक राज्य मे एक इच्छा ऐसी होती हे जो अय सभी इच्छाआ से ऊपर होती है। वही समाज म अतिम निणय लेती है। औपचारिक शब्दा मे इसे सप्रभुता की इच्छा कहते हैं। यह न किसी से आदेश प्राप्त करती है और न अपनी सत्ता का हस्तातरण करती है। उदाहरणाथ, इगलैंड म यह 'ससद मे राजा की इच्छा' है।'[11] उपर्युक्त उदाहरण से सिद्ध होता है कि लास्की ने सप्रभुता के आस्टिनवादी सिद्धात को स्वीकार कर लिया है। वस्तुत मार्क्सवादी समष्टिवाद के सदभ मे यह परिवतन अनिवाय ही था।

इस परिवतन की झलक कुछ वप पूव उनके 'राजनीति के एक व्याकरण' मे भी मिलती है। अपनी बहुलवादी परिकल्पना मे सशोधन करते हुए उनका कथन है, 'आधुनिक राज्य सरकार और प्रजा मे विभक्त एक क्षेत्रीय समाज है जा अपने निर्धारित भौगोलिक प्रदेश म सभी सस्थाना पर सर्वोपरिता का दावा करता है। वस्तुत यह सामाजिक इच्छा का अतिम कानूनी भडारगह है। यह अय समुदाया के लिए परिप्रेक्ष्य निश्चित करता है। यह अपनी सत्ता के अधीन उन सभी मानवीय क्रियाआ को कर लेता है जिन्ह अपने नियत्रण मे लेना यह वाछनीय समझता है। इसके अतिरिक्त सर्वोपरिता मे निहित तक यह भी है कि जो इसके नियत्रण से मुक्त है वह इसकी अनुमति के कारण ही है। राज्य इस बात की अनुमति नही दता कि मनुष्य अपनी बहना से विवाह कर सके, परतु उसी की अनुमति से वे मौसेरी या चचेरी बहनो से निकाह कर सकते हैं। राज्य समाज रूपी मेहराब का चाबी पत्थर है। यह असख्य मानवा के जीवन के भाग्यविधाता के रूप म उनकी जिंदगी को अथ और रूप प्रदान करता है।'[1] यह वस्तुत सप्रभु राज्य की आस्टिनवादी परिकल्पना है। राज्य और समाज के अतर को स्पष्ट करते हुए लास्की ने कहा है कि समाज मनुष्यो का एक समुदाय है, जिसका उद्देश्य अपनी आर्थिक मागा की पूर्ति है। सद्धातिक दृष्टि से यह समाज भाषा, सस्कृति और राजनीतिक एकता के आधार पर एक राष्ट्र तक सीमित हो सकता ह और परिस्थितिया बदलने पर यह सपूण मानव जाति को अपने कलेवर म सम्मिलित कर सकता है। राज्य इस समाज के अतगत एक समुदाय है परतु इस समुदाय की विशेषता बल प्रयोग करने की सर्वोपरि शक्ति है। लास्की का मत है, इसी शक्ति को सप्रभुता कहते है, और सप्रभुता के अधिकार के कारण ही यह मानव समुदाया से भिन्न है। नगरपालिका भी सरकार और प्रजा म विभक्त क्षेत्रीय समाज है, श्रमिक सघ और चच भी इसी तरह के

समुदाय हैं। परंतु उनमें किसी के पास बल प्रयोग करने की सर्वोपरि शक्ति नहीं है। प्रत्येक को अपना व्यवहार इस सर्वोपरि शक्ति द्वारा निर्धारित सीमा के अधीन रखना पड़ता है। औपचारिक रूप से इसकी इच्छा को चुनौती नहीं दी जा सकती।'[13] यह लास्की के अनुसार राज्य के कानूनी ढांचे का ही वर्णन है और इसकी सत्यता वैधानिक क्षेत्र तक ही सीमित है। इसका कोई नैतिक महत्त्व नहीं। हीगल या बोसांके द्वारा राज्य को नैतिक रूप से सर्वोपरि मानना अनुचित है।[14]

जिस प्रकार लास्की राज्य और समाज के अंतर पर बल देते हैं, उसी प्रकार वे सरकार और राज्य के भेद को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। उनका कथन है, 'यह राजनीतिक विज्ञान का एक मूल सिद्धांत है कि हम राज्य और सरकार के भेद को स्पष्ट रूप से समझ लें। सरकार राज्य का औजार है, यह राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए होती है। यह स्वयं बल प्रयोग करने की सर्वोपरि शक्ति नहीं, यह तो प्रशासन का यंत्र मात्र है जो उस शक्ति के उद्देश्यों को कार्यान्वित करती है। तथापि यह तुरंत मान लेना चाहिए कि राज्य और सरकार का भेद सैद्धांतिक महत्त्व का ही है व्यावहारिक महत्त्व का नहीं। राज्य का प्रत्येक कार्य वस्तुतः किसी सरकार की क्रिया है। राज्य की इच्छा उसके कानूनों में निहित है, परंतु सरकार ही उनके विषय का सार और प्रभाव प्रदान करती है। हम कहते हैं कि 4 अगस्त 1914 को ब्रिटिश राज्य ने जर्मनी से युद्ध प्रारंभ कर दिया, परंतु जिसने ब्रिटेन की संप्रभुता को उस दिन क्रियान्वित किया, वह उसकी सरकार थी। गंभीर यथार्थ की दृष्टि से राज्य स्वयं कोई कार्य नहीं करता, उसकी ओर से, जिन्हें उसकी नीतियों के निर्धारण का अधिकार है, वे लोग ही कार्य करते हैं।'[15] अतः सैद्धांतिक रूप से भिन्न होते हुए भी राज्य और सरकार में क्रियात्मक एकरूपता है। राज्य अधिक व्यापक है जिसमें संविधान, सरकार, क्षेत्रफल, संप्रभुता और जनता सम्मिलित हैं। परंतु सरकार ही संप्रभुता के क्रियात्मक उपयोग द्वारा राज्य को गति प्रदान करती है। संविधान केवल यह निश्चय करता है कि शक्ति को किस प्रकार और किन संस्थानों के द्वारा उपयोग में लाया जाए। जनता वह वस्तु है जिस पर सरकार राज्य की ओर से संप्रभुता का प्रयोग करती है।[16]

यथार्थवादी दृष्टिकोण से लास्की का मत है कि राज्य को सेनाओं का प्रयोग करने का अधिकार है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सरकार सेना का प्रयोग किसी भी विपक्षी प्रतिरोध या विप्लव के दमन के लिए कर सकती है। लास्की का कथन है, 'राज्य के इतिहास में किसी भी आपात स्थिति में यह तथ्य कि उसकी सत्ता सरकार के विरोधियों का बल प्रयोग द्वारा दमन पर उनकी इच्छाओं के भंजन पर, उन्हें अधीनता स्वीकार कराने की सामर्थ्य पर निर्भर है, राज्य के चरित्र का ध्रुव सत्य है। राज्य की संप्रभुता का आधार राज्य की सेनाओं

की वह शक्ति है जिसका प्रयोग आवश्यकता पडने पर अपनी आज्ञा के पालन कराने के लिए किया जा सके। प्रत्येक राष्ट्रीय अथवा अतराष्ट्रीय समाज मे सघष यथाथ या सभावना के रूप म मौजूद होता है, और राज्य की सेनाए उसकी सप्रभुता की प्रत्यक्ष प्रहार से रक्षा करन के लिए होती है। अत जो सेनाओ पर नियत्रण रखते हैं, वे ही उसकी सप्रभुता के मालिक ह। इस दृष्टिकोण से राज्य को बल प्रयोग करने की सावजनिक शक्ति के सगठन की प्रणाली माना जा सकता है जिसके माध्यम से सामान्य परिस्थितिया मे सरकार की इच्छा ही प्रबल सिद्ध होती है। यह शक्ति सपूण जनता से अलग और ऊपर है।'[17] अत लास्की का निष्कष है कि राज्य क्रियात्मक रूप मे एक शक्ति सगठन है और उसकी सेनाए इस शक्ति क उपयोग का साधन है। सप्रभुता का हृदय राष्ट्र की सेनाओ म ही निहित है।

लास्की राज्य के विषय मे अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण की तुलना राज्य के पारपरिक आदशवादी मत स करते हैं। जबकि आदशवादी राज्य, समाज और सरकार के अतर की ओर कोई ध्यान नही देते और उन्हें एक सपूण नैतिक इकाई मे मिश्रित कर देत हैं, लास्की राज्य को समाज का एक अग, चाहे वह कितना ही महत्त्वपूण हो, मानते हैं और सरकार को राज्य की नीति के सचालन का केवल माध्यम मानते हैं। वे सामान्य इच्छा की आदशवादी परिकल्पना को राज्य का आधार मानने के लिए तैयार नही है। सामान्य इच्छा की परिकल्पना का पूर्वानुमान है कि समाज म विभिन्न वर्गो और गुटा के उद्देश्यो और हिता मे आधारभूत समानता है। इसकी मान्यता है कि सरकार, जो त्रुटि करने वाले मनुष्या से बनती है, समाज की सामान्य इच्छा का वास्तविक प्रशासनिक नीतियो म परिवतन कर सकती है। लास्की इन दोना पूर्वानुमानों को असत्य समझते हैं।'[18] पहले तो असख्य व्यक्तियो और सघपरत वर्गो की इच्छाओ मे से सामान्य इच्छा को निर्धारित करना असभव है। दूसरे यदि बहस के लिए यह मान भी लिया जाए कि सामान्य इच्छा का निर्धारण सभव है तो यह अनिश्चित है कि राज्य, जो ऐसे मनुष्यो के माध्यम से काय करता है जो वर्गहितो से प्रभावित है उसके उद्देश्यो को ईमानदारी मे क्रियान्वित कर सकता है। इस बात की कोई गारटी नही कि सरकार जो सामान्य इच्छा को क्रियान्वित करती है, उसे विकृत नहीं कर देगी। अत लास्की का निष्कष है कि राज्य की इच्छा वस्तुत समाज के एक विशेष वग की इच्छा है। यह वग राज शक्ति का उपयोग शेष जनता पर अपनी इच्छा लादन के लिए ही करता है। उनका कथन है, 'राज्य के व्यावहारिक सिद्धात की परिकल्पना वस्तुत प्रशासन के सदभ म करनी चाहिए। इसकी इच्छा उन थोडे से लोगो का निश्चय है जिन्ह निणय करने की कानूनी शक्ति प्राप्त है।'[19] इस प्रकार प्रत्येक राज्य मे नागरिकों के अधिकाश भाग को राज्य की इच्छा के निर्धारण मे कोई हिस्सा

नही दिया जाता। वह तो अधिकारियो के एक छोटे से शासक गुट की इच्छा है जो समाज के शक्तिशाली वग के हितो को ध्यान म रखते हुए अपने निणय करता है।[0]

लास्की द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण से राज्य के स्वरूप के कुछ महत्त्वपूण तथ्य सामन आते है। आदशवादिया द्वारा किया हुआ राज्य का गौरव और महत्त्व इस विवचना के बाद अथहीन मालूम पडता है। व्यक्ति के लिए राज्य अब भय मिश्रित आदर का पात्र नही क्योकि वह प्रजा के लिए श्रद्धा और अधभक्ति की अपक्षा करन वाला कोई दवतुल्य सस्थान नही। राज्य की सप्रभुता उस वापस सौप दी गई है परतु अब यह पारपरिक आस्टिनवादी अथ मे केवल कानूनी औपचारिकता नही है। यह तो अब माक्सवादी अथ मे शासक वग की वास्तविक बल प्रयोग करने की अपार शक्ति है जिसके द्वारा वह शासित वर्गों को अपने नियत्रण मे रखता है। राज्य की परिभाषा शक्तिप्रणाली के रूप म दी गई है।[1] यद्यपि इस शक्ति का सदा प्रयोग किसी विशेष वग के हित साधन के लिए ही हुआ है, तो भी शासक वग इस तथ्य को कभी स्वीकार करने के लिए तयार नही होता और उसकी नीतियो के औचित्य को सिद्ध करन के लिए यह बहाना करता है कि उनका आधार सामाय कल्याण की भावना है। अरस्तू ने दासता का औचित्य दिखलाते हुए कहा कि यह प्रथा दासो और मालिका क लिए समान रूप से हितकारी है। वयक्तिक सपत्ति की प्रणाली के आधुनिक समथक भी इसका औचित्य बखानते हुए कहते हैं कि यह समाज के सावजनिक हित के लिए जरूरी है और वतमान रूप मे उसके अस्तित्व से सभी श्रेणी के लोगा को लाभ पहुचता है।[2] लास्की का कथन है कि यद्यपि राज्य का वास्तविक आधार बल प्रयोग करने की शक्ति है तो भी राजनीतिक प्रणाली के स्थायित्व के लिए किसी न किसी रूप मे शासित प्रजा की सहमति प्राप्त कर लेना उपयोगी सिद्ध होता है। प्रातिनिधिक सस्थाना की स्थापना और मताधिकार के निरतर विस्तार से राजनीतिक प्रणाली की स्थिरता भी बनी है और उसकी लोकप्रियता की सामाजिक सीमाए भी विस्तृत हुई हैं। फिर भी लास्की का यही निष्कष है कि राजनीतिक लोकतत्र और सावभौम वयस्क मताधिकार भी राज्य के मूल वगचरित्र को बदलने मे पूणत असमथ रहे है। वे माक्स के इस विश्लेषण को स्वीकार करते हैं कि राज्य मूलत उस वग की कायपालक समिति है जो किसी समाज मे उत्पादन के साधनो का स्वामी है। अत आधुनिक पश्चिमी लोकतत्र म सरकार सपूण पूजीपति वग के सामाय हिता की पूर्ति के लिए उस वग द्वारा एक कायपालक समिति ही है।[3] यह सिद्धात राज्य की तथाकथित निष्पक्षता और तटस्थता के लिए एक गभीर चुनौती है और राज्य के वास्तविक वगचरित्र को प्रकाश मे लाता है। अत लास्की ने माक्स का

अनुसरण करते हुए राज्य के स्वरूप का निर्धारण उसके आर्थिक आधारतत्वा के सदभ म किया है।

## राज्य और श्रेणिया

लास्की का दावा है कि उन्होंने राज्य के स्वरूप और इतिहास के सबध म माक्सवादी दृष्टिकोण को कुछ आवश्यक सशोधनो के साथ स्वीकार कर लिया है। ये सशोधन माक्स के विश्लेषण म अतिशय सरलीकरण के कारण आवश्यक हो जाते ह। एँगेल्स ने अपने निबध 'परिवार, वैयक्तिक सपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' मे राज्य के वगचरित्र की सरल व्याख्या की है। उनका कथन है, इसलिए राज्य कोई समाज पर बाहर से लादी हुई शक्ति नही' है, न यह 'नतिक विचार की वास्तविकता है और न यह 'बुद्धि का प्रतिबिब और सत्य' है, जैसा कि हीगल का विचार था। यह तो बल्कि समाज के विकास के एक निश्चित चरण की उपज है, यह इस बात की स्वीकृति है कि यह समाज एक ऐसे अतर्विरोध का शिकार है जिसका कोई हल नही है, कि यह ऐसे सघर्षों स छिन्न-भिन्न हो गया है जिन्ह शात करन की इसके पास शक्ति नही। ये सघष और वर्गों के विपरीत आर्थिक हित समाज और इन वर्गों को उद्देश्यहीन सग्राम म भस्म न कर दें, इसलिए प्रकट रूप म समाज के ऊपर स्थित एक ऐसी शक्ति की आवश्यकता हुई जो इस सघष पर नियत्रण रख सके और उसे 'व्यवस्था' के अतगत सीमित रख सके, यह शक्ति समाज से ही उत्पन्न होती है, फिर समाज की पीठ पर सवार हो जाती है और निरतर उससे अलगाव की भावना रखती है, यही राज्य है।[21] लेनिन एगेल्स के विश्लेषण से सहमति प्रकट करते हुए कहते हैं 'राज्य श्रेणी सघर्षों की, जिनमे कोई समझौता सभव नही, उपज और अभिव्यक्ति है। राज्य वहा, तब और उस सीमा तक स्थापित होता है जहा, जब और जिस सीमा तक श्रेणी सघष व्यवहार म सुलझाए नही जा सकत। और इसके-विलोम के रूप मे राज्य का अस्तित्व सिद्ध करता है कि श्रेणी सघष सुलझाए नहीं जा सकते।' लास्की ने स्वीकार किया है कि राज्य का यह विश्लेषण मूलत सही है और अन्य कोई सिद्धात इसके चरित्र की व्याख्या इसमे ज्यादा अच्छी तरह नही कर सकता।[6]

माक्स तथा लास्की दोनो का यही विचार है कि राज्य का मूल तत्व उसकी बल प्रयोग करने की शक्ति है और सेनाए, पुलिस और नौकरशाही बल प्रयोग के साधन है। लास्की का कथन है 'आधारभूत सघष आर्थिक श्रेणिया द्वारा सप्रभुत्ता की शक्ति को नियत्रित करने क सघष हैं। आर्थिक श्रेणी की परिभाषा है मनुष्या का ऐसा वग जिसका उत्पादन प्रक्रिया म विशेष स्थान हो और जो एसे अय वर्गों से बिल्कुल स्पष्ट रूप से पृथक मालूम पडे। यह स्थान राज्य द्वारा निर्धारित आर्थिक सबधा की प्रणाली के आधार पर निश्चित किया जाता

है। राज्य समाज की किसी शक्तिशाली श्रेणी के हाथ में बल प्रयोग करने की उस सर्वोच्च शक्ति को, जो उसका मूल तत्त्व है, सौंप देता है, जब तक कोई श्रेणी इस पर कब्जा न कर ले, वह समाज म अपनी स्थिति म कोई आधारभूत परिवतन नही कर सकता। अत यदि कोई श्रेणी ऐसा आधारभूत परिवतन करना चाहती है तो उसे राज्य को अपने अधिकार म करना पडेगा।'[7] अत राज्य का प्रमुख काय आर्थिक क्षेत्र मे शक्तिशाली श्रेणी को राजनीतिक सर्वोपरिता प्रदान करना है। इस सबध मे ऐंगेल्स का कथन है, 'क्योंकि राज्य श्रेणी सघर्षो पर प्रतिबध लगाने के लिए स्थापित हुआ, किंतु चूंकि यह उसी समय छिडे हुए इन श्रेणियों के सघष के मध्य उत्पन्न हुआ, इसलिए यह नियमित रूप से आर्थिक क्षेत्र म सबसे प्रभावशाली श्रेणी का राज्य है जो राज्य के माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र मे भी सबसे अधिक प्रभावशाली श्रेणी बन जाती है और इस प्रकार दलित वर्गों के शोषण और दमन के लिए नए साधन प्राप्त कर लेती है। प्राचीन काल का राज्य सबसे पहले गुलाम रखने वाले मालिकों का राज्य था जिसका उद्देश्य दासो को दबाकर रखना था, सामतवादी राज्य अभिजात वग की सस्था थी जिसका उद्देश्य अर्धदास कृपकों को दबाकर रखना था, और आधुनिक प्रातिनिधिक राज्य पूजी द्वारा मजदूरो के श्रम के शोपण का उपकरण है।'[8] लास्की ऐंगेल्स के उपर्युक्त विश्लेषण से सहमत हैं। उनका भी यही निष्कष है कि ऐतिहासिक रूप से प्रत्येक राज्य प्रणाली का मुख्य काय एक श्रेणी के द्वारा दूसरी श्रेणी के शोषण को सुरक्षित रखना ही रहा है।

जब लास्की माक्स के इस तक को कि प्रत्येक राज्य मूलत किसी श्रेणी का राज्य होता है, स्वीकार कर लेते हैं, तो वे कुछ सकोच के साथ यह भी मान लेते हैं कि आधारभूत सामाजिक परिवतन के लिए हिंसात्मक क्रांति भी अनिवाय है। हबट डीन का आरोप है कि इस प्रश्न पर लास्की के विचार अस्पष्ट, अतर्विरोधी और भ्रांति पैदा करने वाले है। हिंसात्मक क्रांति के प्रश्न पर लास्की के विचारो मे समय और परिस्थितियो के अनुसार कुछ अतर अवश्य होता रहा है। जैसा किंग्सले मार्टिन ने बताया है कि 1945 में एक ब्रिटिश न्यायालय ने लास्की बनाम नेवाक प्रकाशन लि० मुकदमे में यही निणय दिया कि लास्की हिंसात्मक क्रांति के समथन मे लिखते और बोलते रहे हैं, अत नेवाक प्रकाशन लि० का यह निष्कष कि लास्की हिंसात्मक क्रांति के समथक है, उनकी प्रकाशित कृतियों म अभिव्यक्त विचारो पर आधारित है और इस प्रकार नेवाक प्रकाशन लि० द्वारा लास्की की कोई मानहानि नही की गई।[9]

लास्की का कथन है हम जिस निष्कष पर पहुचते हैं वह अत्यत गभीर है जिस समाज म उत्पादन के साधन निजी स्वामित्व मे है वहा मुख्य तथ्य यह है कि राज्यशक्ति की प्राप्ति के लिए दो श्रेणियो म अर्थात उत्पादन

के साधनो के मालिको और उन साधनो के स्वामित्व के लाभो से वर्जित लोगो मे सघर्ष चलता रहता है। इस निष्कर्ष का अभिप्राय है कि राज्य सदा पहली श्रेणी के हितो का पक्ष लेता है, और जिनके हित मे सत्ता का प्रयोग किया जाता है जब तक कि उन्हें विवश न कर दिया जाए, वे अपने विशेषाधिकारो को नही छोड़ेगे। यह दृष्टिकोण अनेक उदार मन वाले व्यक्तियो को क्लेश पहुचाता है। इसकी मान्यता है कि सामाजिक परिवर्तन की धाय के रूप मे क्राति अनिवार्य है, और यह स्वीकार करता है कि मानवीय विकास के कुछ चरण ऐसे हैं जब मनुष्य अपने मतभेदो को तर्क के आधार पर सुलझाना बंद कर देते हैं और अपने भाग्य के अंतिम निर्णय के लिए शक्ति का सहारा लेते हैं।'[30] परन्तु लास्की और मार्क्स के क्राति सबधी विचारो मे एक अतर भी है। लास्की तभी क्राति का आश्रय लेने का प्रस्ताव करते हैं जब सांविधानिक उपायो द्वारा सामाजिक परिवर्तन का प्रयास किया जा चुका है और शासक वर्ग ने भविष्य के लिए उनका उपयोग वर्जित कर दिया है।[31] अन्य मार्क्सवादियो की तुलना मे वे पूजीवादी लोकतंत्र के प्रति अधिक आशावादी रुख अपनाते हैं। लेनिन का कथन है, 'पूजीवाद के लिए लोकतात्रिक गणराज्य सर्वोत्तम उपलब्ध राजनीतिक कवच है इसलिए जब पूजी को यह अत्युत्तम रक्षाकवच प्राप्त हो जाता है, तो यह अपनी शक्तियो को इतना सुदृढ और सुरक्षित बना लेती है कि बुर्जुआ गणतंत्र मे शासन के क्षेत्र मे व्यक्तियो, संस्थानो और दलो मे किसी प्रकार की रद्दोबदल इसे सत्ता से नही हिला सकती।'[32] लेनिन का कथन है कि बुर्जुआ राज्यो की शासन प्रणालिया भिन्न भिन्न हो सकती हैं परतु उनका आधारतत्त्व एक जैसा होता है क्योकि विश्लेषण के अंत मे वे सभी बुर्जुआ वर्ग के अधिनायकतंत्र के रूप मे प्रकट होती हैं। उसी प्रकार सर्वहारा वर्ग के राज्यो की शासन प्रणालियो मे भी अंतर हो सकता है परतु पूजीवाद और साम्यवाद के बीच सक्रमणकालीन चरण मे ये सभी शासन प्रणालिया सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के ही भिन्न भिन्न रूप होगे। चीन के मार्क्सवादी नेता माओत्से तुग का भी यही विचार है।[33] लास्की भी स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक राज्य प्रणाली का जिसमे उदार लोकतंत्र भी शामिल है, अपना विशेष वर्ग-चरित्र होता है, और उदार लोकतंत्र का वर्गचरित्र पूजीवादी है, परतु वे इस विश्लेषण की अत्यधिक सरलता के आलोचक है।

मार्क्सवादी विश्लेषण मे राज्य तथा श्रेणी सघर्षों का गहरा सबध है। यह तर्क दिया जाता है कि साम्यवादी समाज मे श्रेणी सघर्षो के उन्मूलन के बाद राज्य जिस रूप मे इसका अस्तित्व इतिहास मे रहा है, अनावश्यक हो जाएगा। मार्क्सवादी भाषा मे राज्य क्रमश लुप्त हो जाएगा। एंगल्स का कथन है 'राज्य का अस्तित्व अनादि काल से नहा है। अनेक समाज ऐसे भी थे जिनमे राज्य का अस्तित्व नहीं था, राज्य तथा राज्यशक्ति की परिकल्पना भी नही

थी। आर्थिक विकास के एक चरण म जब समाज म श्रेणी भेद शुरू हुए तो इन भेदा के कारण राज्य की आवश्यकता पडी। हम अब शीघ्र ही उत्पादन के विकास के उस चरण म प्रवेश करने वाले हैं जब इन श्रेणिया का अस्तित्व न केवल अनावश्यक हो जाएगा बल्कि उत्पादन के माग मे एक विकट बाधा बन जाएगा। वे उसी अनिवार्यता के माथ नष्ट हो जाएगी जैसे वे पहले चरण म उत्पन्न हुई थी। उनके पतन के साथ राज्य भी समाप्त हो जाएगा। समाज, जो उत्पादन का प्रबध उत्पादको के स्वतन्त्र और समान सहयोग के आधार पर करेगा, राज्य के सपूण यन्त्र को भी वही भेज देगा जहा इसे होना चाहिए अथात पुरातन वस्तुओ का सग्रहालय, जहा सूत कातने का चर्खा और ताम्र-युग की कुल्हाडी मौजूद है।'[34] भूतकाल मे राज्य श्रेणी शोषण का साधन रहा है। भविष्य के समाजवादी समाज मे ऐसे राज्य के अस्तित्व का कोई कारण शेष न रहेगा क्योकि एक श्रेणी द्वारा दूसरी श्रेणिया का शोषण समाप्त हो जाएगा।

अपने निबध 'साम्यवाद मे मार्क्सवादी विश्लेषण के इस अग को लास्की अपने राजनीतिक चितन के केंद्रबिंदु से असबद्ध मानते हैं। वे इसे मार्क्स की भविष्यवाणी का एक काल्पनिक आदश समझते हुए उनके इस सिद्धात के प्रति तिरस्कार का दृष्टिकोण अपनाते है। यथाथ चितन के स्तर पर वे इसे कोई महत्व देने के लिए तैयार नही है।[35] हा, अपन नवमार्क्सवादी चरण म वे इस सिद्धात के प्रति अधिक सहानुभूति का रुख अपनाते हैं। वे अब स्वीकार करते हैं, मार्क्स के तक म यह सचाई है कि राज्य को जिस रूप मे हम जानते हैं, उस रूप में वह 'लुप्त हो जाएगा'। क्योकि जिस रूप मे हम उसे जानते हैं राज्य का काय अपने सभी सदस्या के मत के अनुसार उनके कल्याण के लिए व्यवस्था और कानून की रक्षा करना नही है, राज्य का काय सदव उस कानून और व्यवस्था की रक्षा करना है, जो किसी विशेष श्रेणी समाज के उद्देश्या मे अभिप्रेत है। क्योकि किसी निर्दिष्ट श्रेणी समाज के चरित्र का निर्धारण वे लोग करते हैं जो उत्पादन के साधना के मालिक हैं, इसलिए कानून और व्यवस्था प्रत्यक सकट के अवसर पर केवल उन्ही लोगा के हिता की रक्षा करते है। अगर ये उत्पादन के साधन समाज के सामूहिक अधिकार मे हा तो परिणामस्वरूप राज्यशक्ति सपूण समाज के, न कि किसी श्रेणी के, हिता की रक्षा करेगी। इन परिस्थितिया म राज्य का आचरण, जिस रूप म हम उसे जानते हैं, निश्चय ही पूणत बदल जाएगा। शासन के लिए एक सामूहिक सस्थान की फिर भी आवश्यकता पडेगी। परतु जिन मान्यताओ के आधार पर वह काय करेगा, उनम पूजीपति श्रेणी के आर्थिक हिता की बल प्रयोग करने की सर्वोपरि शक्ति द्वारा रक्षा करना शामिल नही है।[36] यह लास्की द्वारा मार्क्स के सिद्धात की आशिक स्वीकृति है कि साम्यवादी समाज

मे राज्य बल प्रयोग करने की शक्ति के रूप मे निरथक है। माक्स के शब्दो मे व्यक्तियो के शासन के स्थान पर वस्तुओ का प्रबध ही समाज का दायित्व बन जाएगा। समाज के सभी आर्थिक और सास्कृतिक काय जनता की ऐच्छिक समितियो द्वारा सपन्न हाग।

लास्की द्वारा माक्स की राज्य सबधी परिकल्पना को मुख्यत स्वीकार करने के कुछ महत्त्वपूण परिणाम हुए है। राज्य के वगचरित्र को स्वीकार करने के पश्चात उन्हे मिल की परपरा पर आधारित स्वतत्रता की अपनी परिकल्पना मे सशाधन करना आवश्यक हो गया और उन्होने स्वतत्रता के वग चरित्र को भी स्वीकार कर लिया।[37] इसका दूसरा परिणाम बहुलवादी परपरा का पूण परित्याग है, लास्की अब समुदाया को राज्य के समकक्ष स्थिति मे रखन के लिए उद्यत नही है। अत मे वे माक्सवादी सिद्धात के आधार पर कानून की एक नई विस्तृत परिकल्पना भी प्रस्तुत करते हैं। पूजीवादी राज्य जिस स्वतत्रता की रक्षा करता है, वह पूजीपतिया की स्वतत्रता है। न्यायाल्या के निणय इसी श्रेणी का पक्ष लेत है और श्रमिको को कानून से समान सुरक्षा उनकी श्रेणीगत दुबलताओ के कारण दुलभ है।[38] समाज मे आधारभूत सघष सामाजिक समुदाया और राज्य के बीच नही है, बल्कि आर्थिक श्रेणिया के मध्य है। लास्की अब प्रत्येक समस्या को श्रेणिया के सदभ म देखते है। धम सस्कृति, कानून और राजनीति सभी का अपना विशेष श्रेणी चरित्र होता है। युद्धरत श्रेणिया के सामाजिक सघर्षो की तुलना मे अन्य सभी भेद और सघष महत्त्वहीन हो जात हैं।[39]

हबट डीन का कथन है कि माक्सवाद के श्रेणी सिद्धात मे अधश्रद्धा के कारण लास्की सामयिक राजनीतिक परिस्थितिया का सही विश्लेषण करने मे असमथ ह। उदाहरणाथ, अमरीका म रुजवेल्ट की नीतिया की व्याख्या करत समय वे अतविरोधी वक्तव्य देत है। एक ओर वे लास्की के अनुसार अमरीका के पतनोन्मुख पूजीपति वग के प्रतिनिधि हैं और दूसरी ओर वे अमरीका के श्रमिक वग के लिए ऐसे प्रगतिशील सुधार करना चाहते हैं जिनके कारण उन्हे श्रमजीवियो का समथन मिल रहा है और पूजीपति वग उनका विरोध हो गया है। पूजीपतिया के सकेत पर काग्रेस और न्यायाल्य मे उनकी नीतिया का विरोध किया जा रहा है। कभी वे कहते है कि रूजवेल्ट का प्रयोग अस फल सिद्ध हागा, कभी वे कहत हैं कि यह लाभ की मनोवत्ति पर आधारित पूजीवाद का रुख बदलकर उसका उपयोग सावजनिक कल्याण के लिए करेगा, और कभी वे कहते हैं कि यह पूजीवादी व्याख्या म मामूली सुधार कर उसे अस्थायी रूप से स्थिरता प्रदान कर देगा और अत म ता वहा भी भीषण श्रेणी सघष अनिवाय है ही। हबट डीन का निष्कष है कि माक्स और सोरल के श्रेणी सिद्धातो की तरह लास्की द्वारा प्रस्तुत राज्य का वगचरित्र एक एसा

अविधानशास्त्रीय मान्यताए, जो कानून के चरित्र से भिन्न है, स्वीकार कर लेती है, पूर्णत पृथक कर दिया गया। इस दृष्टिकोण के अनुसार कानून की सत्ता का अंतिम स्रोत राज्य है और यह ऐसी मान्यता है जिसकी परीक्षा नही हो सकती क्योकि सत्ता के सर्वोच्च स्रोत के रूप मे कोई उसे अस्वीकार नही कर सकता। यदि हम इन मान्यताओ को स्वीकार कर लें तो कानून का यह शुद्ध सिद्धात स्वयसिद्ध है परतु मेरा विचार है कि इसका विषय जीवन के अनुभव पर नही, अर्थशास्त्र के एक पाठ पर आधारित है। वस्तुत हम यह जानते ह कि कानून किसी निर्दिष्ट समाज मे उस समाज की सामाजिक शक्तियो के प्रभाव की अभिव्यक्ति है।'[44] अत लास्की कानून क विषय की, जो उसके स्रोत और प्रक्रिया से भिन्न है, परिभाषा देने का प्रयास करते है। यह वे कुछ आवश्यक प्रश्नो के जरिये करते हैं। यदि कानून का आधार उपयोगिता है तो वे पूछते है यह किसके लिए उपयोगी है? यदि यह तर्क की अभिव्यक्ति है तो किसके तर्क की? यदि यह सार्वजनिक कल्याण पर आधारित है तो लास्की का प्रश्न है, कौन उस सार्वजनिक कल्याण की परिकल्पना प्रस्तुत करता है? यदि कानून के कुछ सामाजिक उद्देश्य हैं तो वे जानना चाहेंगे किसने उन उद्देश्या की परिभाषा की है? इन सभी प्रश्ना के उत्तर क्रमश यही हैं कि कानून उस वर्ग के लिए उपयोगी है जो समाज मे उत्पादन के साधनो का स्वामी है। अन्य वर्गो के तर्क को छोडकर यह केवल उसी वर्ग के तर्क की अभिव्यक्ति है। सार्वजनिक कल्याण की परिकल्पना भी इसी वर्ग के प्रतिनिधि करते हैं और वे भ्रम से यहा जानबूझकर अपने वर्गस्वार्थो को सार्वजनिक कल्याण की सज्ञा देते हैं। कानूनी व्यवस्था के सामाजिक लक्ष्यो की परिभाषा भी शासक वर्ग के सदस्यो ने की है, और उस व्यवस्था का सचालन भी उस वर्ग के विश्वासपात्र राज्याधिकारी और न्यायाधीश करते हैं।[45]

लास्की का कथन है कि आस्टिन की परिकल्पना मे कानून की विषयवस्तु का यथार्थ विश्लेषण नही किया गया। परतु अब वे उसकी आलोचना बहुलवादी आधार पर नही करते। जब उन्होने उनके सप्रभुता के सिद्धात का पुन स्वीकृति दे दी तो कानूनी व्यवस्था के लिए उस स्वीकृति के परिणामो को भी मान्यता देना जरूरी हो गया। उनका कथन है, 'जब हम राज्य की सप्रभुता के विचार को मान लेते हैं तो कानून भी राज्य की इच्छा के अतिरिक्त कुछ और नही हो सकता। यदि हम सप्रभुता के स्वरूप को याद रखें तो विश्लेषण के उपरात कानून वही है, जिसे राज्य लागू करना चाहे, और वह उसे लागू करेगा जो उसकी इच्छा के अनुकूल हो। वैधानिक दृष्टि से राज्य जिस निर्णय को लागू करता है उसका विषय उदासीनदा का विषय है।'[46] लास्की आस्टिन के कानून सिद्धांत की तुलना यूक्लिड के रेखागणित के सिद्धात से करते हैं। दोनो ही अपने क्षेत्र म तर्कसगत पद्धतिया हैं जिनकी प्रामाणिकता उनकी मूल मान्य

मिथक और कुतर्क है जिसकी बौद्धिक व्याख्या और समीक्षा करना अयत कठिन है।[40] सच तो यह है कि स्वय हुबर्ट डीन की उपर्युक्त आलोचना तथ्य हीन उदारवादी शब्दजाल है।

## कानून और राज्य

लास्की की राज्य सबधी और कानून सबधी परिकल्पनाओं मे घनिष्ठ सबध है। उनका कथन है, 'कोई भी सामाजिक प्रणाली आर्थिक शक्ति के नियत्रण के लिए सघर्ष पर आधारित है और जिन्हें यह शक्ति प्राप्त है वे तदनुसार अपनी मागो की पूर्ति करा सकते है। अत कानून उन सबधो की व्यवस्था है जिसके द्वारा उनकी मागो को वैधानिक रूप दिया जाता है। इसलिए किसी निर्दिष्ट समय और स्थान पर जिस प्रकार आर्थिक शक्ति वितरित है उसी के अनुसार उन वैधानिक आदेशो का चरित्र निर्धारित होता है, जो उस समय और स्थान पर प्रचलित हैं। राज्य इन परिस्थितियो मे उन लोगो की जो आर्थिक प्रणाली पर छाए हुए हैं, मागो की अभिव्यक्ति है। कानूनी व्यवस्था वह नकाब है जिसके पीछे छिपकर शक्तिशाली आर्थिक वर्ग राजनीतिक सत्ता का लाभ उठाता है। राज्य जानबूझकर सामान्य न्याय या सामान्य उपयोगिता की खोज नही करता, वह तो विस्तृत अर्थ मे समाज के शक्तिशाली वर्ग के हित को पूरा करना चाहता है।'[41] अत कानून का उद्देश्य निष्पक्ष न्याय की उपलब्धि नहीं अपितु आर्थिक रूप से प्रभावशाली श्रेणी की राजनीतिक उच्चता को सुरक्षित रखना है। प्रत्येक समाज के कानूनी ढाचे का एक विशेष श्रेणी आधार होता है। सामतवादी समाज मे कानून का कार्य अभिजात वर्ग की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्ति को सुदृढ बनाना है। पूजीवादी समाज मे कानूनी व्यवस्था पूजीपति वर्ग की जरूरतो को पूरा करने का प्रबध करती है। समाजवादी समाज मे कानून की सहिता मे श्रमिक वर्ग की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन कर लिए जाते हैं।[4] इस प्रकार कानून कभी पूर्णत निष्पक्ष नियमो की सहिता, जो समाज की विभिन्न श्रेणियो के सघर्षों मे न्यायोचित मध्यस्थता करे, नही हो सकती। लास्की उन उदारवादी विधानवेत्ताओं से सहमत नही, जो कानून को राज्य द्वारा स्थापित सामाजिक शांति और व्यवस्था रखने के लिए एक निष्पक्ष अभिकरण मानते हैं।[43]

आस्टिन द्वारा प्रतिपादित कानून की परिकल्पना लास्की के मतानुसार राजनीति विज्ञान के सदर्भ मे अपूर्ण है यद्यपि विधानशास्त्रीय दृष्टिकोण से उसमे औपचारिक सगति है। वस्तुत आस्टिन ने कानूनी व्यवस्था की विवेचना के लिए एक तर्कसगत सिद्धात प्रस्तुत किया है, जिसमे उसके नैतिक और समाज शास्त्रीय पहलुओं पर ध्यान नही दिया गया है। लास्की का कथन है 'इस मत के अनुसार कानून को न्याय से इस आधार पर कि न्याय की परिकल्पना

अविधानशास्त्रीय मान्यताए, जो कानून के चरित्र से भिन्न हैं, स्वीकार कर लेती है, पूर्णत पृथक कर दिया गया। इस दृष्टिकोण के अनुसार कानून की सत्ता का अंतिम स्रोत राज्य है और यह ऐसी मान्यता है जिसकी परीक्षा नही हो सकती क्योकि सत्ता के सर्वोच्च स्रोत के रूप मे कोई उसे अस्वीकार नही कर सकता। यदि हम इन मान्यताओ को स्वीकार कर लें तो कानून का यह शुद्ध सिद्धात स्वयसिद्ध है परतु मेरा विचार है कि इसका विषय जीवन के अनुभव पर नही, अर्थशास्त्र के एक पाठ पर आधारित है। वस्तुत हम यह जानते है कि कानून किसी निर्दिष्ट समाज मे उस समाज की सामाजिक शक्तिया के प्रभाव की अभिव्यक्ति है।'[44] अत लास्की कानून के विषय की, जो उसके स्रोत और प्रक्रिया से भिन्न है, परिभाषा देने का प्रयास करते है। यह वे कुछ आवश्यक प्रश्ना के जरिये करते हैं। यदि कानून का आधार उपयोगिता है तो वे पूछते है यह किसके लिए उपयोगी है ? यदि यह तर्क की अभिव्यक्ति है तो किसके तर्क की ? यदि यह सार्वजनिक कल्याण पर आधारित है तो लास्की का प्रश्न है, कौन उस सार्वजनिक कल्याण की परिकल्पना प्रस्तुत करता है ? यदि कानून के कुछ सामाजिक उद्देश्य हैं तो वे जानना चाहेंगे किसने उन उद्देश्या की परिभाषा की है ? इन सभी प्रश्ना के उत्तर क्रमश यही हैं कि कानून उस वर्ग के लिए उपयोगी है जो समाज मे उत्पादन के साधनो का स्वामी है। अन्य वर्गो के तर्क को छोडकर यह केवल उसी वर्ग के तर्क की अभिव्यक्ति है। सार्वजनिक कल्याण की परिकल्पना भी इसी वर्ग के प्रतिनिधि करते हैं और वे भ्रम से यहा जानबूझकर अपने वर्गस्वार्थो को सार्वजनिक कल्याण की सज्ञा देते हैं। कानूनी व्यवस्था के सामाजिक लक्ष्या की परिभाषा भी शासक वर्ग के सदस्या ने की है, और उस व्यवस्था का सचालन भी उस वर्ग के विश्वासपात्र राज्याधिकारी और न्यायाधीश करते है।[45]

लास्की का कथन है कि आस्टिन की परिकल्पना म कानून की विषयवस्तु का यथार्थ विश्लेषण नही किया गया। परतु अब वे उसकी आलोचना बहुलवादी आधार पर नही करते। जब उन्होने उनके सप्रभुता के सिद्धात को पुन स्वीकृति दे दी तो कानूनी व्यवस्था के लिए उस स्वीकृति के परिणामा को भी मान्यता देना जरूरी हो गया। उनका कथन है, 'जब हम राज्य की सप्रभुता के विचार को मान लेते हैं तो कानून भी राज्य की इच्छा के अतिरिक्त कुछ और नही हो सकता। यदि हम सप्रभुता के स्वरूप को याद रखें तो विश्लेषण के उपरात कानून वही है, जिसे राज्य लागू करना चाहे, और वह उसे लागू करेगा जो उसकी इच्छा के अनुकूल हो। वैधानिक दृष्टि से राज्य जिस निर्णय को लागू करता है उसका विषय उदासीनता का विषय है।'[46] लास्की आस्टिन के कानून सिद्धात की तुलना यूक्लिड के रेखागणित के सिद्धात से करते हैं। दोना ही अपने क्षेत्र मे तर्कसगत पद्धतिया हैं जिनकी प्रामाणिकता उनकी मूल मान्-

ताओं को एक बार स्वीकार कर लेने पर असदिग्ध है। उनका कथन है, 'एक प्रकार से कहना चाहिए कि यह अमूर्त परिकल्पनावाद है जिसमे कुछ निर्धारित उद्देश्यो के लिए कानून का न्याय से सबध विच्छेद कर दिया जाता है और इस इच्छाओं की सोपानात्मक प्रणाली म अतिम शब्द मान लिया जाता है जिसके पीछे जान की जरूरत नही है। विधानशास्त्री यहा केवल औपचारिक विश्लेषण म व्यस्त हैं। वह अपनी विवचना के क्षेत्र से एसे विचार, जो नतिक औचित्य या सामाजिक उपयोगिता स सबद्ध हैं, अलग रखना चाहेगा। उसके अनुसार कानून वही है जिसका स्रोत सप्रभु है। विधानशास्त्री के रूप म उसकी समस्या यह जानना है कि किसी विशेष प्रकार के आचरण को, जिसे हम वधानिक कहते हैं सप्रभु की अनुमति प्रदान हो चुकी है। कोई दूसरा प्रश्न, मेटलैंड के सुदर शब्दो म, विधानशास्त्र की परिधि से बाहर है क्योकि वह विधान दशन (Metajuris prudence) है।[47] लास्की आस्टिन के सिद्धात की औपचारिक सचाई मान लेते हैं परन्तु वे कानून के समाजशास्त्रीय विश्लेषण म तथा कानून और न्याय के नैतिक सबध म अधिक रुचि दिखाते हैं।

एसा प्रतीत होता है कि लास्की ने अपने कानून सिद्धात मे दो परस्पर विरोधी तत्वो को मिला दिया है। एक ओर वे कानून का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करते हुए एक माक्सवादी के रूप मे उसे किसी विशेष श्रेणी की आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति मानते हैं। दूसरी ओर वे प्राकृतिक कानून के पारपरिक सिद्धात का पुनरुत्थान करते हुए उसे कानूनी व्यवस्था की नतिक कसौटी मान लेते हैं। मार्क्स के अनुसार नैतिक नियमो और कानूनो का समान रूप से एक निश्चित श्रेणी आधार होता है और कोई ऐसी वग निरपेक्ष नैतिकता नही जिस मापदड बनाकर निर्धारित कानूनो के नैतिक गुण की परख हो सके। अत प्राकृतिक कानून के सिद्धात म लास्की की आस्था उनके द्वारा प्रस्तुत कानून के समाजशास्त्रीय विश्लेषण से मेल नही खाती।[48]

किसी कानूनी व्यवस्था के चरित्र या निणय किसी निश्चित समाज म पाए जाने वाले वग विभाजन के सदभ म ही किया जा सकता है। परतु लास्की यह नही कहते कि सभी कानून वग सघष की उपज हैं। प्रत्येक समाज म काफी वैधानिक नियम ऐसे हैं जो सामाजिक रूप स तटस्थ हैं और नागरिको की सामान्य सुविधा के लिए बनाए गए हैं। परन्तु किसी भी वधानिक प्रणाली म कुछ एस महत्वपूर्ण कानून हैं जिनका स्पष्ट रूप म निर्धारित वग चरित्र होता है। लास्की का कथन है 'श्रेणी सघष का विचार वधानिक नियमो म केंद्रीय महत्व के प्रत्येक बिंदु पर व्याप्त है। राजद्रोह कानून यथास्थिति को प्रहार से बचाने म प्रयास का प्रयोग है और उसे किसी दूसरे रूप म समझना नामुमकिन है। हम कह सकते हैं कि यह कानून तथा व्यवस्था का रक्षक है लेकिन जिस कानून और व्यवस्था की यह रक्षा करता है उसका उद्देश्य श्रेणी सबधो की रक्षा

विशेष पद्धति को चुनौती के खतरे से बचाना है। श्रमिक संघों के मुकदमों में न्यायालयों का दृष्टिकोण उस मानसिक वातावरण की अभिव्यक्ति है जो यह विश्वास करता है कि मजदूर सभाएं समाज के संतुलन को खतरे में डालने वाली संस्थाएं हैं, और इस संतुलन का आधार उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व का सिद्धांत है। अमरीकी अदालतों द्वारा मजदूरों के मुकदमों में निषेधाज्ञा (Injunction) का प्रयोग वर्गयुद्ध का ही हथियार है।'[49]

इंगलैंड में न्याय प्रणाली के विस्तृत सर्वेक्षण के पश्चात् लास्की का यही निष्कर्ष है कि न्यायपालिका अपने समाज की वर्गव्यवस्था के मूल्यों से निरपेक्ष नहीं रह सकती।[50] यही स्थिति अमरीकी न्यायालयों की भी है। जिस प्रकार पूंजीवादी देशों में न्याय प्रणाली पूंजीपति वर्ग का पक्ष लेती है, उसी प्रकार सोवियत रूस की न्याय प्रणाली श्रमिक वर्ग के हितों का विशेष ध्यान रखती है। लास्की का विचार है कि न केवल कानूनों की विषयवस्तु अपितु वैधानिक और न्यायिक प्रक्रियाएं भी श्रेणियों की असमान स्थिति की परिचायक हैं। न्यायालयों से न्याय पाना भी बड़ा खर्चीला सौदा है। लास्की का मत है, 'व्यापक दृष्टि से कानून के समक्ष समानता तभी प्राप्त हो सकती है जब न्याय के अवसरों में प्रवेश करने की कीमत सभी समान रूप में दे सकें, अभी ऐसा संतुलन रखने के लिए कोई प्रशासनिक सुनीति (Equity) नहीं अपनाई गई है। असमानता तो हमारे समाज के वर्तमान श्रेणी विभाजन में व्याप्त है ही। इन श्रेणी संबंधों का अर्थ है कि सामान्य नियम के अनुसार योग्यतम वकीलों की सेवाएं उनको ही मिलेंगी जो उनकी ऊंची फीस देने में समर्थ हैं। आंग्ल-अमरीकी व्यवस्था में न्यायपालिका के सदस्य जिन सफल वकीलों की श्रेणी से आते हैं, वे अपना जीवन हमारे समाज के सबसे शक्तिशाली वर्ग की सेवा के लिए अर्पण कर देते हैं।'[51] अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कानून के समक्ष तथाकथित समानता का सिद्धांत व्यवहार में पूंजीवादी समाज में आर्थिक असमानता के कारण विकृत हो जाता है।

अंत में लास्की कानूनी व्यवस्था का नैतिक औचित्य परखने के लिए कुछ नैतिक मापदंड निर्धारित करना चाहते हैं। इस क्षेत्र में हीगल और आस्टिन के सिद्धांतों से कोई सहायता नहीं मिलती। कानून नैतिक रूप से वांछनीय सिर्फ इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि उसे संप्रभु ने बनाया है। अगर संप्रभु क्वेकर संप्रदाय के सदस्यों को, जो युद्ध का विरोध अपनी अंतरात्मा के आधार पर करते हैं, सेना में अनिवार्य भर्ती की आज्ञा दे तो यह वैधानिक रूप से ठीक है पर नैतिक रूप से अनुचित है।[52] न वे हीगल के इस तर्क को मानते हैं कि इतिहास की विरासत में मिले हुए कानून वस्तुतः बुद्धिमत्ता और नैतिकता के मूर्त रूप हैं।[53] हीगल तथा अन्य आदर्शवादियों के कानून, यदि समाज में व्यापक रूप से स्वीकृत हो जाएं, नैतिक रूप से भी वांछनीय हैं। लास्की कहते हैं कि

फासिस्ट राज्य के कानून सामान्य रूप से जनता द्वारा स्वीकृत होते हैं क्योंकि उनके पीछे अधिनायकतन्त्र की अपार शक्ति निहित है। परंतु जनता उन्हे इसलिए स्वीकार नही करती क्योंकि वे नैतिकता का साकार रूप है बल्कि इसलिए मानती है क्योंकि चाहे वे कितने ही अनैतिक क्यो न हो, उनके खिलाफ प्रतिरोध करना असभव है। अत कानूनों के नैतिक औचित्य का निर्णय मनुष्य का अत करण ही कर सकता है। लास्की का कथन है, 'कानून के नैतिक औचित्य के लिए इसे अधिकारो की व्यवस्था की जरूरतो के अनुरूप होना चाहिए, और अधिकारो की व्यवस्था उन उद्देश्यो पर आधारित होनी चाहिए जिनके लिए राज्य का अस्तित्व है। क्योंकि कानून मेरे व्यवहार का नियन्त्रण करने के लिए एक आज्ञा है, मुझे उसकी नैतिक पूर्णता की परख के लिए उसकी अनुरूपता का निर्णय करने का अधिकार होना चाहिए। उचित कानून की जडें मनुष्य के अत करण मे ही हैं और हो सकती हैं। अत मैं स्वय अपने अत करण की सहमति द्वारा कानून को औचित्य प्रदान करता हू।'[54]

कानून की नैतिक परीक्षा की यह परिकल्पना समाज के परमाणुवादी विश्लेषण पर आधारित है जिसका मार्क्सवादी विचारधारा के समष्टिवादी आधार से सीधा अंतर्विरोध है। मार्क्सवाद वैधानिक प्रणाली में व्यक्ति की अपेक्षा वर्ग को ही अधिक महत्त्वपूर्ण मानता है। लास्की इस अंतर्विरोध की ओर कोई ध्यान नही देते क्योंकि उन्होंने वैयक्तिक प्रतिरोध की एकाकी व्यक्ति के सदर्भ मे व्याख्या नही की अपितु वे व्यक्ति को सामान्य रूप से समाज मे व्याप्त श्रेणी सबधो के सदर्भ मे ही देखते हैं।

हर्बर्ट डीन लास्की के कानून सिद्धात की आलोचना करते हुए कहते हैं कि इसके द्वारा हम पूजीवादी देशो के ऐसे अनेक कानूनो की व्याख्या नही कर सकते जिनका उद्देश्य श्रमजीवियो को लाभ पहुचाना है, जैसे न्यूनतम वेतन कानून इत्यादि। न हम लास्की के सिद्धात के आधार पर काग्रेस, राष्ट्रपति और सुप्रीम कोर्ट के पारस्परिक सघर्ष का सही विश्लेषण कर सकते हैं क्योंकि यदि ये सस्थाए समान रूप मे पूजीपति वर्ग के हाथ मे हैं तो रूजवेल्ट द्वारा प्रस्तावित कानूनो पर इनमें आपसी मतभेद क्यो पैदा हुए ? इन कानूनो का उद्देश्य विश्वव्यापी आर्थिक सकट के समय श्रमजीवियो को राहत और सहायता पहुचाना था। प्रारभिक मतभेदो के बावजूद रूजवेल्ट के सपूर्ण कार्यक्रम को अत मे काग्रेस और सर्वोच्च न्यायालय ने भी स्वीकार किया। यह सिद्ध करता है कि अमरीकी वैधानिक प्रणाली और न्याय प्रक्रिया पूजीपति वर्ग द्वारा नियत्रित नही है।[55] वस्तुत यह आलोचना लास्की द्वारा प्रस्तुत कानून के वर्गचरित्र के सिद्धात के गलत अर्थ पर आधारित है क्योंकि उनके विश्लेषण का आधार सपूर्ण प्रणाली है, न कि थोडे से कानून।

## शासन प्रणालिया

फ्रासीसी काल्पनिक समाजवादी सेट सिमोन का कथन है कि वह कानून, जो सरकार की प्रणाली और शक्तियो को निर्धारित करता है, उस कानून से जो सपत्ति और उसके उपयोग को निश्चित करता है, कम महत्वपूण है और राष्ट्रो के सुख को कम प्रभावित करता है। लास्की उनके इस विचार से पूणत सहमत है।[56] वे भी राजनीतिक प्रणालियो की तुलना मे आर्थिक व्यवस्था को अधिक महत्त्वपूण समझते हैं। अरस्तू से लेकर आज तक अनेक राजनीतिक चितको ने राजनीतिक प्रणालियो के वर्गीकरण का प्रयास किया है परतु लास्की की इस समस्या मे कोई अभिरुचि नही है। वतमान परिस्थितियो मे शासन प्रणालियो के पारपरिक वर्गीकरण का कोई महत्त्व नही रहा है। लास्की की सरकार के सामाजिक आर्थिक-आधारा मे अधिक रुचि है। शासन प्रणाली से कही अधिक वे सरकार के वगचरित्र मे दिलचस्पी लेते है। प्राचीन यूनान मे नगर राज्या की शासन प्रणालिया राजतत्र से लेकर प्रजातत्र तक भिन्न भिन्न प्रकार की थी। परतु वास्तव मे वे वगतत्र के विभिन्न रूप थे जिनमे गुलामा के मालिक गुलाम जनता पर शासन करते थे। आधुनिक पूजीवादी राज्य भी एकतत्र से लेकर लोकतत्र तक विभिन्न प्रकार की शासन प्रणालिया अपनाते हैं। परतु वास्तव म वे सभी बुर्जुआ वग के सवहारा वग पर कुलीनतत्रात्मक शासन के अनेक रूप हैं।[57]

यूरोपीय उदारवाद के उदय के सदभ मे लास्की उन शासन प्रणालियो की चर्चा करते हैं जिनकी स्थापना क्रमश मध्यम वग के आर्थिक उत्थान के साथ साथ हुई। उनका कथन है 'धमसुधार आदोलन से लेकर फ्रासीसी क्राति तक के युग मे एक नई सामाजिक श्रेणी ने राज्य के नियत्रण मे अपने पूरे हिस्से का अधिकार प्राप्त कर लिया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इसने मनुष्या मे वधानिक सबधा मे मौलिक परिवतन किया। राजनीति के नियत्रण म जमीना के मालिक अभिजात वग को चल सपत्ति के मालिक बुजुआ वग के साथ हिस्सा बटाना पडा। समाज मे जमीदार, पादरी और योद्धा के स्थान पर महाजन, व्यापारी और उद्योगपति का प्रभाव बढने लगा।'[58] सोलहवी सदी के निरकुश राजतत्रो का विश्लेषण करते हुए लास्की का कथन है कि ये राजतत्रात्मक सरकारें सत्तारूढ महाराजा के व्यापारिया और उद्योगपतियो के साथ गठबधन पर आधारित थी। उनका कथन है, 'सोलहवी सदी के राजा को व्यापक शक्तिया प्राप्त थी क्योकि उन शक्तियो के प्रयोग से वह सघर्षों को दबाकर आर्थिक प्रगति का अवसर प्रदान कर सकता था। नए व्यापारी शाति के सबमे बडे समथक थे। उनकी सहायता से राजतत्र सामत वग की स्वतत्र सत्ता के अवशेषो को समाप्त करने मे सफल हुए। उदीयमान बुर्जुआ वग ने सुदृढ केंद्रीय

शासन को अपने अस्तित्व और वभव की सवश्रेष्ठ गारटी समझा। राजाओ ने इस गठबधन का मूल्य पहचाना, उन्होने बुर्जुआ वग के लाभ के लिए जानबूझ कर विशेष कानून बनाए। बुर्जुआ वग के धन की वद्धि के साथ-साथ राज्य भी अधिक शक्तिशाली होता गया। राजा उद्योगपतियो को उत्साहित करते और उनके हितो की रक्षा करते, उन्हे शाति और सस्ते तथा शीघ्र न्याय की सुविधा दी, और उन्हे एक अनुशासनबद्ध मजदूर वग दिया जिसे श्रम का पाठ पढाया गया था।'[59]

परतु लास्की का मत है कि निरकुश राजतत्र की प्रणाली ने बुजुआ वग के हित मे अभिजात वग की शक्ति को नियत्रित तो किया पर उसे पूणत समाप्त नही किया। नए बुजुआ राजतत्र और पुराने सामतवादी राजतत्र मे कुछ महत्त्वपूण अतर थे। सवप्रथम सामतो की निजी सेनाए नष्ट कर दी गइ और एक राष्ट्रीय सेना का निर्माण हुआ। राजनैतिक शक्ति एक केंद्रीय सरकार के हाथ में आ गई और उसके द्वारा नियुक्त अधिकारी और न्यायाधीश प्रशासन तथा न्याय काय करने लगे। उन्होने सामतो की प्रादेशिक स्वायत्तता को समाप्त कर दिया। सरकार के लौकिक पक्ष को बढावा मिला और चच तथा राज्य के क्षेत्राधिकारो को पृथक कर दिया गया। जमीदारो और पादरियो की जगह नए राजतत्र ने मध्यम वग के सदस्यो को मत्री, अधिकारी और न्यायाधीश के पदो पर नियुक्त करना प्रारभ किया।[60]

निरकुश राजतत्र की स्थापना राज्यशक्ति पर पूरी तरह कब्जा करने की दिशा मे मध्यम वग का पहला प्रयास था। यह वस्तुत पतनोन्मुख अभिजात वग और उदीयमान बुजुआ वग के मध्य शक्तियो और सम्मान का बटवारा था। लास्की का कथन है 'उदीयमान बुजुआ वग पहले धम और फिर सस्कृति को अपने उद्देश्यो के अनुरूप बनाता है, राज्य उसकी विजयो मे अतिम है। यह राज्य को पहले अपना मित्र और फिर शत्रु बनाकर अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है। डेढ शताब्दी के सघष के पश्चात राजमुकुट और मध्यम वग मिलकर पुरानी व्यवस्था को तोड कर नया अनुशासन स्थापित करते है। प्रारभ मे बुजुआ वग वैधानिक सबधो के पूण पुनर्विवेचन के लिए तैयार नही है। राजतत्र और अभिजात वर्गीय जमींदारो की स्थिति मजबूत है और नियत्रण मे पारपरिक विश्वास अभी तक सभी महत्त्वपूण सामाजिक अनुभवो मे निहित है। जब नई व्यवस्था अपनी जड मजबूती से जमा लेती है, जब आर्थिक क्षेत्र मे स्वतत्रता अन्य क्षेत्रो मे स्वतत्रता की स्थापना के बाद, एक स्वाभाविक निष्कष प्रतीत होती है तभी बुजुआ वग अपने आखिरी हमले की तयारी करता है। इस प्रकार उसके हाथो मे बल प्रयोग की सर्वोपरि शक्ति आ जाती है। उसके लिए राज्य का मुख्य उपयोग एक पुलिस अभिकरण के रूप मे ही है।

वह उसको आर्थिक क्षेत्र स अलग रहने की आज्ञा देता है क्योकि वह स्वय आर्थिक विकास और शोपण की खुली छूट चाहता है।'[61]

राज्य पर इस अतिम आक्रमण से क्या अभिप्राय है ? इसका अथ है कि अब मध्यम वग निरकुश राजतत्र का लोकतात्रिक गणराज्य अथवा सीमित राजतत्र म बदलना चाहता है। इस नई राजनीतिक प्रणाली के द्वारा वह अपनी शक्ति और स्वतत्रता म वद्धि करना चाहता है। सत्रहवी सदी म इगलैंड की राज्यक्राति और अठारहवी सदी म फ्रास की राज्यक्राति के यही उद्देश्य थे। वैधानिक राजतत्र या लोकतात्रिक गणराज्यो की स्थापना सरकार के सभी अगो पर मध्यम वग के प्रभावशील अधिकार का द्योतक है। यह वग अपने राजनीतिक दल बनाता है, अपने प्रतिनिधियो को विधान सभाओ म कानून बनाने के लिए भेजता है, उत्तरदायी मत्रिमडलों के माध्यम से कायपालक शक्तियो का प्रयोग करता है स्वामिभक्त सेवको की सहायता से न्यायालयो के द्वारा न्याय कराता है और एक वफादार और पराधीन नौकरशाही क माध्यम से प्रशासन पर नियत्रण रखता है।[6]

यूरोप म गणतत्र तथा सावैधानिक राजतत्र ने प्राय ससदीय शासन प्रणाली को अपनाया है। यह प्रणाली निर्वाचित ससद के प्रति मत्रिमडल के सामूहिक उत्तरदायित्व पर आधारित है। लास्की ने इगलैंड की ससदीय प्रणाली का विस्तृत सर्वेक्षण किया है। ब्रिटिश लोकतत्र के सबध म उनका निष्कप है, 'पूजीवाद और लोकतत्र के मध्य विवाह मे जिसने हमे ससदीय शासन की प्रणाली दी है, लोकतत्र स पूजीवाद अधिक महत्वपूण है क्योकि उसके द्वारा लाद हुए सपत्ति के सबध लोकतत्र को उसका आधारभूत सिद्धात देते हैं। लोकतत्र अपन विवाह को, जिसने उस जन्म दिया, समाप्त किए बिना, इस सिद्धात को अस्वीकार नही कर सकता। यदि यह सबध विच्छेद दोनो पक्षो की मर्जी से हो तो तलाक के बाद भी इसके जीवित रहने की सभावना है।'[63] इस प्रकार लास्की का मत है कि ब्रिटिश ससदीय प्रणाली के निमाण म उसके पूजीवादी आधार को भुलाया नही जा सकता। राजनीतिक लोकतत्र के आर्थिक आधारो की चर्चा करत हुए उनका कथन है, राजनीतिक लोकतत्र का विकास विशेषाधिकारो के उन्मूलन की माग के जवाब के रूप म हुआ। आधुनिक यूरोपीय इतिहास म इसका कारण अभिजात वर्गीय जमीदारो के दबाव से व्यापारिक मध्यम वर्ग की स्वतत्रता थी। मुक्त होने के लिए उस मध्यम वग ने कुछ उदारवादी निष्कप प्रस्तुत किए जिनके परिणामस्वरूप सावभौम मताधिकार को व्यापक रूप से स्वीकार कर लिया गया। उनका अतर्निहित दर्शन सुप्रसिद्ध बेंथमवादी तक था कि राजनीतिक लोकतत्र म प्रत्येक व्यक्ति का केवल एक वोट होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति अपने हित का सर्वोत्तम निर्णायक है, अत सावभौम मताधिकार द्वारा बहुमत की इच्छा को कानून की विषयवस्तु मे परिवर्तित किया जा

सकेगा। इस तर्क मे एक दोष स्पष्ट था। इसका विश्वास था कि राजनीतिक प्रणाली समाज के आर्थिक वर्गचरित्र से पूर्णत निरपेक्ष और अप्रभावित रह सकती है। यह इसे समझने मे असमर्थ था कि प्रत्येक आर्थिक प्रणाली ऐसी राजनीतिक व्यवस्था उत्पन्न करती है जिसमे आर्थिक शक्ति के आवश्यक उपकरणो के मालिक अपने वर्गहितो की सिद्धि के लिए सत्ता का उपयोग करते हैं। उसी प्रकार पूजीवादी समाज के सप्रभुता पूजी के स्वामियो मे निहित है। इन्ही सामान्य सत्यो के परिप्रेक्ष्य म हम ससदीय लोकतत्र के इतिहास को समझना चाहिए।'[64] उपर्युक्त उद्धरण से लास्की की ससदीय लोकतत्र की पूजीवाद के पिटठू के रूप मे परिकल्पना स्पष्ट हो जाती है।

अमरीकी लोकतत्रात्मक शासन प्रणाली का विश्लेषण भी लास्की ने उपयुक्त ढग से किया है। राजनीतिक सस्थानो के सगठन के अतर के बावजूद अमरीका के राजनीतिक लोकतत्र का वर्गचरित्र वही है जो ब्रिटिश लोकतत्र का। उनका कथन है, 'जब से अमरीका का एक स्वतत्र राजनीतिक समाज के रूप मे उदय हुआ, यह एक राजनीतिक लोकतत्र रहा है, और प्रतिनिधिक सस्थाओ के माध्यम से बहुमत शासन का विचार इसकी परपरा का अविभाज्य अग है। परतु हमे इस राजनीतिक लोकतत्र के विचार की चर्चा करते समय अतिशयोक्ति से बचना चाहिए। इस लोकतत्र का आधार मध्यम वर्ग है, इसका धन की सत्ता मे विश्वास है पर यह इसकी स्पष्ट घोषणा नही करता, और यह अपने सपूर्ण इतिहास मे सावधान रहा है कि कही इसका मूल विचार सपत्ति के स्वामियो के इन दावो को चुनौती न दे कि कुछ सीमाए ऐसी भी है जिनका उल्लघन लोकतत्र को किसी हालत मे भी करना न चाहिए। राजनीतिक लोकतत्र की प्रणाली ने इस तथ्य को कि उसके आर्थिक आधारो का चरित्र निरतर वर्गतत्रात्मक होता चला गया, धुधला तो अवश्य किया पर उसे छिपाने म असमर्थ रही।'[65] इस विश्लेषण स यह स्पष्ट हो जाता है कि लास्की लोकतात्रिक शासन प्रणाली के यूरोपीय और अमरीकी रूपो को समान रूप से पूजीवादी जीवन पद्धति की अभिव्यक्ति मानते हैं। यह जीवन पद्धति समान रूप से उनके राजनीतिक दलो के सगठन और विधान सभाओ कार्यपालिका के सस्थानो और न्यायालयो की कार्य शैली म परिलक्षित होती है। पूजीवादी लोकतत्र का सावैधानिक ढाचा पूजीपतियो के निहित स्वार्थों का रक्षाकवच है। मूल अधिकारो का केंद्रबिंदु निजी सपत्ति का बूर्जुआ अधिकार है।[66]

समग्रवादी शासन प्रणालियो के विश्लेषण मे भी लास्की का आग्रह है कि उनके वर्गचरित्र पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। वे फासिस्ट शासन प्रणाली के पूर्ण विरोधी हैं क्योकि यह लोकतत्र की तुलना म तानाशाही को श्रेष्ठ समझता है और इस तानाशाही का प्रयोग पूजीवादी जीवन पद्धति को सुरक्षित रखने के लिए करता है। उनकी साम्यवादी शासन प्रणाली की समीक्षा

जहा अधिनायकतन्त्र के विरोध पर बल देती है वहा उसके समाजवाद पर आधारित आर्थिक लक्ष्यो का स्वागत भी करती है ।[67] वे वतमान वधानिक व्यवस्था मे निहित श्रेणी सवधा की पुनर्व्याख्या चाहत है परतु वे इस बात के लिए भी उत्सुक हैं कि यह सामाजिक परिवतन राजनीतिक लोकतन्त्र के रूप को विकृत किए बिना लाना चाहिए। तक के लिए यदि हम आर्थिक पहलू को थोडी देर के लिए भुलाए तो लास्की एक-सदनीय ससदीय शासन प्रणाली को अय सभी राज नीतिक प्रणालिया से श्रेष्ठ समझते हैं। ब्रिटिश राजतत्र की समीक्षा करते हुए उन्होने उत्तराधिकार पर आधारित राजतन्त्र की सांविधानिक तटस्थता पर सदेह प्रकट किया है। राजतत्र वग सघप मे निष्पक्ष नही रह सकता, अत उस समाप्त कर देना ही उचित है ।[68] लास्की लाड सभा के उन्मूलन का प्रस्ताव भी रखते हैं क्योकि वह न केवल एक अनावश्यक विलास की वस्तु है वल्कि पूजीपति वग के हाथ मे वग सघप की स्थिति मे एक महत्त्वपूण और शक्तिशाली अस्त्र भी ह ।[69] वस्तुत लास्की इगलड के राजनीतिक सस्थानो का पुनगठन इस प्रकार करना चाहत हैं, जिससे किसी समाजवादी दल को सांविधानिक रूप से सत्ता प्राप्त करन मे व्यथ की बाधाओ का सामना न करना पडे। वे यह भी चाहत हैं कि सत्ताधारी समाजवादी दल का अपने कायक्रम को व्यावहारिक रूप देन म वतमान सांविधानिक अडचना को हटा देना चाहिए ।[70] लास्की एक लोकतात्रिक समाजवादी की हैसियत से अमरीकी राजनीतिक प्रणाली के निहित सतुलन और अवरोध के सिद्धात को वहुत असुविधाजनक समझते हैं। वे अधिक शक्तिशाली राष्ट्रपति पद के समथक हैं, जा वित्तीय और वैदेशिक नीति के क्षेत्रा मे काग्रस पर निभर न हो और जिसकी कानून बनाने की शक्ति पर सर्वोच्च न्यायालय का अकुश न हो ।[71] लास्की का मुख्य उद्देश्य अमरीकी शासन प्रणाली का जनकल्याणकारी राज्य के कार्यो को करन के लिए समथ बनाना है। एक ऐसा समाजवादी मत्रिमडल, जिसे लोकसदन म स्थायी बहुमत प्राप्त हो प्रतिक्रियावादी लाड सभा और अनिच्छुक राजा की अनुपस्थिति मे, इगलड को शीघ्रता से समाजवादी समाज मे परिवर्तित कर सकते है। परतु यदि राजतन्त्र और लाड सभा, जो इगलैंड मे अनुदार दल और पूजीपति वग के स्थायी समथक हैं, अपनी सुरक्षित शक्तियो और पारपरिक सम्मान का उपयोग समाजवादी सरकार के विरुद्ध करें तो समाजवादी कायक्रम को व्यावहारिक रूप देना असभव हो जाएगा।

## सदभ

1 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, पृ० 15–21
2 किग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रैफिकल मेमोयर पृ० 102–28

3 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० III–VI
4 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्राफिकल मेमोयर, पृ० 270
5 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० X–XIII
6 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रैफिकल मेमोयर पृ० 74
7 जम्स सण्ड वक्स एज अगस्त 1935 म एक लेख।
8 लास्की कम्युनिज्म पृ० 207–37
9 लास्की डेमोक्रेसी इन क्राइसिस पृ० 16–26
10 लास्की इंट्रोडक्शन ट पालिटिक्स पृ० 11–12
11 वही पृ० 12–13
12 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 21
13 लास्की दि स्टेट इन थ्यारी एंड प्रक्टिस पृ० 21–22
14 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 55–65
15 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 23–25
16 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 131
17 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 26–27
18 लास्की दि डेंजस आफ ओबीडिएंस पृ० 178–98
19 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ 35
20 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 152–54
21 लास्की दि स्टट इन थ्यारी एंड प्रक्टिस पृ० 22–25
22 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 173–82
23 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स, पृ० 24–27
24 मार्क्स तथा एंगेल्स सिलक्टड वक्स खंड II, पृ० 288–89
25 लेनिन सिलक्टेड वक्स खंड II पृ० 144
26 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० V
27 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 117–18
28 मार्क्स तथा एंगेल्स सिलक्टेड वक्स खंड II पृ 290
29 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल मेमोयर पृ० 168–80
30 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 138–39
31 लास्की डेमोक्रेसी इन क्राइसिस पृ० 233–43
32 लेनिन सिलेक्टेड वक्स खंड II पृ० 149
33 माओ त्से तुंग सिलेक्टेड वक्स पृ० 106–41
34 मार्क्स तथा एंगेल्स सिलक्टड वक्स खंड II पृ० 292
35 लास्की कम्यनिज्म, पृ० 164–78
36 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 206–7
37 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टट प 161–68
38 लास्की डमोक्रेसी इन क्राइसिस पृ० 129–31
39 लास्की दि स्टेट इन थ्यारी एंड प्रक्टिस पृ० 122–28
40 हबट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की पृ० 197–201
41 लास्की इंट्रोडक्शन टु पालिटिक्स पृ० 17
42 लास्की दि डेंजस आफ बीइंग ए जेंटिलमन पृ० 61
43 लास्की दि अमेरिकन डमोक्रेसी पृ० 30–31

44 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, पृ० VI
45 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस पृ० 101–46
46 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 31
47 वही, पृ० 31–32
48 ज्यार्ज कैटलिन हिस्ट्री आफ पालिटिकल फिलोसफर्स पृ० 661
49 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 174
50 लास्की पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट इन इंगलैंड पृ० 360–87
51 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 175–76
52 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 275–91
53 लास्की स्टडीज इन ला एंड पालिटिक्स पृ० 237–75
54 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस, पृ० 82
55 हबर्ट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की, पृ० 158–59
56 लास्की पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट इन इंगलैंड, पृ० 22 तथा दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, पृ० 242–43
57 लास्की डिलमा आफ अवर टाइम्स पृ० 24–27 और 29–35
58 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म पृ० 11
59 वही पृ० 81–82
60 लास्की पालिटिकल थाट इन इंगलैंड फ्राम लाक टू बेंथम, अध्याय I II और III, पृ० 9–88
61 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म पृ० 145–46
62 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस पृ० 68–99
63 लास्की पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट इन इंगलैंड पृ० 68
64 लास्की डेमोक्रेसी इन क्राइसिस पृ० 49–51
65 लास्की दि अमेरिकन डमोक्रेसी पृ० 17–19
66 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 183–211
67 लास्की रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 41–66
68 लास्की पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट इन इंगलैंड, पृ० 368–442
69 वही पृ० 111–38
70 वही पृ० 71–110
71 लास्की दि अमेरिकन डमोक्रसी, पृ० 230–77

गिरफ्तारी का खतरा उठाता है ।'[11] इसी विचार का विस्तार से विश्लेषण करते हुए वे कहते हैं, 'जब स्वतन्त्रता पर राजनीतिक या आर्थिक प्रहार होते हैं तो उनके उद्देश्य मे, न कि उनके चरित्र मे, अतर होता है । राजनीतिक विचार-धारा का अपन अनुयायियो पर वही प्रभाव होता है जो धम का, मास्को तथा वाशिगटन के पुजारी दो भिन्न प्रतिमाओं की पूजा करत ह पर दोनो की अध भक्ति समान है । आर्थिक प्रणाली भी आत्मरक्षा इसी प्रकार करती है । उग्र मार्क्सवाद के भक्त विरोधियो पर अपन विचार थोपने के अधिकार को कभी सशय की दृष्टि से नही देखत, चाहे इसकी कीमत खून से देनी पडे । अमरीका जैसे सावैधानिक राज्य मे स्वतन्त्रता के दमन को उच्छ खलता का नियन्त्रण कहते ह, मास्को के अधिनायकतन्त्र म इसे गलत बुजुआ विचारा की स्वीकृति के प्रति-रोध की सज्ञा दी जाती है ।'[1]

## अधिकारो की समाजवादी परिकल्पना

लास्की ने अपनी अधिकार सबधी परिकल्पना को प्रस्तुत करने के पहले इस सबध मे अन्य परिकल्पनाओ की आलोचना की है । व इस बात को स्वीकार नही करते कि सभ्यता के उदय के पूव प्राकृतिक अवस्था मे मनुष्यो को नैसर्गिक अधिकार प्राप्त थे जो समय के प्रवाह के साथ लुप्त हो गए । उनका विचार है कि सभ्यता के विकास के साथ-साथ अधिकारा के स्वरूप का विकास हुआ है और आधुनिक लोकतन्त्र मे किसी भी पूववर्ती राजनीतिक प्रणाली की तुलना मे मनुष्यो को अधिक अधिकार प्राप्त हैं । नसर्गिक अधिकारो का सिद्धात सही नही है क्योकि इसके अनुसार अधिकार मनुष्यो के सामाजिक जीवन के विकास के परिणामस्वरूप उत्पन्न नही हुए बल्कि वे तो सामाजिक जीवन शुरू होने के पहले मनुष्य की नसर्गिक व्यवस्था म ही उमे उपलब्ध थे ।[13] अधिकार स्थिर या अपरिवतनशील नही, क्योकि मानव सभ्यता अचल और अपरिवतनशील नही । यदि हम उन्ह नसर्गिक अवस्था की उत्पत्ति मानेंगे तो हमे उनके गति-शील चरित्र को अस्वीकार करना पडेगा । यूनान के नगर-राज्य मे एक स्वतन्त्र नागरिक को दासो को खरीदने और बेचने का अधिकार था । अरस्तू ने इस प्रथा को नसर्गिक सिद्धात पर आधारित माना । आधुनिक काल मे कोई विचारक अरस्तू की भाति दासता की प्रथा को नसर्गिक नही मान सकता ।[14]

जहा तक अधिकारो के वधानिक सिद्धात का प्रश्न है, लास्की उसे केवल विधानशास्त्रीय दृष्टिकोण से ठीक मानता है । राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से यह सिद्धात अपूण है । उनका कथन है, 'यह एक आकषक सिद्धात है, क्योकि न्यायालय राज्य की इच्छा को निर्धारित करते हुए अपना निणय देते हैं, हम जानते हैं कि किन दावो को तुरत स्वीकार किया जाना चाहिए । लेकिन ऐसा शुद्ध वैधानिक दृष्टिकोण राजनीतिक दशन के लिए निरथक है । अधिकारो

# अधिकार और स्वतन्त्रता

लास्की के राजनीतिक चिंतन मे अधिकारो और स्वतत्रता की परिकल्पना का विशेष महत्त्व रहा है। वे अधिकारो के प्रश्नो मे उदारवादी तथा समाजवादी दोनो ही दृष्टिकोण से अभिरुचि रखते हैं। उदारवादी के रूप मे वे वयक्तिक स्वतत्रता के अविरल समथक रहे हैं। समाजवादी के रूप म वे आर्थिक और सामाजिक समानता मे अटूट विश्वास रखते हैं। अपने चिंतन के प्रारभिक चरण मे उनका विचार था कि शासन का विकेंद्रीकरण अधिकारो की सतोष जनक परिकल्पना के लिए एक अनिवाय शत है।[1] अपने चिंतन के समाजवादी चरण मे वे उद्योगो के राष्ट्रीयकरण का समथन करते हैं और उसके द्वारा समाज मे आर्थिक और सामाजिक समानता लाना चाहते हैं जो अब उनके अनु सार अधिकारो की सही परिकल्पना का एक आवश्यक अग है। यह तो स्पष्ट है कि उन्होने कभी भी अधिकारो और स्वतत्रता के परमाणुवादी विश्लेषण को स्वीकार नही किया जो एकाकी व्यक्ति की आत्मपूणता के सिद्धात पर आधारित है। बेंथम, ऐडम स्मिथ और हबट स्पेंसर द्वारा प्रस्तुत नकारात्मक स्वतत्रता की परिकल्पना के वे सदा विरोधी रहे हैं। फि[illegible] तक बौद्धिक स्वाधीनता का प्रश्न है वे [illegible] न मे उतना [illegible] दिखाते हैं जितना जान स्टुअट मिल ने [illegible] वे उदार [illegible] परपराओ मे ग्रीन द्वारा प्रस्तावित [illegible] त पर सहमत हैं कि स्वतत्रता [illegible] अभाव है सही नही [illegible] समथन म [illegible] प्रणाली है [illegible] नाग [illegible] अतगत

[illegible] परि

है और विभिन्न स्रोतो से परस्पर विरोधी विचारो को ग्रहण कर उन्होने अपनी धारणा का निर्माण किया है। प्रारभ मे उन्होने कहा कि स्वतन्त्रता को प्रतिबधो का अभाव नही माना जा सकता परतु 1930 म फासीवाद के बढते हुए प्रभाव के सदभ मे स्वीकार किया कि स्वतन्त्रता वस्तुत प्रतिबधो का अभाव हो है।[4] 1940 मे हाबहाउस ममारियल भाषण देते समय उन्होने इस नकारात्मक परिभाषा को फिर अस्वीकार कर दिया और कहा कि स्वतन्त्रता को प्रतिबधो का अभाव समझना आज के जनकल्याणकारी राज्य के निर्माण के सदभ म उचित नही है।[5] बहुलवादी चरण मे लास्की द्वारा प्रस्तुत 'प्राकृतिक हथियारा स्वतन्त्रता और समानता की परिभाषा आदशवादी मान्यताओ पर आधारित है जो उनके राज्य विरोधी और सामान्यत आदशवाद विरोधी दृष्टिकोणो क अनुकूल नही है।[6] एक ओर वे कहते हैं कि राज्य मनुष्यो के सवतोमुखी विकास का साधन है और इसी कथन म अधिकारो की परिकल्पना सन्निहित है। दूसरी ओर व कहते है कि मनुष्यो के सवतोमुखी विकास के लिए स्वतन्त्र एच्छिक समुदायो की आवश्यकता है, अत राज्य को अपन क्षेत्राधिकार को बहुत सकुचित रखना चाहिए। एक ओर उनका कथन है, हम राज्य के सद्धातिक उद्देश्य से प्रारभ करते है। यह अपने सदस्यो की सदाचार की दिशा मे प्रगति करने की सामथ्य का पूण विकास करना चाहता है। इसका तुरत अभिप्राय स्वतन्त्रता और समानता है।' यह राज्य के उद्देश्य की आदशवादी व्याख्या है किंतु लास्की तो राज्य के स्वरूप को क्रियावादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हुए मानते हैं कि राज्य व्यवहार मे अपने इस तथाकथित उद्देश्य को पूरा करने मे पूणतया असमथ है। वे स्वय कहते है कि मनुष्य के उद्देश्य अनक प्रकार के हैं और समाज मे ऐसे अनक समुदाय है जो 'अपना स्वायत्त जीवन व्यतीत करते हैं और जिनका अस्तित्व उन उद्देश्यो को जिन्ह राज्य पूरा करन म असफल है प्राप्त करना है।'[8] व स्वतन्त्रता की परिभाषा आत्मविकास के अवसर के रूप म करते हैं जो वस्तुत टी० एच० ग्रीन की परिभाषा है। आत्मविकास से लास्की का अभिप्राय मनुष्यो की स्वाभाविक सृजनात्मक प्रवत्तियो के विकास से है। यह टी० एच० ग्रीन द्वारा प्रस्तुत आत्मविकास की परिभाषा मे बिल्कुल भिन्न है क्योकि उनके अनुसार आत्मविकास का अभिप्राय बौद्धिक विश्लेषण द्वारा स्वाभाविक प्रवत्तियो का दमन कर अपन चरित्र को सामाजिक नतिकता के अनुकूल ढालना है। अन हबट डीन लास्की द्वारा स्वतन्त्रता की परिकल्पना को भ्रातिमूलक समझते है क्योकि वे आदशवादी शब्दावली का उपयोग करत हैं परतु उसके आदशवादी अथ को अस्वीकार कर देत है।[9] लास्की द्वारा प्रस्तुत अधिकारो की परिकल्पना मे तथाकथित असगतियो का एक कारण उनके उद्धरणो को सदभ से काटकर प्रस्तुत करना है। पूजीवादी लोकतन्त्र के सदभ म स्वतन्त्रता को प्रतिबधो का अभाव मानना जनकल्याणकारी और समाजवादियो

# अधिकार और स्वतंत्रता

लास्की के राजनीतिक चिंतन म अधिकारो और स्वतंत्रता की परिकल्पना का विशेष महत्व रहा है। वे अधिकारा के प्रश्नो मे उदारवादी तथा समाजवादी दोनो ही दृष्टिकोण से अभिरुचि रखते हैं। उदारवादी के रूप मे वे वयक्तिक स्वतंत्रता के अविरल समथक रहे हैं। समाजवादी के रूप म वे आर्थिक और सामाजिक समानता मे अटूट विश्वास रखते हैं। अपने चिंता के प्रारंभिक चरण मे उनका विचार था कि शासा का विकेंद्रीकरण अधिकारो की सतोष जनक परिकल्पना के लिए एक अनिवाय शत है।[1] अपने चिंतन के समाजवादी चरण मे वे उद्योगो के राष्ट्रीयकरण का समथन करते हैं और उसके द्वारा समाज मे आर्थिक और सामाजिक समानता लाना चाहते हैं जो अब उनके अनुसार अधिकारा की सही परिकल्पना का एक आवश्यक अग है। यह तो स्पष्ट है कि उन्होंने कभी भी अधिकारो और स्वतंत्रता के परमाणुवादी विश्लेषण को स्वीकार नही किया जो एकाकी व्यक्ति की आत्मपूणता के सिद्धात पर आधारित है। बेंथम, ऐडम स्मिथ और हबट स्पसर द्वारा प्रस्तुत नकारात्मक स्वतंत्रता की परिकल्पना के वे सदा विरोधी रहे हैं। फिर भी जहा तक बौद्धिक स्वाधीनता का प्रश्न है व उसके समथन मे उतना ही उत्साह दिखाते हैं जितना जान स्टुअट मिल ने दिखाया था। वे उदारवाद की वयक्तिक परपराओ मे ग्रीन द्वारा प्रस्तावित नवीनताओ का स्वागत करते हैं और उनसे इस बात पर सहमत हैं कि स्वतंत्रता की नकारात्मक परिभाषा, कि यह प्रतिबधो का अभाव है सही नही है। परतु वे टी० एच० ग्रीन द्वारा प्रस्तुत निजी सपत्ति के समथन मे सहमत नही हैं। वस्तुत लास्की का विचार है कि पूजीवाद एसी प्रणाली है जिसका आधार भेदभावपूण विशेषाधिकारो की व्यवस्था है। इसमे सभी नागरिका के समान अधिकार नही है। केवल समाजवादी प्रणाली के अतगत अधिकारों की सही परिकल्पना को कार्यान्वित किया जा सकता है।[2]

हबट डीन का आरोप है कि लास्की द्वारा प्रस्तुत अधिकारो और स्वतंत्रता की परिकल्पना मे तार्किक सामजस्य नही है। उनके वक्तव्यो मे अतर्विरोध

है और विभिन्न स्रोतो से परस्पर विरोधी विचारो को ग्रहण कर उन्होंने अपनी धारणा का निर्माण किया है। प्रारम्भ मे उन्होने कहा कि स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धो का अभाव नही माना जा सकता परतु 1930 मे फासीवाद के बढते हुए प्रभाव के सदभ म स्वीकार किया कि स्वतन्त्रता वस्तुत प्रतिबधो का अभाव ही है।[4] 1940 म हाबहाउस मेमोरियल भाषण देते समय उन्होने इस नकारात्मक परिभाषा को फिर अस्वीकार कर दिया और कहा कि स्वतन्त्रता का प्रतिबधो का अभाव समझना आज के जनकल्याणकारी राज्य के निर्माण के सदभ म उचित नही है।[5] बहुलवादी चरण म लास्की द्वारा प्रस्तुत 'प्राकृतिक हथियारो स्वतन्त्रता और समानता की परिभाषा आदशवादी मान्यताओ पर आधारित है जो उनके राज्य विरोधी और सामान्यत आदशवाद विरोधी दृष्टिकोणो के अनुकूल नही है।[6] एक ओर वे कहते हैं कि राज्य मनुष्यो के सवतोमुखी विकास का साधन है और इसी कथन मे अधिकारो की परिकल्पना सन्निहित है। दूसरी ओर वे कहते हैं कि मनुष्यो के सवतोमुखी विकास के लिए स्वतन्त्र एच्छिक समुदायो की आवश्यकता है, अत राज्य को अपने क्षेत्राधिकार को बहुत सकुचित रखना चाहिए। एक ओर उनका कथन है, 'हम राज्य के सद्धान्तिक उद्देश्य से प्रारभ करते हैं। यह अपने सदस्यो की सदाचार की दिशा म प्रगति करने का सामर्थ्य का पूण विकास करना चाहता है। इसका तुरत अभिप्राय स्वतन्त्रता और समानता है।' यह राज्य के उद्देश्य की आदशवादी व्याख्या है किंतु लास्की तो राज्य के स्वरूप को क्रियावादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हुए मानते हैं कि राज्य व्यवहार म अपने इस तथाकथित उद्देश्य को पूरा करने मे पूणतया असमथ है। वे स्वय कहते हे कि मनुष्य के उद्देश्य अनेक प्रकार के हैं और समाज म ऐसे अनेक समुदाय हैं जो 'अपना स्वायत्त जीवन व्यतीत करते हैं और जिनका अस्तित्व उन उद्देश्यो को, जिन्हे राज्य पूरा करने मे असफल है प्राप्त करना है।[8] वे स्वतन्त्रता की परिभाषा आत्मविकास के अवसर के रूप मे करते हैं जो वस्तुत टी० एच० ग्रीन की परिभाषा है। आत्मविकास से लास्की का अभिप्राय मनुष्यो की स्वाभाविक सृजनात्मक प्रवृत्तियो के विकास से है। यह टी० एच० ग्रीन द्वारा प्रस्तुत आत्मविकास की परिभाषा से बिलकुल भिन्न है क्योकि उनके अनुसार आत्मविकास का अभिप्राय बौद्धिक विश्लेषण द्वारा स्वाभाविक प्रवृत्तियो का दमन कर अपने चरित्र को सामाजिक नैतिकता के अनुकूल ढालना है। अत हबट डीन लास्की द्वारा स्वतन्त्रता की परिकल्पना को भ्रांतिमूलक समझते हैं क्योकि वे आदशवादी शब्दावली का उपयोग करते हैं परतु उसके आदशवादी अथ को अस्वीकार कर देते है।[9] लास्की द्वारा प्रस्तुत अधिकारो की परिकल्पना मे तथाकथित असगतियो का एक कारण उनके उद्धरणो को सदभ से काटकर प्रस्तुत करना है। पूजीवादी लोकतन्त्र के सदभ म स्वतन्त्रता को प्रतिबधो का अभाव मानना जनकल्याणकारी और समाजवादियो

गिरफ्तारी का खतरा उठाता है।"[11] इसी विचार का विस्तार से विश्लेषण करते हुए वे कहते हैं, 'जब स्वतन्त्रता पर राजनीतिक या आर्थिक प्रहार होते हैं तो उनके उद्देश्य मे, न कि उनके चरित्र मे, अतर होता है। राजनीतिक विचार धारा का अपने अनुयायियो पर वही प्रभाव होता है जो धम का, मास्को तथा वाशिंगटन के पुजारी दो भिन्न प्रतिमाओ की पूजा करत है पर दोनो की श्रध भक्ति समान है। आर्थिक प्रणाली भी आत्मरक्षा इसी प्रकार करती है। उग्र मार्क्सवाद के भक्त विरोधियो पर अपन विचार थोपने के अधिकार को कभी सशय की दृष्टि से नही दखते, चाहे इसकी कीमत खून से देनी पडे। अमरीका जसे सावैधानिक राज्य मे स्वतन्त्रता के दमन को उच्छ खलता या नियन्त्रण कहत हैं, मास्को के अधिनायकतन्त्र मे इसे गलत बुर्जुआ विचारो की स्वीकृति के प्रति रोध की सजा दी जाती है।[1]

## अधिकारो की समाजवादी परिकल्पना

लास्की ने अपनी अधिकार सबधी परिकल्पना को प्रस्तुत करने के पहले इस सबध मे अन्य परिकल्पनाओ की आलोचना की है। वे इस बात को स्वीकार नही करते कि सभ्यता के उदय के पूव प्राकृतिक अवस्था मे मनुष्यो को नैसर्गिक अधिकार प्राप्त थे जो समय के प्रवाह के साथ लुप्त हो गए। उनका विचार है कि सभ्यता के विकास के साथ-साथ अधिकारो के स्वरूप का विकास हुआ है और आधुनिक लोकतन्त्र म किसी भी पूववर्ती राजनीतिक प्रणाली की तुलना मे मनुष्यो को अधिक अधिकार प्राप्त हैं। नैसर्गिक अधिकारो का सिद्धात सही नही है क्योकि इसके अनुसार अधिकार मनुष्यो के सामाजिक जीवन के विकास के परिणामस्वरूप उत्पन्न नही हुए बल्कि वे तो सामाजिक जीवन शुरू होने के पहले मनुष्य की नैसर्गिक व्यवस्था मे ही उसे उपलब्ध थे।[13] अधिकार स्थिर या अपरिवतनशील नही, क्योकि मानव सभ्यता अचल और अपरिवतनशील नही। यदि हम उन्हे नैसर्गिक अवस्था की उत्पत्ति मानेंगे तो हमे उनके गतिशील चरित्र को अस्वीकार करना पडेगा। यूनान के नगर-राज्य मे एक स्वतन्त्र नागरिक को दासो को खरीदने और बेचने का अधिकार था। अरस्तू न इस प्रथा को नैसर्गिक सिद्धात पर आधारित माना। आधुनिक काल मे कोई विचारक अरस्तू की भाति दासता की प्रथा को नैसर्गिक नही मान सकता।[14]

जहा तक अधिकारो के वैधानिक सिद्धात का प्रश्न है, लास्की उसे केवल विधानशास्त्रीय दृष्टिकोण से ठीक मानता है। राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से यह सिद्धात अपूण है। उनका कथन है, 'यह एक आवश्यक सिद्धात है, क्योकि न्यायालय राज्य की इच्छा को निर्धारित करते हुए अपना निर्णय देते हैं हम जानते हैं कि किन दावो को तुरत स्वीकार किया जाना चाहिए। लेकिन ऐसा शुद्ध वैधानिक दृष्टिकोण राजनीतिक दर्शन के लिए निरर्थक है। अधिकारो

की नीतियो की स्वीकृति मे बाधक है । अत इस सदभ मे व उसकी नकारात्मक परिभाषा की आलोचना करते है। 1920 तथा 1940 म लास्की ने उपयुक्त स्वतत्रता की परिभाषा इगलड के राजनीतिक लोकतत्र के सदभ मे प्रस्तुत की है । 1930 म लास्की ने स्वतत्रता की नकारात्मक परिभाषा पर बल फासी वादी अधिनायकतत्र मे सभी प्रकार की स्वतत्रताओ के दमन के सदभ म दिया है ।

लास्की के हृदय म स्वतत्रता के प्रति असीम मोह है जिसका आधार बौद्धिक ही नही, भावात्मक भी है । वे नकारात्मक राजनीतिक और वधानिक स्वतत्रता के सदा समथक रहे है और सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक स्वतत्रता की निरतर माग करते रहे हैं । एक के बिना दूसरी स्वतत्रता अपूण है । उदारवादी राज्य के सदभ मे वे सकारात्मक स्वतत्रता पर बल देते हैं और समग्रवादी अधिनायकतत्र के सदभ मे वे उसके नकारात्मक रूप के महत्व की ओर ध्यान दिलाते हैं । लास्की का अधिकारो के प्रति आकषण उनके द्वारा प्रस्तुत फासिस्ट सिद्धात की आलोचना से स्पष्ट हो जाता है । व फासीवाद की निंदा इसलिए करते हैं कि उसमे नागरिक स्वतत्रताओ का हनन कर दिया जाता है । वे फासिस्ट तानाशाह की तुलना जल्लाद से करते हैं जो अपने देश की असामान्य परिस्थितियो द्वारा सत्ता पर अधिकार कर लेता है । उनका कथन है, मानव स्वभाव के प्रति उनके दृष्टिकोण का परिचय मुसोलिनी के इस कथन से होता है कि 'स्वतत्रता एक सडी हुई लाश' है । वे उसका सम्मान नही करते, वे उसके द्वारा आत्मविकास की सभावना को अस्वीकार करते हैं । उनका विश्वास है कि जनता भेडो का रेवड है जिसका उपयोग वे निर्धारित उद्देश्यो के लिए करते हैं । वे ऐसे विश्वास और अभिलाषा के जो उनकी सत्ता के अधिकार को चुनौती दे औचित्य से इकार करते है । उनका आग्रह है कि लोग दासो की तरह उनकी आज्ञा का पालन करें जिसका अच्छे से अच्छा नतीजा उन्हें धूत और चापलूस बनाना है । बुरे से बुरा परिणाम आत्मगौरव की भावना का ह्रास तथा उनकी निदयता का अनुकरण है ।'[10] लास्की का विचार है कि जो शासन प्रणाली नागरिको के अधिकारो का हनन करती है वह मनुष्यो को यत्रचालित पुतला मे परिवर्तित कर देती है । अत मानव के व्यक्तित्व के सही विकास के लिए अधिकारो का सुलभ होना एक अनिवाय शत है ।

आधुनिक युग मे अधिकारो की परिकल्पना के अस्तित्व के लिए फासीवाद ही एकमात्र खतरा नही है । स्वतत्रता जो वस्तुत अधिकारो का मूल तत्त्व है, न तो अमरीका जसे पूजीवादी लोकतत्र म और न रूस जैसे समाजवादी अधि नायकतत्र मे पूणत सुरक्षित है । उनका कथन है 'राष्ट्रो के एक गुट मे साम्य वादी का दैनिक जीवन चारो ओर खतरे से घिरा हुआ होता है, दूसरे गुट में जो नागरिक साम्यवादी जीवन पद्धति को अस्वीकार करता है, वह मौन या

गिरफ्तारी का खतरा उठाता है।'[11] इसी विचार का विस्तार से विश्लेषण करते हुए वे कहते हैं, 'जब स्वतन्त्रता पर राजनीतिक या आर्थिक प्रहार होते हैं तो उनके उद्देश्य मे, न कि उनके चरित्र मे, अतर होता है। राजनीतिक विचार धारा का अपने अनुयायियो पर वही प्रभाव होता है जो धम का, मास्को तथा वाशिंगटन के पुजारी दो भिन्न प्रतिमाओं की पूजा करते ह पर दोनो की श्रध-भक्ति समान है। आर्थिक प्रणाली भी आत्मरक्षा इसी प्रकार करती है। उग्र मार्क्सवाद के भक्त विरोधियो पर अपने विचार थोपने के अधिकार को कभी सशय की दृष्टि से नही दखते, चाहे इसकी कीमत खून से देनी पडे। अमरीका जैसे साविधानिक राज्य म स्वतन्त्रता के दमन को उच्छ खलता या नियन्त्रण कहत हैं, मास्को के अधिनायकतन्त्र म इसे गलत बुर्जुआ विचारो की स्वीकृति के प्रति रोध की सज्ञा दी जाती है।'[1]

## अधिकारो की समाजवादी परिकल्पना

लास्की ने अपनी अधिकार सबधी परिकल्पना को प्रस्तुत करने के पहले इस सबध मे अन्य परिकल्पनाओं की आलोचना की है। वे इस बात को स्वीकार नही करते कि सभ्यता के उदय के पूव प्राकृतिक अवस्था मे मनुष्यो को नर्सगिक अधिकार प्राप्त थे जो समय के प्रवाह के साथ लुप्त हो गए। उनका विचार है कि सभ्यता के विकास के साथ साथ अधिकारो के स्वरूप का विकास हुआ है और आधुनिक लोकतन्त्र मे किसी भी पूववर्ती राजनीतिक प्रणाली की तुलना मे मनुष्यो को अधिक अधिकार प्राप्त हैं। नैसर्गिक अधिकारो का सिद्धात सही नही है क्योकि इसके अनुसार अधिकार मनुष्यो के सामाजिक जीवन के विकास के परिणामस्वरूप उत्पन्न नही हुए बल्कि वे तो सामाजिक जीवन शुरू होने के पहले मनुष्य की नैसर्गिक व्यवस्था मे ही उसे उपलब्ध थे।[13] अधिकार स्थिर या अपरिवतनशील नही क्योकि मानव सभ्यता अचल और अपरिवतनशील नही। यदि हम उन्हें नैसर्गिक अवस्था की उत्पत्ति मानेंगे तो हमे उनके गति-शील चरित्र को अस्वीकार करना पडेगा। यूनान के नगर राज्य मे एक स्वतन्त्र नागरिक को दासो को खरीदने और बेचने का अधिकार था। अरस्तू ने इस प्रथा को नर्सगिक सिद्धात पर आधारित माना। आधुनिक काल मे कोई विचारक अरस्तू की भाति दासता की प्रथा को नैसर्गिक नही मान सकता।[14]

जहा तक अधिकारो के वधानिक सिद्धात का प्रश्न है लास्की उसे केवल विधानशास्त्रीय दृष्टिकोण से ठीक मानता है। राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से यह सिद्धात अपूण है। उनका कथन है, 'यह एक आवश्यक सिद्धात है, क्योकि न्यायालय राज्य की इच्छा को निर्धारित करते हुए अपना निणय देते हैं हम जानते है कि किन दावो को तुरत स्वीकार किया जाना चाहिए। लेकिन ऐसा शुद्ध वधानिक दृष्टिकोण राजनीतिक दशन के लिए निरथक है। अधिकारो

का वैधानिक सिद्धात हमे राज्य के वास्तविक चरित्र के विषय मे तो बता सकता है परतु किसी विशेष राज्य की बात छोडकर जिसके विषय मे हम निणय देना चाहें, हमे यह यह नही बता सकता कि किन अधिकारा का नैतिक औचित्य के आधार पर स्वीकार किया जाना चाहिए।'[15] कानून अधिकारा का सजन नही करता, वह किसी विशेष वधानिक व्यवस्था के लिए उनकी परिभाषा करता है और उन्हें स्वीकृति देता है। अत लास्की हाब्स और आस्टिन के इस मत से सहमत नही कि अधिकार सप्रभु की इच्छा से उत्पन्न हात हैं। आस्टिन के विचार मे इतनी सचाई अवश्य है कि अधिकारा की व्यावहारिक उपयोगिता सप्रभु की स्वीकृति पर ही निभर है। सप्रभु की स्वीकृति के अभाव म अधिकार केवल समाज के उदार विचारकों की नतिक आकाक्षाए मात्र हैं।

लास्की का कथन है कि अधिकार वस्तुत वे सामाजिक परिस्थितिया हैं जिनके द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का आत्मविकास होता है। अधिकारा का स्रोत अनिवाय रूप से नैतिकता है। अधिकारो की सतोषजनक व्यवस्था का लक्ष्य मनुष्यो को नतिक विकास का अवसर प्रदान करना है।'[16] लास्की का कथन है, 'अधिकारो की उपलब्धि का अथ ऐसे दावो की पूर्ति नही जिनके बदले म कोई कत्तव्य न हो। हमे अपने व्यक्तित्व की रक्षा और अभिव्यक्ति का अधिकार है। हमे सामाजिक शक्तियों के कठोर दबाव के बावजूद अपनी विशेषता को सुरक्षित रखने का अधिकार है। लेकिन हमारे अधिकार समाज से असबद्ध नही है। हम ये अधिकार राज्य के सदस्य के रूप मे ही मिले हैं। हम य उस सगठन के द्वारा मिले हैं जिसके माध्यम से हम इस दुनिया मे अपनी विशेष प्रतिभा का योगदान देते ह। हमारे अधिकार समाज मे सन्निहित हैं, उससे स्वतत्र नही।'[17] इस प्रकार अधिकारो के दो लक्ष्य है। सवप्रथम उनका लक्ष्य मनुष्य के व्यक्तित्व को ऊचा उठाना है। उनका दूसरा लक्ष्य सामाजिक अखडता और सामूहिक उन्नति के लिए व्यक्तियो को अपना विशेष दायित्व निभाने के लिए तैयार करना है।

हमे यह ध्यान मे रखना चाहिए कि लास्की अधिकारा की चर्चा म केवल उदारवादी और व्यक्तिवादी राजनीतिक प्रणाली मे स्वीकृत अधिकारो की ही बात नही करते। उनके मत के अनुसार अधिकारो का व्यक्तिवादी सिद्धात वतमान युग की परिस्थितियो के अनुकूल नही है। अत वे हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे नए समाजवादी मूल्यो की स्वीकृति चाहते है। लास्की का कथन है, 'हमारी राजनीतिक प्रणाली का पतन इसलिए हुआ है, क्योंकि यह अपनी पुरातन मान्यताओ को त्यागकर उससे भिन्न नई भावनाओ को स्वीकार करने मे असफल रहा है। यह नई भावना कुछ नए मूल्यो को जन्म देती है और पुराने स्तर से भिन्न अधिकारा के नए स्तर को प्रस्तुत करती है। अपनी पूववर्ती प्रणाली की तरह यह भी एकता म विविधता की अभिलाषा

रखती है, व्यवस्था और स्वतन्त्रता के बीच एक नए सतुलन की खोज करती है। अपनी पूववर्ती प्रणाली की भाति यह भी मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के साधना को जुटाना चाहती है। लेकिन अपने उद्देश्यो को प्राप्त करने की इसकी पद्धति पूववर्ती प्रणाली से सवथा भिन्न है।'[18]

अत लास्की का कथन है कि हमे बदली हुई सामाजिक परिस्थितियो और मूल्या के सदभ मे अधिकारो की परिभाषा के लिए एक नया आधार ढूढना चाहिए।[19] उनका विचार है, 'पूजीवादी लोकतन्त्र मे जो त्रुटि सनिहित थी वह सामाजिक जीवन के सबध म उसकी परमाणुवादी परिकल्पना है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस त्रुटि का कारण समझ मे आता है। यह वैयक्तिक व्यवहार पर उन नियत्रणा के विरुद्ध प्रतिवाद था, जि है एक सकुचित वगतत्र के नाम पर बिना किसी सद्धातिक तक के लगाया गया था। इसके द्वारा सत्ता के प्रयोग ने सरकार को ही एक आवश्यक बुराई बना दिया। यह तक दिया गया कि इसका क्षेत्र जितना अधिक सीमित होगा, नागरिका की स्वतत्रता की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।'[20] वस्तुत राज्य की क्रियाओ और वैयक्तिक अधिकारो की प्रतिकूलता का सिद्धात, जिसका प्रचार उदारवादियो ने किया, समाज और व्यक्ति के सबधा की गलत धारणा पर आधारित था।'[1]

जब उदारवादी लेखक वैयक्तिक स्वतन्त्रता का आग्रह कर रहे थे तो वे अबध-नीति (Laissez Faire) पर आधारित अथव्यवस्था के सद्धातिक औचित्य को सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे। लास्की का कथन है, 'उदारवादी राज्य, यद्यपि यह सामाजिक स्वतन्त्रता के विस्तार मे निश्चित रूप से सहायक सिद्ध हुआ, वास्तव म दो विशेपाधिकार प्राप्त श्रेणिया का स्थान परिवतन मात्र था। राजनीतिक स्वतत्रता और सामाजिक समानता के सयोग की अस्वीकृति के इसके लिए गभीर परिणाम निकले। इसने सत्ता ऐसी जाति के मनुष्या को सौंप दी जिनकी सदाचार की धारणा भौतिक उन्नति को नागरिकता के गुणो का पर्यायवाची मानती थी। निजी हिता का सघष जिसकी चचा सर हनरी मेन ने की थी, उनकी दृष्टि मे नैतिक रूप से लाभदायक थी। उन्होने वास्तविक आर्थिक माग को नैतिक मान लिया। उन्होंने तक दिया कि दुबला का नाश प्रकृति का नियम है, जिसमे हस्तक्षेप करना हमारे लिए ही सकटकारी होगा।'[2] इस प्रकार स्वतन्त्रता का दायरा शासक पूजीपति वग तक सीमित कर दिया गया और मेहनतकश इसानो को व्यावहारिक रूप से कोई अधिकार नही मिले।[3]

लास्की का विचार है, 'उदारवादी राज्य के प्रारभ मे समाज मे थोडे से लोग धनी थे और बहुत से लोग निधन थे, इसके अत मे भी यही दशा थी कि थोडे से लोग धनी थे और अधिकाश गरीब थे। इस परिस्थिति का इसके द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण मुश्किल से ही सतोपजनक था। कोई यह स्वीकार करने के लिए

तयार न था कि अमीर और गरीब का अतर योग्यता या नतिक श्रेष्ठता पर आधारित था। यदि धन की मात्रा कम थी, तो भी उसे अधिकतम सामाजिक लाभ का ध्यान मे रखते हुए सभी व्यक्तियो मे समान रूप से क्यो नही बाट दिया जाता।'[24] पूजीवादी लोकतन्त्र के विरुद्ध लास्की का आरोप है कि यह सामाजिक और आर्थिक समानता की स्थापना मे असफल रहा है।

पूजीवादी लोकतन्त्र मे सामाजिक और आर्थिक विषमताओ के कारण समाज के विभिन्न वर्गों के सदस्यो के अधिकारो की मात्रा मे अतर हो जाता है। समाज मे परिश्रम और लाभ का न्यायोचित बटवारा नही है। यह ठीक है कि आज व्यक्तित्व के विकास के साधन पहले से अधिक सुलभ हैं, फिर भी सजनात्मक कार्यों से सुख की उपलब्धि का अवसर बहुत कम लोगो को मिलता है। राज्य विभिन्न श्रेणियो के नागरिको मे अधिकारो की मात्रा के वितरण म सदा पक्षपात की भावना से काय करता है। यह सभी सदस्यो को निष्पक्ष न्याय नही देता। इसके निणय शासक वग के विशेषाधिकारो का समथन करते हैं। यह अन्यायपूण परपरा को भी वधानिक औचित्य प्रदान करता है। यह समाज मे विद्या और आर्थिक शक्ति का न्यायोचित या समान वितरण नही करता। स्वतत्रता के पारपरिक विचार जनता को कोई लाभ नही पहुचाते। समाज के धन की वृद्धि होती है पर यह निधन लोगो की आवश्यकताओ की पूर्ति नही कर सकता। हमारे ज्ञान मे क्रातिकारी विकास हुआ है परतु मानव जाति की बौद्धिक विरासत तक एक सीमित वग की ही पहुच है।[5]

यह एक ऐतिहासिक निष्कष है कि धनवानो का शासन, चाहे वह जमींदारो का हो, चाहे पूजीपतियो का, धन के एक छोटे से वग म सचय को बढ़ावा देता है। राज्य मे अधिकारो की व्यवस्था इस बात से निधारित होती है कि समाज धनवानो और दरिद्रो की दो श्रेणियो म बटा हुआ है। धनवानो के लिए जिस सुरक्षा, व्यवस्था और स्वतत्रता का प्रबध है, उसी का परिणाम निधन के लिए असुरक्षा, पराधीनता और अव्यवस्था है। अत अधिकारो की सही परिकल्पना के लिए समानता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था, जिसमे श्रेणी विशेषाधिकारो का उन्मूलन कर दिया गया हो अत्यत आवश्यक है।[6] अत पूजीवादी लोकतन्त्र के विरुद्ध लास्की का मुख्य आरोप उसके द्वारा स्थापित निजी सपत्ति के अधिकारो की व्यवस्था है। इगलैंड के ससदीय शासन का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए उनका कथन है कि वैयक्तिक सपत्ति के अधिकारो की पवित्रता और अलघनीयता की परिकल्पना वतमान युग की आवश्यकताओ के सदभ म बहुत हानिकारक है। इगलैंड की राजनीतिक प्रणाली उत्पादन के साधनो म भी वैयक्तिक सपत्ति को मान्यता देती है। इस मान्यता को कानून सहिता का अविरल समथन प्राप्त है। इगलड के विधानशास्त्र की सभी शाखाए व्यक्तिवाद की भावना से ओतप्रोत है। न्यायालयो से अपेक्षा की जाती

है कि जब तक ससद का कोई विपरीत अधिनियम न हो, सपत्ति के अधिकारो की पूणत रक्षा की जाए। इन अधिकारो का आधार बीसवी सदी के समष्टिवादी और समाजवादी सिद्धात न होकर सत्रहवी सदी से उन्नीसवी सदी तक प्रचलित उदारवादी परमाणुवादी धारणाए है। जिन्होने ये धारणाए प्रस्तुत की, उनका आग्रह था कि बुर्जुआ वग की विजय के साथ साथ क्रातिकारी परिवतनो के दिन भी लद गए है। लास्की का विचार है कि वैयक्तिक सपत्ति के अधिकारो मे मौलिक और क्रातिकारी परिवतन की तुरत आवश्यकता है। [7]

हमे इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि पूजीवादी लोकतत्र मे न्याय प्रणाली किस प्रकार निजी सपत्ति के अधिकारा की रक्षा के लिए तत्पर रहती है। सयुक्त राज्य अमरीका की न्याय प्रणाली मे श्रमजीवियो और न्यायालया के आपसी सबधो के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वहा वैयक्तिक सपत्ति के पारपरिक अधिकारो को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। गहयुद्ध के पूव यह हैमिल्टन, माशल, वेब्सटर, टैनी, स्टोरी और चासलर केण्ट के विचारो और निणयो मे स्पष्ट कर दिया गया था। उसके बाद भी अन्य न्यायाधीशा ने उनके विचारो को ही दोहराया। जान ऐडम्स के मत को कि असमान सपत्ति उदारवादी सस्थानो का अनिवाय नतीजा है, न्यायाधीशा के द्वारा व्यापक समथन मिला है। एक बार इस सिद्धात को मान्यता दे दी जाए तो उसके परिणामस्वरूप यह तक प्रस्तुत किया जाएगा कि ऐसे कानून, जो सपत्ति के असमान वितरण म हस्तक्षेप द्वारा आर्थिक समानता लाने का प्रयास करें राष्ट्र की शाति और स्थिरता को भग करते हैं। इसका मुख्य तरीका 'उचित विधि प्रक्रिया (due process of law) का आश्रय लेना है जिसका अथ यह नहो कि एक साधारण विवेकशील मनुष्य किस बात को न्यायोचित मानता है। यह एक तरीका है जिसके द्वारा धनी वग की सचित सपत्ति की रक्षा की जाती है अर्थात केवल वे कानून उचित हैं जो निजी सपत्ति की रक्षा करें और जो कानून उसम बाधा डालें, अनुचित ह। लास्की का कथन है 'उचित विधि प्रक्रिया एक माग नही है बल्कि एक द्वार है, और समाज के साधारण आदमिया का उसम प्रवेश निषिद्ध है। यह थोडे से लोगा के भूतकालीन वैधानिक अधिकारो की बहुत से लोगा के वतमान कानूनी दावो से रक्षा करने का एक उपाय है।' [8] उचित विधि प्रक्रिया नियम के अतगत दिए गए निणया मे सिद्ध होता है कि पूजीवादी राज्यो की न्याय प्रणाली अधिकारो की सही व्याख्या करन मे असमथ है। पूजीवादी समाज मे कानून सहिता और न्याय प्रक्रिया मिलकर साधारण मनुष्या के अधिकारा की रक्षा करने के बजाय पूजीपति वग के विशेषाधिकारा की रक्षा करने मे ही तत्पर रहती हैं। [9]

## मूल अधिकार और स्वतन्त्रता

लास्की द्वारा प्रस्तुत अधिकारों की परिकल्पना को अधिक स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि उनके द्वारा प्रस्तावित मूल अधिकारों की एक झलक ले ली जाए। इन मूल अधिकारों के तीन विशेष रूप हैं। सर्वप्रथम वे अधिकार हैं जो व्यक्ति या नागरिक समाज से संबंध निर्धारित करते हैं। दूसरी श्रेणी में वे अधिकार हैं जो स्वतन्त्रता की भावना पर आधारित हैं और स्वतन्त्रता और समानता के विचारों का पारस्परिक संबंध स्थिर करते हैं। अंत में वे अधिकार हैं जो पूर्ववर्ती अधिकारों की उपलब्धि के लिए राजनीतिक प्रणाली में जरूरी परिवर्तन पर बल देते हैं और राजनीतिक संस्थानों का चरित्र निर्धारित करते हैं। लास्की का विश्वास है कि इन अधिकारों का और उन पर निर्भर नागरिक के व्यक्तित्व को राज्य रूपी निगम में समाविष्ट नहीं किया जा सकता। अतः *नागरिकों के अधिकार ऐसे वैयक्तिक दावे हैं जिनका प्रयोग राज्य के प्रतिरोध के लिए भी संभव है।*[30] उनका विचार है कि राज्य द्वारा स्वीकृत अधिकारों की प्रणाली ही स्वतन्त्रता की भावना को जन्म देती है और उसे विकसित करती है। उनका निष्कर्ष है कि स्वतन्त्रता के उचित विकास के लिए समानता के सिद्धांत की स्वीकृति आवश्यक है। अतः वे ऐसी राजनीतिक प्रणाली चाहते हैं जो 'आंग्ल सक्शन' राजनीतिक लोकतन्त्र के उदारवादी अधिकारों का साम्यवादी प्रणाली के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों से न्यायोचित समन्वय कर सके।[31]

वे अपनी पुस्तक 'राजनीति का एक व्याकरण' में जिस अधिकार की सर्वप्रथम चर्चा करते है, वह है कार्य का अधिकार। उनकी दृष्टि में यह *नागरिक का सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकार है। उनका कथन है,* 'नागरिक को कार्य का अधिकार है। वह ऐसे संसार में पैदा हुआ है जिसे यदि विवेक के आधार पर संगठित किया जाए, तो वह केवल अपने परिश्रम द्वारा ही जीविका कमा सकता है। समाज का कर्त्तव्य है कि वह उसे कार्य के लिए अवसर दे। उसे जीविका कमाने के साधन से वंचित करने का अर्थ उसके व्यक्तित्व के विकास को अवरुद्ध करना है।'[32] कार्य के अधिकार का अभिप्राय है कि बेकारी के विरुद्ध एक राष्ट्रीय बीमा प्रणाली प्रारंभ की जाए। इसका यह तात्पर्य भी है कि संपूर्ण जनता के उत्पादक श्रम के उपयोग के लिए आर्थिक योजनाएं शुरू की जाए।[33] इसी प्रकार कार्य के अधिकार में ऐसे न्यूनतम वेतन पाने का अधिकार भी सम्मिलित है जो नागरिक की न केवल आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके बल्कि विवेकपूर्ण अवकाश और सुख का जीवन बिताने के लिए उसे सुविधाएं दे। लास्की का कथन है, 'आज के संसार में एक ओर ऐसे स्त्री पुरुष हैं जिन्हें साफ-सुथरा घर, पेटभर खाना और तन ढकने को कपड़ा नसीब नहीं

होता और दूसरी ओर ऐसे भाग्यवान है जिनके पास अपनी मागों की सतुष्टि के लिए अतुल सपत्ति है। इन दा श्रेणियो का विलोम एक असहनीय परिस्थिति है।'[34]

लास्की का विचार है कि विज्ञान की उन्नति के सदभ मे काय के अधिकार की उपलब्धि असभव नही है। यदि इसकी प्राप्ति म पूजीवादी व्यवस्था बाधक है तो हमे उसके स्थान पर समाजवादी प्रणाली अपना लेनी चाहिए। सोवियत रूस के उदाहरण से स्पष्ट है कि समाजवादी अथव्यवस्था अपने सभी नागरिको को उपयोगी काय देने और उनका जीवन स्तर उठाने मे पूणत समथ हुई है।[35] इस सबध मे लास्की का कथन है कि या तो राज्य नागरिको के हित मे औद्योगिक शक्ति का नियत्रण करे, नही तो औद्योगिक शक्ति अपने मालिको के हित मे राज्य पर नियत्रण करेगी। साधारण जनो की पहली आवश्यकता उन्हे उनके श्रम के उचित मूल्य का अधिकार दिलाना है। अत औद्योगिक सगठन का पहला सिद्धात ऐसे सस्थानो की व्यवस्था करना है जो उपयुक्त उद्देश्य को पूरा कर सकें।[36] अत मे काय के अधिकार का निष्कष समानातर रूप से अवकाश का अधिकार है। समाज के सभी वर्गो के सदस्यो मे काय और अवकाश का न्यायोचित बटवारा होना चाहिए। समाज मे ऐसी दो श्रेणिया नही होनी चाहिए कि एक श्रेणी केवल श्रम करे और दूसरी श्रेणी उसके श्रम का शोषण कर अवकाश और आराम का जीवन बिताए।

दूसरा महत्त्वपूण अधिकार शिक्षा का अधिकार है। उचित मानसिक विकास के अभाव म नागरिक समाज के प्रति अपने व्यक्तित्व द्वारा समुचित योगदान नही दे सकता। केवल साक्षरता काफी नही है। प्रत्येक नागरिक को मानव सभ्यता म अपनी स्थिति समझने के लिए साहित्य, विज्ञान और कलाओ की उपलब्धियो से परिचित होना चाहिए। अमरीका जसे विकसित पूजीवादी लोकतत्र मे, कम से कम लास्की के जीवन काल म, बहुत से साधारण मनुष्य शिक्षा के इस मौलिक अधिकार से वचित रहे है।[37] लास्की का विचार है, 'आधुनिक राज्य मे इसके अतिरिक्त कोई दूसरा मौलिक अतर नही कि एक ओर ऐसे लोग हैं जिनका ज्ञान पर नियत्रण है और दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जो ज्ञान से पूणत वचित हैं। अतिम रूप से शक्ति उन्ह ही प्राप्त होती है जो विचार कर सकते हैं और विचारो को समझ सकते है। यदि यह माना जाए कि ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता मे व्यापक असमानता है, तो भी हमे चाहिए कि औसत व्यक्ति की क्षमता को ध्यान मे रखते हुए उसे अधिकतम ज्ञान प्राप्त करने की सुविधाए देनी चाहिए।'[38] समुन्नत पूजीवादी राज्यो न भी अपने नागरिको को साक्षर तो बना दिया है परतु शिक्षा के अधिकार को सही अर्थों मे कार्यान्वित नही किया है। कम से कम लास्की के जीवन काल म स्थिति यह थी कि इगलैंड, पश्चिमी यूरोप, अमरीका और जापान म काफी

सख्या मे स्कूलो के विद्यार्थी प्राथमिक कक्षाओ के बाद ही अपना अध्ययन समाप्त कर देते थे। सिडनी तथा बीट्रिस वेब का कथन है कि सोवियत रूस न नाति के पश्चात कुछ दशाब्दियो म ही प्रत्येक बालक-बालिका के लिए माध्यमिक कक्षाओ तक अनिवाय और नि शुल्क शिक्षा का प्रबध कर दिया।[9] लास्की सोवियत रूस की शिक्षा के अधिकार की इस उपलब्धि की सराहना करते है।

तीसरा महत्त्वपूण अधिकार राजनीतिक शक्ति का अधिकार है। इस अधिकार मे तीन बातें शामिल हैं। सवप्रथम मताधिकार की बात आती है। लास्की सावभौम मताधिकार के समयक हैं और जान स्टुअट मिल द्वारा प्रस्तावित शिक्षा की शत को मतदाता की योग्यता के निणय के लिए अनावश्यक समझते है। दूसरी बात निर्वाचन म प्रत्याशी होने का अधिकार है। प्रत्येक नागरिक को जाति, धम, वण और यानि के आधार पर भेदभाव के विना निवाचन मे उम्मीदवार बनने की सुविधा दी जानी चाहिए। तीसरी बात सरकारी सेवाओ मे योग्यता के अनुसार प्रत्येक नागरिक को नियुक्ति का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। लास्की इस बात को समझते हैं कि प्रातिनिधिक लोकतन्त्र मे राजनीतिक अधिकार सभी वर्गो को समान रूप से उपलब्ध नही होत क्याकि यह प्रणाली व्यवहार म पूजीपति वग को अधिक राजनीतिक शक्ति प्रदान करती है और श्रमिक वग को राजनीतिक शक्ति न्यूनतम प्राप्त होती है। फिर भी वे इस सबध म सोवियत प्रणाली को भी पसद नही करते क्योकि उनके मत के अनुसार सोवियत रूस मे इस अधिकार का अस्तित्व ही नही है।[40]

चौथा महत्त्वपूण अधिकार स्वतन्त्र भाषण का अधिकार है। इस अधिकार के समयन म उन्होने जान स्टुअट मिल से प्रेरणा ग्रहण की है। वे विचारा के दमन का अनतिक मानते है। धम, नतिकता, विनान, कला, साहित्य, दशन, राजनीति इत्यादि किसी क्षेत्र मे विचारा के प्रकाशन पर कोई प्रतिबध नही होना चाहिए और न किसी का उसके विचारा के कारण दड दना चाहिए।[41] वे तयार है कि फासिस्ट, कम्युनिस्ट, कथोलिक यहूदी या नीग्रो को इगलड म अपने विचार प्रस्तुत करने का उतना ही मौका मिलना चाहिए जितना किसी उदारवादी, सावैधानिक समाजवादी प्रोटस्टेंट या नार्डिक नस्ल के नागरिक को। लास्की इस अधिकार के इतने कट्टर समयक हैं कि युद्ध या आपात काल म भी इस पर किसी प्रकार का प्रतिवध लगाने के विरुद्ध है।[42] हम यह ध्यान म रखना चाहिए कि किसी भी राज्य ने इस सीमा तक स्वतन्त्र भाषण के अधिकार को स्वीकार नही किया है। परतु एक आदश के रूप म कोई भी इसकी वाछनीयता को अस्वीकार नहीं कर सकता। लास्की का विचार है कि स्वतन्त्र भाषण के अधिकार की सुरक्षा न्यायालय ही कर सकते हैं। व सदेह मात्र पर किसी नाग

रिक की नजरबदी को स्वतत्र भाषण के अधिकार का उल्लघन समझते हैं। इस अधिकार की सुरक्षा के लिए न्यायपालिका का कार्यपालिका से स्वतत्र होना जरूरी है।[43]

अत म सपत्ति के अधिकार के विषय में लास्की कुछ विवादास्पद विचार प्रस्तुत करते हैं। उनका कथन है, 'अन्य बातों के अभाव मे किसी राजनीतिक प्रणाली म यदि अधिकारो को सपत्ति के आधार पर निर्मित किया जाएगा तो वहा सपत्तिहीन मनुष्य को कोई अधिकार उपलब्ध नही हो सकेंगे।'[44] पूजीवादी समाज मे उत्पादन और वितरण के क्षेत्रो मे कोई आर्थिक योजनाए नही बनाई जाती। समाज धनवान और निधन वर्गो मे बटा होता है जिनमे पहले वर्ग के पास अपार वैयक्तिक सपत्ति होती है, दूसरा वर्ग भूमिहीन और सपत्तिहीन सर्वहारा वर्ग होता है। लास्की वैयक्तिक सपत्ति के पूर्ण विरोधी नही परतु वे उसके वर्तमान विषम और अन्यायपूर्ण विभाजन को पसद नही करते। वैयक्तिक सपत्ति की धारणा मे कोई मूल दोष नही है। एक तरह से इसका उपयोग सचमुच व्यक्तित्व के विकास के लिए किया जा सकता है। परतु वे यह अवश्य चाहते हैं कि वैयक्तिक सपत्ति व्यक्ति के ऐसे प्रयास का उचित पुरस्कार होना चाहिए, जिसके द्वारा समाज के कल्याण मे कुछ योगदान हो। सपत्ति की मात्रा इतनी अधिक न हो जिससे उसके परिमाण मात्र से उसका स्वामी दूसरो पर अपनी शक्ति का प्रयोग कर सके। सपत्ति की मात्रा इतनी कम भी न होनी चाहिए कि वह व्यक्ति के आत्मविकास के लिए भी अपर्याप्त हो। धन का वितरण जितनी अधिक समानता पर आधारित होगा नागरिक के योगदान को उसके वास्तविक सामाजिक मूल्य के सदर्भ म अधिक अच्छी तरह आका जा सकेगा। यदि वैयक्तिक सपत्ति को समाज के लिए उपयोगी कार्यों के मूल्य से सबद्ध कर दिया जाए तो निश्चय ही वह समाज मे अपना उचित स्थान बना लेगी।[45] परतु धन के वितरण म समानता लाने के लिए हम उत्पादन के साधनो को सामाजिक स्वामित्व म लेना पडेगा। सक्षेप म, हमे पूजीवादी व्यवस्था के स्थान पर मुख्यत समाजवादी प्रणाली स्वीकार करनी पडेगी। सपत्ति का अधिकार तभी सार्थक होगा जब यह व्यक्ति के सामाजिक योगदान और प्रयास का उचित इनाम हो और लगान, किराय, मुनाफे या ब्याज के रूप मे किसी व्यक्ति को बिना श्रम किए सपत्ति सचित करने का मौका न दिया जाए। यह तभी आत्मविकास का साधन बनेगी जब मनुष्य का मनुष्य द्वारा और वर्ग का वर्ग द्वारा शोषण समाप्त कर दिया जाए।

स्वतत्रता की परिकल्पना अधिकारो की धारणा स जुडी हुई है। लास्की के अनुसार स्वतत्रता कोई विशेष अधिकार नही है अपितु अधिकारो का सार है। अधिकारो की प्रणाली का मूल तत्त्व स्वतत्रता ही है। स्वतत्रता के आदर्शवादी विश्लेषण को वे भ्राति पर आधारित मानते हैं। वस्तुत आदर्शवादियो द्वारा

प्रस्तुत स्वतंत्रता की परिकल्पना में एक तार्किक असंगति है। हीगल का विचार था कि नागरिक की वास्तविक स्वतंत्रता कानून के प्रति आज्ञापालन के भाव में सन्निहित है।[46] रूसो भी स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ समझने में असमर्थ रहे, जब उन्होंने एक विरोधाभास प्रस्तुत करते हुए बताया कि सामान्य इच्छा मनुष्य को स्वाधीन बनाने के लिए उस पर बल प्रयोग कर सकती है। उदारवादी के रूप में वे स्वतंत्रता को प्रतिबंधों का अभाव मानते रहे हैं। इसका अभिप्राय है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा और योजना के अनुसार जीने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। इसके लिए राजनीतिक सत्ता पर कुछ नियंत्रण रखना अत्यंत आवश्यक है।[47] अंत में यह भी जरूरी है कि कानून व्यक्ति के अधिकारों को सरकारी हस्तक्षेप से सुरक्षित रखने के लिए उचित प्रक्रिया निर्धारित करे।

लास्की का विचार है कि स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों में कोई मौलिक अंतर्विरोध नहीं है। समानता से उनका अभिप्राय वेतन से नहीं बल्कि अवसर की समानता से है। प्रत्येक नागरिक को अपनी प्रतिभा और क्षमता के विकास का उचित अवसर मिलना चाहिए। कुछ श्रेणियों को विशेषाधिकार देने की परंपरा अनुचित है। लास्की आर्थिक क्षेत्र में वर्तमान विषमताओं को घटाना चाहते हैं। सही अर्थ में आर्थिक विषमताओं का निराकरण समाजवादी व्यवस्था द्वारा ही संभव है। स्वतंत्रता और समानता की परिकल्पनाओं का न्यायोचित सामंजस्य ही उनके लोकतांत्रिक समाजवादी चिंतन का सैद्धांतिक आधार है। हर्बर्ट डीन लास्की के समानता के सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहते हैं 'लास्की की मान्यता, कि समाज में समानता के लिए सार्वभौम प्रवृत्ति विद्यमान है अनुभव द्वारा गलत सिद्ध होती है। अधिकांश लोग असमानता को उचित ठहराते हुए स्वयं उन्नति करने की इच्छा रखते हैं। उनकी दूसरी मान्यता, कि आर्थिक असमानता अन्य क्षेत्रों में असमानता को उत्पन्न करती है, सही नहीं है और न उत्पादन के साधनों के सामाजिक स्वामित्व से समता पर आधारित समाज का निर्माण हो जाता है। जैसा कि बर्ट्रेण्ड रसेल ने भी स्वीकार किया है कि राजनीतिक शक्ति की असमानता धन की असमानता से बड़ा दुर्गुण है और सोवियत रूस का साम्यवादी समाज इसका ज्वलंत उदाहरण है। लास्की की तीसरी मान्यता, कि आधुनिक औद्योगिक प्रणाली में सत्ता और वेतनों की सोपानात्मक व्यवस्था का अंत संभव है, सोवियत रूस और अमरीका के अनुभवों से गलत सिद्ध हो चुकी है।'[48]

## संदर्भ

1 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 101–3 तथा 248–70
2 लास्की लिबर्टी इन दि माडर्न स्टेट पृ० 94–122

3 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, प० 106-14
4 हुबट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की, प० 109
5 वही प० 253-54
6 वही पृ० 43-52
7 लास्की फाउडशस आफ सावरेंटी, प० 88
8 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट प० 84
9 हुबट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की प० 45
10 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प० 107
11 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 16-17
12, लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टेट प० 213
13 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 89-92
14 एडवड सेट मास्टस आफ पालिटिकल थाट प० 133-39
15 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 90-91
16 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 61-64
17 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 93-94
18 लास्की डमोक्रेसी इन क्राइसिस प० 61
19 किग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की एक बायोग्रफिकल मेमोयर प० 138-67
20 लास्की डमोक्रेसी इन क्राइसिस प० 61-62
21 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यशन आफ अवर टाइम, प० 305-30
22 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस प० 62
23 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस पृ० 51-53
24 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस प० 63
25 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 98
26 वही प 99
27 लास्की पालियामेटरी गवनमट इन इगलड प० 22 ]
28 लास्की दि अमरिकन डेमोक्रसी प० 211
29 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 76-78
30 लास्की दि डेंजस आफ आबीडिएस प० 2-25 तथा प० 59-90
31 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टेट प० 13 35
32 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 106
33 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 351-67
34 लास्की एक ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 107
35 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प० 46-52
36 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 109
37 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रसी प० 380-92
38 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 114
39 सिडनी तथा बीट्रिस वेब सोवियट कम्युनिज्म—ए न्यू सिविलाइजेशन, पृ० 717-49
40 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स, प० 158-69
41 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टेट पृ० 210-15
42 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स पृ० 118-27

43 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 173–83,
44 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, पृ० 174
45 वही, पृ० 216–17
46 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रैक्टिस, प० 63–69
47 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, प० 142–49
48 हबट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हरोल्ड जे० लास्की, पृ० 187–89

# लोकतान्त्रिक समाजवाद

बीसवी सदी म 'आग्ल सैक्सन' जगत म लोकतात्रिक समाजवादी चिंतन के क्षेत्र मे हरोल्ड लास्की का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। 1942 मे मजदूर दल के सम्मेलन म उन्होने समाजवाद म अपनी आस्था प्रकट करते हुए कहा कि प्रतियोगिता पर आधारित पूजीवाद के दिन पूरे हो गए हैं और लोकतन्त्र को अथसमता पर आधारित समाज म सपूर्ण जनता के उपभोग के लिए अधिकतम उत्पादन की योजना के अनुसार काय करना है। प्रारभ मे लास्की के विचारो पर व्यक्तिवाद और बहुलवाद का काफी प्रभाव रहा था परतु अपने जीवन के उत्तराध म वे समष्टिवादी राजनीतिक प्रणाली के समथक बन गए थे। उनकी समष्टिवादी विचारधारा के दो प्रमुख स्रोत हैं इगलैंड का फेबियन समाजवादी चिंतन तथा काल मार्क्स और ऐंगेल्स की कृतिया।[1] उन्होने इगलड के मजदूर दल के राजनीतिक कार्यों मे सक्रिय भाग लिया और अंत म उन्हे दल के राष्ट्रीय प्रधान का गौरव प्रदान किया गया।

ज्याज कटलिन का कथन है, 'हेरोल्ड जोसेफ लास्की प्रारभ मे जान स्टुअट मिल के 'राजनीतिक अथविज्ञान के सिद्धात के अतिम चरण की परपरा के, जो फेबियनवाद की दिशा मे ले जाती है समथक रहे थे। लास्की की कृतिया मे फेबियन बहुमत की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्ता दी गई थी जो 'सीमित अराजकता' के बिंदु तक पहुचती थी। अत मे उनकी स्थिति इस बहुमत की तुलना मे मार्क्सवाद के अधिक निकट हो गई। उन्होंने फेबियन कायकारिणी समिति से इस आधार पर त्यागपत्र दे दिया कि उन्हें उनके 'श्रमिकतावादी आग्ल-सैक्सन छाप सामाजिक लोकतन्त्र की पारपरिक मान्यताओ से कोई सहानुभूति नही रही है।'[2] मजदूर दल म लास्की उसके वामपक्ष से सहानुभूति रखते थे और उसका वैचारिक प्रतिनिधित्व करते थे। 1937 मे उन्होने जान स्ट्रची और स्ट्रफड क्रिप्स के साथ मिलकर ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के साथ राजनीतिक सहयोग की नीति का समथन किया।[3]

लास्की के लोकतान्त्रिक समाजवाद के सिद्धात को अध्ययन की सुविधा के

लिए तीन भागो में बांटा जा सकता है। सर्वप्रथम वे वर्तमान आर्थिक-सामाजिक ढांचे में शांतिपूर्ण परिवर्तन की विधा पर कुछ विचार प्रस्तुत करते हैं। वे इस साम्यवादी मत से असहमत हैं कि पूंजीवाद के उन्मूलन के लिए हिंसात्मक क्रांति प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त लास्की की मान्यता है कि पूंजीवादी व्यवस्था में कुछ दोष हैं जिनकी वजह से यह प्रणाली अब ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सकती। राजनीतिक लोकतंत्र और सार्वभौम वयस्क मताधिकार ने पूंजीवाद को खतरे में डाल दिया है। वे कहते हैं कि पूंजीवाद के आर्थिक संस्थान पुराने पड गए हैं और वे आर्थिक उन्नति और उत्पादन के विस्तार में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों में गंभीर असामंजस्य पैदा हो गया है।[4] अंत में उनके समाजवादी सिद्धांत में समाजवादी समाज का आदर्श सन्निहित है, जिसमें धन के विवेकपूर्ण और न्यायोचित वितरण के द्वारा वर्तमान पूंजीवादी प्रणाली की आर्थिक विषमताओं का निराकरण कर दिया जाएगा। उनकी लोकतांत्रिक समाजवादी परिकल्पना में आर्थिक प्रक्रियाओं के सामाजिक नियंत्रण और बौद्धिक व राजनीतिक क्षेत्र में वैयक्तिक स्वतंत्रता के मध्य एक सुखद समन्वय का प्रयास किया गया है।[5]

स्थूल दृष्टिकोण से लास्की के बहुलवादी सिद्धांतों और तदुपरांत उनके समाजवादी विचारों में कोई संबंध दृष्टिगोचर नहीं होता। यदि वे बहुलवाद में अपनी आस्था न छोडते तो शायद वे जी० डी० एच० कोल के श्रेणी समाजवाद के सिद्धांत को अपनाते अथवा सोरेल के श्रमिक संघवाद की शरण में जाते या फिर क्रोपाटकिन या तालस्ताय के अराजकतावादी आदर्शों को ग्रहण करते। परंतु अराजकतावाद, श्रमिक संघवाद तथा श्रेणी समाजवाद की विचारधाराएं उन्हें आकृष्ट करने में असफल रहीं। अंत लास्की ने अपनी प्रारंभिक बहुलवादी मान्यताओं को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करते हुए समष्टिवादी समाजवाद में अपनी आस्था प्रकट की। फिर भी उनके बहुलवादी और समष्टिवादी चिंतन को जोडने वाली एक वैचारिक श्रृंखला है। उनके बहुलवाद और समष्टिवाद का एक समान उद्देश्य पूंजीवादी राज्य के दोषों पर प्रकाश डालना है और साथ ही आधुनिक समाज में श्रमिक संघों की स्वायत्तता का समर्थन करना है। संप्रभुतासंपन्न राज्य के विरुद्ध समुदायों की स्वायत्तता के विचार के समर्थन का मुख्य उद्देश्य श्रमिक वर्ग द्वारा संगठित मजदूर संघों की स्वतंत्रता को पूंजीवादी राज्य के अनुचित हस्तक्षेप से बचाना था। अपने बहुलवादी चरण में भी लास्की के चिंतन में श्रमिक-पक्षी और पूंजीपति विरोधी प्रवृत्तियां विद्यमान थीं। यह इस बात से भी स्पष्ट हो जाता है कि 1919 में जब लास्की अमरीका में शिक्षण कार्य कर रहे थे, उन्होंने बोस्टन के पुलिस कर्मचारियों की हडताल के समर्थन

मे अपने विचार प्रकट किए। उस समय कुछ अमरीकी समाचार पत्रों ने उन्हे 'बोल्शेविक एजेंट' कहकर अपमानित भी किया।[6]

अत मे जब उन्होंने समष्टिवादी लोकतांत्रिक समाजवाद को अपनी प्रिय विचारधारा के रूप मे स्वीकार कर लिया, तो भी वे साम्यवादी नमूने के समग्रवादी अधिनायकतंत्र के कट्टर विरोधी बने रहे। उनका कथन था कि साम्यवादी देशो मे मजदूर सघो की स्वतत्रता का हनन कर दिया जाता है और उन्हे राज्य के हाथ मे सुविधाजनक उपकरण मान लिया जाता है। यह सिद्ध करता है कि वे अपने समष्टिवादी चरण मे भी मजदूर सघो की स्वायत्तता की रक्षा के लिए पूर्णत व्यग्र हैं और यह सभवत उनके मन मे बहुलवादी भावना का ही अवशेष है। अत वे अत तक राज्य के अत्याचार से समुदायो को बचाने के लिए चिंतित रहते हैं। वे अधिनायकतंत्र के विरोधी हैं चाहे इसका उद्देश्य समाजवाद की स्थापना ही क्यो न हो क्योकि यह बल प्रयोग पर आधारित है। एक समाजवादी अधिनायकतंत्र प्रारभ मे समाजवाद के विरोधियो का बलपूर्वक दमन करता है और अत मे इसका परिणाम यह होता है कि एक समाजवादी गुट अपने प्रतिद्वद्वी समाजवादी गुट को भी उसी प्रकार अपने राजनीतिक दमन का शिकार बनाता है। अत लास्की के लोकतांत्रिक समाजवाद की नीव उनके राजनीतिक बहुलवाद मे ही निहित है। वे अपने चिंतन के अंतिम चरण मे भी राज्य की समग्रवादी प्रवृत्तियो के प्रसार के विरुद्ध निरतर चेतावनी देते रहते हैं।[7] प्रारभ मे लास्की समुदाय और व्यक्ति की स्वतत्रता के माध्यम से वर्ग की स्वतत्रता स्थापित करना चाहते हैं। अत मे वे वर्ग की स्वतत्रता को प्राथमिकता देते हुए उसके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय की स्वाधीनता प्राप्त करना चाहते हैं। स्वतत्रता लास्की के चिंतन का मूल मत्र है।

## शातिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन

लास्की का विचार है कि विश्व के प्रमुख देशो मे राजनीतिक लोकतत्र की स्थापना से ऐसी परिस्थितिया उत्पन्न हो गई है जिनसे पूजीवादी व्यवस्था मे शातिपूर्ण ढग से मौलिक परिवर्तन किए जा सकते है और समाज की स्थापना की जा सकती है। इगलैड जैसी ससदीय प्रणाली मे अगरेज मजदूरो को मजदूर दल मे सगठित कर धैर्यपूर्वक ससदीय निर्वाचन मे विजय प्राप्त करने की तैयारी करनी चाहिए।[8] एक बार यदि दलो का विभाजन उत्पादन के पूजीवादी तरीके की स्वीकृति या अस्वीकृति के आधार पर हो जाए, तो दलो की प्रतियोगिता इन उद्देश्यो के सघर्ष के आधार पर होगी। निर्वाचन मे बहुमत मिलने पर मजदूर दल अपने समाजवादी कार्यक्रम को कार्यान्वित करना प्रारभ कर देगा। लास्की के मतानुसार मजदूर दल पूजीवादी व्यवस्था मे क्रमिक सुधार करने के बजाय उसके केंद्रीय दुर्ग को ध्वस्त करने का प्रयत्न करेगा। यदि निर्वाचक इस दल को सरकार

बनाने का अवसर दें और यह दल सत्ता का उपयोग समाजवाद की स्थापना के लिए न करे तो यह उसके लिए आत्मघात के समान होगा। मनोवैज्ञानिक रूप से भी मजदूर दल के लिए अपने घोषित कायक्रम को कार्यान्वित करना मुश्किल है क्योकि इसका अथ अपने अस्तित्व के मूल कारण का भुला देना है।[9] उनका विश्वास है कि राष्ट्रीय निर्वाचन म बहुमत मिलन पर यदि कोई समाजवादी दल समाजवाद की दिशा म निणयात्मक कदम नही उठाता तो इसका परिणाम दल का क्रमिक विघटन और विनाश होगा। उनकी दष्टि मे ससदीय सफलता *समाजवादी दल का अपना कायक्रम कार्यान्वित करने के लिए बाध्य कर देगी।*[10]

राजनीतिक लोकतन्त्र की स्वाभाविक प्रवत्तिया उसे आर्थिक और सामाजिक लोकतन्त्र की दिशा मे ले जाती हैं। इसे अपने माग मे पूजीवादी व्यवस्था, *जिस पर राजनीतिक लोकतन्त्र आधारित है, एक बाधा के रूप म मिलती है।* अत आर्थिक लोकतन्त्र की दिशा म इसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। इस प्रकार पूजीवादी प्रणाली राजनीति की केंद्रीय समस्या बन जाती है। दक्षिण पथी दल पूजीवाद को एक सफल आर्थिक प्रणाली सिद्ध करने का प्रयास करता है और जनता के जीवन-स्तर का उठाने के वायदे भी करता है। जब तक जनता पूजीवादी प्रणाली के परिणामा से सतुष्ट रहती है, वह दक्षिणपथी दल का समथन करती है। असतुष्ट होने पर यही जनता वामपक्षी दल को सत्ता दिला सकती है और इस प्रकार वामपक्षी दल को पूजीवादी आधारो पर प्रहार करन का मौका मिल जाता है। अत लास्की सामान्यत विश्वास करत हैं कि सावैधानिक और शातिपूण उपायो से पूजीवादी लोकतन्त्र को हटाकर समाजवादी लोकतन्त्र की स्थापना सभव है।[11] इस सरल रूप म लास्की का सिद्धात फेबियनवाद की प्रतिध्वनि मालूम पडता है। फेबियन समाजवादी भी इसी तरह राजनीतिक लोकतन्त्र के आर्थिक लोकतन्त्र मे क्रमिक विकास का सुझाव देते थे। परन्तु दोना की स्थितिया म एक महत्वपूण अतर है। फेबियनवाद पूजीवादी विस्तार के युग का सिद्धात है और स्वस्थ आशावाद पर आधारित है। परन्तु लास्की के मन मे पूजीवादी लोकतन्त्र के सस्थानो के प्रति सशय और *निराशा का भाव है। वे स्वय शातिपूण सामाजिक परिवतन के पक्ष म हैं* परन्तु क्या पूजीपति वग शातिपूवक अपने निहित स्वार्थों को इसीलिए त्याग देगा क्योकि कानून न अधिनियम द्वारा इन विशेषाधिकारो को समाप्त कर दिया है ?[1]

लास्की इस बात को स्वीकार करते हैं कि निर्वाचन म सफलता प्राप्त करन के उपरात भी सेना, नौकरशाही और न्यायालयो के विरोध के कारण समाजवादी दल अपने कायक्रम को कार्यान्वित न करन के लिए बाध्य हो सकता है। उनका कथन है 'न तो फेबियनवादी और न प्रगतिशील उदारवादी यह समझ सके कि ससदीय सरकार की सफलता दो शर्तों पर निभर थी। सवप्रथम

इसके लिए सुरक्षा की भावना, जिसमे पूजीपति वग को असीमित मुनाफे कमाने का अवसर और उसके एक अश को जनता मे बाटने की क्षमता मिले, आवश्यक थी। दूसरी शत यह थी कि दोनो दल राजनीति म समाज के सगठन के मूल तत्त्वो के विषय मे एकमत होगे जिससे बिना किसी त्रास की भावना उत्पन्न किए वे शासन मे एक दूसरे के उत्तराधिकारी बन सकेंगे। इन शर्तो को पूरा किए बिना ससदीय शासन मतभेदो का विवेकशील समाधान करने म असमथ था।'[13] इस प्रकार लास्की के मन मे कुछ सदेह उत्पन्न हो जाता है कि समाजवाद के पक्ष मे ससदीय बहुमत हो जान पर भी समाजवादी दल को अपनी नीति के अनुसार प्रशासन चलाने मे बाधाए डाली जाएगी। 1945 के पश्चात इगलैंड मे मजदर दल को बहुमत मिल जाने पर भी विरोधी तत्त्वो ने उसे अपने कायक्रम के अनुसार वदेशिक नीति, आर्थिक नीति, सुरक्षा नीति इत्यादि को व्यावहारिक रूप देने मे अनेक अडचन डाली। फलत लास्की के निराशावादी दष्टिकोण की पुष्टि हो गई।[14] किंतु लास्की की विचारधारा म दोष यह है कि यद्यपि शातिपूण सामाजिक परिवतन के लिए वे सावैधानिक उपायो को अपयाप्त समझते हैं, तो भी वे कोई वैकल्पिक उपाय हमारे सम्मुख प्रस्तुत नही करते। वे स्वीकार करत है कि मनुष्य अपने मामूली अधिकार तो स्वेच्छा से छोड सकते हैं परतु महत्त्वपूण अधिकारो को नही। इतिहास मे किसी वग न शातिपूवक सत्ता का त्याग नही किया है। तथ्यो की परीक्षा से यह बात सिद्ध हो जाती है। कोई भी सभ्य मनुष्य अब दासता की प्रथा का समथन नही करता परतु अमरीका मे दक्षिणी राज्या को यही बात समझाने के लिए युद्ध की आवश्यकता पडी। अब कोई भी विवेकशील व्यक्ति धार्मिक क्षेत्र मे असहिष्णुता को स्वीकार नही करता परतु इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए पहले धार्मिक युद्धो मे लाखो प्राणो का बलिदान किया गया। राष्ट्रीय स्वतत्रता, लोकतत्र, मताधिकार, श्रमिको के शापण का अत इत्यादि अनेक आदर्शों की स्वीकृति के लिए हिंसात्मक आदोलनो और क्रातियो की आवश्यकता पडी। अत सामाजिक परिवतन मे क्राति की सभावना का पूणत निराकरण नही किया जा सकता।[15] हा, क्राति की शरण लेने के पूव सावैधानिक उपायो की भी अच्छी तरह परीक्षा कर लेना जरूरी है।

यूरोप म फासीवाद के उदय ने कुछ समय के लिए लास्की की शातिपूण सामाजिक परिवतन मे आस्था नष्ट कर दी। उन्ह भय हुआ कि फासीवाद की सहायता से पूजीपति वग लोकतान्त्रिक प्रणाली को ही नष्ट कर देगा और इस प्रकार सावैधानिक उपाया से समाजवाद की स्थापना असभव हो जाएगी।[16] सैद्धातिक रूप से हिंसात्मक क्राति की उपेक्षा तक और वाद विवाद द्वारा निणय करना श्रेष्ठतर हो सकता है। व्यावहारिक दृष्टि से पूजीपति वग तक और वाद विवाद की सुविधा तभी तक देगा जब तक उस पर आधारित लोकतत्र

पूंजीवादी व्यवस्था के लिए कोई खतरा पदा नही करता। जसे ही लोकतन्त्र के सस्थानो का उपयोग श्रेणी सबधा म मौलिक परिवतन के लिए किया जाएगा, पूंजीपति वग फासीवाद के माध्यम से इन सस्थानो को ही नष्ट कर देगा। इसलिए लास्की का विचार है कि आर्थिक विकास के वतमान चरण म श्रम जीवियो और पूंजीपतिया के मतभेदा का समाधान तक पर नही बल प्रयोग पर निभर है। इटली, जमनी, आस्ट्रिया और स्पेन के उदाहरण यही सिद्ध करते ह कि इन देशा की शासक श्रेणियो ने ससदीय सरकार के खडहरा पर फासिस्ट अधिनायकतवा की स्थापना मे सहायता की और समाजवादी शक्तिया की साविधानिक विजया को निष्फल करने का प्रयास किया क्याकि उनके द्वारा समाज की आर्थिक व्यवस्था मे महत्त्वपूण परिवतन किए जान का खतरा था।

दुर्भाग्य से लास्की इगलैंड म मजदूर दल के शासन और पश्चिमी यूरोप म अय दक्षिणपथी समाजवादी दलो के शासन का मूल्याकन करने के लिए अधिक दिना तक जीवित नही रहे। वस्तुत युद्धोत्तर काल मे इन सरकारो की उप लब्धिया युद्धपूव जमनी मे सामाजिक लोकतन्त्रवादियो की उपलब्धिया से श्रेष्ठ-तर नही थी। किंग्सले मार्टिन का मत है कि अपने जीवन के अतिम दिना म मजदूर दल की नीतिया से बहुत असतुष्ट थे।[17] अनेक वर्षों तक मजदूर दल के सत्तारूढ रहने पर भी इगलड आज भी एक पूंजीवादी समाज है। 1935 मे लास्की ने जो मत प्रकट किया वह आज भी पूणत सत्य है। उनका कथन था, 'यदि इगलैंड, फ्रास और सयुक्त राज्य अमरीका मे समाजवादी सरकार शातिपूण उपायो से निजी सपत्ति की प्रणाली मे मौलिक परिवतन कर उसे सामाजिक स्वामित्व की प्रणाली मे बदल दे तो यह युक्ति कि लोकतान्त्रिक उपायो से मौलिक परिवतन हो सकते हैं, बहुत मजबूत हो जाएगी। इसके लिए अभी कोई प्रमाण हमारे पास है नही और लोकतान्त्रिक देशो के अनुभव से तो अभी हम इसी निणय पर पहुचते हैं कि स्थिति इसके विपरीत है।'[18]

जब कि इगलड मे मजदूर दल की सरकारें भी अपने देश म समाजवाद की स्थापना करने मे असफल रही हैं अमरीका के मजदूर वग की राजनीतिक चेतना का स्तर इतना स्थूल है कि उसे वतमान पूंजीवादी प्रणाली के लिए खतरा नही माना जा सकता।[19] फ्रास और इटली मे शक्तिशाली साम्यवादी दलो की स्थापना के कारण पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध हिंसात्मक क्राति का प्रयास सभव है पर उसे सफलता मिलना सदेहजनक है। ससार के किसी देश म अभी तक शातिपूण तरीके से समाजवाद की स्थापना के लक्षण नही दिखाई पडते। समाजवादी दलो ने अपनी सत्ता का उपयोग वतमान पूंजीवादी व्यवस्था म मामूली सुधार करने के लिए ही किया है। कहीं भी उन्होने पूंजीवाद के केंद्रीय दुग पर आक्रमण नही किया है। यह न केवल इगलड के लिए सच है बल्कि उन सभी देशा के लिए भी जहा दक्षिणपथी समाजवादियो न सत्ता ग्रहण की है।

लास्की स्वीकार करते हैं कि राजनीतिक लोकतंत्र शांतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की विधा प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा है परंतु वे इस निष्कर्ष के परिणाम को स्वीकार करने में हिचकते हैं। इसका अनिवार्य परिणाम लोकतांत्रिक समाजवाद के आधारभूत तत्वों की अस्वीकृति है। यदि उदारवादी राज्य विकास के द्वारा समाजवादी लोकतंत्र की स्थापना नहीं कर सकता तो हम क्रांति की तैयारी करनी पड़ेगी और क्रांति के सफल होने पर समाजवादी परिवर्तन लाने के लिए और प्रतिक्रांति को रोकने के लिए सर्वहारा वर्ग के अधिनायकतंत्र की स्थापना करनी पड़ेगी। लास्की न तो क्रांति के रूप और चरित्र की विशेष चर्चा करते हैं और अधिनायकतंत्र के सिद्धांत के तो वे घोर विरोधी हैं ही, क्योंकि ये दोनों सिद्धांत उनके लोकतांत्रिक समाज के प्रतिकूल हैं।

## पूंजीवादी प्रणाली के दोष

बीसवीं सदी को लास्की पूंजीवाद और समाजवाद के बीच संक्रमणकालीन सदी मानते हैं। उन्होंने इतिहास की व्याख्या स्वतंत्रता की दिशा में निरंतर प्रगति के रूप में की है। सामंतवादी राजतंत्र की तुलना में स्वतंत्रता की मात्रा पूंजीवादी लोकतंत्र में कहीं अधिक होती है। समाजवादी लोकतंत्र के लिए संघर्ष का उद्देश्य पूंजीवादी लोकतंत्र की तुलना में अधिक व्यापक स्वतंत्रता की उपलब्धि करना है।[20] पूंजीवादी लोकतंत्र में जो स्वतंत्रता एक श्रेणी तक सीमित है, समाजवादी लोकतंत्र में आर्थिक विषमताओं को हटाकर स्वतंत्रता को सार्वभौम बना दिया जाएगा। अतः समाजवाद के लिए संघर्ष विश्व की जनता का संघर्ष है। पूंजीवाद से केवल एक श्रेणी लाभ उठाती है, समाजवाद से संपूर्ण जनता लाभ उठाएगी। लास्की के अनुसार पूंजीवाद का पतन निश्चित है क्योंकि बहुसंख्यक जनता उसके विरुद्ध है।

लास्की के अनुसार पूंजीवाद का पहला गंभीर दोष योजनाहीनता है। उत्पादन के लिए कोई पूर्व योजना नहीं होती। समाज की आवश्यकता के अनुसार न तो वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है और न सामाजिक उपयोगिता को दृष्टि में रखकर सेवाओं का प्रबंध किया जाता है। जनता को घरों की जरूरत है किंतु आलीशान सिनेमा हाल बनाए जाते हैं। स्कूलों के बजाय हम धन युद्धपोतों के निर्माण में खर्च करते हैं। एक धनी व्यक्ति मजदूर के साप्ताहिक वेतन को एक वक्त के भोजन पर खर्च कर सकता है, किंतु मजदूर अपने बच्चों को भरपेट खाना खिलाकर उन्हें स्कूल नहीं भेज सकता। एक धनी सुंदरी अपनी एक पोशाक पर जितना रुपया खर्च कर सकती है, वह उस पोशाक को बनाने वाले मजदूरों के वार्षिक वेतन के बराबर हो सकता है। अतः हम न केवल गलत वस्तुओं का उत्पादन करते हैं बल्कि उनके

वितरण मे भी सामाजिक आवश्यकता पर कोई ध्यान नही देते। हमारे समाज मे एक परोपजीवी वग है जो विलास और आलस्य का जीवन व्यतीत करता है। अधिकाश पूजी और श्रम को इसी वग के शौको और मागो को पूरा करने मे लगाया जाता है और बहुसख्यक जनता की जरूरतें भी पूरी नही की जाती। फलत इस धनवान श्रेणी के विलास और आराम के लिए असीमित मात्रा मे सभी वस्तुए और सेवाए उपलब्ध हो जाती है किंतु शेष जनता के लिए पूजीवादी समाज भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा और चिकित्सा का भी सताप-जनक प्रबध करने मे असमथ है।[1]

पूजीवादी प्रणाली का दूसरा दोष असीमित मुनाफा कमाने की प्रवत्ति है। पूजीपति उन्ही वस्तुओ के उत्पादन मे रुचि रखते है जिनकी बाजार म ज्यादा माग हो और जिन्ह अधिकतम मुनाफे पर बेचा जा सके। उनका उद्देश्य उत्पादन द्वारा निजी सपत्ति की वृद्धि करना है। अत वे सामाजिक रूप स उपयोगी मागो की पूर्ति का प्रयास नही करते, व उन मागो को पूरा करना चाहते हैं जो उन्हे लाभकारी हो। इसके लिए वे प्राकृतिक सपदा को बर्बाद कर सकते हैं, वस्तुओ मे मिलावट कर सकते है और बोगस कपनिया खोल सकते हैं। वे विधान सभाओ को भ्रष्ट कर सकते है और ज्ञान के स्रोतो को विकृत कर सकते हैं। वे इजारेदारी के द्वारा वस्तुओ की कीमतें कृत्रिम रूप से बढा सकते हैं और विश्व की पिछडी हुई जातियो का निदयता से शोषण कर सकते हैं। वे अपनी विषैली भावना को जनता म भर देते हैं। व अपने हित साधन के लिए धोखाधडी और हिंसा से भी नही चूकते। उनका उद्देश्य केवल अपने मुनाफे की मात्रा बढाना है। पूजीवादी उत्पादन की प्रक्रिया म लगे हुए करोडो मजदूरो के हित की बात वे नही सोच सकते। व राष्ट्र के राजनीतिक जीवन म भ्रष्टाचार उत्पन्न करते हैं और लोगो के मस्तिष्क म नियत्रण के लिए शिक्षण सस्थाओ को अपने कब्जे म कर लेते हैं। व धम का उपयोग अपने विचारो और हितो की रक्षा के लिए करते हैं। फिर भी व एक सुव्यवस्थित राज्य की स्थापना करने म समय नही हो सके है। इतिहास का निष्कष है कि जिस समाज मे अमीरो और गरीबो के बीच गहरी खाई हो वह निश्चित रूप से पतनोन्मुख है। अत पूजीवादी समाज की अस्थिरता का मुख्य कारण समाज के हर क्षेत्र म व्याप्त मुनाफा कमाने की प्रवत्ति है। यह प्राकृतिक साधनो और तकनीकी विकास का सही उपयोग करने म बाधक है और इस प्रकार यह साधारण जनता को भौतिक, मानसिक और नैतिक उन्नति के पर्याप्त अवसर नही प्रदान करता। पूजीवादी उत्पादन के सबध समाज की भौतिक प्रगति म बाधा डालते हैं, जिन्ह हटाकर समाजवादी सबध स्थापित करना अनिवाय हो जाता है।[2]

लास्की के अनुसार पूजीवाद विशेषाधिकारो पर आधारित प्रणाली है

जिसके लोकतन्त्र के आदश से निहित अर्तविरोध है। पहले पूजीपति वग ने मताधिकार को सपत्ति के स्वामियो तक ही सीमित रखा। यह सविधान मे निजी सपत्ति के अधिकार की सुरक्षा की व्यवस्था कराता है और पूजीवादी प्रणाली के हित मे नागरिक स्वतत्रताओ को सीमित कराता है। यह सपत्तिहीन श्रेणी को अज्ञान के अधरे मे रखने का प्रयत्न करता है। यह वग आवश्यकता पडने पर जनता के राजनीतिक अधिकारो को छीन सकता है। यदि ये अधिकार दिए भी जाते हैं तो जनमत और राजनीतिक दलो पर नियत्रण रखने का प्रयास किया जाता है।[4] यह वदेशिक सकट या युद्ध का भय दिखाकर या आतरिक विप्लव की सभावना के नाम पर यथास्थिति के आलोचको का मुह वद कर सकता है या उन्ह कारागार म डाल सकता है। फिर भी पूजीवादी लोकतत्र का वगचरित्र बहुसख्यक जनता के लिए सदव छिपा नही रह सकता। यदि सावैधानिक उपाय मे उसकी मुसीबतो का हल न निकले तो वह क्राति की शरण ले सकती है। लास्की का निष्कप है कि पूजीवादी प्रणाली म निहित शोषण और दमन की प्रक्रिया शोषितो और पीडितो के सक्रिय विद्रोह को जन्म देती है।[5] लास्की आशा करते हैं कि बहुसख्यक शोषित जनता अपनी प्रारभिक विफलताओ के बावजूद अत मे शोषको के विरुद्ध अपने सघप मे अवश्य विजयी होगी।

माक्स के इस मत से लास्की पूणत सहमत है कि उत्पादन के पूजीवादी तरीको मे समय समय पर आर्थिक सकटो का आना अनिवाय है। 1929 का महान सकट विश्व पूजीवाद के इतिहास का सबसे गभीर आर्थिक सकट था और फासीवादी तत्वो का उदय और विकास इसी विश्वव्यापी आर्थिक सकट का राजनीतिक प्रतिफल था।[6] लास्की का विश्वास है कि पूजीवाद के इन सकटो का एकमात्र इलाज उत्पादन मे समाजवादी व्यवस्था को स्वीकार करना है। यदि विश्व क प्रमुख देश समाजवादी प्रणाली को न अपनाए तो साम्राज्य वादी युद्धो का चक्र ही एकमात्र विकल्प रह जाता है। विश्व पूजीवादी प्रणाली की दुबलता ने ही फासीवाद को जन्म दिया है।[7] जब पूजीवादी लोकतत्र फासीवाद का ग्रहण कर लेता है तो समाजवाद की सावैधानिक उपलब्धि असभव कर दी जाती है। लेकिन इटली, जमनी और जापान के अनुभव से स्पष्ट है कि फासीवाद जो आक्रामक साम्राज्यवादी नीतियो का पोषक है, पूजीवादी सकट का स्थायी समाधान प्रस्तुत नही करता। द्वितीय विश्वयुद्ध म फासीवाद की पराजय हुई और पूर्वी यूरोप और चीन म यथास्थिति की समथक सरकारो का पतन हो गया। लास्की के लिए यह दुख की बात है कि इन देशो ने सावैधानिक ढग से समाजवाद की स्थापना न कर या तो सोवियत दबाव या गृहयुद्ध के द्वारा समाजवादी प्रणाली को अपनाया। परतु वे स्वीकार करते

हैं कि इन देशो मे राजनीतिक लोकतन्त्र की परपरा के अभाव के कारण लोकतात्रिक समाजवाद का प्रयोग सभवत सफल नही हो सकता था।[8]

लास्की ने 1935 मे ही कुछ विशेष परिस्थितियो मे समाजवादी प्रणाली के दोषो के निराकरण के लिए क्राति की सभावना को स्वीकार कर लिया था। उनका कथन है, 'सामतवादी समाज के स्थान पर बुर्जुआ समाज की स्थापना भयकर युद्धो के उपरात हुई थी। जब तक हम यह मानकर न चलें कि मनुष्य अब भूतकाल की अपेक्षा अधिक विवेकशील हो गए हैं हमे स्वीकार करना पडेगा कि बुर्जुआ समाज के आधारो को बदलना भी भयकर सघर्षों के बिना सभव नहीं है, और यह विचार कि अब मनुष्य अधिक विवेकशील हो चुके हैं विशेष ऐतिहासिक परिस्थितियो द्वारा उत्पन्न भ्रम है जिसका निराकरण अब हमारी आखो के सामने ही हो रहा है।'[9] यदि पूजीपति वर्ग प्रत्यक समाजवादी चुनौती का जवाब फासिस्ट तानाशाही से देना चाहेगा तो मजदूर वर्ग का प्रत्युत्तर श्रमजीवियो का अधिनायकतन्त्र ही हो सकता है और पूजीवादी प्रणाली को समाजवादी व्यवस्था म बदलन के लिए क्राति और युद्ध अनिवाय हो जात हैं।

युद्धोत्तर काल मे, प्रमुख पूजीवादी देशो के शासक वर्ग पूजीवाद के सकट का समाधान शीतयुद्ध और सशस्त्रीकरण मे ढूढ रहे हैं। ब्रिटिश मजदूर दल का समाजवादी प्रयोग सशस्त्रीकरण की नीतिया के कारण ही विफल हुआ। अमरीका ने रूजवेल्ट के नियत्रित पूजीवाद के स्थान पर आक्रामक साम्राज्यवाद और सशस्त्रीकरण की नीतिया अपनाई। लास्की के मत के अनुसार सनिकीकरण विश्व पूजीवाद के सकट का स्थायी हल नही है।[10] पूजीवाद के सामन दो विकल्प हैं सावैधानिक ढग से सत्ता का त्याग या आक्रामक युद्ध मे पराजय और पतन। लास्की चाहते हैं कि पूजीवाद पहला विकल्प स्वीकार करे तभी उदारवादी लोकतत्र की उपलब्धिया भी सुरक्षित रह सकती हैं, नही तो क्राति और युद्ध पूजीवाद को ही भस्म न करेंगे, वे उसके साथ राजनीतिक लोकतत्र को भी समाप्त कर देंगे।

## समाजवादी लोकतन्त्र का आदर्श

लास्की द्वारा प्रस्तुत समाजवादी व्यवस्था की परिकल्पना मूलत मार्क्सवाद की अपेक्षा फेबियनवाद के अधिक निकट है। यद्यपि वे अपन चिंतन के अतिम चरण म फेबियनवाद की आलोचना करते थे और कहते थे कि क्रमिक सुधारों के द्वारा पूजीवादी प्रणाली के सकट का समाधान नही हो सकता तो भी उन्होंने मार्क्सवाद द्वारा प्रस्तुत हिंसात्मक क्रांति [illegible] किया ये अधिनायकतन्त्र के सिद्धान्तो को [illegible] नहीं [illegible] की तरह लास्की भी लोकतात्रिक [illegible] न [illegible] की व्याख्या फेबियन

वादियो की तुलना मे अधिक उग्रवादी है। वतमान परिस्थितिया मे वास्तविक सुधार के लिए भी लास्की की मान्यता है कि हमे पूजीवादी प्रणाली की परिधि से बाहर निकलना चाहिए। पुरान ढग की सुविधाए जो पूजीवाद अपने विस्तार के युग मे देता रहा है, अब सकुचन युग मे दे नही सकेगा। हम मावस द्वारा बताई हुई उस स्थिति मे पहुच गए है जब पूजीवाद के अर्तविरोध इस सीमा तक बढ चुके हैं कि बहुसख्यक श्रमिक वग के लिए काय ढूढना कठिन हो गया है। तकनीकी बेकारी, महाजनी पूजी की बढती हुई शक्ति, आर्थिक साम्राज्यवाद का विकास इत्यादि क्षेत्रा म मावस के पूर्वानुमान सच निकले है। वनमान वैधानिक व्याख्या के अतगत हम इन प्रवृत्तियो के दुष्परिणामा को रोक नही सकने।[3] अत लास्की चाहते हैं कि उत्पादन के साधनो को तुरत सामाजिक स्वामित्व अथवा नियत्रण मे लिया जाए। फेबियनवादियो के क्रमिक सुधारो से पूजीवादी व्यवस्था मे कोई मौलिक परिवतन करना असभव है।[33]

पूजीवाद का सकट मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे व्याप्त हो गया है। लास्की का कथन है कि रोम साम्राज्य के पतन के बाद हमारी सभ्यता के लिए इतना विशाल सकट पहली बार आया है। भविष्य मे कई शताब्दिया के लिए विश्वशाति और जनकल्याण का प्रश्न इस सकट के सही निदान पर निभर है। इस सकट का कोई एक या सरल समाधान नही है। यहा न केवल सामाजिक सबधो को चुनौती दी गई है बल्कि लोगो के विश्वासो और मूल्यो की भी आलोचना की जा रही है। समाज का कोई क्षेत्र इस सकट से अछूता नही बचा। धम, राजनीति, अथव्यवस्था, विज्ञान, सस्कृति इत्यादि सभी क्षेत्रो म इस सकट का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।[34]

लास्की का विचार है कि नवीन समाजवादी व्यवस्था की स्थापना से मानव जीवन के विविध क्षेत्रो मे आधारभूत परिवतन होगे। यह हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सास्कृतिक और बौद्धिक सिद्धातो और मूल्या को भी प्रभावित करेगी। उत्पादन के सबधा मे अतर का असर हमारे सामाजिक सबधो, राजनीतिक प्रणालिया, मानसिक आदतो और सास्कृतिक उपलब्धिया पर भी पडेगा। जन्म, जाति, धम, पद, श्रेणी और योनि के आधार पर जो विशेषाधिकार स्थापित हैं, उनका अत करना पडेगा। जो राजनीतिक सस्थान राजनीतिक विशेषाधिकारो का पोषण करते हैं उन्हे समाप्त करना पडेगा।[35] किसी भी रूप म राजतत्र उत्तराधिकार के आधार पर द्वितीय सदन, मताधिकार मे भेदभाव अनुत्तरदायी न्यायालय जो ससद की इच्छा के प्रतिकूल निणय करते हैं, सीमित वग से नियुक्त नौकरशाही इत्यादि समाजवादी लोकतत्र के आदर्शों के प्रतिकूल हैं।[36] सावभौम शिक्षा का प्रबध किया जाएगा और ज्ञान के स्रोत एव सास्कृतिक विकास के अवसर सभी वर्गों के सदस्यो को उपलब्ध हागे। विज्ञान और तकनीक साधारण जनो की सेवा म प्रयुक्त हागे।

इस प्रकार अभाव की अर्थनीति के स्थान पर सबों के लिए सुनियोजित प्रगति का युग शुरू हो सकेगा।

द्वितीय विश्वयुद्ध मे फासीवाद की पराजय से लास्की को आशा हुई कि इसके परिणामस्वरूप पूजीवाद के उन्मूलन के लिए और समाजवाद की अंतिम विजय के लिए नवीन सामाजिक शक्तियो का उदय और विकास होगा।[37] फासीवाद की हार प्रतिक्रांति की हार होगी। प्रतिक्रांति की हार एकाधिकारी पूजीवाद को भयभीत कर देगी। एकाधिकार पूजीवाद मे बैंको और बडी कपनियो के सचालक न केवल अर्थव्यवस्था पर नियत्रण रखते हैं, सरकारें भी उनकी आज्ञा के अनुसार कार्य करती हैं। ऐतिहासिक विकास के वर्तमान चरण मे या तो इन विशाल पूजी सगठनो की सत्ता का विनाश किया जाए और उनसे लोकतत्र और जनता की रक्षा की जाए, नही तो ये पूजी सगठन मानवता को फासीवाद, सनिकीकरण, युद्ध और आक्रामक साम्राज्यवाद के चक्र मे निरतर पीसते रहगे। उन्नीसवी सदी मे जिस प्रकार अभिजात वर्ग के विशेषाधिकारो को समाप्त कर राजनीतिक लोकतत्र को सुदृढ बनाया गया, बीसवी सदी म उसी प्रकार पूजीपति वर्ग के विशेषाधिकारो को समाप्त कर आर्थिक लोकतत्र की स्थापना करना बहुत जरूरी है।[38] अत लास्की का सुझाव है कि महाजनी कुलीनतत्र की सत्ता को भग कर हमे एक नई समाजवादी व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए। आर्थिक शक्ति का लोकतत्रीकरण होना चाहिए और जनता को अपना आर्थिक भविष्य निर्धारित करने का अवसर मिलना चाहिए। पूजीपतियो के एकाधिकारी नियत्रण को समाप्त किए बिना योजनाओ पर आधारित समाजवादी अर्थव्यवस्था का निर्माण सभव नही। अत एकाधिकारी पूजीवाद का अत समाजवाद की दिशा म पहला कदम है।[39] लास्की का उपर्युक्त सुझाव फेबियनवाद की क्रमिकतावादी नीतियो की परिधि के बाहर है।

हम यह ध्यान मे रखना चाहिए कि साम्यवादियो की भाति सभी उद्योगो के तुरत राष्ट्रीयकरण के पक्ष मे नही ह। वे केवल आर्थिक शक्ति के मूल आधारो को सामाजिक स्वामित्व मे लेना चाहते हैं। इस दिशा मे एक महत्त्वपूर्ण कदम पूजी और ऋण के नियत्रण के लिए बैंको और बीमा कपनियो का राष्ट्रीयकरण है। दूसरा कदम भूमि पर स्वामित्व, अथवा नियत्रण स्थापित करना है। तीसरा कदम आयात और निर्यात के क्षेत्र म राज्य के दायित्व की स्थापना है। अत मे, लास्की यातायात, कोयले की खानो और बिजली के उत्पादन का राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं।[40] परतु उपर्युक्त कार्यक्रम की पूर्ति का अर्थ समाजवाद की स्थापना नही है। ये समाजवाद की दिशा म पहले अनिवार्य कदम हैं। वे समाजवाद का निर्माण ससदीय लोकतत्र की सहायता स कई चरणो म बाटकर करना चाहते हैं।[41]

लास्की का विश्वास है कि समाजवादी योजनाए लोकतांत्रिक स्वतत्रता के

वातावरण मे कार्यान्वित हो सकती हैं। उनका कथन है कि केवल फासीवादी योजनाए लोकतांत्रिक स्वतन्त्रता की भावना के प्रतिकूल हैं। सोवियत रूस की साम्यवादी योजनाए यद्यपि अधिनायकतन्त्र के वातावरण म कार्यान्वित हुई फिर भी उनके द्वारा कुछ क्षेत्रो मे मानवीय स्वतन्त्रता के क्षेत्र का विस्तार हुआ है।[4] परतु यदि पूजीवादी अराजकता के स्थान पर समाजवादी योजनाओ को ससदीय प्रणाली के अतगत कार्यान्वित करें तो किसी भी क्षेत्र म स्वतन्त्रता के क्षेत्र को सीमित किए बिना ही हम आर्थिक सुरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। उनका कथन है, 'मरे पास इसके लिए कोई प्रमाण नही कि पूजीवादी लोकतन्त्र को सुनियोजित लोकतन्त्र मे बदलने क लिए स्थायी या अस्थायी रूप से स्वतन्त्रता को सीमित करना जरूरी है। परतु इस कथन के समथन के लिए हम स्वतन्त्रता की विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए। मैं पहल ही मार्क्स की सूक्ति का उद्धरण दे चुका हू कि स्वतन्त्रता का अथ आवश्यकता की पहचान है। जब तक हम चद्रमा तक पहुच नही सकते, हमे चद्रमा को पाने की इच्छा नही करनी चाहिए।'[43] लास्की के अनुसार स्वतन्त्रता का मूल तत्त्व निरतर प्रयास म है और इस विश्वास म कि प्रत्यक व्यक्ति किसी भी सामाजिक उद्देश्य मे लगा होने पर भी उसकी परिभाषा मे अपने व्यक्तित्व की छाप छोड सकता है। सक्षेप मे स्व तन्त्रता का अथ यह ज्ञान है कि प्रत्येक व्यक्ति न केवल साधन है वह साध्य भी है। हमे स्वतन्त्र निणय और प्रयोग करने की सुविधा होनी चाहिए। लास्की का कथन है, 'जब हमे आकाश मे विचरण करने की शक्ति हो, महत्ता प्राप्त करन के खुले अवसर हों तो हमारे मन म स्वतन्त्रता की भावना का जन्म होता है। समाज म मनुष्य तभी स्वतन्त्र है जब उसके सस्थान उसमे सृजना त्मक आशा का भाव भर दें जो उसे ऐसी उपलब्धिया की खोज म व्यस्त कर दे जिनसे उसे महत्त्व और आनद मिलता है।'[44]

स्वतन्त्रता की यह नई परिभाषा लास्की द्वारा प्रस्तुत पूववर्ती परिभाषा से, जब व इसे प्रतिबधा का अभाव मानत थे, अधिक समष्टिवादी है। इस नई परि भाषा के आधार पर ही लास्की निष्कष निकालते है कि सोवियत रूस म मानवीय स्वतन्त्रता की कुछ क्षेत्रो म वास्तविक वद्धि हुई है। व कहते हैं कि रूसी मजदूर को फोरमैन या मनेजर की आलोचना करन का जा अधिकार उपलब्ध है, वह ब्रिटिश या अमरीकी मजदूर को भी प्राप्त नही है।[45] उसकी नौकरी सुरक्षित है उसके स्वास्थ्य का बीमा है, उसके बच्चे नि शुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकत है उसके काय का समाज म सम्मान है, वह जीवन-स्तर की उन्नति मे बराबर का भागीदार है—ये सभी बातें पूजीवादी देशो के मजदूरा के लिए वर्जित हैं।[46] लास्की स्वीकार करत हैं कि सोवियत योजनाओ को कार्यान्वित करने मे अधिनायकतन्त्र ने सोवियत रूस के निवासियो की नागरिक स्वतन्त्रताओ का हनन किया है। फिर भी उनका निष्कष है कि करोडो रूसी श्रमजीवियो ने आर्थिक,

सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रो मे अपनी स्वतत्रता का सवधन किया है। अत यह स्पष्ट है कि उत्पादन के सामाजिक स्वामित्व की व्यवस्था नए तथा अज्ञात क्षेत्रो मे मानवीय स्वतत्रता का विस्तार करती है। लास्की का विचार है कि इसके परिणामस्वरूप हमारे मूल्यो मे और स्वतत्रता के सामाजिक परिप्रेक्ष्यो म गुणात्मक परिवतन हुआ है।[47] लास्की को विश्वास है कि पश्चिमी यूरोप म समाजवादी योजनाओ को कार्यान्वित करने के लिए राजनीतिक अधिनायकतत्र की आवश्यकता नही पडेगी। इस प्रकार राजनीतिक स्वतत्रता को सुरक्षित रखते हुए हम सामाजिक और आर्थिक स्वतत्रता को प्राप्त कर सकेंगे।

अत म लास्की का समाजवादी आदश राष्ट्रीय न होकर सावभौमिक है। वह केवल पश्चिमी देशो के लिए ही उपयुक्त नही बल्कि सपूण विश्व के लिए वाछनीय लक्ष्य है। वे उपनिवेशो की आजादी, औद्योगीकरण और अत मे उनके समाजवादी आधार पर विकास के निरतर समथक रहे थे। व पूजीवादी राज्यो के साम्राज्यवाद का उन्मूलन कर विश्वभर म समाजवादी देशो के एक राष्ट मडल की स्थापना का स्वप्न देखते थे।[48] लास्की का मत था कि प्रत्येक देश राष्ट्रीय परिस्थितियो और सास्कृतिक परपराओ के आधार पर समाजवादी विकास के लिए अपने विशेष माग का स्वय चुनाव करेगा। अत व साम्य वादियो की इस प्रवृत्ति का विरोध करते थे कि अतर्राष्ट्रीय साम्यवादी नेतत्व म रहकर सभी देश समाजवाद की प्राप्ति के लिए उनके द्वारा प्रस्तावित हिंसा त्मक क्राति और अधिनायकतत्र का माग ही चुनें। यह राष्ट्रीय मनोविज्ञान और इतिहास के अनुभवो के प्रतिकूल है।[49] उनका विश्वास था कि सोवियत अधि-नायकतत्र भी कुछ समय पश्चात राजनीतिक लोकतत्र की दिशा मे प्रगति कर सकेगा।[50]

### सदभ


1 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल ममोयर, प० 72–75
2 ज्याज कटलिन हिस्ट्री आफ पालिटिकल फिलोसफस प० 654
3 किंग्सल मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल मेमोयर, प० 102–20
4 लास्की दि स्टट इन थ्यारी एड प्रक्टिस प० 114–17
5 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल मेमोयर प० 220–52
6 वही प० 35–43
7 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 84–90
8 लास्की डमाक्रेसी इन क्राइसिस पृ० 184–92
9 लास्की पार्लियामटरी गवनमट इन इगलड प० 89
10 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस प० 192–204
11 लास्की पार्लियामटरी गवनमट इन इगलैंड प० 89–90

12 ज्याज कटलिन हिस्ट्री आफ पालिटिक्ल फिलोसफस प० 663-67
13 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म, प० 242
14 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 109-12 तथा 242-49
15 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 140-41
16 लास्की रिफ्लेक्शस ग्रान दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प० 88-91
17 किंग्सल मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल मेमोयर अध्याय IX, X तथा IIX
18 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 146
19 लास्की दि अमेरिकन डमोक्रसी, प० 201-63
20 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 71-80
21 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 175
22 वही प० 176
23 लास्की दि अमरिकन डमोक्रसी, प० 177-99
24 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, प० 176-77
25 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस, प० 138-45
26 लास्की दि अमेरिकन डमाक्रेसी प० 506-37
27 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 130-34
28 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 247-61
29 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एड प्रक्टिस पृ 271
30 लास्की दि अमेरिकन डेमोक्रसी प० 499-517
31 लास्की डमोक्रेसी इन क्राइसिस प० 243-63
32 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 278-79
33 लास्की डमोक्रसी इन क्राइसिस प० 147-89
34 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवाल्यूशन आफ अवर टाइम प० 305
35 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 152-65
36 लास्की पालियामटरी गवनमट इन इगलड अध्याय III IV तथा VIII
37 लास्की फथ रीजन एड सिविलाइजेशन प० 69-79
38 लास्की रिफ्लक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 306-7
39 लास्की दि अमरिकन डमाक्रसी प० 180-85
40 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवाल्यूशन आफ अवर टाइम प० 306-9
41 लास्की पार्लियामटरी गवनमट इन इगलड प० 79-97
42 सिडनी तथा बाट्रिस वेब सावियट कम्युनिज्म—ए न्यू सिविलाइजशन प० 324-48
43 लास्की रिफ्लक्शस आन दि रिवाल्यूशन आफ अवर टाइम प० 342
44 वही प० 343
45 लास्की ट्रड यूनियस इन दि न्यू सोसायटी प० 145-82
46 सिडनी तथा बीट्रिस वेब सावियट कम्युनिज्म—ए न्यू सिविलाइजेशन प० 501-68
47 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 438-75
48 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस पृ० 258-64
49 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 91-104
50 लास्की फेथ रीजन एंड सिविलाइजशन प० 62-68

# अंतर्राष्ट्रीयता का आदर्श

उन्नीसवी सदी यदि राष्ट्रवादी भावना की विजय की शताब्दी है तो बीसवी सदी अतर्राष्ट्रीयता के आदश के प्रसार का युग है। लास्की का विचार है कि सप्रभुतासपन्न राष्ट्रीय राज्य की अपूणता तीन दशाब्दियो मे दो विश्वयुद्धो की दु खात घटनाओ से सिद्ध हो चुकी है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रसघ और द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात सयुक्त राष्ट्र सघ की स्थापना सही दिशा मे कदम थे परतु विश्व सघ की स्थापना की दिशा म वे केवल पहले कदम है। अतरा ष्ट्रीय मामलो मे वतमान अराजकता का एकमात्र निदान राष्ट्रीय राज्यो की सप्रभुता का जड से उन्मूलन है।[1] वे अतर्राष्ट्रीय कानून के पारपरिक आधार को, जिसके अनुसार सप्रभुता राष्ट्रीय राज्य का एक अनिवाय लक्षण है, पूणत अस्वीकार करते हैं। उनका कथन है, 'निरकुश और स्वतत्र सप्रभुतासपन्न राज्य की परिकल्पना, जो सरकार के प्रति अपने नागरिको से बिना शत पूण निष्ठा की अपेक्षा रखता है और जो इस निष्ठा को स्वीकार कराने के लिए बल प्रयोग करने का भी अधिकारी है, मानवता के हितो के प्रतिकूल है। यदि हम राज नीतिक दायित्व के नैतिक रूप से सतोषजनक सिद्धात का प्रतिपादन करना चाहते हैं, तो इस समस्या को हमे भिन्न दृष्टिकोण से देखना चाहिए। रच नात्मक सभ्यता मे पृथक राज्यो के निर्माण की ऐतिहासिक घटना महत्त्वपूण नही बल्कि विश्व अतर्निभरता का वैज्ञानिक तथ्य महत्त्वपूण है। हमारी निष्ठा की वास्तविक इकाई विश्व है। हमारे आज्ञापालन का वास्तविक दायित्व मानव जाति के सपूण हितो के प्रति है।[3]

अत लास्की सयुक्त विश्व समाज के आदश मे निष्ठा रखते हैं जिसके अनुसार एक अतराष्ट्रीय सरकार राष्ट्रीय समाजो के आपसी सबधो का नियत्रण करेगी। इसके परिणामस्वरूप रूस, इग्लैंड या भारत जैसे राष्ट्रो से सप्रभुता को छीनकर उसे किसी विश्व सघ की सरकार को हस्तातरित कर दिया जाएगा जो अपने अधीन राष्ट्रीय इकाइयो पर बल प्रयोग की अधिकारी होगी। अतर्राष्ट्रीय सरकार की स्थापना अतर्राष्ट्रीय सबधो मे वतमान अराजकता को

अवश्य दूर कर देगी परतु उपयुक्त लक्ष्य की प्राप्ति सुदूर भविष्य की सभावना है।'[4]

अनेक कारणा से मनुष्यो म अतर्राष्ट्रीय समाज के अस्तित्व की चेतना का विकास हो रहा है। विज्ञान की उन्नति और सचार तथा यातायात के साधनो के विकास के द्वारा राष्ट्र एक दूसर के निकट आ गए है। तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप बडे पमाने पर यत्रचालित उद्योगो की स्थापना से अतराष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि के लिए नए अवसर मिले हैं। पूजीवादी देशा की साम्राज्यवादी प्रवत्ति न, यद्यपि यह औपनिवेशिक जनता के लिए दुखद घटना थी, यूरोपीय तथा अन्य राष्ट्रो के मध्य भाषायी सास्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सबध स्थापित किए है। पूजीवाद ने राष्टीय अलगाव की दीवारें तोडकर अतराष्टीय बाजार की स्थापना की और प्रत्यक देश से व्यापारिक सबध निर्धारित किए।[5] यदि इसके परिणामस्वरूप पूजीवादी दशा मे आपसी युद्ध हुए तो प्रगतिशील चितको न युद्ध के निराकरण के उपायो की खोजना भी शुरू किया। अतर्राष्ट्रीय मजदूर आदोलन का विकास पूजीवाद के उदय का ही प्रतिफल था। लास्की इस तथ्य को स्वीकार करते ह कि इन सभी कारणा से अतर्राष्ट्रीय भावना विकसित हुई है। राष्ट्र सघ और सयुक्त राष्ट्र सघ की स्थापना इसी चतना के प्रतीक हैं। फिर भी अतर्राष्ट्रवाद की विरोधी शक्तिया हमारे राष्ट्रो के विभिन्न क्षेत्रो मे अब भी सुदृढ और सक्रिय है।[6] राष्ट्रीय सप्रभुता का सिद्धात पारस्परिक सहयोग के आधार पर अतर्राष्ट्रीय नीतियो के निर्धारण म बाधक है। यह दक्षिणी अफ्रीका द्वारा अपन सवर्ण नागरिका को मानवीय अधिकारो से वचित रखन की नीतिया से स्पष्ट है। सयुक्त राष्ट सघ के अनेक निर्णयो का उल्लघन करते हुए वह सप्रभुता के आधार पर अपनी रगभेद की नीति का औचित्य सिद्ध करन का दावा करता है। जातिद्वेष, उपनिवेशवाद और फासीवाद अतर्राष्ट्रीय एकता और सहकारिता मे निरतर बाधक रहे हैं। लास्की के मतानुसार पजीवादी साम्राज्यवाद भी सहकारी विश्व व्यवस्था के लक्ष्य की प्राप्ति मे बाधक है।[7]

अतर्राष्ट्रीय विधान के क्षेत्र मे लास्की के चितन का महत्त्वपूर्ण योगदान युद्ध पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास है। ग्रोशयस द्वारा प्रस्तुत अतराष्ट्रीय विधान की परिकल्पना के आधार पर युद्ध को सप्रभुतासपन्न राज्य का वैधानिक अधिकार माना जाता है जिसके द्वारा वह अन्य राज्या से अपन विवादो का निपटारा कर सकता है। लास्की ग्रोशयस की इस परिकल्पना की पुनर्व्याख्या को अपने राजनीतिक सिद्धात का महत्त्वपूर्ण अग मानते हैं। उनका कथन है 'एक दृष्टिकोण से राज्य का सिद्धात अतर्राष्ट्रीय विधान का दशन भी है। इसे यह समझान की जरूरत है कि क्या राज्य अतर्राष्ट्रीय सहयोग के नियमो के अनुसार काय करने के लिए बाध्य होने चाहिए। इसे उन नई मान्यताओ के आधार

पर निर्मित होना चाहिए जो हमारे आधुनिक ससार के लिए उपयुक्त हैं। ग्रोशस ने लगभग तीन सौ वष पूव सवप्रथम अतर्राष्ट्रीय कानून की समस्याओ के अध्ययन म वैज्ञानिक दृष्टिकोण की खोज की थी। तब से राज्यो के सबधो मे बडे परिवतन हुए हैं और हमे उनका महत्त्व समझते हुए विस्तृत आधारो पर एक नई परिकल्पना प्रस्तुत करनी चाहिए। इस दशन के आधार तब तक अपूण ही रहगे जब तक हम अतर्राष्ट्रीय सबधो मे नियमो को लगातार लागू करने म वह विश्वास प्राप्त न कर लें जो राज्य को अपनी सीमाओ के अतगत अय समुदायो के व्यवहार को कानून द्वारा नियमित करने का प्राप्त है।[8]

दूसरे शब्दो म हेरोल्ड लास्की अतर्राष्ट्रीय कानून के पारपरिक आधारो म सशोधन करना चाहते है। इसकी पारपरिक परिभाषा के अनुसार राज्य को दूसरे राज्यो म अपने विवादो मे स्वय न्याय करते हुए शास्त्रो की परीक्षा द्वारा उनका समाधान करने का अधिकार है। वे चाहते है कि इन विवादो के शांति पूण समाधान के लिए और युद्धो को रोकने के लिए एक शक्तिशाली अतर्राष्ट्रीय सस्थान की स्थापना होनी चाहिए। सक्षेप मे, राष्ट्रीय नीति के उपकरण के रूप म अतर्राष्ट्रीय कानून द्वारा युद्ध पर पाबदी लगा देनी चाहिए, जो वतमान परिस्थितियो मे एक काल्पनिक आदश मात्र है।[9]

## राष्ट्रीय सप्रभुता और पूजीवाद

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आधुनिक काल का सप्रभुतासपन्न राष्ट्रीय राज्य मूलत पूजीवादी युग की उपज है। अतर्राष्ट्रीय कानून के सदभ में सप्र भुता के सिद्धात की अभिव्यक्ति के दो रूप है। सवप्रथम यह एक तार्किक सूत्र है जो अतर्राष्टीय नियमो को सप्रभुतासपन्न राज्यो के स्वतत्र सकल्पो की उपज मानता है। कोई भी राज्य ऐसे किसी नियम को, जिसे उसने स्वीकार न किया हो, मानने के लिए बाध्य नही है। इस तार्किक सूत्र द्वारा उत्पन्न स्थिति का एक दाशनिक औचित्य प्रस्तुत किया जाता है। राज्य को सर्वोपरि नतिक समाज मानते हुए यह कहा जाता है कि वह किसी बाह्य नतिक सत्ता की अधीनता स्वीकार नही कर सकता। नतिक सबधो के लिए सुव्यवस्थित जीवन होना चाहिए और यह दावा किया जाता है कि सुव्यवस्थित जीवन केवल राष्टीय राज्य की सीमाओ के अतगत सुलभ है। हम राज्यो के बाह्य सबधो म इस प्रकार का सुव्यवस्थित जीवन नही पाते। अत अतर्राष्ट्रीय कानूनो को किसी राज्य पर उसकी इच्छा के विपरीत आरोपित नही किया जा सकता।[10] 1919 मे राष्ट्र सघ की परिकल्पना का आधार यही सप्रभुता का सिद्धात था। इसी सिद्धात की वजह से नि शस्त्रीकरण की योजना पर कोई समझौता होना असभव है। जब हम युद्ध को अतर्राष्टीय विवादो का अतिम निणायक मान लेते है तो यह तकसगत है कि प्रत्यक राज्य राष्ट्रीय हित को ध्यान मे रखते हुए सभावित युद्ध

मे विजय के लक्ष्य को पाने के लिए सशस्त्रीकरण की दौड म शामिल होगा। यदि हम प्रसिद्ध व्यक्तियो की इस उक्ति को मान लें कि शाति भी युद्ध की तैयारी का समय है तो लास्की के कथनानुसार यही कठिनाई अतर्राष्ट्रीय सबधा के प्रत्येक क्षेत्र मे दृष्टिगोचर होगी, चाह वह आयात निर्यात कर हो या स्वणमान का सवाल हो या श्रमिका की सुख सुविधाओ का प्रश्न हो। लास्की का निष्कष है कि जो विश्वव्यवस्था अनेक सप्रभुतासपन्न राज्यो के अस्तित्व पर आधारित होगी, उसस युद्ध और सशस्त्र शाति का अस्तित्व भी अनिवाय है।[11]

यह स्पष्ट है कि स्थायी विश्वशाति के माग म मुख्य बाधा राष्ट्रीय सप्रभुता का सिद्धात है। लास्की उन अतर्राष्ट्रीय विधिशास्त्रियो के मत से असहमत हैं जो यह समझत हैं कि पूजीवादी देशा के वतमान श्रेणी सबधो को बिना खत्म किए ही सप्रभुता को समाप्त किया जा सकता है।[1] पूजीवादी राज्य म सप्रभुता का उद्देश्य पूजीपतियो के हितो की आतरिक और बाह्य क्षेत्रा मे रक्षा करना है। शासक पूजीपति वग के श्रेणी स्वार्थों को राष्ट्रीय हित की सज्ञा दे दी जाती है। आधुनिक पूजीवादी राज्यो ने अपन देश के पूजीपतियो के हितो के लिए अनेक साम्राज्यवादी युद्ध लडे हैं। यूरोप की पूजीवादी सरकारो न एशिया, अफ्रीका और अमरीका म औपनिवेशिक विस्तार के लिए सदा युद्ध का सहारा लिया है। 1914 का विश्वयुद्ध भी पूजीवादी राष्ट्रा के दो गुटा मे बाजारो तथा उपनिवेशो पर नियत्रण के लिए आपसी सघष था।[13] अत लास्की का यही निष्कष है कि सप्रभुता का सिद्धात एक शस्त्र है जिसका उपयोग पूजीवादी राज्य का शासक वग अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे युद्ध तथा कूटनीति द्वारा अपने वगस्वार्थों की रक्षा के लिए करता है।[14] लास्की का कथन है, 'पूजीवादी देश म राज्य को सप्रभुता की जरूरत पूजीवाद के हिता की रक्षा के लिए पडती है। अत मे इन हितो की रक्षा युद्ध द्वारा की जाती है जो अतर्राष्ट्रीय सबधो म सप्रभुता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। जब तक आतरिक क्षेत्र म राज्य का उद्देश्य पूजीवाद के सिद्धाता की रक्षा करना ह, वह बाह्य क्षेत्र म राष्ट्रीय नीति के उपकरण के रूप मे युद्ध का उपयोग आवश्यक मानेगा। यदि सप्रभुता और सुदृढ विश्व व्यवस्था क सिद्धाता मे अतर्विरोध है, तो उसी प्रकार पूजीवाद और विश्व व्यवस्था की परिकल्पनाओ मे समन्वय करना असभव है क्योकि हमारे अनुभव के अनुसार पूजीवादी प्रणाली के आचरण मे युद्ध निश्चयात्मक रूप से सन्निहित है।[15] यह महत्त्वपूण निष्कष है क्योकि यह पूजीवादी प्रणाली के उन्मूलन को राष्ट्रीय सप्रभुता के निराकरण की अनिवाय शत मानता है। विश्व सगठन के व सभी प्रयास, जो लास्की के इस निष्कष की अवहेलना करते हैं, सफल नही हो सकत। यथाथ म पूजीवादी विश्व के इतिहास म गभीर सघर्षों का देखत हुए अतर्राष्ट्रीय सरकार को चलाना असभव सिद्ध होगा। सोवियत रूस और साम्यवादी राज्यो के विश्व मच पर पदापण से पूजीवादी

गुट और साम्यवादी गुट के देशों में एक नया अंतर्विरोध उत्पन्न हो गया है।[16]

लास्की का विचार है कि साम्यवादी राज्य का वर्गचरित्र भिन्न होने से वह विश्वशांति के लिए पूंजीवादी राज्यों की भांति खतरा नहीं है। साम्यवादी राज्य का मूल उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शांति की रक्षा करना है। उनका मत है कि सोवियत रूस द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध में फिनलैंड पर आक्रमण युद्धजनित आपात कालीन कार्य था। अन्यथा दो विश्वयुद्धों के बीच सोवियत विदेश नीति सदा शांति पर आधारित रही थी। उनका कथन है, 'रूस जैसे साम्यवादी देश का हित शांति में है क्योंकि शांति उसके प्रयोग की सफलता की शर्त है और पूंजीवादी देशों का हित उसके सफलतापूर्वक विकास से खतरे में पड़ता है। अत मेरा सदा तर्क रहा है कि इसीलिए पूंजीवादी लोकतंत्रों के राजनीतिज्ञों ने हिटलर के बोल्शेविक विरोधी अभियान का स्वागत किया था।'[17] लास्की का विश्वास है कि समाजवादी राज्य में वे अंतर्विरोध नहीं होते जो किसी पूंजीवादी राज्य को औपनिवेशिक विस्तार के लिए बाध्य करते हुए साम्राज्यवादी युद्धों का अनिवार्य चक्र शुरू करते हैं। सोवियत रूस को इस रूप में विदेशी बाजारों और उपनिवेशों की आवश्यकता नहीं है। पूंजीवादी राज्यों की तरह सोवियत रूस को आक्रामक उद्देश्यों के लिए संप्रभुता की शक्ति की जरूरत नहीं है। हां, दूसरे पूंजीवादी राज्यों के आक्रमण से आत्मरक्षा के लिए सोवियत रूस को भी अपनी संप्रभुता की आवश्यकता है।[18] लास्की का कथन है 'जिस रूप में संप्रभुता की जरूरत इंग्लैंड, संयुक्त राज्य या जापान को है, सोवियत रूस को नहीं है। इन सभी देशों में बल प्रयोग करने की सर्वोच्च शक्ति उस वर्ग के हाथ में है जो सरकार को अपने विशेषाधिकारों के हित में नियंत्रित रखता है। इन विशेषाधिकारों को खतरे में बगैर डाले यह अपनी संप्रभुता का त्याग नहीं कर सकता। संक्षेप में, संप्रभुता वह शस्त्र है जिसके द्वारा किसी समाज के निहित स्वार्थ, ब्रेल्स फोर्ड के सुंदर शब्दों में, 'स्वर्ण और इस्पात की लड़ाई' लड़ते हैं, और सरकारी सत्ता की आड़ में राष्ट्रवाद की अबौद्धिक भावना का आह्वान करते हुए विदेशों में अपना प्रभाव स्थापित करते हैं। जिस रूप में ये निहित स्वार्थ पूंजीवादी समाज में पाए जाते हैं, उस रूप में उनका अस्तित्व सोवियत रूस में नहीं है। बाह्य सुरक्षा के आधार को छोड़कर, रूसी प्रणाली के चरित्र को देखते हुए उसमें आक्रमण की प्रवृत्ति मौजूद नहीं है, किंतु संकुचन की स्थिति में पूंजीवादी समाज में प्रत्येक निहित स्वार्थ के लिए अपने हितों की रक्षा के लिए आक्रामक हो जाना स्वाभाविक है। संप्रभुता के प्रयोग द्वारा ही आक्रमण के लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है।'[19] इस प्रकार लास्की यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि समाजवादी राज्यों द्वारा आक्रामक उद्देश्यों के लिए संप्रभुता का उपयोग अनावश्यक है। अत वर्तमान पूंजीवादी राज्यों के स्थान पर समाजवादी राज्यों की स्थापना के उपरांत ही राष्ट्रों के बीच उस सहकारिता और

शाति का वातावरण उत्पन्न हो सकेगा जिसम अतर्राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रीय सरकारो के वैदेशिक सबधो का नियत्रण कर विश्व व्यवस्था को सुरक्षित रख सकेगी।

प्रमुख पूजीवादी देशो के सामयिक इतिहास से सिद्ध होता है कि लास्की का विचार है कि पूजीवाद, सप्रभुता और युद्ध म निकट का सबध है सही है।[20] प्रत्येक पूजीवादी समाज मे धन के विषम विभाजन के कारण उत्पादन और उपभोग मे अर्तावरोध उत्पन्न हो जाता है। पूजीपति वग इसका समाधान उत्पादन सबधो मे परिवतन के द्वारा न कर आर्थिक साम्राज्य की नीति द्वारा करता है। अत पूजीवादी सरकारा मे उपनिवेशो और प्रभाव-क्षेत्रो के लिए सघप होता है। इनका उपयोग कच्चे सामान के स्रोतो तैयार माल के लिए बाजारो और अतिरिक्त पूजी के निवेश के लिए क्षेत्रो के रूप मे किया जाता है। उन्नीसवी सदी मे फ्रास, इगलैंड और हालैंड का यही इतिहास है, जमनी, इटली और जापान ने यही इतिहास बीसवी सदी के पूवाध मे दोहराया और इसके उत्तराध म भी यही इतिहास सयुक्त राज्य अमरीका का होने वाला है।[21] लास्की का कथन है, 'पारपरिक रूप म अमरीकी आर्थिक विस्तार समाप्त हो चुका है, ब्रिटेन की तरह वहा भी उत्पादन के सबधा और उत्पादन की शक्तियो मे अर्तावरोध है। वतमान रूप मे उसका लोकतत्र तभी जीवित रह सकता है जब वह या तो साम्राज्यवादी हा जाए या पूजीवादी प्रणाली को समाप्त कर दे। यदि अमरीकी भविष्य मे पहली दिशा म है तो वह सप्रभुता का त्याग नही कर सकेगा। क्योकि यदि राज्य के रूप मे उसकी इच्छा पर दूसरे राज्या की इच्छा का प्रतिबध होगा तो वह साम्राज्यवाद का प्रसार नही कर सकेगा। अत उसे पूजीवाद और लोकतत्र मे एक का चुनाव करना पडेगा, यदि उसने पूजीवाद को चुना तो हिटलर-शासित जमनी की तरह वह भी आक्रामक युद्धो मे सलग्न हो जाएगा।[22] युद्धोत्तरकाल म अमरीका ने रूजवेल्ट की उदारवादी नीतिया को तिलाजलि देकर आक्रामक साम्राज्य-वाद और युद्ध की नीतिया अपनाई है जिनका प्रारभ कोरिया युद्ध से हुआ और परिणति वियतनाम सघप म हुई। लैटिन अमरीका, अफ्रीका मध्यपूव और एशिया म उसने आर्थिक साम्राज्यवाद की नीति जारी रखी और यूरोप तथा एशिया मे सनिक सगठनो की स्थापना की एव शीतयुद्ध, सशस्त्रीकरण और सैनिकीकरण को बढावा दिया।[23] अमरीकी समाज म समाजवादी परिवतन की निकट भविष्य म कोई सभावना नही है, अत लास्की के मतानुसार अमरीकी वदेशिक नीति कभी शातिपूण नही हो सकेगी। अमरीका अपनी सप्रभुता को कभी नही छोडेगा क्योकि उसने अमरीकी पूजीवाद के आर्थिक अर्तावरोध का समाधान आर्थिक साम्राज्यवाद मे ढूढा है। लास्की का कथन है 'पूजीवादी विकास के साम्राज्यवादी चरण की मान्यताओ का अनिवाय परिणाम युद्ध है,

और सुदृढ अतराष्ट्रीय व्यवस्था का उससे सैद्धातिक रूप से भी समन्वय नही हो सकता। यह अतर्राष्ट्रीय व्यवस्था विश्व की आर्थिक एकता के सदभ म होनी चाहिए जिसम राज्या की सप्रभुता का राजनीतिक तथ्य बाधक सिद्ध होता है।'[24] लास्की का निष्कष है कि जब तक सप्रभुता सपन्न पूजीवादी राज्य का इतिहास के कूडेदान मे नही भेजा जाता, विश्वशाति की सुरक्षा के लिए सुदढ विश्व सस्थान की स्थापना असाध्य है।

## समाजवादी राष्ट्रमडल का आदश

जब वार्साई सधि के प्रतिफल के रूप म राष्ट्र सघ की स्थापना हुई तो लास्की ने इसे राष्ट्रीय सप्रभुता की समाप्ति की दिशा म एक महत्त्वपूण कदम माना। पहले उन्होने इसे अतिराज्य (Super State) की सना दी परतु बाद म उन्होन इसे राष्ट्र सघ की गलत परिभाषा माना। फिर भी उन्हे आशा थी कि कालातर मे यह अतिराज्य की स्थिति प्राप्त कर लेगा।[5] उनका कथन है 'मैं इस औपचारिक प्रश्न का उत्तर देना नही चाहता कि राष्ट्र सघ अतिराज्य है या सप्रभुतासपन्न राज्यो का समुदाय। मेरा विश्वास है कि यह अनिवाय रूप से अतिराज्य बनेगा और इसकी कायशली से भविष्य मे इसका यह रूप विकसित होता जाएगा। वस्तुत इसके पास सदस्या को बाध्य करने की शक्ति है और इसकी सत्ता के क्षेत्र म एसे काय हैं जिनम इसके आदेशा का उल्लघन सद्धातिक रूप से असभव तो नही किंतु व्यावहारिक रूप से बहुत कठिन है।'[6] अतर्राष्ट्रीय घटनाओ ने लास्की की इस आशा को गलत सिद्ध कर दिया और राष्ट्र सघ ने अपने अतिम दिनो तक सप्रभुतासपन्न राज्या के समुदाय के रूप म ही काय कर सका। वह सदस्यो पर अपनी इच्छा आरोपित करने म पूणत असफल रहा। यह तथ्य सधियो के पजीकरण, राष्ट्रीय सीमाओ के निधारण, नि शस्त्रीकरण, जातीय और धार्मिक अल्पसख्यको के दमन औपनिवेशिक देशा के शोषण इत्यादि प्रश्नो पर खुलकर सामने आ गया। जब राष्ट्र सघ उपयुक्त समस्याओ का ही समाधान न कर सका तो सामूहिक सुरक्षा के उपकरण के रूप मे सफलता प्राप्त करना उसकी सामथ्य के बाहर था। जब जापान, जमनी और इटली न अपनी आक्रामक नीतिया शुरू की तो राष्ट्र सघ के अन्य सदस्य इनके विरुद्ध कोई कदम न उठा सके। प्रमुख पूजीवादी राज्या न आक्रामक फासिस्ट राज्या के प्रति तुष्टीकरण की नीतिया अपनाइ और फलस्वरूप राष्ट्र सघ का सामूहिक रक्षा के उपकरण के रूप म पतन हो गया।[27]

सयुक्त राष्ट्र सघ की स्थापना के बाद भी राज्या की सप्रभुता म तथा उनके वैधानिक स्तर म कोई अतर नही आया। राज्य आज भी अपनी आतरिक और वाह्य नीतिया के निर्धारण म पूण रूप स स्वतत्र है। यह अपन विवक के अनुसार ही युद्ध करता है और शाति स्थापित करता है। यह स्वय सनिक सगठना

मे भाग लेने या न लेने का निणय करता है। यह स्वय आत्मरक्षा या आक्रमण के लिए सेनाओ और शस्त्रास्त्रो का प्रबध करता है। यदि उसके कब्ज मे उपनिवेश हैं तो उन पर शासन या दु शासन का अधिकार भी उसे ही प्राप्त है।[8] सयुक्त राष्ट्र सघ दक्षिण अफ्रीका स न तो उसके उपनिवेश की मुक्ति करा सका और न उसकी रगभेद की नीति को समाप्त करा सका। न यह औपनिवेशिक शक्तिया से आग्रह कर सका कि वे वहा की जनता को जल्दी आत्मनिणय का अधिकार प्रदान करें। न यह अमरीका को विश्व भर म अपने सनिक, नौसनिक और वायुसनिक अड्डे बनाने से रोक सका। जिस प्रकार राष्ट्र सघ मचूरिया, इथियोपिया, स्पेन, आस्ट्रिया और चेकोस्लावाकिया के प्रश्नो पर असफल रहा, वसे ही सयुक्त राष्ट्र सघ कोरिया, फिलिस्तीन वियतनाम और वगलादेश की समस्याओ का समाधान न कर सका।

इस सबध मे मूल प्रश्न यह है कि क्या राष्ट्रीय सप्रभुता के उन्मूलन क आधार पर अतराष्ट्रीय प्रणाली का निर्माण सभव है। अत म लास्की इसी निष्कष पर पहुचे कि समाज के पूजीवादी ढाचे को बदले विना राष्ट्रीय सप्रभुता की समाप्ति असभव है। जब तक राष्ट्रो की वैदेशिक नीतिया पूजीपति वग निर्धारित करेगा, राष्ट्रीय समाजो के सहयोग पर आधारित अतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का निर्माण नही किया जा सकता। सुदृढ अतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए उसे मुद्रा, आयात नियात, श्रम मान, प्रवासियो की समस्या, रगभेद पिछडी जातियो की समस्या, कच्चे सामान का वितरण इत्यादि पर नियत्रण स्थापित करना पडेगा। कोई भी विश्व सगठन ऐसा करने म असमथ है क्योकि राष्ट्रो की सीमा के अतगत पूजीवादी समाज के निहित स्वाथ उसे ऐसा करन से रोकते है। सप्रभुतासपन्न राज्य जिन श्रेणी सवधो की रक्षा के लिए अपनी सीमाआ के अदर तत्पर रहता है, उन्ही श्रेणी सवधो की रक्षा के लिए वह अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र म विश्व सगठन को चुनौती देता है। जब तक इन श्रेणी सबधो मे मौलिक परिवतन नही किए जाएगे, राष्ट्रो के शत्रुतापूण सवध भी कायम रहेंगे। वतमान स्थिति म जब तक पूजीवादी व्यवस्था कायम है, अतिम रूप से अनिवाय सघष को केवल कुछ दिनो के लिए स्थगित किया जा सकता है।[9] आधुनिक अतर्राष्ट्रीय अशाति का मुख्य कारण पूजीवाद की साम्राज्यवादी प्रवृत्तिया हैं। इन्ही साम्राज्यवादी प्रवृत्तियो के कारण राष्ट्र सघ विश्वशाति की रक्षा न कर सका और इन्ही कारणा से सयुक्त राष्ट्र सघ भी अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे असफल सिद्ध हो रहा है। अत लेनिन का अनुकरण करते हुए लास्की भी पूजीवादी साम्राज्यवाद को शातिपूण विश्व व्यवस्था के निर्माण मे मुख्य बाधा मानते है।[10]

विश्वशाति की स्थायी व्यवस्था की समस्या का समाधान केवल वधानिक या राजनीतिक स्तर पर नही हो सकता। शाति की व्यवस्था की अधिकाश

समस्याओ का रूप आर्थिक है। शाति के लिए निरतर आर्थिक उन्नति की आवश्यकता है जो उत्पादन के वतमान सबधो के आधार पर सभव नही है। आर्थिक सकटो का मुख्य कारण पूजीवादी समाज मे उत्पादक शक्ति और उपभोक्ता शक्ति का स्थायी सघप है। इसके अनिवाय परिणाम व्यापार चक्र की विपत्तिया, आतरिक विप्लव और युद्ध हैं। समाज मे धन का विपम विभाजन और विश्व-बाजार मे प्रतियोगिताग्रस्त राष्ट्रो म साधना का असमान वितरण पूजीवादी अथव्यवस्था मे सकुचन की अवस्था उत्पन्न करते हैं जिसका अनिवाय परिणाम युद्ध और क्राति है। यह तो निश्चित है कि पूजीवाद के एतिहासिक ढाचे के अतगत एक स्थायी और शातिपूण अतर्राष्ट्रीय समाज का निर्माण नही हो सकता।[31]

अत लास्की का विचार था कि सयुक्त राष्ट्र सघ स्थायी रूप से विश्वशाति की रक्षा नही कर सकता क्योकि पूजीवादी शाति वस्तुत एक नए युद्ध की तैयारी का अवसर है। कोई भी विश्व सगठन पूजीवादी देशा की साम्राज्यवादी अकाक्षाओ पर प्रतिबध नही लगा सकता और न उनकी आक्रामक नीतिया और युद्धा को रोक सकता है। युद्धोत्तर काल मे प्रमुख पूजीवादी राज्यो की वदेशिक नीतिया से सिद्ध हो गया कि उनके विपय मे लास्की की आशकाए निर्मूल नही थी। अत लास्की की यह माग सवथा उचित है कि पहले उत्पादन के पूजीवादी सबधो को बदल डालो और उनके स्थान पर समाजवादी प्रणाली को अपनाओ।[3] तदुपरात स्थायी विश्वशाति की स्थापना के लिए मानव जाति के लिए एक अतराष्ट्रीय सस्थान स्थापित करने के विषय मे गभीरता से विचार करा। 1924 मे लास्की न राष्ट्र सघ की स्थापना का स्वागत करते हुए उसे अतिराज्य का स्तर दिया था। 1945 म सयुक्त राष्ट्र सघ की स्थापना से उन्हे कोई विशेप हप नही हुआ। विश्वशाति की पहली शत पूजीवाद का अत है। अत जब तक दुनिया के प्रमुख राज्य पूजीवादी हैं, सयुक्त राष्ट्र सघ विश्वशाति के लक्ष्य को प्राप्त करने म सफलता प्राप्त नही कर सकता।[33]

लास्की का अतिम लक्ष्य समाजवादी राष्ट्रमडल की स्थापना है। इसी के द्वारा स्थायी विश्वशाति की उपलब्धि सभव है। इस सबध म लास्की बहुत आदशवादी हैं। उनका विश्वास है कि समाजवादी राज्य राष्ट्रवाद की दुभावना से पीडित होकर युद्धा को प्रोत्साहन नही देंगे। लास्की का कथन है 'अत मेरे मत के अनुसार सुदृढ अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का माग आधुनिक समाज के श्रेणी सबधा के पुनगठन का माग है। जितनी दृढता से इस लक्ष्य को पाने का प्रयास किया जाएगा, साम्राज्यवादी नीति के अनुसार चलन म राज्या की उतनी ही कम अभिरुचि रहेगी। समाज की उत्पादक शक्ति का इस प्रकार विकास करना कि उसके फला मे सभी का बराबर का हिस्सा मिले, राजनीतिक सत्ता को थोडे स लोगा की स्वार्थसिद्धि के लिए गलत ढग से प्रयुक्त होने स

वचाना है। उसकी सप्रभुता फिर निहित स्वार्थों का आवरण नही रहती। आतरिक आवश्यकता की चिता किए बिना, पूजी के निवेश का उद्देश्य विदेशा की जनता के शोषण की विधा तक सीमित नही रहता। वदेशिक नीतिया का मुख्य लक्ष्य आर्थिक साम्राज्य के आदश पर आधारित सनिकवाद न होकर बराबरी के आधार पर दूसरे राष्ट्रो से व्यापार करना हो जाता है। समाजवादी राज्या का समाज ही, जैसा अन्य कोई प्रणाली करन मे असमथ है, आर्थिक समस्याओ पर आपसी मित्रता और सौहाद के वातावरण मे विचार कर सकता है। हम सहकारिता की प्रणाली उन सिद्धाता की नीव पर नही बना सकते जिनके द्वारा मनुष्य मनुष्य का ही शोषण करता है।'[34] अत लास्की का विश्वास है कि समाजवादी राज्यो का अतर्राष्ट्रीय सघ ही उन परिस्थितियो को उत्पन्न कर सकता है जो विश्वशाति को स्थायी रूप दे सकती है। समाजवादी राष्ट्रमडल साम्राज्यवाद को राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रो मे सदा के लिए समाप्त कर देगा।[3] वह औपनिवेशिक तथा अधऔपनिवेशिक देशा के औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण मे सहायता पहुचाएगा और प्रत्येक राष्ट्र के नागरिको मे धन के न्यायोचित वितरण का प्रयास करेगा।[36]

सदभ


1 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 226–31
2 लास्की दि टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 219–22
3 लास्का ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० 64
4 लास्की इट्राडक्शन टु पालिटिक्स प० 101–5
5 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० XVII
6 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम प० 217–24
7 लास्का दि स्टट इन थ्योरी एड प्रक्टिस प० 258
8 वही प० 218
9 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 201–10
10 लास्की इट्रोडक्शन ट पालिटिक्स प० 89–94
11 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एड पालिटिक्स प० 221–22
12 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवाल्यूशन आफ अवर टाइम प० 206
13 लास्की दि स्टेट इन थ्यारी एड प्रक्टिस प० 229–44
14 लास्की दि अमरिकन डेमोक्रेसी प० 550–52
15 लास्की दि स्टट इन थ्यारी एड प्रक्टिस प० 229
16 लास्की दि अमरिकन डमाक्रसी प० 503–17
17 लास्की रिफ्लक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 209–10
18 लास्की दि अमेरिकन डमाक्रमी प० 537–39
19 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 217–18

20 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस, पृ० 243–44
21 लास्की दि अमेरिकन डमोक्रसी, पृ० 559–63
22 लास्की रिफ्लक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम पृ० 215–16
23 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स पृ० 108–16
24 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस, पृ० 243–44
25 लास्की इट्रोडक्शन टु पालिटिक्स, पृ० 91–97
26 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, पृ० 588
27 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 241–58
28 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम पृ० 513–19
29 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 244–45
30 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल ममायर पृ० 102–23
31 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 219
32 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 254–68
33 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स पृ० 242–49
34 लास्की दि स्टट इन थ्योरी एंड प्रक्टिस पृ० 254–55
35 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफिकल मेमोयर पृ० 64
36 लास्की रिफ्लेक्शस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, पृ० 234–51

# लास्की के चिंतन का मूल्यांकन

मानव सभ्यता के इतिहास मे वतमान युग एक सक्रमणकालीन युग है। बीसवी सदी मानव जाति के आर्थिक, राजनीतिक और सास्कृतिक इतिहास मे परिवतन और क्राति की सदी है। अठारहवी सदी की फ्रासीसी और अमरीकी क्रातियो से जिस युग का सूत्रपात हुआ, वह अचानक समाप्त हो रहा है।[1] पूजीवाद लोकतत्र और राष्ट्रवाद पारपरिक जगत के प्रतीक हैं। हमारी आखो के सामने एक नए विश्व का उदय हो रहा है। रूस और चीन की क्रातिया इस नए युग का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाजवाद, जनवाद और अतर्राष्ट्रवाद इस नवीन जगत के आधार-तत्त्व हैं। लास्की मूलत इन दो युगो के बीच सक्रमणकाल के राजनीतिक चिंतक है। उनकी सहानुभूति निश्चय ही नवीन जगत के समथको और निर्माताओ के साथ है। रूसो और लास्की के राजनीतिक चिंतन मे एक महत्त्वपूण समानता है। दोनो चिंतको के लेखन मे अपने युग की प्रणाली के दोषो की व्यग्यपूण आलोचना है। दोना सामयिक समाज के सफल और ओजपूण समीक्षक हैं और उनकी अस्वीकृतिया सशक्त युक्तियो पर आधारित हैं। परन्तु दोनो ही अपना वैचारिक विकल्प प्रस्तुत करने मे सकोचशील है और दोनो का सृजनात्मक चिंतन अपेक्षाकृत दुबल है। कटलिन का कथन है, 'लास्की आधुनिक रूसो बनते जा रहे हैं, वसे ही सवेदनशील और वसे ही मौलिक'।[2] रूसो द्वारा प्रस्तुत फ्रास की भ्रष्ट राजतत्रात्मक प्रणाली की आलोचना औचित्यपूण थी, परतु वे इस निष्कर्ष पर पहुचने मे असमथ रहे कि इसका एकमात्र इलाज उसका उन्मूलन कर गणतत्र की स्थापना करना था और उसके लिए क्राति की जरूरत थी। उसी प्रकार लास्की द्वारा प्रस्तुत पूजीवादी लोकतत्र की समीक्षा कि इसका अनिवाय परिणाम साम्राज्यवाद तथा युद्ध है, तथ्यो पर आधारित है परतु वे भी यह स्वीकार करने मे सकोच करते है कि इसका एकमात्र विकल्प साम्राज्यवादी देशो मे वतमान पूजीवादी सरकारो का क्राति द्वारा उन्मूलन और उपनिवेशो मे राष्ट्रीय स्वतत्रता के आदोलनो की निर्णायक विजय है।

अत लास्की का प्रस्ताव है कि पूजीवाद को समाजवाद मे ससदीय समाज-

वादी दल की सहायता से अर्थात शातिपूर्ण उपायों से ही परिवर्तित किया जाए और साम्राज्यवाद को भी शातिपूर्ण ढंग से अर्थात अतराष्ट्रीय सगठन के माध्यम से समाप्त किया जाए। उन्हे आशा थी कि विश्व सगठन के द्वारा उपनिवेश अपनी राष्ट्रीय स्वतत्रता प्राप्त कर सकेंगे।[3] ऐतिहासिक घटनाचक्र ने लास्की के इन दोनो आशावादी निष्कर्षों को गलत सिद्ध किया। परतु इससे उनके राजनीतिक चिंतन का महत्त्व कम नही होता। आधुनिक राज्य के सस्थाना की विवेचना के क्षेत्र मे, राजनीतिक विचारधाराओ के मूल्याकन मे और राजनीतिक प्रणालियो की विवेकपूर्ण समीक्षा मे लास्की का योगदान प्रशसनीय और महत्त्वपूर्ण है। अत उनकी गणना बीसवी सदी के शीर्षस्थ राजनीतिक चिंतको मे होनी चाहिए।

अपने चिंतन के प्रारभिक बहुलवादी चरण मे वे मुख्य रूप से सुव्यवस्थित राजनीतिक समाज मे विशेष सामाजिक समुदायो के स्तर और विशेषाधिकारो की समस्या सुलझाने मे व्यस्त हैं। इस चरण मे राजनीतिक चिंतन के लिए उनका विशेष योगदान सप्रभुता के सिद्धात के विभिन्न पक्षो की आलोचनात्मक विवेचना है। 'सप्रभुता की समस्या' मे उन्होंने धार्मिक विश्वास की स्वतत्रता, धार्मिक सगठनों की स्वायत्तता तथा धर्मनिरपेक्ष राज्य के चरित्र की ऐतिहासिक और वैचारिक व्याख्या की है।[4] भारत जैसे नवोदित राष्ट्र के लिए लास्की की उपयुक्त परिकल्पनाओ का महत्त्व स्पष्ट है। सप्रभुता के आधार' मे उन्होंने सप्रभुता के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डाला और इस महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुचे कि यह मूलत आपातकालीन सिद्धात है। सोलहवी सदी की धार्मिक और सामतवादी लडाइया ने इसे जन्म दिया और तदुपरात ऐसे ही सघर्षो ने इसे सुदृढ बनाया।[5] 'आधुनिक राज्य म सत्ता' म उन्होंने सत्ता की विस्तृत समस्या की विवेचना का प्रयास किया। लास्की का निष्कर्ष था कि जिस प्रकार सोलहवी सदी मे या उसके पूर्व पोप की आध्यात्मिक सत्ता से मानवीय स्वतत्रता को बहुत बडा खतरा था, उसी प्रकार आधुनिक काल म मानवीय स्वतत्रता को उतना ही बडा खतरा सप्रभुतासपन्न राज्य की लौकिक सत्ता से है। उन्होंने राजनीतिक सत्ता की सघीय परिकल्पना प्रस्तुत की अर्थात शक्ति तथा उत्तरदायित्व को केंद्रबिंदु पर एकत्रित करने के बजाय परिधि के बिंदुओं म बिखेर दिया जाए।[6]

सामान्य रूप से यह विदित नहीं कि लास्की एकसत्तावादी राज्य को अपने चिंतन के समष्टिवादी चरण म सशय की दृष्टि से देखत थ। 1949 म अपनी मत्यु के कुछ समय पहले उन्होंने अपना मत इस प्रकार प्रकट किया, जिस मैं पहले 'एकवादी' (Monistic) राज्य कहता था, और अब जिस 'एकसत्तावादी' (Monolithic) कहने का फैशन है, उसके सबध मे अपने भय को मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हू। उसका परिणाम अधिकतर बहुत बुरा होता है। थोडे स

लोगो मे सत्ता सीमित कर यह साधारण नागरिक को एक ऐसे उपकरण की स्थिति मे गिरा देता है जो ऐसे उद्देश्य की सेवा करता है जिसको निर्धारित करने का उसका अधिकार घटता जाता है और जिसकी प्रशसा करने की उसे लगातार आज्ञा दी जाती है, उसे ज्ञान कराया जाता है कि यदि वह मौन रहेगा या इससे आगे बढ़कर वह सरकार की आलोचना करेगा तो उसकी राजभक्ति पर किसी को विश्वास नही रहेगा।'[7] राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के व्यापक वितरण और प्रसार के लिए लास्की का विवेकपूर्ण आग्रह आधुनिक राजनीतिक चिंतन के लिए एक विशेष देन है। समुदायो की स्वायत्तता उनके बहुलवादी चिंतन का सार है।

लास्की मनुष्य के व्यक्तित्व के गौरव मे भी अटूट विश्वास करते हैं। वे स्वभाव, विचार और आचरण से पक्के व्यक्तिवादी है। उनकी युक्तियो मे प्रत्येक बिंदु पर वैयक्तिक भावनाओ का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। मजदूर दल की समितियो मे वे प्राय एकाकी बुद्धिजीवी के रूप म अपने सिद्धातो के एकमात्र समथक होते थे। अनेक स्थलो पर किंग्सले मार्टिन ने लास्की के अलगाव और अकेलेपन के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।[8] जब लास्की ने समाज के माक्सवादी विश्लेषण को स्वीकार कर लिया, तो भी वे अधिनायकतत्र की साम्यवादी प्रणाली के घोर विरोधी बने रहे। तानाशाही के वातावरण मे लास्की जैसे सचेतन बुद्धिजीवी को बौद्धिक मौलिकता के प्रदशन का अवसर कैसे मिल सकता था। स्वतत्र समाज के निर्माताओ से रूप मे वे मानवीय व्यक्तित्व के मूल्य पर विशेष बल देत थे।[9] 'आज्ञापालन के खतरे मे उनका सुझाव था कि व्यक्ति को अपने अत करण की आवाज के अनुसार ही निश्चय करना चाहिए कि वह सप्रभु की किस आज्ञा का पालन करे और किस आज्ञा का पालन न करे। जो राज्य नागरिको से अधश्रद्धा के आधार पर अपने आदेशो का पालन करने का दुराग्रह करता है, वह उन्हे नतिक रूप से दास बना देता है।[10]

उन्होने हीगल द्वारा प्रस्तुत स्वतत्रता की परिभाषा को एक द्वद्वात्मक धोखा बताया जिसम स्वतत्रता वस्तुत पराधीन हो जाती है। 'राजनीति का एक व्याकरण मे उन्होने स्वतत्रता की परिभाषा प्रतिबधो के अभाव के रूप मे ही की। भविष्य मे उन्होने स्वतत्रता की इस परिभाषा मे समष्टिवादी दिशा म कुछ सशोधन अवश्य किए परतु पूणत उसे अस्वीकार कभी नहीं किया। उन्होने वैयक्तिक सपत्ति के अधिकार की सीमाए निर्धारित अवश्य की जिसका उद्देश्य स्वतत्रता को सावभौम आनद की वस्तु बनाना था। उनके समाजवादी सुधारो का लक्ष्य भी मानवीय व्यक्तित्व के पूण विकास के लिए सभी आवश्यक सुविधाओ को उपलब्ध कराना है। वे उस समतावादी समाज के निमाण मे अभिरुचि रखते थे जिसम सामाजिक नीति का मूल सिद्धात प्रत्यक व्यक्ति की क्षमताओ का पूण तथा स्वतत्र विकास माना जाएगा।[11] 'अभिजात होने का खतरा' म

लास्की ने वतमान विषमतावादी समाज की आलोचना करते हुए यही कहा कि यह अधिकाश नागरिको के जीवन के नैतिक उत्थान के लिए जरूरी भौतिक साधना का प्रबध नही करता।[1] 'आधुनिक राज्य मे स्वतत्रता' म उन्हाने जान स्टुअट मिल द्वारा प्रतिपादित स्वतत्रता की परिकल्पना का पुनरुत्थान किया और अनेक देशो मे स्वतत्रता के आदश को फासीवाद की चुनौती से प्रभावित अतर्राष्ट्रीय स्थिति के सदभ म उसकी विवेचना की। लास्की सदव मानवीय स्वतत्रता के विभिन्न पक्षा का विवेकपूण समथन करते रहे।[13]

अपनी प्रारभिक कृतियो मे लास्की राजनीतिक दशन के कुछ विशेष पहलुओ पर ही अपने विचार प्रस्तुत करते रह। 'राजनीति का एक व्याकरण' उनकी पहली महान कृति है जिसमे उन्होने आधुनिक युग की राजनीतिक समस्याओ की विशद और मौलिक विवेचना की है। यह कृति राजनीति विज्ञान के क्षेत्र मे बीसवी सदी की सबसे महत्त्वपूण कृतियो मे से एक है। उन्होने राजनीति के आधार के रूप मे अहस्तक्षेपवादी व्यक्तिवाद तथा रूढिवादी आदशवाद का पूणत अस्वीकार किया एव टी० एच० ग्रीन और हाबहाउस के सामाजिक उदारवाद तथा फेबियनो के समष्टिवादी सुधारवाद को आधुनिक युग की समस्याआ का अपूण समाधान बताया।[14] इस चरण मे लास्की के चिंतन मे जो सिद्धात महत्त्वपूण हैं उनमे से कुछ ये हैं सरकार का क्रियात्मक सिद्धात, सामान्य इच्छा की अवास्तविकता, राजनीतिक सत्ता की सघीय धारणा तथा औद्योगिक समस्याओ का समाजवादी समाधान।

उनके विचारा के अनुसार सामान्य इच्छा आदशवादी दाशनिक के मस्तिष्क की कल्पना मात्र है क्याकि समाज मे तो इच्छाओ की विविधता ही दृष्टिगोचर होती है। उन्ह भय था कि सामान्य इच्छा के सद्धातिक परिणाम भी वयक्तिक स्वतत्रता के लिए खतरनाक सिद्ध होगे। उन्हाने राज्य और सरकार की क्रियात्मक विवचना करते हुए कहा कि यह कुछ मनुष्यो का गुट मात्र है जिसे प्रजा से आज्ञापालन कराने का कोई स्वयसिद्ध अधिकार नही है।[15] सामान्य जना की स्वतत्रता के लिए यह आवश्यक है कि समाज म राजनीतिक व आर्थिक सत्ता के आधारो का विकेंद्रीकरण कर दिया जाए। हमारे प्रातिनिधिक सस्थाना का पुनगठन इस प्रकार होना चाहिए जिससे जनता और प्रभावित हित वर्गों को प्रशासनिक और औद्योगिक प्रक्रियाओ मे अधिकतम भाग लेने का अवसर मिले। लास्की राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रो मे लोकतत्र का अधिकतम विस्तार चाहते है जिससे राजनीतिक और आर्थिक सस्थानों को पूजीपति वग के उपकरण बनाने से रोका जा सके।[16]

सिडनी और बीट्रिस वेब, बर्नार्ड शा, एच० जी० वेल्स, ग्राहम वालस तथा जी० डी० एच० कोल के साथ मिलकर लास्की ने फेबियन समाजवाद की विचारधारा के प्रतिपादन म उत्साह स भाग लिया और शीघ्र उन्हें फेबियनवाद

के मुख्य प्रतिपादको मे गिना जाने लगा। उनके विचारो पर फ्रासीसी समाजवादी प्रूधो और फ्रासीसी श्रमिक सघ विचारधारा का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता था परतु कैटलिन का कथन है कि अभी वे माक्सवाद के प्रभाव से दूर थे।[17] अपने चिंतन के इस मध्यवर्ती चरण मे वे माक्स को एक प्रतिभाहीन अथशास्त्री और दाशनिक मानते थे जिनके विच्छ खल विचारो का मजदूर वग के आदालन के लिए केवल अभद्र प्रचार के लिए उपयोग किया जा सकता था। अपना सक्षिप्त फेबियन पुस्तिका 'काल माक्स' मे माक्सवाद को लोकतत्र के प्रतिकूल माना। उनका कथन था, माक्सवाद म, शायद केवल एक अतिम लक्ष्य के रूप मे छोडकर, लोकतात्रिक प्रणाली के लिए कोई स्थान नही है। क्राति प्रतिक्राति का दमन करती है और आतक पर आधारित शासन विजय का माग है। यदि मजदूर कोई वास्तविक महत्त्वपूण माग पेश करते है तो उनके दमन के लिए फौज बुला ली जाती है। इसका अथ है कि साम्यवाद की स्थापना वास्तव म केवल सचेतन हिंसात्मक हस्तक्षेप द्वारा ही हा सकती है। सवहारा वग को चाहिए कि उपयुक्त समय आते ही क्राति शुरू कर दे।'[18]

उनका माक्सवाद विरोधी दष्टिकोण 'साम्यवाद मे भी परिलक्षित होता है जब वे साम्यवाद को एक नया धार्मिक सप्रदाय कहते हैं। उन्होने बताया कि रूस मे उसकी सफलता का रहस्य उस देश की विशेष परिस्थितियो मे निहित है और यदि पश्चिमी यूरोप मे साम्यवादियो की विप्लवी रणनीति का प्रयोग किया गया तो उसका अनिवाय प्रतिफल फासीवाद होगा।[19] अपने निबध 'समाजवाद और स्वतत्रता' मे लास्की ने फेबियनवादी के रूप म स्पष्ट घोषणा की कि सच्चा समाजवाद सत्तावादी न होकर स्वतत्रतावादी सिद्धात है। उन्होने कहा कि स्वतत्रता को समानता से पृथक नही किया जा सकता, समाजवाद का लक्ष्य इन दोना सिद्धातो म सामजस्य स्थापित करना है। अपने चिंतन के इस मध्यवर्ती चरण मे लास्की के विचारो मे नैतिक व्यक्तिवाद, राजनीतिक बहुलवाद और आर्थिक समष्टिवाद का अदभुत मिश्रण है। परतु अतर्विरोधी विचारो का यह अस्थिर मिश्रण अनिश्चित काल तक कायम नही रह सकता था। विश्व आर्थिक सकट की शुरुआत, मचूरिया पर जापानी आक्रमण, जमनी मे नाजीवाद की विजय इत्यादि घटनाओ ने लास्की के चिंतन का झकझार दिया और वे राजनीति और समाज के विषय म अपने मतो मे परिवतन करने के लिए बाध्य हो गए।[0]

इन घटनाओ की प्रतिक्रिया के रूप मे लास्की का विश्वास फेबियनवाद से उठ गया और माक्सवाद के विश्लेपण की सचाई का अनुभव उन्हे नए रूप म हुआ। 'लोकतत्र सकट म' म उन्होने फेबियनवाद के क्रमिकतावादी सिद्धात को अस्वीकार कर दिया और इगलैंड मे ससदीय सस्थाना के सुधार और पुनगठन के सुझाव दिए। उनका विचार था कि एक वास्तविक समाजवादी दल के

सत्तारोहण से, चाहे वह निर्वाचन मे बहुमत के आधार पर ही सत्ता मे आया हो, ससदीय प्रणाली की मान्यताओ मे अनिवार्य रूप से क्रातिकारी परिवर्तन करना पडेगा।[1] कोई भी समाजवादी सरकार, यदि वह अपने कार्यक्रम को कार्यान्वित करना चाहती है, वर्तमान औपचारिकताओ और प्रक्रियाओ के अतर्गत ऐसा नही कर सकती। उसे व्यापक कायापलट शक्तियो का प्रयोग करना पडेगा और समाजवादी कानूनो को आदेशो तथा अध्यादेशो द्वारा तुरत पारित कराना होगा। लोकसभा मे वह औपचारिक विरोधी दल के प्रति पारपरिक उदारता या सहिष्णुता का प्रदर्शन नही कर सकती। उसे लार्ड सभा को सावैधानिक रूढि मानकर समाप्त करना पडेगा। नौकरशाही तथा न्याय-पालिका के ढाचे मे सुधार करने पडेंगे जिससे वे पूजीवादी तत्वो का समर्थन न कर सकें। दूसरे शब्दो मे, लास्की मार्क्स के नेतृत्व सिद्धात के बहुत निकट आ गए है।[2] इस बात को ध्यान मे रखना चाहिए कि ब्रिटिश मजदूर दल ने लास्की के उपर्युक्त सुझाव स्वीकार नही किए। उसके शासन का युद्धोत्तरकालीन इतिहास सिद्ध करता है कि उसके नेताओ ने दल को ब्रिटिश मजदूर वर्ग का क्रातिकारी अग्रिम दस्ता कभी नही समझा।

लोकतत्र के सकट के विश्लेषण के फलस्वरूप लास्की को राज्य के चरित्र और विकास के सबध म अपनी मान्यताओ को बदलना आवश्यक हो गया। 'राज्य सिद्धात और व्यवहार मे' मे उन्होने राज्य के चरित्र और कार्यों की नव मार्क्सवादी व्याख्या की। उन्होने तटस्थ शक्ति के रूप मे राज्य के पारपरिक विश्लेषण का अस्वीकार कर दिया और कहा कि प्रत्येक राज्य किसी न किसी श्रेणी के साथ पक्षपात करता है।[23] सर्वप्रथम यह राष्ट्रीय समाज की मौलिक, उद्देश्यजनित एकता के सिद्धात को अस्वीकार करता है। हमारे राजनीतिक चिंतन का केंद्र अब राष्ट्र के स्थान पर वर्ग हो जाता है। राजनीतिक समझ की कुजी किसी विशेष समाज के श्रेणी सबधो म पाई जाती है। साम्राज्यवाद, फासीवाद, पूजीवादी लोकतत्र और साम्यवाद की व्याख्या उनमे निहित और व्याप्त श्रेणी स्वार्थों के आधार पर की जाती है। राज्य सदा अपनी आतरिक तथा बाह्य नीतिया मे उस विशेष वर्ग का, जो उस देश म उत्पादन के साधनो का स्वामी है राजनीतिक उपकरण होता है।[24] यूरोपीय उदारवाद का उदय मे उन्होने उदारवाद के सिद्धात और व्यवहार के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उसके विकास का आर्थिक विश्लेषण किया। उनका निष्कर्ष है कि उदारवाद के राजनीतिक विचारो और आचार म परिवर्तनो के कारण पूजीवाद के विभिन्न चरणो की आर्थिक जरूरतो म निहित हैं। इस प्रकार उन्होंने आधुनिक उदारवादी राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए उसके वर्गचरित्र के विषय मे अपनी मान्यता को प्रमाणित किया।[25] अत म वे इस निष्कर्ष पर पहुचे कि उदारवादी दर्शन पूजीवादी प्रणाली के बढते हुए सकट और अतर्विरोधो के कारण पतन के चरण म प्रवेश

कर रहा है। अब तो समाजवादी दशन ही उसके रिक्त स्थान की पूर्ति कर सकता है।[6]

सांविधानिक चिंतन के क्षेत्र मे लास्की की दो महत्त्वपूर्ण कृतिया है 'इगलैंड मे ससदीय शासन', जो ब्रिटिश शासन प्रणाली की समीक्षा प्रस्तुत करती है तथा 'अमरीकी लोकतत्र', जो अमरीकी राजनीतिक प्रणाली का विशद सर्वेक्षण है। इगलैंड की ससदीय प्रणाली के सबध में उनके कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कष हैं। सवप्रथम वे कहते हैं कि राजतत्र अपन वतमान रूप म भी लोकतात्रिक समानता की भावना के प्रतिकूल है। इसके अतिरिक्त किसी भी सांविधानिक सकट या आपातकाल मे राजतत्र का प्रभाव प्रतिक्रियावादी तत्त्वो के समथन म प्रयुक्त होगा। यह 1931 मे मजदूर सरकार के पतन और उसके स्थान पर राजा की सहायता स एक प्रतिक्रियावादी सयुक्त सरकार के सत्ताग्रहण से सिद्ध हो जाता है।[27] इसी प्रकार वे लाड सभा के रूप मे कुलीनवर्गीय द्वितीय सदन को भी वास्तविक लोकतत्रात्मक प्रणाली के लिए असगत समझते है। लास्की एक ऐसा सुदृढ मत्रिमडल चाहते है जो लोकसदन को अपने नियत्रण मे रखकर वैधानिक आदेशो और तुरत प्रशासनिक आचरण के द्वारा ब्रिटिश समाज मे शीघ्रतापूवक समाजवादी परिवतन कर सके। अपन विवेक के आधार पर राजा द्वारा असामयिक लोकमत सग्रह कराना और द्वितीय सदन द्वारा विधि निमाण मे अनुचित विलब कराना लास्की के मत के अनुसार लोकतत्र की इच्छा पर प्रतिक्रियावादी प्रतिबध है।[28] लास्की के उपयुक्त सुझावो की आलोचना करते हुए कटलिन का कथन है कि उनका मत सिफ सतही तौर स लोकतात्रिक तथा अराजतात्रिक है। वास्तव मे उसका अभिप्राय समाजवादी दल के प्रच्छन्न अधिनायकतत्र से ही है। यह अपनी सत्ता पर सविधान, न्यायपालिका, द्वितीय सदन या लोकमत-सग्रह द्वारा लगाए हुए प्रतिबधो को तोड देना चाहता है।[29]

अमरीकी राजनीतिक प्रणाली के सबध म भी लास्की ने अपने निष्कष प्रस्तुत किए हैं। 'अमरीकी राष्ट्रपति पद' म उन्हें अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली की विवेचना करते हुए बताया कि प्रतिबध और सतुलनो की पद्धति सरकार की कायक्षमता म बाधक है। अमरीकी सविधान के निर्माताओं ने इसे अहस्तक्षेपवादी अथव्यवस्था के सदभ म बनाया था।[30] यह व्यवस्था वतमान युग के जनकल्याणकारी शासन के सदभ मे असगत है। 'अमरीकी लोकतत्र' म उन्होंने अमरीका के अन्य राजनीतिक सस्थानो की समीक्षा करत हुए उन पर सामाजिक, आर्थिक और सास्कृतिक वातावरण के प्रभावो की चर्चा भी की है। उनका कथन है कि शक्तियो के पथक्करण का सिद्धात शक्तियो के वितरण मे भ्रातिया उत्पन्न करता है एव सघ तथा राज्यो मे शक्तियो के विभाजन का सिद्धात आधुनिक परिवतनो के सदभ में पुराना पड गया है।[31] राष्ट्रपति रूजवेल्ट को

अपने प्रस्तावित सुधारो को कार्यान्वित कराने मे जो दिक्कतें आईं, उनसे पता चलता है कि अमरीकी राजनीतिक प्रणाली किस प्रकार प्रतिक्रियावादी तत्वो की सेवा करने के लिए बनाई गई है। उन्होंने विधि निर्माण पर सर्वोच्च न्यायालय के निषेधाधिकार को अलोकतात्रिक माना और काग्रेस के लिए ब्रिटिश पद्धति की वैधानिक सप्रभुता का सुझाव दिया। इसी प्रकार उन्होने राष्ट्रपति के पद को अधिक शक्तिशाली बनाने का आग्रह किया और सरकार के कार्य पालक और विधायी अगो मे सहयोग के लिए कुछ नए उपाय भी बताए। लास्की अमरीकी दल पद्धति के भी कठोर आलोचक हैं। उनके मत के अनुसार यह रूढियो और भ्रष्टाचार पर आधारित है और यह बडे खेद का विषय है कि वहा अब तक एक सुसगठित और प्रभावशाली समाजवादी दल का विकास नहीं हो सका है।[2] वे अमरीकी पूजीवादी लोकतत्र के विकास के लिए दो विकल्पो की चर्चा करते हैं। इसे या तो अपना पूजीवादी चरित्र छोडकर समाज वादी लोकतत्र मे विकसित होना चाहिए, नही तो यह आतरिक क्षेत्र मे लोक तत्र को त्यागकर अपने आर्थिक सकट का इलाज बाह्य रूप से आक्रामक साम्राज्यवाद मे ढूढेगा। अमरीका की युद्धोतरकालीन नीतिया सिद्ध करती हैं कि उसने वस्तुत लास्की के दूसरे विकल्प को स्वीकार किया है।[33] उन्होने 'हमारे युग की दुविधा' में अमरीकी वदेशिक नीति की आलोचना करते हुए बताया है, 'जैसे ही हम ट्रूमैन सिद्धात को गभीरता से लागू करते हैं, उसका अभिप्राय अमरीकी शक्ति के प्रयोग द्वारा उन सभी निहित स्वार्थो की मदद करना हैं जो श्रमिक वग को समाज म अपना उचित स्थान पाने से रोकते हैं। इसलिए अमरीकी सहायता फास मे मूलत मध्यमवर्गीय सरकार को, इटली मे मध्यमवर्गीय और अध फासिस्ट सरकार को और यूनान म स्पष्टत एक फासिस्ट सरकार को दी जा रही है।[34]

राजनीतिक चितन मे लास्की के योगदान की दृष्टि से उनकी युद्धकालीन कृति 'हमारे युग की क्राति पर विचार' विशेष रूप मे उल्लेखनीय है। इसम उन्होने सामयिक अतर्राष्ट्रीय जगत का विशद सर्वेक्षण किया है और आधुनिक काल की सभी राजनीतिक प्रणालियो और विचारधाराओ की विवेचना और समीक्षा प्रस्तुत की है। उन्होने राजनीतिक शक्तियो की व्याख्या द्वद्वात्मक दृष्टिकोण से की है तथा विश्व राजनीति का विश्लेषण क्राति और प्रति क्राति के द्वद्व के रूप मे किया है।[3] उनका विचार है कि हमारी सभ्यता एक क्रातिकारी परिवर्तन के समय से गुजर रही है जिसमे विघटन और सघर्ष सन्निहित हैं। जबकि हमारे समाज के कुछ तत्त्व क्राति की प्रक्रिया को चरम सीमा तक ले जाना चाहते हैं, दूसरी शक्तिया क्रातिकारी आदर्श की अन्तिम विजय मे बाधाए डालने का प्रयास कर रही हैं। धर्म और विज्ञान, साम्राज्य वाद तथा राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धात, फासीवाद और लोकतत्र अथवा

पूंजीवाद और समाजवाद के सघर्ष लास्की के कथनानुसार प्रतिक्रियावाद और क्रांति के अंतर्राष्ट्रीय द्वंद्व के प्रतीक हैं।[36] साम्यवादी विचारधारा तथा सोवियत नीतियों के कुछ पहलुओं की आलोचना के बावजूद वे रूसी क्रांति को हमारे युग की एक प्रगतिशील शक्ति मानते हैं और उनका विचार है कि सोवियत संघ निश्चय ही ससार की क्रांतिकारी शक्तियों के साथ है। दूसरी ओर वे फासीवाद को प्रत्येक प्रकार से प्रतिक्रांति के विचारों की अभिव्यक्ति मानते हैं। जातीय दंभ, सैनिक अधिनायकतंत्र, लोकतंत्र का दमन, यातना शिविर और नरमेध, कूटनीतिक गुंडागर्दी, विध्वंस के लिए विज्ञान का दुष्प्रयोग और आक्रामक साम्राज्यवाद फासीवाद को अबुद्धिवाद की एक घृणास्पद विचारधारा बना देते हैं।[37]

लास्की का कथन है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद या अफ्रीका में यूरोप के पूंजीवादी देशों द्वारा औपनिवेशिक शोषण और दमन भी फासीवाद की तरह प्रतिक्रांति की शक्तियां है, दोनों में केवल मात्रा का अंतर है गुण का नहीं। उनका दृढ़ विचार है कि प्रतिक्रांति की शक्तियां पूंजीवादी लोकतंत्रों के आंतरिक ढांचे में समाई हुई हैं। उनका विचार है कि नाजियों के प्रति पश्चिमी यूरोप के पूंजीवाद लोकतंत्रों की तुष्टीकरण की नीतियां तथा यूरोपीय 'क्विसलिंगों' (Quislings) का हिटलर के साथ युद्धकालीन सहयोग यही सिद्ध करते है कि यूरोपीय लोकतंत्रों के राजनीतिक जीवन में प्रतिक्रांति की शक्तियां की जड़ें बहुत गहरी जमी थी।[38] विश्व के क्रांतिकारी शिविर में प्रत्येक देश के फासीवाद विरोधी और साम्राज्यवाद विरोधी शामिल हैं और उसी में विभिन्न देशों के उदार लोकतंत्रवादी, समाजवादी और साम्यवादी भी शामिल हैं। लास्की को आशंका है कि प्रतिक्रांति कर अंतिम विजय हिटलर और उसके साथियों को युद्धस्थल में पराजित करने से ही प्राप्त नहीं हो सकती। वस्तुतः अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर समाजवाद और लोकतंत्र की स्थापना ही प्रतिक्रांति का अंतिम पराजय मानी जा सकती है।[39] 'विश्वास, विवेक और सभ्यता' में उन्होंने चेतावनी दी थी, धुरी राष्ट्रों की निर्णायक और करारी हार अब होने ही वाली है, लेकिन हमारे लिए इससे भी बड़ा सवाल उनकी हार में उन सभी प्रतिक्रांति के तत्त्वों की हार शामिल करने का है जिनका वे समर्थन करते रहे हैं। हमारी जीत बेकार जाएगी अगर हम उसका उपयोग बड़े उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नहीं करेंगे।[40]

'हमारे युग की दुविधा' में, जिसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के उपरांत हुआ, लास्की ने अपने युद्धकालीन विश्लेषण में फिर नए संशोधन प्रस्तुत किए। सोवियत रूस और अमरीका की युद्धोत्तरकालीन नीतियों से उन्हें बहुत निराशा हुई और इंग्लैंड की मजदूर सरकार ने भी उनकी आशा के अनुरूप कार्य नहीं किए।[41] लास्की को विश्वास था कि सोवियत संघ और अमरीका की युद्धकालीन मित्रता उनके शांतिकालीन सहयोग में परिणत हो सकेगी जिसके परि-

णामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर लोकतंत्र और समाजवाद की स्थापना संभव हो सकेगी। बाह्य सुरक्षा का वातावरण मिलने पर सोवियत संघ अपनी राजनीतिक प्रणाली का लोकतंत्रीकरण कर सकेगा क्योंकि अपने नवमाक्सवादी चरण में लोकतंत्र और मार्क्सवाद के मध्य किसी अंतर्विरोध के अस्तित्व को लास्की स्वीकार नहीं करते थे। उसी प्रकार उन्हें आशा थी कि युद्धोत्तरकाल में संयुक्त राज्य अमरीका में शक्तिशाली समाजवादी आंदोलन का विकास होगा जो औद्योगिक क्षेत्र में लोकतंत्रीकरण के प्रसार में सहायक होगा। उन्हें उम्मीद थी कि पश्चिमी यूरोप की युद्धोत्तरकालीन वामपक्षी सरकारें अपने देशों में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करेंगी और साम्यवादी रूस तथा पूंजीवादी अमरीका के मध्य 'तृतीय शक्ति' के रूप में संतुलन रख सकेंगी।[4] इंगलैंड द्वारा भारत को स्वराज्य देने की उदारता के भाव में उन्होंने औपनिवेशिक प्रणाली के शांतिपूर्ण विघटन का सपना देखा था। उन्हें यह जानकर निराशा हुई कि भारत का उदाहरण अन्य उपनिवेशों के लिए उनके जीवनकाल में लागू नहीं किया जा सकता। इन तथ्यों और घटनाओं को ध्यान में रखते हुए लास्की ने विश्व राजनीति के युद्धकालीन आशावादी विश्लेषण में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए।[43]

युद्धोत्तरकालीन घटनाओं ने लास्की की सभी आशावादी भविष्यवाणियों को गलत सिद्ध किया और उनकी सभी निराशावादी आशंकाएं दुर्भाग्य से सच साबित हो गईं। लास्की की आशा के प्रतिकूल सोवियत शासकों ने तानाशाही की कठोरता में कमी नहीं की और अधिनायकतंत्रात्मक प्रणाली को पूर्वी यूरोप के अर्ध-स्वाधीन राज्यों पर भी आरोपित कर दिया, यूरोप के पुनर्निर्माण की सामान्य योजना में अपना सहयोग नहीं दिया और पश्चिमी यूरोप के साम्यवादी दलों को आदेश दिया कि वे अपने देशों की अर्थव्यवस्था का विघटन करें, और इस प्रकार मित्र राष्ट्रों की युद्धकालीन मित्रता को प्रत्येक प्रकार की कूटनीतिक धमकियों से छिन्न भिन्न कर डाला।[44] उसी प्रकार संयुक्त राज्य अमरीका के शासक वर्ग ने राष्ट्रपति रूज़वेल्ट की उदार और प्रगतिशील नीतियों को उलट दिया, साम्यवाद के प्रति उन्मादजनित भय का प्रचार और विस्तार किया, अपने देश के उदार तथा प्रगतिशील बुद्धिजीवियों का दमन शुरू किया, यूनान में प्रतिक्रियावादी षड्यंत्र नीति अपनाई और उसी प्रकार की नीतियां पश्चिमी एशिया, चीन और जापान के प्रति कार्यान्वित कीं, पश्चिमी यूरोप की वामपक्षी सरकारों को बाध्य किया कि वे समाजवादी कार्यक्रम को कार्यान्वित न करें, और अंत में पिछड़े देशों के प्रति आर्थिक साम्राज्यवाद और सोवियत संघ के प्रति सैनिक गठबंधन की नीतियां अपनाईं।[45]

इंगलैंड की मजदूर सरकार तथा यूरोप के समाजवादी दलों ने रूस और अमरीका के मध्य संतुलन करने वाली तृतीय शक्ति के रूप में कार्य नहीं किया क्योंकि उन्होंने अमरीकी वैदेशिक नीतियों का पूर्ण समर्थन करते हुए रूस का

कूटनीतिक विरोध किया और युद्धोत्तरकालीन विश्व के पुनर्निर्माण मे रूस का सहयोग लेने से इकार कर दिया। लास्की चाहते थे कि पश्चिमी यूरोप के समाजवादी रूस के विरुद्ध शीतयुद्ध मे अमरीका का साथ न दें और ततीय शक्ति के रूप मे समाजवाद और लोकतत्र की उपलब्धि के लिए स्वतत्र वदेशिक और आतरिक नीतिया अपनाए। लास्की का कथन है 'अपने जोशीले स्वभाव के बावजूद वदेशिक नीति के क्षेत्र मे श्री बेविन श्री चर्चिल की इच्छा को कानून मानत थे। इसका परिणाम अमरीका स प्रगाढ सैनिक गठबधन करने का निणय था जिसकी मूल योजनाए चर्चिल ने बनाई और जिसके कार्यान्वयन का श्री चर्चिल ने ही निर्देशन किया। अटलाटिक सुरक्षा सधि पर श्री बेविन ने हस्ताक्षर किए पर श्री चर्चिल न ही उनकी कलम पकड कर उनसे यह हस्ताक्षर कराए। श्री बेविन के दावो के बावजूद यह गठबधन रूस के लिए एक खतरा था।'[46] अत उन्होंने मजदूर दल की विदेश नीति की कठोर आलोचना की और उसे सोवियत विरोधी प्रवत्तियो पर आधारित पारपरिक टोरी नीतियो का ही एक ससमरण माना। बडे खेद और पश्चात्ताप के साथ 1946 में उन्हाने मजदूर दल के सम्मेलन को बताया, 'समाजवादी दल के रूप मे हमारे लिए यह एक दु खात घटना है कि स्पेन आज भी फ्रको के क्रूर आतक का शिकार है और इसके लिए हमारी भी गभीर जिम्मेदारी है। जो स्पेन के विषय मे सत्य है वही यूनान के विषय मे भी समान रूप से लागू होता है। हम समाजवादियो के लिए राजा की वापसी उस राष्ट्र के वीरतापूण सघर्षो का दुखद अत होगा जिसने विश्व को स्वतत्रता के महत्त्व के विषय मे पहला पाठ पढाया।[47] हमारे युग की दुविधा मे लास्की ने पुन लोकतात्रिक स्वतत्रता और समाजवादी समानता की अविभाज्यता पर बल दिया है। आज विश्व परमाणु युद्ध तथा आर्थिक विघटन से आतकित है, राजनीतिक सस्थानो का राजनीतिक स्वतत्रता तथा सामाजिक न्याय के आधार पर पुनगठन न करना ही इसका मुख्य कारण है।

लास्की का राजनीतिक दशन एक साथ वतमान समाज की विवेचना भी है और उसे बदलने का आग्रह भी। उनके दष्टिकोण मे एक राजनीतिक दाशनिक तथा दल के प्रचारक की शलिया का समन्वय है। किंग्सले मार्टिन का कथन है 'लास्की की लेखन शैली साहित्यिक है, न कि वैज्ञानिक। उनके भाषणा की तरह उनका लेखन भी प्रभावशाली है क्योंकि उसमे स्पष्टवादिता है सुदर शब्दावली और ओज है। यदि वह समझाना चाहते हैं कि समाज की वग व्यवस्थाए किस प्रकार सामाजिक परिवतन म सावैधानिक बाधा प्रस्तुत करती हैं, तो वे दृष्टातो का ढेर लगा देंगे और कुछ भिन्न रूप म पूर्वोक्त युक्तियो को दोहराते रहगे जिससे अत म पहुचकर पाठक इतना थक जाएगा कि आपत्ति करना उसके वश की बात न रहेगी। कभी ऐसा महसूस होता है

कि लास्की के वर्णन में निरर्थक विस्तार और शब्दजाल रहता है और लगभग चौथाई शब्दों को निकालने से लाभ ही होगा। कभी उनके निरंतर शब्द चातुर्य तथा सूक्ति गुण से मन बहुत ही प्रभावित होता है क्योंकि राजनीतिक लेखन में ये गुण दुर्लभ ही हैं।'[48] लास्की की आलंकारिक शैली और उनका मजदूर दल की राजनीति से सहयोग कुछ आलोचकों को बहुत खटकता है। वे इसी कारण उनके राजनीतिक चिंतन को तिरस्कृत करते हैं और इस प्रकार के घटिया आलोचकों में हर्बर्ट डीन का नाम भी लिया जाता है। कुछ आलोचकों ने राजनीतिक चिंतक के कार्यों की गलत धारणा बना रखी है कि उसे एक चिंतक के रूप में एकाकी जीवन व्यतीत करना चाहिए और व्यावहारिक राजनीति से अलग रहना चाहिए। लास्की के अनुसार संसार की वास्तविकताओं से पृथक रहना कायरतापूर्ण पलायन है जिससे बुद्धिजीवियों को बचने का प्रयास करना चाहिए। उनका कथन है, 'यह इटली के बुद्धिजीवियों की विफलता थी, जिसकी वजह से मुसोलिनी को सत्ता हथियाने का मौका मिला। यह जर्मन बुद्धिजीवियों की विफलता थी जिसने हिटलर को अपना क्रूर साम्राज्य स्थापित करने का अवसर दिया। 1919 के उपरांत यह फ्रांसीसी बुद्धिजीवियों की दुर्बलता थी जिसके परिणामस्वरूप वे परिस्थितियां उत्पन्न हुईं जिनके कारण 1940 में फ्रांस का पतन हुआ। हमें इस बात का भ्रम नहीं होना चाहिए कि इस संबंध में ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका की परिस्थितियां भिन्न प्रकार की हैं।'[49]

इसमें संदेह नहीं कि बुद्धिजीवियों के कार्यों के विषय में लास्की की धारणा सही थी और उन्होंने स्वयं अपने जीवन में इसी धारणा के अनुसार कार्य किया। इसी कारण जो विद्यार्थी उनके संपर्क में आए और जिन्होंने उनकी कृतियों का अध्ययन किया, वे सभी उनके महान व्यक्तित्व और दर्शन से प्रभावित हुए। किंग्सले मार्टिन ने लास्की के प्रति श्रद्धांजलि देते हुए लिखा है, 'जब हरोल्ड का देहावसान हुआ तो प्रभावशाली पदों पर आसीन सैकड़ों अंग्रेज स्त्रियों और पुरुषों ने दुःख और कृतज्ञता का प्रदर्शन किया। परंतु उनकी महत्ता का इससे भी बड़ा प्रमाण थी प्रत्येक देश के उन युवा स्त्री-पुरुषों की गवाही, जिन्हें लास्की ने राष्ट्रीय स्वाधीनता या लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के लिए दीक्षित किया था इनमें एशियाई भी थे, अफ्रीकी और यूरोपीय भी। दुनिया के किसी देश में उनका प्रभाव इतना अधिक नहीं था जितना कि भारत में, कृष्णमेनन, जो लंदन में स्वतंत्र भारत के प्रथम उच्चायुक्त थे और हरोल्ड के बहुत श्रद्धालु मित्रों और प्रशंसकों में एक थे, वस्तुतः उन सैकड़ों भारतीयों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें हरोल्ड ने उनके छात्र जीवन में अपने व्यक्तित्व से प्रभावित किया। उन्हें उनके आडम्बरी भाषणों से इतना लाभ नहीं पहुंचा जितना उस दार्शनिक के व्यक्तिगत वार्तालाप और शिक्षण से, वे भारतीयों को

यूरोपीयों की समानता का दर्जा देते थे पर जरूरत पड़ने पर यह भी बताते थे कि वे उनसे अनिवार्य रूप मे उच्चतर भी नही है।'[50] यह सभवत लास्की के व्यक्तित्व और जीवन दर्शन के लिए सवश्रेष्ठ श्रद्धाजलि है।

लास्की के राजनीतिक चिंतन की आलोचना करते हुए हवर्ट डीन का निष्कर्ष है, 'लास्की की कृतियो के सक्षिप्त विवरण और विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक विचारक और विद्वान के रूप मे राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र मे वे उस गौरव को प्राप्त नही कर सके जिसकी हमे उनके प्रारभिक निबधो मे परिलक्षित विद्वत्ता और ओजस्विता के आधार पर आशा थी। इस बात से इकार करना मुश्किल है कि उनकी मौलिकता और बौद्धिक शक्ति का 1930 के उपरात ह्रास होने लगा, उनके जीवन के अतिम 10 वर्षों मे प्रकाशित कृतिया मे पुनरावृत्ति और शब्दाडबर दोष अधिक मात्रा मे है। उनकी शैली अधिकाधिक कृत्रिम होती चली गई है। उनके स्वर ऐसे व्यक्तियो के हैं जो यद्यपि शिथिल हो चुका है, फिर भी लगातार बोलता जाता है और सोचता है कि उसके सदेश की सचाई और महत्ता को उसके पाठक केवल पुनरावृत्ति और शब्दजाल से प्रभावित होकर मान लेंगे। इस अतिम चरण म उनका मानसिक पतन इतना स्पष्ट है कि मैं इस निकष को प्रस्तुत करने का लोभ सवरण नही कर सकता कि जिस प्रकार वे असाधारण रूप से कम आयु मे मानसिक रूप से प्रौढ हो गए उसी प्रकार तुलनात्मक रूप से कम, केवल 50 वर्ष की आयु मे शिथिल और वृद्ध हो गए।[51] उपर्युक्त आलोचना से स्पष्ट हो जाता है कि श्री हवर्ट डीन लास्की के प्रति कुछ पूर्वाग्रहा से पीडित हैं और द्वेष भावना से प्रेरित होकर उनके 'बौद्धिक ह्रास' की चर्चा करते हैं। 1930 के पश्चात लास्की ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाया तो मैकार्थी युग के इस अमरीकी शोधकर्त्ता ने 'शीतयुद्ध' के वातावरण से प्रभावित होकर यह निष्कर्ष निकाला कि मार्क्सवादी पद्धति से सोचना लास्की की मानसिक प्रतिभा के पतन का प्रमाण है।

हवर्ट डीन ने लास्की के राजनीतिक चिंतन की दुर्बलता के अनेक कारण गिनाए हैं। पहला कारण यह है कि उन्होने अपनी बौद्धिक शक्ति को बिखरा दिया और 35 वर्षों म 30 ग्रथ, 60 से अधिक पुस्तिकाए या पुस्तको के अध्याय और सकडो निबध प्रकाशित किए। दूसरा कारण यह है कि उन्होने अपने लेखन को कुछ विषयो तक सीमित नही रखा। यदि वे अपना लेखन वैधानिक इतिहास तथा दर्शन तक सीमित रखते तो सभवत वे मेटलैंड के उत्तराधिकारी बन जाते।[5] 1930 के बाद उनका लेखन मार्क्स के फार्मूले पर आधारित हो गया। वे प्रत्येक विषय पर बिना उसका अध्ययन किए केवल मार्क्स के फार्मूले को लगाकर उसका सतही विश्लेषण कर डालते। अत उनके चिंतन की दुर्बलता का तीसरा कारण प्रचार की भावना है। उन्होंने अपने चिंतन के दार्शनिक आधारों की गभीरता से परिभाषा नही की। दूसरी दार्शनिक प्रणालिया से,

जिनमें आदशवाद, अनुभववाद और उपकरणवाद शामिल है, उन्होंने परि कल्पनाए और परिभाषाए उधार ले ली परतु उनका मौलिक एव औचित्यपूर्ण सामजस्य करने का प्रयत्न नही किया।[53] हुबट डीन का कथन है कि मार्क्सवाद स्वीकार करने के पश्चात उनके चिंतन का स्तर गिरता गया और मार्क्सवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण वे अपनी मान्यताओ का दाश निक मूल्याकन करने मे असफल रहे।[54] मार्क्स की शब्दावली की मदद स व किसी भी समस्या का हल ढूढ निकालते। बेकारी, वैदेशिक व्यापार, युद्ध का सकट, फासीवाद, यहूदी विरोध, नतिकता का पतन, धार्मिक व्यस्थाओ का सकट या साहित्य और कलाओ की अवनति इत्यादि कोई समस्या क्यो न हो, प्रत्येक का एक ही निदान था पतोन्मुख पूजीवाद एव उत्पादन की शक्तियो का अर्तविरोध, और इस असगति का उत्पादन के नए समाजवादी सबधो की स्थापना द्वारा निवारण।[55] उपर्युक्त कठोर आलोचना के बावजूद, श्री हुबट डीन स्वीकार करत हैं कि इगलैंड और अमरीका मे अनेक योग्यतम युवा मस्तिष्क लास्की के ओजपूर्ण और सवेदनशील चिंतन से प्रभावित हुए।

## सदभ


1 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 237–64
2 कटलिन हिस्ट्री आफ पालिटिकल फिलोसफ्स प० 663
3 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, प० 301–28 तथा 589–99
4 लास्की दि प्राब्लम आफ सावरेन्टी प 40–54 88–112 तथा 126–85
5 लास्की फाउडेशस आफ सावरेंटी प० 232–49
6 लास्की आथोरिटी इन दि माडन स्टेट, प० 40–89
7 लास्की ट्रेड यूनियन्स इन दि न्यू सोसाइटी, प० 42
8 किंग्सले मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्रफीकल मेमोयर प० 98–113 156–62 169–74 184–92 तथा 206–19
9 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टेट पृ० 122–60
10 लास्की दि डेंजर्स आफ ओबीडियस प० 2–30
11 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स, प० 215–17
12 लास्की दि डेंजर आफ बीइग ए जेंटिलमैन प० 13–32
13 लास्की लिबर्टी इन दि माडन स्टेट प० 13–47
14 लास्की ए ग्रामर आफ पालिटिक्स प० III–XVII
15 वही, प० 17–35
16 वही प० 438–88
17 कटलिन हिस्ट्री आफ पालिटिकल फिलोसफस, प० 659
18 कैटलिन द्वारा हिस्ट्री आफ पालिटिकल फिलोसफस म उद्धत प० 659
19 लास्की कम्युनिज्म प० 223–51

20 किंग्सल मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्राफिकल मेमोयर, पृ० 83-91
21 लास्की डेमोक्रेसी इन क्राइसिस प० 67-99
22 वही प० 30-66
23 लास्की दि स्टेट इन थ्योरी एंड प्रेक्टिस प० 104
24 वही पृ० 139
25 लास्की दि राइज आफ यूरोपियन लिबरलिज्म प० 17-29
26 वही प० 224-36
27 लास्की पार्लियामेंटरी गवनमेंट इन इंगलैंड पृ० 401-17
28 वही प० 221-80
29 कटलिन हिस्ट्री आफ पालिटिकल फिलोसफी, पृ० 669
30 लास्की दि अमरिकन डेमोक्रेसी पृ० 79-117
31 वही, प० 72-137
32 वही, पृ० 214-24
33 वही पृ० 552-63
34 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स, प० 109
35 लास्को रिफ्लेक्शंस आन दि रिवोल्यूशन आफ अवर टाइम, प० 252-99
36 वही प० 9-40
37 वही पृ० 86-127
38 वही, प० 162-204
39 वही प० 205-51
40 लास्की फेथ रीजन एंड सिविलाइजेशन प० 10-11
41 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 13-17 तथा 43-51
42 किंग्सले मार्टिन हेराल्ड लास्की ए बायोग्राफिकल मेमोयर प० 182-205
43 डिलेमा आफ अवर टाइम्स की आर० टी० क्लार्क लिखित प्रस्तावना देखिए।
44 लास्की डिलेमा आफ अवर टाइम्स प० 253-61
45 वही प० 261-66
46 वही प० 44-45
47 किंग्सल मार्टिन हेरोल्ड लास्की ए बायोग्राफिकल मेमायर, पृ० 187
48 वही प० 85-86
49 वही प० 261
50 वही प० 263
51 हर्बट डीन पालिटिकल आइडियाज आफ हेरोल्ड जे० लास्की प० 333
52 वही प० 334
53 वही, प० 335
54 वही प० 336-37
55 वही प० 339-40

# अनुक्रमणी

डा० कृष्णकात मिश्र

हिंदू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय म सन 1956 से अध्यापन काय कर रहे हैं। इस समय वरिष्ठ प्राध्यापक। 'स्टडीज इन इटरनेशनल रिलेशस', 'आधुनिक शासन प्रणालिया', 'प्रमुख देशो की शासन प्रणालिया' कुछ महत्त्वपूण प्रकाशित पुस्तकें। इनके अतिरिक्त राजनीतिशास्त्र पर कई महत्त्वपूण शोध निबध प्रकाशित।